

[illegible] मिश्र

नवयुवक प्रेस,

[illegible],

कलकत्ता।



हमारे परम पूज्य स्वर्गीय पिताजी राय बहादुर शेताबचन्दजी नाहरने "स्तवनावली" का तीसरा संस्करण सं० १९६१ में प्रकाशित किया था जो इधर कई वर्षों से अप्राप्य हो रहा था। हमारे पूज्य भाई साहब स्वर्गीय पूरणचन्दजी नाहरने इसे छपवाने की इच्छा प्रगट की थी, परन्तु हठात् उनका स्वर्गवास होने से तथा हमारी अस्वस्थता के कारण इस सस्करण के प्रकाशन मे विलम्ब हुआ।

इस बार पुराने और नवीन ढंग के अच्छे २ स्तवन, विशेष कर सगृहीत किये गये हैं और सब स्तवनों के राग और ताल नियमानुसार दिये गये हैं जिससे कि पाठकों को भजन करनेमे अधिक सुविधा रहे। इस कार्यमे हमे आरा निवासी मास्टर श्री चन्द्रिका प्रसादजी से काफी सहयोग मिला है जिसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

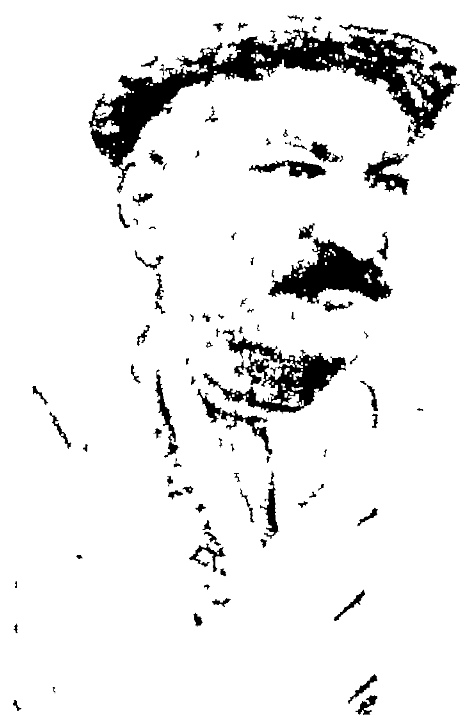
इस प्रकाशन के पूर्व और जो तीन प्रकाशन हुये थे उनमे पुस्तक का दाम अधिक होने से कई सज्जन इससे लाभ न उठा सकते थे। इस कमी को दूर करने के खयाल से इस बार मूल्यमें भी कमी कर दी गई है।

पुस्तकमे कहीं कहीं पर अशुद्धियां रह गई हैं। अतः निवेदन है कि पाठकगण उसे सुधार कर पढ़ें। इस प्रकाशन से हमारे स्वधर्मी भाइयों को अगर कुछ भी लाभ होगा तो हम अपनी चेष्टा सफल समझेंगे। इति शुभम्॥



कलकत्ता
४४, इण्डियन मिरर स्ट्रीट
कार्तिक सुदी १, १९९६

फतेसिंह नाहर



श्री फतेसिंह नाहर

जन्म सं० १९३८ कार्त्तिक कृष्ण ३।

[श्री]

सूचीपत्र

(वर्णानुक्रमिक)

श्री

[श्री-अ]

अ

[अ-आ]

आ

[आ]

[आ-इ-उ]

[उ-ऋ-ए-ऐ]

[ऐ-ओ-औ-क]

ओ

औ

क

[क]

[क-ख-ग]

ख

ग

[क-ख-ग]

ख

ग

[च-छ-ज]

छ

ज

[ज]

[ज]

[त]

[त-द]

[द-ध]

ध

[प-फ]

विषय	राग ताल	पृष्ठ संख्या
पावापुरमें स्वामी भेट्या	देशी चलत	१४२
पद्म प्रभु पद्मासन के	इमन कल्याण तेताला	१४६
प्रजोजा भावे वासुपूज्य	पीलू कहरवा	१५०
पास जिनन्दा प्रभु मेरे	मिश्र कहरवा	१६०
पर्युषण में मैं वीतराग	देशी की चाल	१६५
पर्व पर्युषण पाया	पुरीया धनाश्री तेताला	१६६
पार्श्व प्रभुजी से वीनती	गजल कहरवा	१६८
प्यारे मेरे प्रभुजी ये	नाटक की चाल	१७५
प्रभुजी मोरा बहु गुण	सोरठ कहरवा	१८५
प्रभु अहन्त हमको	गजल कहरवा	१९४
पञ्चम जिन जस आयो	देशी कहरवा	२०४
प्रभु भेट्या महावीर	चलत लंगड़ी	२२५
प्रभुजी वीर तणो	सोरठ कहरवा	२२५
पुग्य पुण्य उदय	मालकोष लंगड़ी	२२८
पहले ना रु सरस्वती	देशी की चाल	२३३
पद्म प्रभु जिन सांभलो	श्री पद्मप्रभ	२४७
पहली आरती दादाजी	आरती	२७५

फ

फागुन खेलेंगे भाई तन	काफी यत्	९३
फागुन के दिन चार	पीलू बारवा लंगड़ी	१०१

विषय	राग ताल	पृष्ठ संख्या

ब

भ

म

[म]

[म-य]

य

[य-र-ल]

श

[श स]

स

[स]

[स]

[स]

ह

[ह-ज्ञ]

ज्ञ

अथ नवपद आरती

जय जय जग जन वंछित पूरन । सुरतरु अभिरामी, आतम रूप विमल करतारक, अनुभव परिणामी । (जय जय जग साग । आरती पार उतारा, सिद्धचक्र सुख कारा) । १ । जगनायक जगगुरु जिनचन्दा । भज श्री भगवन्ता । आतमराम रमा सुख भोगी, सिद्धा जयवन्ता । जय० २ । पंचा चार दीपै आचारिज । जुगवर गुणधारी । धारक वाचक सुत्र अर्थना, पाठक भवतारी । जय० ३ । सम दम रूप सकल गुण ज्ञायक सोटा मुनिराया । दंशण नाण सदा जय कारक, संजम तप माया । जय० ४ । नव पद सार परम गुरु भापै, सिद्धचक्र गुणकारी । ए भव परभव रिद्ध सिद्ध दायक, भव सायर वारी । जय० ५ । कर जोड़ी सेवक गुण गावै, मन वंछित पावै । श्री जिनचन्द अक्षय पद पूजत, शिव कमला पावै ॥ जय०६ ॥

॥ इति ॥

॥ श्री ॥

स्तवनावली



॥ मङ्गल ॥

कालेंगड़ा, तेताला

मङ्गल मूरत पाशकी या । मङ्ग० । दारुण पङ्क सकल दुखहारी, दायक हैं सुखरासकी या । मङ्ग० १ । सेवत ईन्द्र चन्द्र रवि सुरगुरु, चाहत हैं नित जासकी या । मङ्ग० २ । निरखत नैन सफल भई आशा, करण चरणके दासकी या ॥ मङ्ग० ३ ॥ इति ॥

बहार, तेताला

आज महोच्छव रंग रलीरी । आ० । जायो सुत त्रिसला-देराणी, कामित पूरण काम कलीरी । आ० १ । सझि सिन-गार सकल सुर वनिता, आपन आपन मेल चलीरी । आवत सिद्धारथके आङ्गण, पूरत मोतियन चोक मिलीरी । आ० २ । इन्द्र हुकुम करी धनद पठायो, सब वसुधा धन धान्य भरीरी । कनक रत्नमणि पंच वरणके, कुसुम बिखेरत गलीय गलीरी । आ० ३ । इन्द्राणी मिल मङ्गलगावे, नाचत नाटक सुर

कुमारीरी। बाजत गहर शब्द कर दुन्धभी, विणा वेणु मृदङ्ग भलीरी। आ० ४। जय जय कार भयो तिहूं जगमें, व्याधि व्यथा सब दूर टलीरी। हरखचंद जनमें प्रभु मेरे, मनकी आशा सफल फलीरी॥ आ० ५॥ इति॥

चैतावरकी चाल, दादरा

मङ्गल राजे गिरनार, नेम पद मङ्गल है। देवा०। मङ्गल राजमती पद पङ्कज, मंगल रहै नेमी राय। ने० १। मङ्गल धन धन्या मुनिनायक, सब तपसि बिच सार। ने० २। मंगल गणपति मंगल पाठक मंगल सब अणगार। ने० ३। जय जय २ खेम कुशल गुरू, आनन्दघन अवतार॥ ने० ४॥ इति॥

काफी, तेताला

गावो मंगलाचार, सखिरी वीर प्रभुको जन्म भयो है। गा०। अवधी ज्ञानकर इन्द्र हूकमदियो, करहु महोच्छव सार। स० १। मेरुशिखर पर देव सकल मिल, करत सुभक्ति अपार। स० २। बहू विधि पूज रचत प्रभुजीकी, सफल करत अवतार। म० ३। जय जय शब्द करत सुर नर वर, जय जय जगदाधार। न० ४। अजय, अमर पद दायक प्रभुजी, सेवो शिव सुखकार॥ न० ५॥ इति॥

ईमन कल्याण-खेमटा

कीजे मङ्गलाचार, आज घर नाथ पधारे। की०। पहले मङ्गल जिनजीकीपूजा, घस केशर घन सार। आ० १। दूजे मङ्गल धूप जो खेऊं, और चढ़ाऊं पुष्प हार। आ० २।

तीजे मङ्गल घण्टा बजाउं, झांझनकी झङ्कार । आ० ३ ।
चौथे मङ्गल आरति उतारूं, नांचूं थेई थेई तार । आ० ४ ।
रूप चन्द कहै कहां लग वरणू, शिव लहिये भव पार ॥ आ० ५ ॥ इति ॥

सोहिनी यत्

आज की रैंण सोहाई, दरस मोहनकी में पाई । आ० ।
पद पङ्कज तेरो, मन मधुकर मेरो, सदा रहत लपटाई । द० १ ।
नवपद ध्यान सदा मैं चाहूं, अवर नहीं दिल भाई । द० २ ।
अजय अमर पद चाहत तुमसे, आनन्द मङ्गल वधाई ॥ द० ३ ॥ इति ॥

भैरवी कहरवा

राखो नाथ वड़ाई हमारी । रा० । सेवा चोर सदा मोहे जानो, दरसन देवोनें गुसांई हमारे । रा० १ । अनाथनके नाथ भगत जिन वच्छल, सुन्दर वदन सुहाई हमारे । रा० २ ।
भान चन्द प्रभु जल थल अम्बर, जहां देखो जहां सहाई हमारे ॥ रा० ३ ॥ इति ॥

कालेंगड़ा कहरवा

आवो गावो बधाई, मोरी साथनियां । आवो० । नृप सुमित्रके पदमा देवी, सुत जायो सुखदाईरी । आवो० १ । जन्म कल्याणक करिये जाको, मुनि सुव्रत जिन राईरी । आवो० २ । तीन लोकके हितकर प्रगट्यो, नाना ऋषि हरषाईरी ॥ आवो० ३ ॥ इति ॥

भैरवी धीमा तेताला

आज तो वधाई राजा नाभिके दुवाररे । आ० । मरुदेवीजीके वेटो जायो ऋषभ कुमाररे । अयोध्यामे उच्छव वड़े मुख वोले जयजयकाररे । आ० १ । घनन २ घण्टा वाजै, देव करे जेजेकाररे । इन्द्राणी सव मङ्गल गावै लावै मोती मालरे । आ० २ । चन्दन चरची पाये लागु प्रभु जीवो चिरकालरे । नाभि राजा दानदेवे, वरसे अखण्डित धाररे । आ० ३ । हाथी देवे साथि देवे रथ देवे तुखाररे । हीर चीर पितम्बर देवे, देवे सव सिनगाररे । आ० ४ । तीन लोक कर दिनकर प्रगटे, घर घर मङ्गलचाररे । केवल कमला रूप निरञ्जन, आदिश्वर जिनराजरे ॥ आ० ५ ॥ इति ॥

भैरवी धीमा तेताला

मङ्गलरे गावत सकल व्रजनार । टेर । मोतीयन थाल भरी जाय वधावोरे, गावत गीत रसाल । मं० १ । केशर चन्दन डावन भरीयारे, कर लिया कंचन थाल । मं० २ । चंदकुशलकी यही अरज है, भवोदधि पार उतार ॥ मं० ३ ॥ इति ॥

चैतावरकी चाल

आजकी रेण सोहानि, देखो आजकी रतियां । आ० । पारस प्रभुजी को जनम भयो है, हरप भई देवा हरप भई वामा राणी । देखो० १ । अश्वसेन घर वटत वधाई, घर २ आनी देवा घर २ मङ्गल मांनी । देखो० २ । दुवार २ सव

तोरण थंभ है, चोखे सुख सेज सेठानी । देखो० ३ । रतन थाल मुगताफल भरके, चोक पुरे इन्द्रानी । देखो० ४ । सुमन अधमको निज पद दीजे, सुध समकित सहनानी ॥ देखो० ५ ॥ इति ॥

धनाश्री तेताला

बाजत रंग बधाई नगरबामें । बा० । जयजय कार भयो जिनशासन, वीर जिनन्दकी दुहाई । नग० बा० १ । सब सखियन मिल मङ्गल गावे, मोतियन चोक पुराई । नग० बा० २ । केतकी चंपो फूल मंगावो, जिनजीकी अङ्गिया रचाई । नग० बा० ३ । न्यायसागर प्रभु चरण कमलसे, दिन दिन ज्योति सवाई ॥ नग० बा० ॥ इति ॥

होरी-जत

बाजत आज बधाई, यापुर देखोरी यहां आई । बा० । अश्वसेन वामा देवी घर पुत्र भये सुखदाई, घर २ नारी मंगल गावें फूले अंग न समाई । या० १ । ढोल दमामा वीन बांसुरी बाजे सुन हरपाई, जिनके जन्म समै करनेको इन्द्र शची युत आई । या० २ । मेरु शिखर ले जाय नन्हनकु फेर बनारस जाई, सौंप नृपतिको पारा नाम धरि तांडवनृत्य कराई । या० ३ । किये निहाल दान दे याचक मान सकल पहराई, चिरञ्जीव रहो वाल हितकारी सव जीवन सुखदाई ॥ या० ४ ॥ इति ॥

मालकोष, चौताला

पार ब्रह्म परमेश्वर, पुरुषोत्तम परमानन्द नाभके नन्द आनन्द कन्द मरूदेवीके श्रीजिनन्द । पा० । मरूदेवी के जन्मे आय, ऋषभ देव नाम पाय, राज तिलक धारे प्रथम तो नरेश नन्द । पा० १ । प्रथम लीन ब्रह्मवार, इन्द्रादिक नमें पाय, केवल तो प्रगट आय वाजत है देव दुन्द । पा० २ । कञ्चन चरण वृषभ लंच्छन, सेवक तो तिहारे शरण, दीजिये कृपा निधान दरशन प्रथम जिनन्द ॥ पा० ३ ॥ इति ॥

धानी, चौताला

अबतो लाज तुम्हारे हाथ, राखु शरण सइआं । अब० । उमर मार्ग खेल खोई, औगुन की वेल बोई, तुम सिवाए नाहीं कोई, पकडो सजन बईयां, । अब० १ । जगमें अनेक देव औरकी न करू सेव, चिन्तामणि रत्न पायो और से क्या कहियां. । अब० २ । पार्श्व प्रभु हो दयाल, पारस करदो निहाल, ऋषभदासको संभाल, शरण तोरी गहियां ॥ अब० ३ ॥ इति ॥

केदारा, एकताला

भजु २ मन जारे तुं कमल नयन ऋषभदेव प्रणत वत्सल करूणा कर, भक्तन प्रतीपालरे तुं । भजु० १ । जाके सुमीरन सों निन पाप हरत व्याधि टरत पावत पद परम उन्नत, चन्द्र, रतन सुगम सुगत भजु दीनदयाल रे तुं ॥ भजु० २ ॥ इति ॥

सेन्दुरा, झपताला

कब हे जगत ईश, मम दुःख हरोगे । दे निज दरस नैन,

शीतल करोगे । टेक । जप, तीर्थ, व्रत, नेम, साधन सकल हीन, केही विधि कहो दानी मोपे दरोगे ॥ १ ॥ इति ॥

अड़ाना, झपताला

छोड़िये न सत और रखिये धरम दृढ़, कीजिये न जासे निरदोषी कहाइये । विपत असाता पड़े सहिये शरीर पै, काहूसे न दीन भाप भरम ना गमाइये । छो० १ । सुत भ्रात हितु मित्र, सजन कुटुम्ब सब, आपको न चाहे ताकुं आपहु न चाहिये । छो० २ । जादोराय महराज, काहुसे न सर्यो काज, ऐसे जीव जान एक प्रभु गुण गाइये ॥ छोड़ी० ३ ॥ इति ॥

सेन्दुरा, झपताला

सुनोजी त्रीलोक नाथ, सामने तुमारे हम नाचत अनाद काल वीते देख लीजिये । सु० १ । सुरनर नारकी तिर्यंच चारगत माहे, केते स्वाङ्ग धरे नाथ कहालो कहीजीये । सु० २ । थाके को मिटायवेको सर्वार्थसिद्ध माहे, नेक वसवे को समकित वीड़े दीजिये । सु० ३ । सेवककी नृत्य देख कृपा रीझ भई होय तो, दीजे शिववास नृत्यपना दूर कीजिये ॥ सु० ४ ॥ इति ॥

आड़ाना, धम्मार १४ मात्रा

शुभ घड़ी शुभ दिन महुरत नाभि नन्दनके चरण परसै । शुभ० । अङ्ग अङ्ग हुलशै चित चेत पुलकै आनन्द के अतिही झर वरसै । शुभ० १ । भव भव तुम दरशन विन साहिब मों नयनां अतिही तरसै । शुभ० २ । ज्ञान प्राण छवि लखि स्वामीकी उदय भाग अवही सरसै ॥ शुभ० ३ ॥ इति ॥

मालकोश, चौताला

लागन लगी रहे मेरे, जिनराज दरशन पावनकी । ला० । मेरो तो जीआ अब एसोही उमगत जैसे घटावर सावनकी । ला० १ । निश दिन सेवा तिहारी करत रहूं, उठ लही प्रभु चरणनकी । ला० २ । मैं तो, आनन्द घनकु दरश दीजिये वानपरी तरसावनकी ॥ ला० ३ ॥ इति ॥

सहाना झप

उबारो हमे कष्टपाए हुए हैं तुम्हारे शरण आज आए हुए हैं । १ । तुम्हे तज कहां जाऊं स्वामी बताओ, जो सेवक तुम्हारे कहाये हुए हैं । २ । पतित तार तुमसा नहीं कोई दूजा पतित और मोसे लजाये हुए हैं । ३ । दया कंद सुख-चंद जगवंद स्वामी, भरोसा तुम्हारा जमाये हुए हैं ॥ ४ ॥ इति ॥

सहाना झप

आप बिना मेरो कौन धनी है, आपको छोड़के कौन नृप आंख-मूल पुतलियां सबही बनी हैं । १ । पारसको छोड़ और कयुं पूजूं-क्या मेरी बुद्धिमें हीन पड़ी है । २ । सबहीके तात मात पति तूंहीं ते ने ही तेने सब जगत जानी है । ३ । मुलचंद कहे मेरे अंतरजामी, प्रभु तुं मेरे शिर ताज मणी है ॥ ४ ॥ इति ॥

हम्मीर धमार, १४ मात्रा

हे जगदीश, नाभी कुमार, भव भय हार दुःख नीवार, तुम

हो अधार नाम तिहार, कीजे पार वेड़ो हमार । हे० । हम हैं शरण चरण तिहार, हे निरधार तुम पर भार, पतित उधार नाम तिहार, इतनी वीनती लीजो वीचार ॥ हे० ॥ इति ॥

ताल लगड़ी, राग बहार

मैं तो ध्याऊं चौवीसों जिनेन्द्र तुम्हें । टेक ।
हे ऋषभ अजितनाथ संभव अभिनन्दनजी ।
सुमति पद्म औ सुपार्श्व का जु करो वंदन जी
देवो चरणांकी शरण हमेशा हम्हें । मैं तो० ।१।
चन्द्रप्रभु पुष्पदंत शीतल श्रेयांस नमो ।
वासुपूज्य विमल नंत धर्म गुण मांहि रमो ।
स्वामी अपने समीप बुलालो हम्हें । मैं तो० । २ ।
शांति कुंथु और अरहनाथ मल्लि जिन स्वामी ।
मुनी सुव्रतनाथ नमि अरु नेमि पार्श्व शिवगामी ।
स्वामी अपवर्ग मार्ग दिखा दो हम्हें । मैं । तो० ।३।
हे महावीर वर्द्धमान जगतके त्राता ।
सन्मति अतिवीर वीर मुझे देउ सुख साता ।
कहता "कुंज" उबारो प्रभो ! भी हम्हें । मैं तो०।४।

बहार तिताला

चरणन चिह्न चितारो चितधर, जिन वंदन चौबीस करो । टेर । ऋषभ वृषभ गज अजितनाथ के संम्भव के पग वाजी सरो । कपी अभिनन्दन क्रोच सुमति के, पदम पद्म के पाय सरो । चर० १ । स्वस्तिक सुपारस चंन्द २ के, पुष्पदंत के

मच्छ सरो। श्री वत्स शीतल चरण कमल, श्रेयांस गेंड़ा सो पाय सरो। चर० २। मगर वासु पुज्य वराह विमल के, स्येन अनंत के पाय सरो। धर्म वजांकुश शांति हरिण युत, कुंथ अजा अर मीन सरो। चर० ३। कलश मल्लि, कुम्र्म मुनि सुव्रत, नमि कमल शतपत्र सरो। नेमि शंख फणि पार्श्व वीर हरि लखि बुध जन आनन्द करो॥ चर० ४॥ इति॥

विहाग तिताला

भजि जिन चतुरवि संति नाम। टेक। जे भजे ते उतरे भवदधि, लयो शिवसुख धाम। भजि० १। ऋषभ, अजित, संभव स्वामी, अभिनन्दन अभिराम। सुमति, पदम, सुपास चंन्दा पुप्पदंत प्रणाम। भजि० २। शीतल श्रेयान् वासु पुज्य, विमल अनंत सुनाम। धर्म शांति जु कुंथु अरहा, मल्लि राखे माम। भ० ३। मुनि सुव्रत नमि नेमि नाथा, पार्श्व सन्मति स्वाम, राखि निश्चय जपो बुध जन, पूरे सबको काम॥ भजि० ४॥ इति॥

सहाना झपताल

सुनिये पारस कृपाल, माता देवी को लाल, दीनको दयाल तोसे, मेरो मन अंटक्यो। मु० १। रुलियो अनंन्ती वार, चौरासी लख मंझार, करमन की लार गति, प्यार माहि अटक्यो। मु० २। नरक और नीगोद पायो, नाना विधि-रूप धर्यो, नव तत्व के माहि फिर्यो, सांग धर्यो नटको। मु० ३। मानक कहे सुख कारण, लीनी अब थारी शरण, मेट्यो कृपा निधान, जनम मरन को खटक्यो॥ मु० ४॥ इति॥

ईमन धम्मार

श्री धर्मनाथ जिनन्द छवी लख आज आनन्द वधाईयां । श्री० । श्री भान नृप घर होत उच्छव सुर कुंवरी मील आइयां । श्री० । वीणा झांझ, मृदंग, नौवत वाजत उफ सरनाइयां । श्री० । दास मानक कहत धुनी सुन जगत जन हरपाईयां ॥ श्री० ३ ॥ इति ॥

सारंग झपताला

मोहे नीकी लागे सूरत तेहारी, मेरो मन वस कीनो ऋषभ वेहारी । मो० १ । धुलेवा नगरमें आप विराजे श्याम मूरत सुभकारी । मो० २ । मस्तक मुकुट कानें कुण्डल विराजे आंगी की छव प्यारी । मो० ३ । सेवग ऊभो अरज करत है; इतनी अरज मेरी मानी ॥ मो० ४ ॥ इति ॥

आनन्द सोरठ झपताला

पूरि मनोरथ साहिव मेरा । अहनिशि सुमरन करहुं में तेरा । पू०१। अन्तराय अरिकरि रह्यो घेरा । ताकि तत छिन करहुं निवेरा । पू० २ । भववन माहि भम्यो वहुतेरा । पुन्य संयोग लह्यो तुम डेरा । पू० ३ । गुणविलास प्रभु टारो फेरा । दीजैं सुपाशजी पास वसेरा ॥ पू० ४ ॥ इति ॥

जयज्वय वन्ती झपताला

साहिव करूणा निधान सुन पुकार मेरी, दीनवंधु जग दयाल शरणागत तेरी। सा० १ । भव अटवी विकट सघन जिसमें अगणित विघन चोर जार ठग लूटै डार मोह अंधेरी । सा० २ ।

किस विध उतरुंगा पार अपना कोई नहीं है लार, अवसर नै स्वामी नाथ चहिये नहीं देरी। सा० ३। सानिध करिये दयाल प्रण अपनेकु संभार, दास चुन्नी पार लहैं छुटैं भव फेरी सा० ४॥ इति॥

राजवीजय धम्मार

प्रभु तेरो रूप बन्यो अति नीको। पश्च वरण के पाट पटम्बर, विच झावो कसवीको। प्रभु० १। समोसरण विच आय विराजें, नायक सकल दुनीको, मस्तक मुकुट काने दोय कुण्डल, हार हिये सिर टीको। प्र०२। समकित निरमल होत सबनको, देख दरश जिनजीको। समय सुन्दर कहे जिन मुख देखे, सफल जनम ताहीको॥ दे०३॥ इति॥

झींझोटी तेताला (वंगला भाषामें)

संसारे आर जातायात करिवो कत। कुमति हरहे मम प्रभु सुमत। भवागनिते दहे हिये, दांड़ाइव कोथा गिये। देहरे शीतल पदछाया दीने सततः। सं० १। अर्हन्त नाम निते रुचि केन हयना चिते। आकर्षये रवि सुते आमाय नियत। शेतावेर ए विनती सुनहे अखिल पति। पुनः येन नाहि हई नाथ कुगति गतः॥ सं० २॥ इति॥

झींझोटी धम्मार (वंगला भाषामें)

आदिश्वर जिनवर देह पदाश्रय। ए भव गर्त्तेते पतित हये निराश्रय। आ० १। त्वं ब्रह्म परात्पर प्रकृति पुरुष पर, जोतिमय रूप हृदे हलोना उदय। धन्य सिद्धाचल भूमि

ताहाते विराज स्वामी । भक्ति मुक्तिहीन आमि ओहे दयामय । आ० २ । दीन हीन शेताव चांदे केनहे संसार फांदे निशि दिशि हिया कांदे तार दयामय ।। आ० ३ ।। इति ।।

'खम्माच' चौताला

धन-धन मरू देवी नंद नाभीराय कुलमें चन्द । आदीश्वर ऋषभानन्द जगत तारक तुं ही । धन० १ । भवियन के कष्ट हरे, जुगलन उधार करे । ज्ञान गहन शास्त्र भरें, जगत तारक तुहीं । धन० २ । साधु रूप आप धरे, केवल से भण्डार भरे । इन्द्र चन्द्र सेवा करें, कष्ट वारक तुहीं । धन० ३ । सिद्ध क्षेत्र समवसरे, मुक्तिनार नाथ वरे । राज अरज ताही करे लाज राखो तुहीं ।। धन० ४ ।। इति ।।

राग देश ताल झपताला

दई नेम बिनु कैसी रतीया वैरन भई, छीन ना कटत मोपै अटल भई । द० १ तोरन से रथ फेरी गयो है, अब तो नयनहुं सो नींद गई । द० २ । इतना संदेशा चन्द्र कहियो नेमजी सो, ऐसो निष्ठुर पीया सुध ना लई ।। द० ३ ।। इति ।।

राग सोरठ ताल तेवड़ा

असमय मीत काको कवन । अ० १ । कमल के रवि परम हित हैं । कहत श्रुती अस बैन, घटत वोरी बिसारी दुर्दिन करत कमलै दहन । अ० २ । वधिक मृगा बान मारयो बिच कानन भौन, शोणित वैरी भयो मेरो खोज दिनो तवन । अस० ३ । फतेचन्द्र बीचार कहे प्रभु नाम की लो शरण । चन्द्र, भव दुःख छुट जैहै मेटो आवागमन ।। अस० ४ ।। इति ।।

सहाना धम्मार

आज नगरमें उछ्छव भारी, श्रीजिनराजकी निकसी सवारी । १ । समोसरण विच आप विराजे, धर्म्म जिनंद चंद सुखकारी । आ० २ । देखत मन हरपित भयो मेरो । जय जय शब्द करे नर नारी । आ० ३ । महर करो अब मोपै जिनवर मानक चरण वलिहारी ॥ आ० ४ ॥ इति ॥

वेलावल, तेताला

तुंही अधार सकल त्रीभुवनको पालक सचराचर भुतनको । १ । नाभी राय मरू देवीके नन्दन, कारण तुं पार ब्रह्म जगतको । २ । तेरो गुणको पार न पावै, शीवपुर धाम देत भविजनको । ३ । फतेचन्द्रको शिव सुख दिजे, नमन करूं प्रभुके चरणनको ॥ ४ ॥ इति ॥

भैरवी-यत्

वलिहारी मोरा देवी नन्दकी, भज नाभिके नन्दन अवध वेहारी । वलि० १ । तीन लोक तिन पावन कीन्ही, आनन्द लहर मुनन्दकी । वलि० २ । कोशलपूर निकट सरयू तट पूरणकला मो चन्दकी । वलि० ३ । दास तुमारो करत विनति जयजय ऋषभ जिनन्दकी ॥ वलि० ४ ॥ इति ॥

भैरवी तेताला

जगदीठा तु मेरा प्रभु प्यारावे, तेरी आंखियांदी मानुं अजब बनी है, सुन्दर श्याम दीदारावे । जग० १ । घड़ि २

पल २ सुमरण तेरो, कबहुं न दीलसे न्याराबे। जग० २।
जो तुझ ध्याया तिन सुख पाया, दरशन ज्ञान आधाराबे॥
जग० ३॥ इति॥

भैरवी तेताला

आज प्रभु तेरे चरण लाग, मिथ्यात नींद मैं खोईरे।
दर्शन कर परशन मन मेरो, आनन्द चित अब होइरे। आज०
१। तुम बिन देव अवर नहीं दुजो, देखा त्रिभुवन जोइरे।
आज० २। दास तुम्हारो करत विनती, तुम बिन मेरो न
कोइरे॥ आज० ३॥ इति॥

भैरवी कौवालो

नेम जिनन्दजी सै आंखलड़ी; मोरी. रैन दिवस नित
लग रहीरे। ने० १। पहले आय उन दोस्ती किन्हीं, ले
पीछे छिटकाय दईरे। ने० २। पशुवन पर प्रभु दया करीनै,
शिव रमणीनें वर लईरे। ने० ३। केई भविक रसना कर
दोस्ती, रत्न विमल पद पाय लई रे॥ ने० ४॥ इति॥

सींध भैरवी अधा

जिनंदा मन भायोरी, मेरो मनमें। टक। कंचन झारी
गंगाजल पानी, प्रभुजी कोन्हवन करायोरी। मेरो० १। कंचन
रकेबीमें कनक कटोरी, नव अंग तिलक करायोरी। मेरो० २।
केतकि चम्पक फूल मंगायो, जूहीका गजरा चढ़ायोरी। मेरो०
३। धूप दीप नैवेद्य ओ अक्षत, श्री फल भेंट चढ़ायोरी। मेरो०
४। चुन्नी सेवक नित उठ ध्यावत, वीर जिनंद मन भायोरी॥
मेरो० ५॥ इति॥

भैरवी, तीताला

आज मेरो अंग अंग हुलसायो, पावापुर क्षेत्र लखायो । आ० । या थानक ते वीर धीरने कर्म कलंक नशायो । कातिक मास अमावसके दिन शिवपुर राज लहायो । आ० १ । जहां सुरपति निर्वाण कल्याणक पूजा करने आयो । जल चंदन अक्षत पुष्पादिक बहुविध द्रव्य चढ़ायो । आ० २ । तदुपरी प्रकाश रुपमणि वृंद दीप झलकायो । सब सुर इंद्र मिल मोक्ष कल्याणक करि फिर स्वर्ग सिधायो । आ० ३ । लखके श्री निर्वाण भूमि हम वंदत मन वच कायो । सेवक तुमरो अर्ज करत है बार बार सिर नायो ॥ आ० ४ ॥ इति ॥

बेहाग तेताला

द्रगन भररी देखन दे मुख चन्द, मोरा देवीमाता श्रीधन धन, जायोछे ऋषभ जिनन्द । द्र० १ । याकुं पूजत अति सुख उपजत, सब जीवन सुख कंद । द्र० २ । याते हित-कर अरज करत है, चीरंजी रहो तेरानंद ॥ द्र० ३ ॥ इति ॥

भैरवी दादरा

मेरी लागी लगन, नेम प्यारे से । मे० । सुनरी सखी एक बात हमारी, कहीयो कन्त हमारेसे । मे० १ । जोगन होकर संग चलूंगी, प्रीत तजुं जग सारे से । मे० २ । नाम लीयासे आनन्द उपजे, कीरत हो उर धारेसे ॥ मे० ३ ॥ इति ॥

भैरवी चलत

गन गई अब प्रात होन भयो, क्या सोवे जिया जागरे

रा० १। दोय घड़ी तड़को अब रहियो, ऊठ धरममें लागरे। रा० २। जिन वानी ऊर बीच धारले, और भरम सब त्यागरे। रा० ३। आनन्द सुगुरु बचन हित मानो, ए सुधो शिव मार्गरे॥ रा० ४॥ ति॥

भैरवी खेमटा

आदि जिनन्द, मेरो आदि जिनन्द। दरसन तेरो है सुखकन्द। मे० १। तुम दरसन विन कल न पड़त है छिन मैं तो दीन हीन पकड्यो सरण। मे० २। दास तिहारो अरज करत है जिनजी अवतो छुड़ावो भवफन्द॥ मे० ३॥इति॥

भैरवी कहरवा

नवरिया मोरा कोन उतारे वेडा पार। इह संसार समुद्र गभीरा किस बिध उतरूंगा पार। न० १। राग-द्वेष दोनुं नदिया वहत हैं। भवर पड़त गति च्यार। न० २। ऋषभ दासको दरसन चहिये। ए वीनती अबधार॥ न० ३॥ इति॥

भैरवी—दादरा

भर लावोरे कटोरा केशरका, में नव अंग पूजुं परमेश्वरका। भ०। मरुदेवी कुखे जन्म लियो है। कुमर नाभि रत्नेसरका। भ० १। केशर चन्दन पुष्प चढ़ाउं। मुख निरखुं ऋषभेसर-का। भ० २। रत्न जड़ितकी आरती उतारुं। नृत्य करुं पर-मेश्वरका। भ० ३। मोती चंदकी अरज वीनती चरण न छोडु परमेश्वरका॥ भ० ४॥ इति॥

भैरवी, तीताला

आज मेरो अंग अंग हुलसायो, पावापुर क्षेत्र लखायो । आ० । या थानक तें वीर धीरने कर्म कलंक नशायो । कातिक मास अमावसके दिन शिवपुर राज लहायो । आ० १ । जहां सुरपति निर्वाण कल्याणक पूजा करने आयो । जल चंदन अक्षत पुष्पादिक बहुविध द्रव्य चढ़ायो । आ० २ । तदुपरी प्रकाश रुपमणि वृंद दीप झलकायो । सब सुर इंद्र मिल मोक्ष कल्याणक करि फिर स्वर्ग सिधायो । आ० ३ । लखके श्री निर्वाण भूमि हम वंदत मन वच कायो । सेवक तुमरो अर्ज करत है बार बार सिर नायो ॥ आ० ४ ॥ इति ॥

बेहाग तेताला

द्रगन भरगी देखन दे मुंख चन्द, मोरा देवीमाता श्रीधन धन, जायोछे ऋषभ जिनन्द । द्र० १ । याकुं पूजत अति सुख उपजत, सब जीवन सुख कंद । द्र० २ । याते हित-कर अरज करत है, चीरंजी रहो तेरानद ॥ द्र० ३ ॥ इति ॥

भैरवी दादरा

मेरी लागी लगन, नेम प्यारे से । मे० । सुनरी सखी एक बात हमारी, कहीयो कन्त हमारेसे । मे० १ । जोगन होकर संग चलूंगी, प्रीत तजुं जग सारे से । मे० २ । नाम लीयासे आनन्द उपजे, कीरत हो उर धारेसे ॥ मे० ३ ॥ इति ॥

भैरवी चलत

रात गई अब प्रात होन भयो, क्या सोवे जिया जागरे

रा० १। दोय घड़ी तड़को अब रहियो, ऊठ धरममें लागरे। रा० २। जिन वानी ऊर वीच धारले, और भरम सब त्यागरे। रा० ३। आनन्द सुगुरु वचन हित मानो, ए सुधो शिव मागरे॥ रा० ४॥ ति॥

भैरवी खेमटा

आदि जिनन्द, मेरो आदि जिनन्द। दरसन तेरो है सुखकन्द। मे० १। तुम दरसन विन कल न पड़त है छिन मैं तो दीन हीन पकड्यो सरण। मे० २। दास तिहारो अरज करत है जिनजी अवतो छुड़ावो भवफन्द॥ मे० ३॥इति॥

भैरवी कहरवा

नवरिया मोरा कोन उतारे वेडा पार। इह संसार समुद्र गभीरा किस विध उतरूंगा पार। न० १। राग-द्वेष दोनुं नदिया वहत हैं। भवर पड़त गति च्यार। न० २। ऋषभ दासको दरसन चहिये। ए वीनती अवधार॥ न० ३॥ इति॥

भैरवी—दादरा

भर लावोरे कटोरा केशरका, मैं नव अंग पूजु परमेश्वरका। भ०। मरुदेवी कुखे जन्म लियो है। कुमर नाभि रत्नेसरका। भ० १। केशर चन्दन पुष्प चढ़ाउं। मुख निरखु ऋषभेसर-का। भ० २। रत्न जड़ितकी आरती उतारुं। नृत्य करुं पर-मेश्वरका। भ० ३। मोती चंदकी अरज वीनती चरण न छोड़ु परमेश्वरका॥ भ० ४॥ इति॥

भैरवी तेताला

म्हारो मुझने कब मिलस्यै मन मेलू। मन मेलू विन केलिन कलिए। वालकवल कोई वेलु। म्हा० १। आप मिला थी अंतर रापें। सुमनुप ते नहि ले लू। म्हा० २। आनन्द घन प्रभुमन मिलियाविन। कौन चि विलगैंचेलूं॥ म्हा० ३॥ इति॥

भैरवी दादरा

वयना पीहरवा गये नयना वदल। नयना वदल गये वनकुं निकल गये, नेमि प्रभु वृत लीना सुधर। वय० १। वीआहनकुं आये, मेरे दुला कहाए। देके दरस गये तोरण से फिर। वय० २। मोड़ारथ परमारथ के कारण। कंकणको तोड़ लिया संजमको धर। वय० ३। पशुवन पुकारे प्रभुजी निहारे। दुखिया विचार छोड़े वन्धन कतर। वयना० ४। लेलो प्यारी छमा हमारि। मुझें वेगी बता दो गिरनारकी डगर। वय० ५। करूंगी नयन सुखकारी तपस्या। में तो लूंगी प्रभुके पद पंकज पकड़। व० ६॥ इति॥

भैरवी कहरवा

मसीरी म्हारो, नेम गयो गिरनार। तारि है राजुलनार मखिरी०। तोरन से रथ पीछे फेरयो, पशुवांरी सुनीछे पुकार सखिरी० १। सहसावनकी कुंज गलिनमें, पंच महाव्रत धार मखिरी० २। राजुल उभी अर्ज करत है, आवागमन निवार। मखिरी० ३। चंद कपुरा कहे कर जोडी, चरण सरण आधार॥ मखिरी० ४॥ इति॥

भैरवी खेमटा

मैंतो दासी तुमारी विना दामकी। नजरमें जो ठहरूं किसी कामकी । मैं १ । और देवसे काम नही मेरे, दिलमें वसि है सूरत श्यामकी। मैं० २ । घड़ि घड़ि पल पल छिन छिन निस दिन, रटना लगी है तेरे नामकी । मैं० ३ । राखूंगी आखोंमें सुरमें से बढ़के, जो पांउगी रज मैं तेरे धामकी। मैं० ४ । तप जप संजममें चित लावो, जासे मिले राज शिवधाम की । मैं० ५ । जैन धरम मानव भव पाके, करले भलाई आतम-रामकी। मैं० ६ । दासी गुलावकी एहि अरज है, सार करो मुझ नाकामकी ॥ मैं० ७ ॥ इति ॥

झींझोटी, तेताला

वसोजी मेरे नैननमें महाराज, सामलि सूरत मोहनि मूरत तारण तरण लिहाज। ब० १ । वानी सुधारस दरस ऊपन्यो करतां अगम अपार। ब० २ । चेन विजय करजोड़ी वीनवे, चरण कमल सिरताज ॥ ब० ३ ॥ इति ॥

राग भैरवी

दीनके नाथ दयाल सवन को। तैं काहेकु कृपा विसारीरे दीन० । १ में हुं दीन अनाथ जगत मै तूं साहिव उपकारीरे दीन० २ । पण अपने की रीति निवहिये। दो संपद सुखकारीरे दी० ३ । दास चुनी सेवककी अरजी । सुनीये प्रभु जसधारी रे ॥ दी० ४ इति ॥

भैरवी तेताला

प्रभु मोरे कवन वहाने बोलो, रैंन दिहा मानं, ध्यान तु मांडा अंतर दी पट खोलो। प्र० १। हाल असांडा तुझनु मालुम जो स्वामी टुक जोलो। प्र० २। आस पुरावो दासको स्वामी झटपट सद्ग मिलालो। प्र० ३। दास चुनी पायो रत्न अमोलक वेर २ क्यु तोलो॥ प्र० ४॥ इति॥

रागणी भैरवी ताल तेताला

भविकनरसेवोशांतिजिनन्द। कंचन वरन मनोहर मूरती दीपत तेजदिनन्द। १ भ०। पंचम चक्रधर सोलम जिनवर विश्वसेन नृप कुलचंद। २भ०। भवदुखभंजन जनमनरंजन। लच्छन मृग सुखकन्द। ३ भ०। गुनविलास पदपङ्कज भेंटत। पाओपरमानंद॥ ४भ०॥ इति॥

रागणी भैरवीमे होली-ताल कवाली

मेरे ल्याई जुई गुलावरी। आज प्रभु पूजनको हरख भयो। एटेक। केतकीचंपकमरूउ मोगरी। फूलकी पगर भरावरी। आज प्रभु०। १। मुकुट कुंडल शिर छत्र विराजे। आंगी सोहे जडावरे। आज० २। संत सवे मिली भावना भावो। मादलताल मिलवारी। आज ३। अनन्तनाथ जीके, गुणगाउ लाल गुलाल उडावरी। आज० ४। करजोरी प्रभु आगेअरजी। भवदुखसे छोडावरी। आज० ५। आठो पहर रहे नाम तुम्हारी। ध्यानधरु शुभभावरी। आज०। ६। आनन्द हर्ष वधाई उनको। विनय सहित गुणगावरी॥ आज० ७॥ इति॥

सिन्ध भैरवी तेताला

कुणवनवीरसमोसरया, मैतोसुणिहे श्रवणधुनी आजरी कुण । जंगम तीरथ सुरतरु जगनायक श्रीजिनराजरी । १ कुण० । गोतमगणधर सारिषा साथै एकादश गणधाररी । मुनिचऊदसहससाथेभला गुरुतारणतरणजिहाजरी कुण० । २ । समवसरणरचनारची मिलचउसठसवीसुरराजरी सूर नर विद्या धर मिली मिलचहुविहसंघ समाजरी । ३ कुण । घणारेदी वशनी भावनाम्हारी सफल फली सब आजरी । चलो सखी विलॅवनकीजिये वंदीजेश्रीजिनराजरी । ४ कुण० । भावभगति दिलमें घणी सझि साथै सामग्रीसाजरी । हरखचंद रांणी चेलना सारयानिज आतमकाजरी ॥ ५ कुण० ॥ इति

सिन्धु तेताला

आदिनाथ जिन प्यारा हो, तेरो दरशन आनन्दकारा १ । नाभि राय मारुदेविके नन्दा । तुम तारण संसारा । हो ते० । तुमरे गुणको पार न पावे भजन करे जग सारा । हो ते० ३ बरष दिवसने पारणे स्वामी पीयोरस अ पारा । हो ते० ४ ईन्द्रचन्द्रनी आस्या पुरो । मेटो कष्ट हमारा, हो ते० ५ ॥ इति ॥

भैरवी दादरा

समझ परी मोहे समझ परी जगमाया सब झूठी ज० । १ ॥ आजकल तु कहा करै मूरख नांहि भरोसा दिल येक घरी ज० । २ । गाफिल छिन भर नांहि रहो तुम, सिर पर

घुंमे नेरे काल अरी ज० । ३ । चिदानंद ये वात हमारी प्यारे जाणो हो नित्त दिल मांहि खरी ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

भैरवी दादरा।

चितमें धरो प्यारे चितमें धरो । ये सीख हमारी अब चितमें धरो, थोड़ासा जीवनां काज अरेनर काहे कुं छलपर पंच करो ये० । १ । कूड कपट पर द्रोह करण तुम अरे मन पर भव थाह भरो ये० । २ । चिदानंद जो ए नहीं मानौ नो जनम मरन भव दुखमें परो ये० ॥ ३ ॥ इति ॥

भैरवी दादरा

दोनुं दसतोमें अंगीया रचावो सखी, नयना हमारी प्रभुसेलगी । दोनुं । जाली की अंगिया प्रभुकी रचावो । मसतक मुगट पहनावो सखी । नय० १ । चलो सखी बागोमें जईये । चुन२ कलियां चढ़वो सखी । नय० २ । चलो गउडीजिनवंदन जईयें । नित्य करो सव मिलके सखी नय० ३ । सांवरी मूरत खूब रची हैं, तेखतही मन निहारो सगरी । नय० ४ । संवत उनीसे चऊदेको साले माघ वदि तीथ नवमी सखी । नय० ५ । सुन्दर विजयजीकी एहिअरज हैं । नित उठ चरण पखालो सखी ॥ नय० ६ ॥ इति ॥

भैरवी दादरा

मेरा मन लागो रह्यो महावीर चरणमें जाय । सिद्धरथके नन्दन मेरे । माताविसला देवीमाय । मे० १ । जन्मनही स्वामी मेरुकंपायो संसयदीया है मिटाय । मे० २ ।

सचित्त उट स्वामि जनम लिया है मुगत पावा पुरी जाय । मे० ३ । जो कोई ध्यावे स्वामी मोफल पावे, चंद किरत गुण गाय ॥ मे० ४ ॥ इति० ॥

भैरवी लगड़ी

प्रभु मेरी विन तड़ी उर धारो । तुम तारण तिहुं लोकके स्वामी । मोहे भरोसो तिहारो । प्र० १ । मोसो पतीतन आ जगमें कोई । मैं ऐसो जग सारो । प्र० २ । तुम प्रभु तारण. पतीत उधारण । भवसागरसें तारो । प्र० ३ । भूल सेवककी चित्त न दीजे अपनी ओर निहारो ॥ प्र० ४ ॥ इति ॥

कालंगड़ा. तेताला

नाथ भयो वैरागी हमारे । कासे जाय कहुं मेरी सजनी । चीन अवगुन मोहे त्यागी । हमा० । परवस तुती जाय पड़ी है । तुही तुही रटणा लागी । ह० ना० । लाल चीनोदी ईह रूपको नीरखत । वीरह वृथा तन भागी ॥ ह० ना० ॥ इति ॥

भैरवी लगड़ी

तारियें मोहे शीतल स्वामी । शीतल स्वामी अन्तर जामी । आंकड़ी । काल अनादि पुदगलके संगे, भटकत भयो हुं निकामी । तारो० १ । एसो न रहियो कोई थानक मरण विनाको अंतरजामी । २ । ओर फीर सुष्यम बादर पुदगल । परावरत कियो सीरनामी । तारि० ३ । अधम उधारण विरुद तिहारो कृपा करि तारो भव्यजानी । भानु

चंद कहे प्रभुजीकी सेवा सिवसुख की है यही निशानी। तारो० ४ ॥ इति ॥

भैरवी कहरवा

क्योंकर भक्ति करूं प्रभु तेरी ।क्यों०। काम क्रोध मद मान विषय रस, छोड़त गेलन मेरी। प्र०। करम न चावत तिमही नाचत माया वस नट चेरी। प्र०। दृष्टि राग द्रढ़बंधन बाध्यो निकसत न लहे सेरी। प्र०। करत प्रशंसा सब मिल अपनी। परनिंदा अधिकेरी। कहत मान जिन भाव भगत बिन शिवगत होत न नेरी ॥ प्र० ॥ इति ॥

भैरूं तेताला

भोर भयो भोर भयो भोर भयो प्राणी। चेतन तूं अचेत चेत चिरिया चहचहानी। भो०। कवल खंड खंड विकस कोलनी मुदानी, कंज उपम खंजनसी नैना में घुरानी भो०। हैं विभाव बीच नीन्द सुपनकी निसानी, तेरे सु सुभाव माहि दोनुं न समानी। भो०। आरोपित धर्म तें सुरूपकी दुरानी, रूपके सुज्योत ज्ञानसागर ज्योत ठानी ॥ भो० ॥ इति ॥

कड़खा देशी

भाव धरी धन्य दिन आज सफलो गिणुं आज मैं गर्जिन आनन्द पायो भा०। हरख घर निजर भरि विमल गिरि निरख कर रजत मणि कनक मोतिन वधाय भा०। पग पगें उमग घर पंथ नित फरुसतां धन्य दो चरण जिन

चलत आयो आंज धन दीह जागी सुकृत की दसा आज धन दीह प्रभु सुजश गायो भा०। दूर दुर्गति टलीं यात्र विध सुकरी पुन्य भंडार पोतैं भरायो वदत जिन राज मन रंग सुरगिरि शिखर, ऋपभ जिन चंद सुरतरु कहायो ॥ इति ॥

भैरू कहरवा

सांवरिया साहेवका मिल भविजन गुण गावें। काशीदेश परम धाम, वनारसी सहर नाम, तीहां प्रभु जनम लीन, राणी हुलसावे। सां० १। अस्वसेनजीके नन्द, वामा जननी जिनन्द; लच्छन शोहे फनीन्द्र, धरणीन्द्र वधावै। सां० २। संवत् शुभसे उनिस, आसाढ़ सुकल नवमी दीश श्रीजिन सौभाग्य सूरि, प्रतिष्ठा करावे। सां० ३। श्रीसंघ सव मिले आय, उछव करे प्रभु वधाय, रामवाग नवल मंदिर, प्रभुको पधरावे। सां० ४। सेवक तो आयो धाय, सुनियो प्रभु चित लगाय, गुण समुन्द्र विनये करी प्रभुके जश गावे ॥ सां० ५ ॥ इति ॥

भैरू कहरवा

क्या तें गाफिल सूता है अव उठरे भया सवेरा। क्या०। ए संसार हाट का मेला। चिड़िय रयन वसेरा। क्या०१। मातपिता सुत वनिता कारण। मोह मदनने घेरा। तन मद धनमद योवन के मद। कंचन कचरे मेगेरा । क्या०२। पग धरतें धरती धूजावै। फूक फूक तन हेरा। चंद दिवस की है रोशनाई। आखर जाणो अंधेरा। क्या ०३। हरि हलधर

सागर चक्री । भवन आरीसाकेरा । छोड़ छोड़ गये जंगलवासी । रंग महल क्या तेरा । क्या० ४ । जो माने सो चतुर कहावै । वचन चटाका मेरा । ए हीत सीख दीया है सवकुं । इन्द्रचँद का चेरा ॥ क्या०५॥ इति ॥

रामकली तेताला

लेना हो सो लेले वावा । फिर पीछे पिस्तावेगा कर प्यारे सुगुरुण की सेवा । वही नफा वतलावेगा । ले० १ । जो समय गाफिलमें जावे । फेर न पाछे आवेगा । कर सुमरण साहिव के नामका । अजय अमर पद पावेगा । ले० २ । विकट वाटड़ि चलनि प्यारे । शूल विपम का आवेगा । जव काटा लगगीरे प्यारे वड़ी विपद उपजावेगा । ले० ३ । खोटी करनि पार उतरणी । कहो कैसे विध होवेगा । ए होनी कवहि नहीं प्यारे । मूल पदारथ खोवेगा ॥ ले०४ ॥ इति ॥

भैरवी कहरवा

लोक चवदे के पार किनारे । पूरण ब्रह्मका वासा है । पैतालीस लाख जोजनकीसीला । फिटक रतन उजवासाहे लो० १ । पंचवर्ण की धजा फरूके । क्या कहुं अजव तमासा है । चोपट ईन्द्र खड़े तेरेद्वारे खिजमतवन्दा खासाहे । लो०२ । निशिदिन ध्यान तुमारा ध्यावुं, उग्न की नहीं आसाहे । रूप चंद भगतिकी विनती,चरणकमलका दासाहे ॥ लो०३ ॥ इति ॥

भैरू कहरवा

सुजरा साहिव मुजरा साहिव, मुजरा साहिव मेरारे । साहिव सुविध जिनेश्वर स्वामी, चरण पखालुं तेरारे । मु० १ । केशर

चन्दन चरचुं अंग, फूल चढ़ाउँ सेहरारे । घण्ट बजाउं अगरऊ खेऊं, करूं प्रदक्षिणा फेरारे । मु० २ । पञ्च शब्द वाजित्र वजाउं नृत्य करूं अति घेरारे । रूपचंद गुण गावत हरपित दास निरञ्जन तेरारे ॥ मु० ३ ॥ इति ॥

भैरवी कहरवा

लागी लगन कहो कैसे छुटे प्राण जीवन प्रभु प्यारेसे । ला० १ । निर्मल निर कमल सरोवरमें, भ्रमर रहत न निवारे से, जैसे चन्द चकोर मगनमें चकवी चक जग तारेसे । ला० २ । राजसिंह नवलो नेह लाग्यो नायक नाभि दुलारे से ॥ ला० ३ ॥ इति ॥

भैरवी कहरवा

तुम विना दीनानाथ जगतमें अवर नहीं कोई मेरारे । तु० । तारण तरण कृपा निधि स्वामी विरुद सुना तुम केरारे । तु० १ । एक भरोसा जाण प्रभुका । चरण कमल का चेरारे । अब तो सरण लिया तुमारा । दीजे दरस सवेरारे । तु० २ । रागी दोपी देवीदेवा । उनके बड़ा अंधेरारे । धनधन प्रभु सबके उपकारी । तुमकुं हमने हेरारे । तु० ३ । दिल अंदर की तुमही जाणो । घटघट वास वसेरारे । सुख साता के दाता जगपति । मेटो करम विखेरारे । तु० ४ । कहत अबीर मन तन लगाई । जैसे चंद चकोरारे । आठ पहर घड़ी चौसठ मा है । नाम जपूं मैं तोरारे ॥ तुम ० ५ ॥ इति ॥

भैरवी दादरा

देखो भवि वीरप्रभु पावापुर आवे। सुरनर सब इन्द्र आय। पूजत सब प्रभु पाय, इन्द्राणी मिल मङ्गल गावे आनन्द बधावे। दे० १। विन्तरादिक देव आय तिन पीठ तिहां रचाय। सोभा तन अति सुहाय, दुन्दभी बजावे। दे०२। आनन्द बरधन सुहाय, मन खुस्याल चंदके भाय, जीनजीके गुणग्राम सुमन राय गावे॥ दे०३॥ इति॥

खम्माच रूपक

मेरे इतनो चाहिये नित दरसन पांउ, चरण कमल सेवा करूं मेरो जीव रमाउं। मे० १। मन पङ्कजके महलमें प्रभु पास बसाउं, नियट नजीके हुय रहुं चरणें चित लाउं। मे०२। अन्तरजामी एकतुं अन्तरीक गुण गांउ आनन्दघन प्रभु पासजी मैं और न ध्याउं॥ के०३॥ इति॥

काफि कहरवा

आंगन कल्प फल्यांरी हमारेमाई। आ०। रिध त्रिधि सुख सम्पति दायक श्रीशांतिनाथ मिल्योरी। हमारे०१। केसर चंदन मृगमद मेली माहि बरास मिल्योरी। पूजत श्रीशांति नाथजीकी प्रतिमा अलग उढंग टल्यांरी। हमारे०२। सरणें राख कृपा कर साहिब ज्युं पारे वो पल्योरी। समय सुन्दर कहे तुमारी कृपामें, हुं रहि ज्युं मोहिलोरी॥ हमारे० ३॥ इति॥

बिलावल लगड़ो

देखोरे आदीश्वर स्वामी कैसा ध्यान लगाया है। दे०

कर उपर कर अधिक विराजे नासा ध्यान लगाया है। केवल ज्ञान उपाय जिणेश्वर मुक्ति रमणीकुं चाया है। दे० १। दशविध पूजा रचना जिनको सब मिल मङ्गल गाया है, सेवै सोही लहे सुख संपत सब संतन मिल गया है। दे० २। सुरनर मुनिजन भक्ति करत है छवि देखत मर्न भाया है, तीन लोकमें महिमा तेरी चंदखुशाल गुण गाया है॥ दे०३॥ इति॥

मिश्र भैरवी तेताला

योगीश्वर तेरी गती क्या कोई विचारे। यो०। अनुभवकी वात अगमविरला कोईधारे। यो० १। अदभुत अखंड जोत शोभा त्रिभुवनमें होत निरुपम है रूप परम गुण आनंद कारे। यो० २। योगमें अयोग नही संसारी भोग नहीं राग द्वेष मोह कर्म फंदसैं किनारे। यो० ३। मत मतके भेद बहुत कर्मकी लपेट बहुत नानाविध रूपधरे पंथ न्यारे २। यो०४। स्वैमतमें भेद नहीं वेदमें अवेद नहीं भरमजाल वीचमें अनेक भेदडारे। यो० ५। चुन्नी लख अलखनाम अजपाजप सिद्ध काम, सोहं जयकारी निज काजही सुधारे॥ यो० ६ इति॥

पीलु कहरवा

प्रात समे सुमरन कर मनुवा जिनवर नाम सदा सुखकार। जिनवर तुमको जन्म दियो है सुन्दर नर भवके अवतार। प्रात० १। आर्य देश उत्तम कुल पायो, सुगुरु संयोग मिल्यो श्रीकार। देह निरोगी धरम सामग्री ए सब पाए पुण्य प्रकार। प्रात० २। अब तो विषय रसमें लागो,

भूल गये अपने आचार। सुकृतकी न करी कछु करणी धिग धिगरे मन मूढ़ गंवार। प्रात० ३। कपट कुटिलता कर धन जोड्यो पोष्यो सगलो निज परिवार। अंत समे कोई काम न आवे, जाय अकेलो हाथ पसार। प्रात० ४। बनि आवे तो करले भलाई जप तप नियम परम उपकार। कहत अमीर मिले गत चोरासी, अविनाशी अविचल अविकार॥ प्रात० ५॥

ढोला इन्द्र सभाका चाल

आदिनाथ पहेलानमुं, शिव दायक स्वामी। अजितनाथ बीजानमुं, जग अंतरजामी। १। श्री संभव तीजानमुं, त्रिभुवन जन हितकार। अभिनंदन चोथा नमुं, प्रभुजी जग आधार। २। सुमतिनाथ जिन पांचमा, सुमति दातार। पद्म प्रभु छट्ठानमुं, पहुंता मुक्ति मझार। ३। श्री सुपार्श्व जिन सातमा, कर्या कर्म चकचूर। चन्द्र प्रभु जिन आठमा, पाम्या सुख भरपूर। ४। सुविधि नाथ नवमा नमुं, प्रभुजी परम दयाल। दशमा श्री शीतल प्रभु, काटे कर्मनी जाल। ५। श्री श्रेयांस इग्यारमा, प्रभुजी गुण मणि खाण। वासु पूज्य जिन बारमा, दिन परम कल्याण। ७। विमलनाथ जिन तेरमा, विमल निमल गुण खान। अनंतनाथ जिन चवदमा, प्रगटे आतम ज्ञान। आ० ७। धर्म नाथ जिन पंदरमा, धर्म तणा दातार। शान्तिनाथ जिन सोलमा, उतारे भव पार। आ० ८। कुंथुनाथ जिन सत्तरमा, तारक त्रिभुवननाथ। श्री अरनाथ नाथ अठारमा, साचा शिवपुर

साथ । ६ । मल्लीनाथ उगणीसमा, जगपति श्री जिन राय । मुनि सुव्रत जिन वीसवां, दिठा आवे दाय । १० । नमीनाथ एक वीसवां, धारक गुण समुदाय । नेमीनाथ वावीसमां, भक्ति करो चित लाय । ११ । आशा पूरे पासजी, तेवीसमां जिनचंद, वर्धमान चौवीसवां, प्रणमें सुर नर इन्द्र । १२ । ए चोविसे जिन सदा, समरी चित्त लगाय । आतम निर्मल कीजिये, प्रभुजी ना गुण गाय । १३ । प्रभु समर्या पातिक कटे, क्रोड़ विघन टल जाय । अंबालाल कर जोड़ीने, प्रणमें जिनवर पाय । १४ । संवत उगणीसे इग्यार वर्ष । माघ सुदी पंचमी सार । जिन गुण गाया प्रेमसु, रत्नपुरी मझार ॥ १५ ॥ इति ॥

गजल भैरवी

आसरा तुमारा जैसे डुवतेको वेड़ा । अंधेको लकडी जैसे मुझे नाम तेरा । पारससे स्वामीजीका जपत होय सवेरा । आ० १ । काम, क्रोध, लोभ, मोह आनके धघेरा । ऐसे कृपा कीजे जैसे मेहका ढ़ंडेरा । आ० २ । तूं साहव मेरा है वंदा मैं तेरा जनम पाय जादुराय । चरणन का चेरा ॥ आ० ३ ॥ इति ॥

प्रभाती दादरा

तीरथ पति नेमनाथ जदुपति जदु राई । तीर० । सावरों सलूणोगात, राणी शिवा देवी मात, समुद्र विजय नृपति तात शंख लंछन पाई । तीर० १ । वावीसम जिनराज देव

सुरनर सब सारे सेव देवनके देव प्रभु त्रिभुवन सुखदाई। तीर०२। उत्तम गुण ज्ञान वान करुणारसके निधान दीनो तिहां अभयदान जीवनके तांई। तीर०३। तोरनसे रथ फिराय पहुंचे गिरनार जाय, संजमव्रत लीनी धाय सहसावन जाई। तीर० ४। समवशरणमें जिणंद बैठे उपशमके कंद पूजत पद इन्द्रचंद ननमन हुलसाई॥ तीर० ५॥ इति॥

८ प्रभाती दादरा

जागरे वटाऊ अब भई भोर वेला, भया रवीका प्रकाश कुमद थये विकाश, गया नाश प्यारे मिथ्या रयणका अंधेरा जा० १। मुसाफिम आवे घाट चालवी जरूरवाट, कोई नहीं मित्र परदेशमें जुं तेरा। जा० २॥ अवसर वीत जाय पाछे पछ ताना थाय चिदानन्द निसचे ए मान कह्या मेरा॥ जा० ३॥ इति॥

बेहाग तेताला

रटन जिन चौवीसो गुण ग्राम, मिले तीहा भव दधि शिव-पुर धाम। र० १। वीतराग अरि दम कर्म न सब तीर्थंकर रद ध्यान। ऋषभ, अजीत, सम्भव, अभीनन्दन, सुमति भजो गुणज्ञान। र० २। पद्म, सुपारस, चंदा प्रभुजी, सुविध, शीतल उर आन। श्री श्रेयांस, भजो वासपूज्य, प्रभु विमल, अनन्त गुण ज्ञान। र० ३। धर्म धुरन्धर धर्मनाथ प्रभु, शान्ति सुधाकर पान। कुंथुनाथ, अरि मल्ली गुन मुन, मुनि सुव्रत व्याख्यान। र० ४। नमिनाथ प्रभु नेम यादवपति, पार्श्व करो शुभ

ध्यान। शासन पति महावीर तीर्थंकर वर्धमान प्रभुनाम । र० ५ । गुन रटना निज आतम प्रगटो केवल से निरवान। राजदास सेवा सुध समकीत मिलो अनहद धुनि तान ॥ र० ६ ॥ इति ॥

छंद ताल तेवड़ा

मन सुमरीये चौविश जिनको पञ्च पद गुण गायरे। असिआउसा नाम मन धरि। पूजिये जिनरायरे। म० १। प्रथम ऋषभ जिन आद देवा, अजित दुजे नामरे। तीजे सम्भव अभिनन्द चौथे, सुमत पाँचे धामरे। म० २। पदम प्रभु छट्टे जिनेश्वर, सातम सुपारस वन्दरे। अष्ट कर्म को नास कीन्हे, आठमां जिनचन्दरे। म० ३। सुविधि नव मे, दशम शीतल, इह नाम चित्तमें धाररे। इगारमें श्रेयांस देवा वास पूज्य जिन वारमें। म० ४। विमल तेरे ज्ञान निरमल, मुक्ति के गुण ठाणरे। भजन कीजै अनन्त जिनको चौदमो जिन भाणरे। म० ५। धरम जिन पंदरे तीर्थ कर सोलमों प्रभु शान्तिरे। सतरमों श्री कुंथ स्वामी जोति निर मल कान्तिरे। म० ६। अठारमें अरनाथ ज्ञानी, मल्ली उगनी-समो कन्तरे। मुनि सुव्रत जिन वीस धारो नमि इक वीस सन्तरे। म० ७। नेमि जिन ब्रह्म ब्रतधारी वावीस मो जिनदेवरे, पार्श्व जिन तेवीस सुमरो वीर चौवीस सेवरें। म० ८। चौविस जिन मन ध्यान करके, तरण तारण नामरे भाव भगति जिन भजन कीजै, मिले शिव निज धामरें।

स० ९ । जप तप सञ्जम करे, चेतन वन्दना त्रिकालरे । पड़े गुण सुने मनस्युं, तसघर मङ्गल मालरे ॥ स० १० ॥ इति ॥

प्रभात दादरा

वन्दो जिनदेव सदा चरण कमल तेरे । ऋषभ अजित संभव अभि नन्दन जिनकेरे । सुमत पदम श्री सुपाश चन्दा प्रभु मेरे ।व० १। पहुपदन्त संत सुविध शीतल श्रेयांस गुन घनेरे । वास पूज्य विमल अनन्त धरम जग उजेरे । व० २ । शान्त कुंथ अरीमल्ल मुनि सुव्रत मेरे । नमी नेम पारसनाथ वीर धीर हेरे । व० ३ । सुमरत प्रभुनाम सकल मेटत भव फेरे जनम पाय जादू राय चरणनके चेरे ॥ व० ४ ॥ इति ॥

भैरवी जलद तेताला

परम शान्तिरसभीनी मूरत, जिनवरदेव सुहावेरे । प० । सुरत्रिय नित्य करत नित जाकें । देखत चित चपलावेरे । प० १ । आप रागसे रहत वैरागी । परकु राग चढ़ावेरे । प० २ । थासब याकुल यातेरी महिमा जगत नाम जग गावेरे ॥ प० ३ ॥ इति ॥

भैरवी जलद तेताला

अनुभव सुजन संघाति मेरे, साचि कहो कब आवेगें । मोगुं सांचि कहो मेरी आली, कब मोहे दरस दिखावेगें । १ । कोन कुमतके संग रमें प्रभु, पर घर रैंण विहावेंगे । २ । मन मलीन नलनीकी संगत, विरथा काल गमावेंगे । ३ । कोंहं उपाय करों चतुराई निकलंकी हो आवेंगे । ४ । दास चुन्नी धर्मकी ठकुराई, पाय अचल सुख पावेंगे ॥ ५ ॥

भैरवी तेताला

वीर प्रभु त्रिभुवन उपगारी जान सरण हम आये हैं। वी०। पावापुर स्वामी दरसन पायो दुख सब दूर गमाए हैं। वी० १। केवलपाय पावापुर आये समव सरण विरचाए हे संघ चतुर्विध थापना करके शिवपुर पंथ चलाए हैं। वी० २। महिमण्डल विचरत जिनवरजी बहुचेतन समुझाए हैं तीन लोकमें अद्भुत महिमा सुरनर मुनिजश गाए हैं। वी० ३। चरम चोमासे पावापुर आए करसब करम खपाए हैं, सोले पहर लगदेसना देता परम २ पद पाये हैं। वी० ४। अमृत धर्म सुवाचक प्रभुके दरसन कर हुलसाए हैं। सीस क्षमा कल्याण सुभावें शासनपति गुणगाये हैं॥ वी० ५॥ इति॥

सेन्दुंरा झपताला

आजतो हमारे भाग वीर प्रभु आये है। आ०। चंदना खड़ी दुवार चित्तमें करे विचार देखत दीदार हीये हरष भराये हैं। आ० १। आज मेरी आसफली अली मेरे रङ्ग रली। विकसीत आतम कली। प्रभु पात्र पाए हैं। आ० २। धन दिन आज मेरो गयोसव कर्म झेरो सुकृत बहुतेरो, भगवान दिल भाये है। आ० ३। सिद्धारथ राय नंद सोहत शरद चंद। कहै जिन चंद चित आनन्द वधाए हैं॥ आ० ४॥

भैरवी कहरवा

कवण नींद सूता मन मेरा प्रभु सुमरणकी वेलारे। क०। एटेर। चेत चेत नवकार समरले समझ २ मन मेरारे।

अवकी बेरियां भूल जायगो रहत खायगो फेरारे। क० १। झिरपरकाल फिरें गरसांघे अवमन चेत सवेरारे। रङ्गमहल से उतर जायगो जङ्गल होयगा डेरारे। क० २। हिरदे ज्ञान प्रकाश्यो नांहि, गुरु विन वहुत अन्धेरारे, चेन विजयकी एही वीनती, होय सदगुरुका चेरारे॥ क० ३॥ इति॥

प्रभाती दादरा

आवत नर इन्द्र चन्द्र, पूजत है अति उमङ्ग, मङ्गल ध्वनि करी आनन्द प्रभुको वधावे। जय २ श्रीजगआधार, जगदीश्वर गुण अपार समताके तुमही सार, मुनि जन यश गावे। आ० १। सुमतिनाथ तुम दयाल, वाणी है अति रसाल, भव्य जीव प्रतिपाल, मनही हर्ष आवे। आ० २। सुख चित्त ध्यावे कोई, मन वंछित पावे सोई, नयनानन्द मुख जोई, अजयराज पावे। आ० ३। भक्ति वच्छल जगतनाथ तुमही त्रैलोक्यनाथ, सेवक करिये सनाथ हृदय ज्ञान आवै आवत० ४॥ इति॥

भैरवी दादरा

जिनन्दा मोरी नईया लगा दो बेडा पार। १। मैं विनवुं वारम्वार। जि०। यह संसार गहर कर सींधु। जाको न दीसे किनार। जि० २। काम तरङ्ग उठे अति भारी मोह मकर मझधार। जि० ३। मिथ्या मतको मेघ चहुं-दिस। छाय रहो अन्धकार। जि० ४। लाल चुनी कर जोड़ी विनवे। वेगी करो भवपार॥ जि० ५॥ इति॥

अलहीया, तेताला

भगवत भजन करनकी वेला, क्या सोवे उठ प्रगट ऊजेला। भ० १। काल निरर्थक मत खोयो प्राणी फिर पानां नर जनम दुहेला। भ० २। ज्योति स्वरुप निरख अविनाशी, घट वासी तन ताप वुझेला। भ० ३। अलख निधान प्रगट सनमुख हैं जिनसे जनम मरन भय ठेला। भ० ४। चुन्नी चित्त विचार विवेकी ज्ञान गुरू प्रधान है चेला। भ० ५। मिथ्या त्याग तिहां चढ़ वैठे जहां अविचल सिद्धोंका डेरा ॥ भ० ६ ॥ इति ॥

पीलु अध्धा तेनाला

समझ मन जग धोखेका टाटी, काल अनाद ते मोह नीद वस जिंदगी अकारथ काटी। स० १। गाफिल क्यूं अव चेत चतुर नर काल खड़ा लिये लाठी। स० २। अध्यातम धर ध्यान हिये में नोंढ़ करमकी काटी। स० ३। स्वगुण रच पर गुण मत राचो आखर एक दिन माटी। स० ४। दास चुन्नी शुभ भावमें लीन होय, लङ्घ भवसागर घाटी ॥ स० ५ ॥ इति ॥

पीलु अध्धा तेताला

अब मोहे तारोगे दीन दयाल। अव०। सवही मत देख्यो मैं जिततित। तुमही नाम रसाल। अव० १। आद अनाद पुरुष हो तुमही, तुमही विष्णु गोपाल, शीव व्रम्हा तुमही हम सरदे। भाज गयो भ्रम जाल। अव० २। भव अनन्त भटक्यो भव मांहि। फिरो अनन्तेकाल, गुण विलास श्री ऋषभ जिनन्दा। मेरी करो प्रतिपाल ॥ अव० ३ ॥ इति ॥

मल्हार ताल लगड़ी

तोरी छवी मनोहारी संखेश श्याम, नीला भुजवत तोरे नैन श्याम। आंचली। चन्द्र ज्युं वदन जगत तम नासे, चरण कमल पंक परासे नाम। तो० १। नील वरण तनु सही मन मोहे, मोहे त्रिभुवन करूणा धाम। तो० २। पारस पारस सम करे जनको, हाटक करन तुम्हारो काम। तो० ३। अजर अखंडित मंडित निज गुन, ईश निजित पूरे काम। तो० ४। अनघ अमल अज चिदघन रासी, आनन्द घन प्रभु आतम राम॥ तो० ५॥ इति॥

होरी तेताला

सुरत लागत प्यारी प्रभुजीकी, मुरत लागत प्यारी। पारसनाथ प्रगट परमेश्वर ऊनसुं कीजीये यारी। सुर० १। आठोजाम रहत नित भीतर मूरती मोहन गारी। जब देखुं तब आगे ही ठाढे विसरत नांहि विसारी। सुर० २। मस्तक मुकुट रतनमणि मण्डत, कुण्डल की छवि न्यारी। हरखचंद जांमाजी के नन्दन पर, वारवार वलिहारी॥ सुर० ३॥ इति॥

होरी तेताला

अब मेरो प्रभुसुं प्रीत लगीरी। घनसों मोर चकोर ससीज्यों कमल मधुप ज्यों पुष्पगीरी। अ० १। दिन कर को चकवी ज्यों चाहे। त्यों मेरे मन आनिजगीरी। गुण विलास प्रभु कुंथ जिन देखन। दिलकी दुविधा दूर भगीरी॥ अ० २॥ इति॥

रामकली जलद तेताला

राम कहो रहिमान कहो, कोउ कांन कहो महादेवरी,

पारसनाथ कहो कोउ ब्रह्मा, सकल ब्रह्म स्वयं मेवरी । रा० १ । भाजन भेद कहावत नाना एक मृत्तिका रुपरी । तैसे खंड कल्पनारोपित, आप अखंड सरूप री । रा० २ । निज पद रमे राम सो कहिये, रहे ईमान रहिमानरी, करखें रुपकान सो कहिए, महादेव निर वाणरी । रा० ३ । परसेरूप पारस सो कहिए, ब्रह्म चिन्हे ब्रह्मरी, यह विध साधो आप आनन्द घन, चेतन मय निज करमरी ॥ रा० ४ ॥ इति ॥

रामकली जलद तेताला

तें मेरा भ्रमरा मैं फुलवारी । तें मेरा साजन मैं तेरी नारी । तें० १ । एक कुआ पांचु पणि हारी । पांचु सिंचे अपनी वारी । डहगया कुवा विखर गई बाड़ी । विलखचली पांचु पनिहारी । तें० २ । कहत द्यानत राय अन्त की वाड़ी हाथ झुलाय चले जुहारी ॥ तें० ३ ॥ इति ॥

नट तेताला

जिन चरणे चित लीनी, आली मेरो जिन चरण चित लीन्हों । पद्म प्रभु पदपङ्कजके रंग निसवासर रहैं भीन्हीं आ० १ । अरुण वरण जिन चरण कमल पर मैं उज्ज्वल चित्त दीन्हों । अ० २ । मेरो हित प्रभुजी सौं लागी, सो क्यों होवत हीनीं, ज्यों ज्यों नेह नयन तै देखों त्यों त्यौं होत नवीनो । अ०३ । अन्तरजामी साहिब मेरो सब विधि जान प्रवीनो । हरखचंद हितकर प्रभुजी सौं जनम सफल करि लीन्हों ॥ आ० ४ ॥ इति ॥

अड़ाना तेताला

सिखर समेत बसे हो विमल जिन। सिखर०। विषय विकार छाड़ि व्रत लीनो, भव फन्दमें न फसे हो। वि० १। मन, तन जीत वचन वसी कीन्हो, इंद्री पंचकसे हो, छाड़ि सकल परिग्रह की ममता समता, रंग, रमेहो। वि० २। अष्टकर्म अतुलीबल वसिकर, शिवपुर पंथ धरेहो, बहुत जीव भवजलसे तारे कीन्हे आप जिसेहो। वि० ३। पूरब पुन्य जग्यो प्रभु परसन, दरसत दृग हुलसेहो। हरखचंद चित्त हित अति बाध्यो मन दुख दूर नसेहो॥ वि० ४॥ इति॥

रेखता ताल दीपचन्दी

श्री सुपास गुण विलास दास आश पूर, दास आश पूर प्रभु दास आश पूर। टेक। करम पास विविध त्रास नाथ कर न दूर, चरण पास दो निवास पुर सूख नूर। पूर सूख नूर प्रभु दास आश पूर। १। विनंती खास करूँ प्रकाश प्रेम से हजूर, बोध का विकास कर कुबोध नाथ चूर। कुबोध नाथ चूर, प्रभु दास आश पूर। २। हरि कविन्द्र पूज्य प्रभु सुपास चरण धूर, नित्य गगन घोषि बजे, मंगल दिव्य नूर प्रभु दास आश पूर॥ ३॥ इति॥

मालकोस तेताला

बल जाऊं तेरे नामकी, जाते परम मनोरथ लहीये। ऋद्ध देनेहि सुखकामकी। ब० १। तेरे नाम लीयां संकट सब। पाप टरे आठो जामकी। ब० २। अष्ट सिद्ध नव निद्ध

सदाई। प्रगटे ठोमो ठामकी। ब० ३। सब जग ब्यापत सब घट भीतर। जाप जपे तेरे नामकी। ब० ४। आनतना पूरनता सबगुण। पावे आतम रामकी॥ ब० ५॥ इति॥

मालकोस तेताला

मोरे घर आईलो, नेम जिनन्दा। तोरण आई चले रथ फेरी, पसुवन की सुनीरे पुकार, रथ फेरवोरे। मो० १। सहसा वन जाई संजम लीन्ये, जाई चडी गड गिर नार पञ्चे महा-व्रत आदरे। मो० २। कर जोड़ी सेवक गुण पावे, चरण की जाऊं बलीहारी॥ मो० ३॥ इति॥

बहार ताल कहरवा

जिन राय के पाय सदा सरणं। टेक। भव जल पतित निकारन कारन, अंतर पाप तिमिर हरणं। जिन० १। फरसी भूमि भई तीरथ सो, देव मुकुट मनि छवि धरणं। जिन० २। द्यानत प्रभु पग रज कब पावे, लागत भागत है मरणं॥ जि० ३॥ इति॥

कोरस, बंद्ना ताल कहरवा

वारि वलिहारी तेरी कुदरत की गुल क्यारी। कायम की सरदारी फुल रही है कैसी ये फुलवारी। वारि० १। चम चम चमके अपार माया, कैसा तूं आसमां बनाया। समा जलाया फर्श बिछाया' बादल रीम झीम जल वरसाया॥ वारि० २॥ इति॥

पिलु मिश्र ताल लंगडी

आई बसंत बहाररे, मैं तो जाउं वंदन को, जाउं वंदन को, पूंजूं चरण को। आ० १। केशरियाजी सम दूजी न मूरत, दर्शन से हो भव पाररे। मे तो०। आ० २। राव सदाशिव चढ़कर आया, परचा मिला तत्कालरे। मे तो०। आ० ३। लश्कर भागा शरणे आया, कहे दीन वचन यूं पूकाररे। मे तो०। आ० ४। कर जोरी प्रभु से शरणा मागे, भेट धरे धन अपाररे। मे तो०। आ० ५। मानक दास को तारो कृपा कर येही अरज लो स्वीकाररे। मे तो० ॥ आ० ६ ॥ इति ॥

ताल लंगड़ी

श्री सुर प्रभु जिनराज, सरन में तोरी आयो रे। टेक। सुन्दर रूप मनोहर, तुमारो मो मन भायो रे। देख दरस भवीजन रो, मनड़ो अति हुलसायो रे। सु० १। नवमें विरहमान जिन लंछन चांद सुहायो रे। लख चौरासी पूरव आयु आप पायो रे। सु० २। गच्छखरतर वैद मुत्ते, अमर मल को दिल चायो रे। गुण गण धीर विजे उपदेशे, स्तवन बनायो रे। सु० ३। सम्बत उन्नीस से तेतालीस, चैत्र सुहायो रे। तेरस शुक्ल प्रतिष्ठा को, दिन ठहरायो रे। सु० ४। दीन दयाल कृपाल हृदय में, आप समायो रे। तारन तरन विरुद सुन चाकर, शरणे आयो रे ॥ सु० ५ ॥ इति ॥

देशी की चाल लगड़ी

प्रभुजी जाउं पालिताना के मन अरजी घनेरीरे लो।

प्रभुजी संघ घणेरो के जाय सिद्धगिरि भेटवारे लो । प्र०१ । प्रभुजी जाउं पालीताने के सहस्त्र कमल हृदि शोभतारे लो । प्र० २ । प्रभुजी झुगड़िया चढ़ता के हियो हरखतारे लो । प्र० ३ । प्रभुजी जाउं वाघण पोल के सामा मोतीसा वसीरे लो । प्र० ४ । प्रभुजी मोतिसा की टुंक झलामक के झलके रे लो । प्र० ५ । प्रभुजी जाउं रामपोलके डावा चक्केश्वरीरे लो । प्र० ६ । चक्केश्वरी शासन रखवाल मे संग निधी विधी करे लो० । प्र० ७ । प्रभुजी जाउं हाथीपोल के सामा जग-धणीरे लो । प्र० ८ । प्रभुजी मूल गभारे जाय के आदिश्वर भेटवारे लो । प्र० ६ । आदिश्वर भेटया भव दुःख जाय के शिव सुख पामियारे लो । प्र० १० । प्रभुजो नहीं हूं तुम दूर के गिरी पंथे वसेरे लो ॥ प्र० ११ ॥ इति ॥

गजल

शरण में आये हम तुम्हारी, दया करो हे दयालु भगवन । सम्हालो विगड़ी दशा हमारी, दया करो हे दयालु भगवन । श० १ । विश्व सेन के हो तुम दुलारे, अचिरा के हो तुम नंद प्यारे । हम तो शान्ति के है पुजारी, दया करो हे दयालु भगवन । श० २ । न हममें वल न हममें शक्ति, न हममें साधन न हममें भक्ति । तुम्हारे दर के है हम भिखारी, दया करो हे दयालु भगवन । श० ३ । जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक, जो तुम पिता हो तो हम हैं बालक । जो तुम प्रभु हो तो हम पुजारी, दया करो हे दयालु भग-वन ॥ श० ४ ॥ इति ॥

गजल कहरवा

चिन्ता चूर चिंतामणी पास प्रभो, मेरे चिंतित अर्थ को पूर प्रभो। टेर। चिंतामणि तू नाथ मेरा, विश्व में विख्यात है। चिन्ता हरण है विरुद तेरा, तू जगत का तात है। अपने दास की आश को पूर प्रभो। चिन्ता० । १ । जब कि तू चिन्तामणी है, मम हृदय भंडारमें। दारिद्र दुश्मन क्यों सतावे, फिर मुझे संसारमें। करो दारिद्र मेरा दूर प्रभो। चिन्ता० । २ । भगवान श्री हरि पूज्य तू, मेरा परम आधार है। तेरे चरण के शरण से, जोड़े हृदय के तार है। पूरो दिव्य कवीन्द्र में नूर प्रभो ॥ चिन्ता० ३ ॥ इति ॥

गजल ताल कहरवा

मैं आया तेरे द्वार पर कुछ लेकर जाऊंगा। अपने सुख दुःख की सारी बातें नाथ सुनाऊंगा। मैं० टेर। जब कि तेरा कहलाता हूं मैं सेवक दुनियामें तब क्यों कर अपना जीवन दुःखमें नाथ बिताऊंगा। मैं० १। तू वीतराग रहता है, इससे यह दुःख पाता हूं पर तुझको तज मैं औरों का नहीं दास कहलाऊंगा। मैं० २। अपने अनंत सुख में से मुझको तू कुछ दे देगा। तो हरि कविन्द्र होकर मैं तेरा नित गुण गाऊंगा ॥ मैं० ३ ॥ इति ॥

मल्हार तेताला

महाराज लगन तुमसे लागी, तुमसे लागी बनना रागी। म० टेर। क्षण भंगुर है माया जगतनी, मांगू शरण हूं ते

त्यागी। म० १। सुन्दर उपदेश अमृत पीता, ज्ञाण उदय बीज जो जागी ॥ म० २ ॥ इति ॥

गजल ताल कहरवा

श्री आदि जिनवर स्वामी तुम पै लाखो प्रणाम । नाभी राय मरू देवीके नन्दा, भव २ का मेटो सब फन्दा। दरशन से मन होय आनन्दा, मुखड़ा सोहे पुनमचन्दा, प्रभु आप हो अन्तरयामी तुम पै लाखो प्रणाम । १ । आदिनाथ प्रभु जो कोई ध्यावे, भव २ के पातक मीट जावे। काम, क्रोध, मद, मोह नशावे, आवागमन फेर नहि पावे। जब करो कृपा तुम स्वामी, तुम पै लाखो प्रणाम । २ । आदिप्रभु हो नाथ हमारे, भव भवके दुःख मेटन हारे। फतेचन्द्रके कांज सवारे, सितावचन्द नाहर को तारे। जै श्री आदिदेव नामामी, तुम पै लाखो प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

सोरठ कहरवा

जाउं जाउं रे आदिश्वर तुम पर वारनारे। जा०। प्रभुजी कुंख वीसे जब आये, पट नो मास रतन वरसाये। सच्चो सच्चो पद ध्याम, उच्छव करनारे। जा० १। नाम हेत इन्द्रादिक आये, पांडव सीला मेरुगिर जाके लाये। पुन्य सुमाला प्रभु गले डालनारे । जा० २। प्रभुजी तपे ज्ञान वीसे जब आये, केवल ज्ञान ध्यानमें ठाये। इन्द्र समोसरन रची आये, उच्छव कारनारे। जा० ३। प्रभुजी अष्टापद पर आये, मुक्ति रमणी कुं यहां से ध्याये। इन्द्र सब जै जै कार मचाये, तुम जग

तारनारे । जा० ४ । सेवक शरण तुम्हारे आये, दरसन करके परम सुख पाये । स्वामी मुझको पार लगाये, दिलमें यह धारनारे ॥ जा० ५ ॥ इति ॥

कोरस तेताला

तू दाता जग त्राता, तेरो निस दिन रटत नाम संसार । तू है आधार नित्य विचार, तुम पे निसार लाख वार । टेक । करम धरम राखु शरण, सब जग के करतार । देखो प्यारी फुलवारी, ये कुदरत की है, गुल क्यारी ॥ तू० १ ॥ आया बहार देखो निहार, हर वन में हर मन में, तू ही निस दिन बसो कष्ट हरताल ॥ तू० २ ॥ इति ॥

धन्याश्री पुरीया ताल तेताला

मन मगन नेमी जिन दरसन में । टेर । आवो सखी मिल गिरवर चलिये, नेमी चरण युग फरसन में । मन० १ । गेतानल भये तीन कल्यानक, मुक्ति देत सेवक जनने । मन० २ । आतम रूप गहु मन मोहे, न छोड़ु रूप रस तन वनन ॥ मन० ३ ॥ इति ॥

जङ्गला कहरवा

श्री आदिनाथ प्रभू शरण तुम्हारी, दया करो जिनराज हमारे । मात तात सुत दार सहोदर, कोई न आवत काज हमारे । श्री० १ । भवसागर जल दुस्तर भारी, तुमरे चरण जहाज हमारे । श्री० २ । जीवन नैया डगामग डोले, तुम ही को है लाज

हमारे । श्री० ३ । फतेचन्द्र पर करो दया जब, सब दुःख जावे भाज हमारे ॥ श्री० ४ ॥ इति ॥

सारंग तेताला

सुनिये श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ, तों से विनती करत महाराज । जलती अग्नी से नाग निकाल्यो, सम्भलायो नवकार । सु० १ । जग विख्यात तुम्हारो यश गावे, भविजन के सीरताज । सु० २ । दिन दयाल कृपा करो स्वामी । तुम्हरो चरणाधार । ज्ञानचन्द विनवे भक्ति से, तारण तरण जहाज ॥ सु० ३ ॥ इति ॥

पिलु ताल तेताला

उमर सारी विषय में खोई, धर्म विना नहीं कोई भला, धर्म विना नहिं कोई । उ० । सुख दुःख है सब जीव के लारे, पाप पुन्य में दोनों भला भाई । उ० १ । माता पिता सब सुख के साथी, भीड़ पड़े नहीं कोई भला भाई । उ० २ । आवो श्रीजिन भक्ति करना, जासे सब सुख होय भला भाई ॥ उ० ३ ॥ इति ॥

चलत कौवाली

भजन करो चेतन बीतो जाय उमरीया । टेर । भाव भजन को भवीजन भरले बांध बांध गठरीया, स्वांस स्वांस पर आस जात हैं फिर ना लगी हे बजरीया । भ० १ । ना संग जावे दौलत दुनियां, नाहीं कुटुम्ब परिवरीया । अन्त समय जब नाव छुटेगी भवसागर मझरीया । भ० २ । लयको कर पतवार

फतेचन्द्र शीव पुर की डगरीया। ताल सुर का पवन वहा कर पार करो लहरीया ॥ भ० ३ ॥ इति ॥

बहार ताल तेताला

शीतल जिनवर शीतलकारी, मन मोहन मूरत देखी थारी। टेक। द्रगरथराय पिता जो कहिये, भद्दलपुर में जन्म जो लहिये, नन्दा नन्द परम सुखकारी। शी० १। बिम्ब आगरे नगर से आया, कलकत्ते में दर्श दिखाया। अनुपम मूरत मोहन गारी। शी० २। श्रीमाल सीघड़ गच्छ-खरतर, राय बद्रीदास बहादुर। जिन मन्दिर बनवायो भारी। शी० ३। सम्वत उन्नीसेनेबीसे, फागुन सुदी दुतीया शुभ दिवसे, प्रतिष्ठा भई अति सुखकारी। शी० ४। संकल संघ निरखत सुख पायो, चाकर हर्ष २ गुण गायो, चरण कमल बलिहारी थारी ॥ शी० ५ ॥ इति ॥

विहाग ताल दीपचन्दी

पू समरोरे सुज्ञानी जिनन्द पद। टेक। वदन चंद ज्यू शीतल सोहे, अमृत रस मयी वानी। जि० १। चिदानंद घन अजर अमर तू, ज्योति में ज्योति समानी। जि० २। श्रेणिक नरपति पदकज सेवी, जिनवर पद उपजानी। जि० ३। आतम आनन्द मंगल माला, अजर अमर पद मानी ॥ जि० ४ ॥ इति ॥

देशी चलत

निरञ्जन आगले नृत्य करत थई २। नि०। चौरासी

लक्ष घर घर नाच्यो भेष धरत केई २ । नि० १ । रूप नहीं नहीं शब्द उचारण गुण बोलत केई २ । नि० २ । सुविधि जिनेसर हुकुम करै तो रीझ करत केई २ । नि० ३ । रुपचन्द कहै अनुभव लीला, पामत है केई २ ॥ नि० ४ ॥

गजल ताल कहरवा

संभव जिनेश स्वामी, दर्शन मुझे दिखा दो । जो हो रहा असम्भव, सम्भव उसे बना दो । सं १ । कारण व कार्य्य में है, भारी पड़ा जो अंतर । करके दया दयालु, जिनवर उसे हटा दो । सं० २ । होना जरूर जिनका, निज साध्य साधना में । सामग्रीयां नहीं है, उनसे मुझे मिला दो । सं०३ । निज साध्य सिद्धि का तो, रास्ता बड़ा विकट है । कैसे कहो में पाउं, इतना मुझे बता दो । सं० ४ । चलने लगा हूं फिर भी, बीच दुश्मनोंमें । जाले बिछा रखी है, उनको प्रभु हटा दो । सं० ५ । हरि पूज्य आप ही है, साधू कवीन्द्र सच्चे । अंतिम यही है विनती, दर्शन सुधा पिला दो ॥ सं० ६ ॥ इति ॥

ख्याल ताल कहरवा (चाल देशी)

महावीर स्वामी, आप विराजो चन्दन चौकमें (बादल महलमें) । म० । दूर देशसे शिखर दीखे, शिखरकी छवि न्यारी । हाथी घोड़ा रथ पालकी, मनमें बहुत हुसियारीजी । म० १ । दूर देशसे आये यात्री, पूजा आन रचावे । अष्ट द्रव्य

पूजामें लावे, मन वंछित फल पावेजी। म० २। थारो सेवक अरज करेछे, सुण ज्यों महावीर स्वामी। मोपे किरपा ऐसी कीजे, जावे मोक्ष निसानीजी॥ म० ३॥ इति॥

गजल ताल दादरा

इस दुनियामें तेरो यश छाय रह्योरे। अनुपम महिमा कान सुनि तुम। मन वंछित फल पाय रह्योरे। इस० १। राज राजगुरु राज चिन्तामणी। सुरतरु छाया छाय रह्योरे। इस० २। सजल मेघ ज्युं अमृत बुंदी। भक्त हृदय वरपा रह्योरे। इस० ३। चरणन छोड़ुं मुख नहीं मोड़ुं। तेरी लगन लय लाय रह्योरे। इस० ४। रामधाम तुंही है सतगुरु। घटमें जोत समा रह्योरे॥ इस० ५॥ इति॥

गजल

विना प्रभु पार्श्व के देखे मेरा दिल बेकरारी है। टेक। चौराशी लाखमें भटक्यो बहुत सी देहधारी है, मेरा मोय कर्म आठोंने गले जंजीर डाली है। १। दुनिया के देव सब देखे सभी को लोभ भारी है। कोई रागी, कोई द्वेषी, किसी के संग नारी है। २। मुसीबत जो पड़ी हमपें, सभी तुमने निवारी है। सेवक को कुमतिसे टारो यही बिनती हमारी है॥ ३॥ इति॥

ठुमरी ताल दादरा (मीराबाई के चाल)

मेरे तो श्री वीर नाथ दूसरा न कोई। मे०। सिद्धारथ नन्द चंद, त्रिसला देवी माई। क्षत्री कुण्ड जन्म लियो देवन सुर दाई। मे० १। पावापुर मोक्ष गये, कर्म सब जलाई।

चंदन गढ़ प्रकट भये, अजमत दिखलाई । मे० २ । दूरन से आये भव्य पूजन करवाई । मन वंछित काज सरे सेवक सुखदाई ॥ मे० ३ ॥ इति ॥

/ सारंग धर कहरवा

ऋषभ कन्हैया लाला आंगनामें रूम झूम खेले । अखियन का तारा प्यारा आंगनामें रूम झूम खेले । इन्द्र इन्द्राणी आई, प्रेम धर गोदीमें लेले । हंसे रमावे करे प्यार दिल की रलिया लेले । स्नान कराई माता लालने पहनावे झेले । गले मोतियन की हार, मुकुट सिर पै मेले । गुरु परसादे मुनि चौथमलने सब से बोले, नमन करूं हरबार यह तीर्थंकर पहले ॥ इति ॥

थीयेटर लंगड़ी

हर लिया, हर लिया, हर लिया रे, मेरा मनवा महावीरजी ने हर लिया रे । मे० । विचरंता वीर जिनेश्वर आये, पावापुरी पावन किया रे । मे० १ । सुघड़ समवसरन की रचना करी, भक्तिमें भर गया रे । मे० २ । सिंहासन पै प्रभुजी विराजे, देशना अमृत बरसीया रे । मे० ३ । सोल पहर लग प्रभु देशना दिनी, अवसर का सरणा लिया रे । मे० ४ । सर्व समाधी अनशन पाली । मन, वच काया वस किया रे ॥ मे० ५ ॥ इति ॥

ताल लंगड़ी

(अरे हारे) गावो २ खुशी से गावो सभी गुण पार्श्व प्रभु महाराज के । गा० टेर । हिल मिल के गावो सब खुशियां

मनाओ, आये हैं दिल वहारके। गा० १। पूजन कराओ और प्रेम बढ़ाओ, नैना दरसते दीदारके। गा०२। भेटो चरण और ले लो शरणको, चरण पड़ो करतारके। गा० ३। तन मन को वारो और धनको निसारो, कहता शियल पुकारके॥ गा०४॥ इति॥

थियेटर की चाल

प्रभु पूजा है प्यारी, भव पार उतारी, करो शास्त्रानुसारी मेरे प्यारे सुजान। टेक। मानोजी सुजान प्रभु पूजा रचावो पूजन से शुभ फल पावो मेरी जान। धरो सुमति का ध्यान होवे आतम सुज्ञान, करो पूजा भगवान होवे वाह! वाह!! वाह!!!। १। करो दर्शन जिनंद, होवे आतम आनंद, काटे जनम के फंद, मानो चतुर सुजान। प्रभु दर्शन महान्, वल्लभ आतम सुजान, करो अपने समान, होवे वाह! वाह!! वाह!!! ॥ २॥ इति॥

खम्माज झपताल

विनती आनन्द कन्द, सुनिये शीतल जिनन्द, कंद चरण शरण आयो, सुविध राखो महाराज लाज। जिनवर सुखदाई जिन नाम जपत पाप कटत, राग, द्वेष, मोह घटत, सफल होत सकल काज। विनती० १। मानकचंद थारो दास, राखत प्रभु तेरी आस, श्री जिनन्द काटो फन्द दीजिए आनंद आज। विनती० २॥ इति॥

ठुमरी जंगली

राग द्वेष जाके नहीं पहले, हम ऐसे के चाकर हैं। राग०। क्रोध मान मद मोह न जाके, समता रसके सागर हैं। राग० १।

मति श्रुति अवधि ज्ञान मन पर्य्यव, केवल ज्ञानके आकर हैं। राग० २। पद्मासन आसन प्रभु सोहे चारित्र गुण रत्ना कर हैं। राग० ३। भक्ति विना बहुते दुःख पायो सेवा से सुख सागर है॥ राग० ४॥

राग परज ताल कहरवा

जीव तुम भ्रमत सजीव अकेला, कोई संग साथ नहीं तेरा। जी०। अपना दुःख सुख आपही भोगे, होय कुटुम्बन मेला। स्वारथ विन सब विछड़ जात है, विखर जात जैसे मेला। जी० १। पूर्ण होय जब रखत कोई नहीं, आवे अन्त की वेला। फुटी पाल रोकत नहीं कबहु दुध और जल का ठेला। जी० २। तन, धन, यौवन विनशि जाय, जैसे इंद्र जाल का खेला। भागचंद्र कहे अब लख भाई हो सत गुरु का चेला॥ जी० ३॥ इति॥

गजल ताल कहरवा

कर्मो के फंद छुड़ा दो मोरे स्वामी जी। तप की तोप ज्ञान का गोला, मान बुरज को उड़ादो मोरे स्वामी जी। क० १। जैसी वानी आपने जानी, वैसी हमको सुना दो मोरे स्वामीजी। क० २। सेवक की प्रभु अर्ज यही है, शिवपुर मोक्ष पहुंचा दो मोरे स्वामी जी॥ क० ३॥ इति॥

गजल

सिवाय जिनपद के जगमें प्यारे, विचार हरदम न कोई किसी का। पै नाम अनुभव हितु हैं प्यारे। वि० १। जिसे समझता है ए तू मेरा, समझ तू दिलमें कहां है तेरा, फसा है

नाहक ममत में घेरा । वि० २ । ए मोहकी तें बिछाई चोसर लगाई स्वारथ की बाजी हम पर, हैं जीत पाशेके हाथ दिल-बर । वि० ३ । सुघर खेलारी सोही कहावे, जो छक्के पञ्जे नरद नचावे लख चौरासीमें फिर न आवे । वि० ४ । ए चुन्नी प्रभु के भजनकुं गावे, गुरु के चरणोंमें शीश नमावे गुरु धरम का मरम बतावे ॥ वि० ५ ॥ इति ॥

कानड़ा ताल कहरवा

हे केशरिया नाथ अरज मेरी प्रभुजी धारो । टेक । आदि जिनेश्वर अति अलबेसर श्याम सूरत जय कारो । हे० १ । केशर कीच मच्यो है निशदिन, दरशन अति सुख कारो । हे० २ । अष्ट द्रव्य से पूजो भवि मिल, शोभा अपरम्पारो । हे० ३ । भाव भक्ति से जे नर ध्यावे, आशा पूरण हारो । हे०४ । दूर देश से यात्री आवे मन वंछित दातारो । हे०५ । संवत वेद ऋतु ग्रह चंद्रमा, चैत्र मास उदारो । हे० ६ । अरज करत हैं 'पूरण' लक्ष्मी अब तो करो बेड़ा पारो ॥ हे० ७ ॥ इति ॥

गजल कहरवा

जब तलक तनमें मेरे यह दम रहे, प्रभु नामका सुमरन और हरदम रहे, मैं तो हूं चाकर तेरा जगनाथजी । तेरे चरणोंमें मेरा मन रम रहे । ज० १ । तुझ बिन अपनी व्यथा मैं किसको कहुं । पाऊं मैं वन्छित क्षय उपशम रहे । ज० २ । इतनी अरजी है मेरी सुन लीजिये । चुन्नीकुं आधार प्रभु तेरा हरदम रहे ॥ ज० ३ ॥ इति ॥

यही बुनियाद किया करता हूं। दि०२। दिलमें वसता पै तूं रहता नजरों से गायब, क्या गुनह इस्क में फरियाद किया करता हूं। दि०३। मिट गया भरम का परदा खुल गया अंतर का पट, चुन्नी खुश दिल अब आबाद किया करता हूं। दिल०४॥ इति॥

गजल

अबतो चेतन चेत सतबुद्धि संभाला चाहिये। लख अरूपी ज्ञान गुन अपने को पाला चाहिये। अ०१। इस जगत की रीति झूठी मे फसे त्रिभुवन के लोक, इनसे बेमुख हो सजन औगुन को मिटाना चाहिये। अ०२। जो धरम बुझेहै अपना जिनके घर आनन्द है, पापके विध्वंस होने को उजाला चाहिये। अ०३। सूत्र सिद्धांत से सत गुरु का यही आदेश है, काज सिद्धिके लिये मारगसे चलना चाहिये। अ० ४। दास चुन्नी ज्ञान सिन्धु मथ के पाया सार रस, पीनेवालों का जगतमे बोल बाला चाहिये॥ अ०५॥ इति॥

(पहाड़ी) लंगड़ी

लगा रहता है मन प्रभुके चरणमे करूं सेवा प्रभु की रात दिनमें। ल०। मिटा कर भरम का परदा जो देखा है झूठा कारखाना सारा दिलमें। ल०१। हुआ जब बोध आतम का समनमें, सो पाया सार सद्गुरु के वचनमें। ल०२। सफल जीवन प्रभु चरनों का सेना पर, आनन्द पद ध्याता हूं मनमें॥ ल०३॥ इति॥

पहाड़ी दादरा चलत

संसार नाम उसका जो सारा असार हैं, इस जगमें न कोई मेरा तेरा नाम सार है। भव जल अगम अथाह रे इसका न पार हैं, चारों गतिकी भंवरें पड़ती अपार है। सं०१। जिया देख डरा मेरारे तुमसे नहीं छिपा, तेरे हाथ मेरारे अब तो उधार है। सं०२। तुम सिवाय देव मैं ध्याउं न दूसरा मैंने तो अपने दिलमें किया करार हैं। सं० ३। अब छोड़ सकल वातकुं तेरी शरण गही, जिन दास हाथ जोड़ के करता पुकार है ॥ सं०४ ॥ इति ॥

पीलू लंगड़ी

जो तूं चेतनमें खवरदार होगा। असा वखत मिलना दुसवार होगा। जो०। मानुप जन्म और जैन धरम रुचि संगत असा न वहार होगा। जो०१। आकर जमाने में विपयन को सेवें। अष्ट करम का गिरफ्तार होगा। जो०२। ऋषभ दास सुख चाहे तो प्रभु भज। नहीं तो प्रभु का गुणहगार होगा ॥ जो०३ ॥ इति ॥

ठुमरी लंगड़ी

आज छवि नीकी छाजेरे। समवसरण जिनराज आज। नाभिराय के कुलमें चंदा। मरुदेवी राणीके नन्दा। अजी मुख देख्या आपद दूर टले। सुख भेस विराजेरे। स० १। शीतलतरु हरतकी छईयां। तीन छत्र ध्वज आगु सुहईयां। अजी भामंडल सूरजताप झीले। देब दुन्दभी वाजेरे। स०

२। कंचन मोली सिर सिखर शोहे। कुंडल युग श्रवणे जग मोहे अजी कर श्रीफल मोतिन की माल गले। लख रतिपति लाजेरे। स० ३। अतुलित महिमा कोन सुनि। अनुभवे चंद कपुर थुनी। अजी आश फली मुझ भाग भले। सुख संपति साजेरे॥ स० आ० ४॥ इति॥

(थियेटर) चाल

मैं अरज करुं, सुनो महराज। पायो मैं चरण सरण राखोने प्रभुजी लाज। सु० १। सुमति जिनन्दा मेरे। सुरत सुहानी तेरे। कुमति न आवे नेड़े। महिमा कहां लें देखो। सफल घड़ी है आज। सु० २। वैशाख मास जो आया। सह लोग हरष पाया। रोग शोग दुःख पुलाया। शुक्र पक्ष देखो मोहे। पञ्चमी तिथि है आज। सु० ३। नवीन मंदिर छाजे। जहां प्रभुजी विराजे। मानु शशि सूरज लाजे। चलो सखी सब मिलि। प्रभुजीकुं पुजुं आज॥ सु० ४॥ इति॥

पाहाड़ी गजल

सुमति जिनन्दा प्रभु आज जुहारो। अष्टद्रव्य लेके आय। पूजुं प्रभुजीके पाय। मनहीमें हर्ष अति भयो ही मेरो। सु० १। आयो मैं तुमारे पास। पुरो मेरी अभिलाष। दीन-बन्धु दीनानाथ जगत उजियारो। ना मिलेगो एसो दाव काज सुधारो॥ सु० २॥ इति॥

ठुमरि चलन

नेमि जिन तुमसे दरस लागे प्यारोरे। दरस देखत मन आनन्द आरे। पातिक हर गयो सारोरे। ने० १। मैं हूं

दीन अनाथ प्रभुजी । नाथ गरीब नेवाज हो तुमरी । कृपा करो मोहे तारोरे । ने० २ । सेवककी प्रभु एहि अरज है । भव संकट से निवारोरे ॥ ने० ३ ॥ इति ॥

ठुमरि चलत

सुरत ऐसी सांवरी । मैं जाउं वारि २ । प्रभुजी एक अरज सुनो मोरी । टेर० । समुद्रविजयजीके नन्दन प्रभुजी शिवादेवी माताजी के नयननको भये गुलजारी । सु० १ । राजुलको परनीजन आये । पशुवनको निरख रथ फेरके चले गये गिरनारी । सु० २ । नव भव प्रीत छिनमें तोडी । नेम राजुल मिल हुवे जब सुगतिके अधिकारी । सु० ३ । दास आन कर अरज करतु है. मेहर मोहे कीजे दरस मोहे दीजे । चरणनको मैं जाउं बलिहारी ॥ सु० ४ ॥ इति ॥

ठुमरी चलत

सुमति जिन मुजरो हमारो प्रभु लीजेजी । मेघ नृपति जीके नन्दन स्वामी मात सुमंगलाके प्यारोजी । सु० १ । ऐसो नर भव पायके प्राणि । नित जिन वन्दन किजेजी । सु० २ । ऐसे जिनजीको पूजत प्राणी । भव भव पातिक छिजेजी । सु० ३ । दास तुमारो करत वीनति अजय अमर पद दीजेजी ॥ सु० ४ ॥ इति ॥

गजल

हजूर तुमसें कहुं मैं दिल की वेजार पनमें जो वीती वतियां । हु० टेर । न धीर तनमें खुशी न दिलमें वेहाल पनमें

भराई छतियां । ह० १ । सिद्धार्थ त्रिसला के नन्द सुनिये कृपा के सिन्धु हे वीरस्वामी । संसार वनमें कियो भ्रमन मैं चौराशी लक्की यह चार गतियां । ह० २ । कषाय कुमति कुकर्म मिलके दे मार चारों तरफसे घेरयो । सदासे इनकी वेजा सही हे मैं मेरे दगसे उपाधि अतियां । ह० ३ । रही न बाकी विपत की बातें न जानु तुम क्या विशाल ज्ञानी, रहुं शरणमें निहाल कीजे अजय की लागी चरणसे मतियां ॥ ह० ४ ॥ इति ॥

ठुमरी दादरा

साहिब तेरी बंदगी में भुलता नहीं, भुलता नहीं साहिब सिमरता नहीं । सा०टेर । अष्टादश दोष रहित देव है सहि और देव अन्य देव मानता नहीं । सा० १ । मुनि है निग्रन्थ सो तो गुरु है सहि और गुरु भेषधारी मानता नहीं । सा०२ । जीव दया शुद्ध सो तो शास्त्र है सहि और शास्त्र आज्ञा रुपी मानता नहीं । सा० ३ । दान शियल तप जप धर्म है सही और धर्म विषय धर्म्म मानता नहीं । सा० ४ । मुक्ति रुपी सिद्ध शिला वांछता सहि संसार दुख जाल रुपी मेटीए सहि । स० ५ । ज्ञान मुनि सेवक माल तारिये मोहि आवागमन मोरी मेटीए सहि ॥ सा० ६ ॥ इति ॥

ठुमरी कहरवा

आवो नेम घर आवो सदन, हमको न तरसावोरे । आ० टेर । व्याहन आये सजके सजन, पशुवन की सुन देख रुदन

गिरनारी चले निज छाड़ वतन् तकसीर बतावोरे। ह० १। पूनम जैसे चंद वदन, मोहन मूरति श्याम वरण, मेरी नीकि लगी नव भव की लगन् मत छेह दिखावोरे। ह० २। संजम दूती लागि श्रवन्, प्रभु को सिखाए नीके फिरन्। प्रभु तारण नाम तुम्हारो तरण। रथ फेरि न जावोरे। ह० ३। कपूर कहे प्रभूजी के चरन् राजुल मन वैराग धरण लेउं दोड़ नेमि जिनजी की सरण, शिवपूरतो दिखावोरे॥ ह० ४॥ इति॥

पहाड़ी कौवाली

कधी प्रभु पदमें मन लाया तो होता, अरे निरगुन का गुण गाया तो होता। पड़ा है वेखवर माया के फंदमें, जगत जञ्जाल सुलझाया तो होता। क० १। अब अवसर आ मिला टुक सोच प्यारे, आतम हितकार प्रभु ध्याया तो होता। क० २। तू है मनमोहन के त्रिसला नंद प्यारा। जिन सेवामें सुख पाया तो होता। क० ३। पुरायो आश चुनीकी प्रभुजो, दिल भर दरस दिखलाया तो होता॥ क० ४॥ इति॥

पहाड़ी कहरवा

शांति वदनकज देख नैन मधुकर मन लीनोरे। टेर। श्रीजिनके मकरंद वैन। विरमी भव दुरगन्ध रैंण शिपपुर के सदा सुख कंद दैन। समकितरस भीनोरे। शां० १। कामित पूरण कामधेंन। मद मोह के चूरण ठांम फेंन, लहे मन को अली आराम चैन गुंजै अति झीनोरे। शां० २। कपूर

कहे जिनपद का अंन। उरधारो भवितार लेंन। होय मुक्ति सेझ पर मार सैंन। आगम कह दीनोरे॥ शां ३ ॥ इति॥

गजल कौवाली

दिवाना तेरे दरसका यार मैं हुं। जो रखता हुं तुझसे नरोकार मैं हुं। दि०। तेरा ध्यान रहता हैं हरदम मुझको टुक एक महर कीजो लाचार मैं हुं। दि०। दया भाव धारो प्रभु चरणसे लगालो खबर लोगे मेरा गुणेगार मैं हुं। दि०। दरसवेगी दिजीये दया कर चुन्नीको, जगन्नाथ तुम हो, दावेदार मैं हुं॥ दि०॥ इति॥

भैरवी गजल लंगड़ी

ध्यानमें जिनके सदा लयलीन होना चाहिये, ज्ञान गुरु ज्ञानी से ले परवीन होना चाहिये। राह सञ्जम का पकड़ कल्यानकी सुरत मिले, काल गफलतमें सजन, नाहक न खोना चाहिये। ध्या०। धर्म की खेती किया चाहे जमीकुं साफ रख बीज समकितका हृदयमें सचे से बोना चाहिये। ध्या०। कामना मनकी सफल आनन्द से पूरन भई, अवतो समता सेज उपर सुख से सोना चाहिये। दास चुन्नी अपने घर आंग नमे फूलेगा कलप। मन स्थिति पकने से मुक्ति फल सलोना चाहिये॥ ध्या०॥ इति॥

(ठुमरी) कहरवा

श्रीआदिनाथजीका देख दरश दुविधा मोरी मिट गईरे। जग सुरि०। आनन्द आज भयो मेरो मन शिव सुरत चाहत

हूं प्रभु हाथन जिनकी मूरत चन्दनसे तनमनसे लपट गइरे । आज दुवि० १ । अष्टद्रव्य ले पूजन आये वीतराग के दरशन पाए जिनवांनी कांनासै सुनी दुरगत मोरी कट गईरे । आ० २ । काल अनादि मै प्रभु फिरीयो कारज एक मेरो ना सरीयो अब मैं तेरो दरशन पायो कुमति मोरी हट गईरे । आ० ३ । जब लग मुक्ति न आवैं नेडे तव लग भक्ति वसौ उर मेरे आत्म सुद्ध समकित धरके शिव रमणी वर लईरे ।। आ० ४ ।। इति ।।

खम्वाज कहरवा

जिनन्दकी मैं वारि छवि प्यारी, वारी जाउं वार हजारी जि० । वदन छवि मांनुचंद शरदसी मेटो अशुभ अन्धियारी जि० १ । निरख चकोरी हरप भरानी नैनन मङ्गल कारी । जि० २ । चुन्नी तृप्त होत दरसनसे आसा पूरो हमारी ।। इति ।।

खम्बाज लंगड़ी

एहाल अपना कहूं मैं कासे, सजन विना भर भर आवे छतिया । ए० । न ताव तनमें न चैन दिलको विरहका मारा वेहाल मतिया । ए० । न कोई असा हकीम देखूं जो मेरे दिलको करार आवे, सखी स्वजन का खवर जो पाऊं, तो लिख लिख पठाउं पतिया । ए० २ । जल विन मीन क्योंकर जीवे अरज इतना विचार देखो, ए जीव जीवन पिया दरश विन कटैगी कैसे अन्धेरी रतियां । ए० । कपट के पट खोल आए सजन सखी गये दुख जनम जनम के ।

चूर्णी निरुपम दरस के आगे कहूं में अब क्या अनुठी बतियां ए० ॥ इति ॥

खम्माज दादरा

छकी छवि वदन निहार निहार । छ० । प्रोषित पति अगमागम कीनो विसरी विगत विहार । छ० १ । गये अनादि कालमें ऐसे दीठी न हिय दिदार, निरुपम निजर निहार निहारत, रंजिये रूप रिझ वार । छ० २ । अन्तर एक महूरत अन्तर प्यार करी अणपार, लीने ज्ञान सारपद भ्यन्तर चेतनता भरतार ॥ छ० ३ ॥ इति ॥

खम्माज तेनाला

जिनवर देख दगण गुरु पायो । जि० । व्याकुलता मिट सुख भायो मेरे, रोम रोम हुलसायोरे । सुमति प्रवेश । जि० । अब हम जानो, मेरे करम नचईयां सुगुरु वचन मन भायो । हित उपदेश ॥ इति ॥

गजल

जिन नामको सुमरिले क्या खूब वखत पाया है, मेरे भाग नहीं आया सतगुरु बताया है, कहता है मेरा मेरा यंहा तेरा कौन है, मायाके नशेमें जो बेहोश हो रहा है, माया न तेरा संग चले किस नीन्दमें रहा है, मातर पिता बिरा-दर फरजन्द यार मन सही पलका हैं वगेरा फिर आता कौन है । सब सुखमें हैं संघाति दुःख सुनले यार मन, एक

लालजी श्रावक कहता घड़ि घड़ि, प्रभुका नाम सच्चा झूठा सब जगत है ॥ जिन० २ ॥ इति ॥

गजल

दिलदार नेम पियारेको समझाई लावोगे। कोई सम०। जुदाई दर्देहाल कहके उसे फिराके लावोगे। दि० को० १। ब्याहनके काज आयके, रथ फेर चले हो तुम। भव भवके नेह विचारके तुम फिरभी आवोगे। दि० को० २। सङ्गदिल ऐसाजो कभी कोई भी होता है मुक्ति से नेह लगायके मुझको बुलावोगे। दि० को० ३। सेताव अव चरणका शरणा मुझे दीजे। अजे अमर पद आप लिया। हमको भी देवोगे, क्या राजुलको देवोगे। क्या दासन को देवोगे॥ दि० को० ४॥ इति॥

मांड ताल दीपचन्दी

पूजो तो सही मारा चेतन पूजो तो सही, थे तो फलोधी पारसनाथ ने पूजो तो सही। टेक। अष्टादश दुषण करी वर्जित देखो तो सही, टुक श्याम सलुनो रूप आनन्द भर जोवो तो सही। पू० १। परमानन्द कंद प्रभु पारस पारस तो सही, तुम निज आतमको कनक करन टुक फरसो तो सही। पू० २। अजर अमर प्रभु ईश निरंजन भंजन कर्म कही एतो सेवक मन वंछित सव पूरन अद्भुत कल्प सही। पू० ३। चन्दे अंक ६ वेद ४ दिन संवत् षष्टी मैत्र लही, मन हर्ष हर्ष प्रभु के गुण गावत परमानन्द लही॥ पू० ४॥ इति॥

चलत कहरवा

पालने जिन पास पोढ़इया । टेक । सुरपति मिल सब देत हलोरी, हरखी वामादेवी मइया । पा० १ । इन्द्राणी मिल मंगल गावे, नाच करे ता ता थइया । पा० २ । तू मेरा लाला जग सब व्हाला, फिर फिर मुख मटकइया । पा० ३ । आतम कल्पतरू जग प्रगट्यो, दिठा आनंद लइया ॥ पा०४ ॥

मांड कहरवा

माता मरुदेवी नो नंद देखी ताहरी मूरत मारुं मन लोभाणुजी, मारुं दिल लोभाणुजी । देसी । १ । करुणा नागर, करुणा नागर, काया कञ्चनवान । धोरी लंछन पाउले कांई, धनुप पांच से मान । मा० २ । त्रिगड़े बेसी धर्म कहंता, सुने पर्षदा बार । योजन गामिनी वाणी मीठी, वरसंती जलधार । मा० ३ । उरवसी रुड़ी अपछराने, रामा छे मन रङ्ग । पाये नेपूर रणझणे कांई, करती नाटो रंभ । मा० ४ । तुही ब्रह्मा, तुही विधाता, तूं जग तारण हार । तुझ सरीखो नहीं देव जगत मां, अरवड़ीया आधार । मा० ५ । तुहीं भ्राता तुहीं त्राता, तू जगत नो देव । सुर नर किन्नर वासुदेवा, करता तुझ पद सेव । मा० ६ । श्री सिद्धाचल तीरथ केरो, राजा ऋषभ जिनन्द । कीर्ति करे माणक मुनि ताहरी, टालो भव भय फन्द ॥ मा० ७ ॥ इति ॥

मांड कहरवा

श्री मुनिसुव्रत स्वामी अन्तर्यामी तारो दीनदयाल । अ०

सुमित्र नृप के लाड़लेजी, पद्मामाताके नन्द, श्यामवर्ण सोहा वनोरे थारो, मुखड़ो आनन्द कन्द । मुनि० १ । राजगृहिमां चार कल्याणक, मुक्ति सम्मेत गिर जाय, शिव कमला पद तिहां लह्याजी, अनन्त सिधनो ठाम । मुनि० २ । आगे भक्त घना हुआरे, अव प्रभु मोहे तार, तारक नाम धरायो स्वामी, अपना विरूध सम्भाल । मुनि० ३ । काल अनन्ता भव २ भटक्यो, अव मैं शरणे आय । और देव को मैं नहीं ध्याऊं, बीतराग मन भाय । मुनि० ४ । कर जोड़ी मोती वल्लभ को, अर्ज सुनो जिनराज, चैत्र कृष्ण शनियुत सातम, गायो प्रभु गुण ग्राम । मुनि० ५ । बिक्रम सम्वत् एक नवे-नव उपरी त्रणको अंक, दृढ़ आशा है थारी, संकट देज्यो टाल ॥ मुनि० ६ ॥ इति ॥

होरी यत

सुन लो तुम भाई वाणि चन्दाप्रभु फुरमाई । चन्द्रावती में चार कल्याणक नार कि ने सुखदाई । सु० । प्रथम चवन तीन ज्ञान सहित है गुप्त गर्भ धर आई, हृदय मेरो अति हुलसाई । सु० । दुसरा जन्म कल्याणक महोत्सव महासेन राय कराई । चन्द्र समान प्रभा देखीने चन्दाप्रभु नाम ठाई, नगरमें बटत बधाई । सु० । तीसरा दीक्षा कल्याणक महोत्सव देव करे तिहाँ आई । राज छोड़ प्रभु जात जंगल में रोवत धाई, राखो कोई प्रभु को मनाई । सु० । चौथा केवल ज्ञान कल्याणक चिहुं दिसि चंवर डोलाई, समोसरण

बैठा महाराज इन्द्राणी मङ्गल गाई। वाणि गणधर से गुथाई मु० । समेत शिखर गिरवरके ऊपर करी कर्मन से लड़ाई कर्मराय बल हीन भयो हैं देखत प्रभु ठकुराई तिहा शिव लक्ष्मी पाई ॥ मु० ॥

देशी की चाल ताल लंगड़ो

आवो आवो पासजी, मुझ मलीयारे। मारा मनना मनोरथ फलीयारे । आ० । ताहरी मूरत मोहन गारीरे, सहू संघने लागे छे प्यारीरे। तमे मोही रह्या सुर नर नारी। आ० १ । अलबेली मूरत प्रभु ताहरीरे, थांरा मुखड़ा ऊपर जाउं वारीरे। नाग नागणी नी जोड़ उबारी ।आ० २। धन्य धन्य देवाधिदेवारे, सुरलोक करे छे सेवारे। अमने आपोने शिवपुर मेवा। आ० ३। तमे शिव रमणी ना रसीयारे, जई मोक्षपुरी मां वसियारे। म्हारा हृदय कमल मां वसीया । आ० ४। जे कोई पास तणा गुण गासेरे, भव भवना पातिक जासे रे। तेना समकित निर्मल थासे। आ० ५। प्रभ नेमीसगा जिनरायारे, माता वामादेवी ना जाया रे। अमने दरिसण दोने दयाला। आ० ६। हूं तो लली लली लागुं छु पायरे, मारा उरमां ते हरष न माया रे। एम माणेक विजय गुण गाय ॥ आ० ७ ॥ इति ॥

ठुमरी ताल लंगड़ी

तेरे पूजन को भगवान बना मन मन्दिर आलीशान। जिसने जानी तेरी माया जिसने भेद निराला पाया। ऋषि

मुनि कर ध्यान। वना० १। तुंहि जलमें, तुंही थलमें, तुंहि मनमें, तुंहि वनमें। तेरा रूप अनूप जहान। वना० २। तुंहि गुलमें, तुं बुल बुलमें, तुंहर डालके हर पातनमें। तेरी लीला ईश महान। वना० ३। झुंठे जग की झुंठी माया मुरख क्यों इसमें भरमाया। कर कुछ जीवन का कल्याण॥ वना० ४॥ इति॥

विहाग ताल तेताला

तुम गुणमणी निधि हो अरिहंत। तुम० १। टेक। पाए न पावत तुमरो गणपति, चार ज्ञान धर संत। तुम० २। ज्ञान कोप सव दोष रहित तुम, अलख अमूर्ति अचिंत। तुम० २। हरिगन अचरत तुम पद वारिज, परमेष्ठी भगवंत। तुम० ४। भागचंदके घट मन्दिरमें, वसहु सदा जयवंत॥ तुम० ५॥ इति॥

मांड़ ताल लंगड़ी

नेमी नाथ जिनराज कृपा कर दरस दिखावोरे, तुम शान्ति क्रान्ति छवि लख अनुपम मो मन भायोरे। टेक। जन्म नगर सोरिपुर कहिये, यादव कुलमें जन्म जो लहिये। श्याम वरण तन शंख लंछन, पग विच सुहायोरे। ने० १। समुद्र विजय शिवादेवी के नंदन, वावीसमां जिनराज जग वंदन। वाल ब्रह्मचारी पर उपकारी, जग मांहि कहायोरे। ने० २। अगलपुर पंच तीरथ राजे, मूल नायक जिन आप विराजे। हींग मंडी मशहूर हुई, जिन मन्दिर वनायोरे। ने० ३। संवत

उन्नीसे इकसठ साले, वैसाख सुदी दशमी सोमवारे। प्रतिष्ठा दिन शुभकारी, गुरु लाभ बतायोरे। ने० ४। सकल संघ मिल उत्सव कीनो, प्रभु दरसन अति ही रंग भीनो। चाकर दर्श कियो चित्त से, भवभीत मिटायोरे॥ ने० ५॥ इति॥

बहार दादरा

नेरी देही बुदबुदा है पानीका, नाम जपले पार्श्व दिल जानी का। नेरी० १। जब लग ये तेरे घटमें पवन है, दूजा नहीं तुझ शानीका। नाम० २। जा दिन कायासे हंस उड़ जायगा, रह जायगा माल कौड़ी कानी का। नाम० ३। कौन भरोसेमें बैठ रहे हो, मत कर गुमान जवानी का। नाम० ४। सुमन अधमकुं निज पद दीजे, सुन लीजे अरज भवि प्राणीका॥ नाम० ५॥ इति॥

देशी

(म्हारे) अजित जिनंद सुं प्रीतड़ी, मुझे न गमे हो बीजानो संगके। अजित० टेर। मालती फूले मोहियो, किम बैसे हो बावल तरु भृंग के। अ० १। गंगा जलमां जे रम्या किम छिल्लर हो रति पामे मराल के। अ० २। सरवर जलधर बिना नवि चाहे तो जग चातक बालके। अ० ३। कोकिल कल कूजित करे पामी मंजरी हो पंजरी सहकारके। अ० ४। ओछा तरुवर नवि गमे, गिरुआ सुं होय गुणनो प्यारके। अ० ५। कमलिनी दिनकर कर ग्रहे, वलि कुमुदिनी हो धरे चन्द्र सुं प्रीतके। अ० ६। गौरी गिरीश गिरिधर बिना,

नवि चाहें हो कमला निज चित्तके। अ० ७। तिम प्रभु सुं मुझ मन रम्यु, बीजा सुं हो नवि आवें दायके। अ० ८। श्री नय विजय विबुध तणो वाचक यश हो नित २ गुण गायके॥ अ० ९॥ इति॥

मिश्र कहरवा (चाल छोटी बड़ी सुइयारे)

पार्श्व प्रभुजी रे विनती मोरी मानना। अति दुःख पाया मैं तो मोह के राजमें। लख चौरासीरे योनिमें जहां घुमना।१। फँस रहा हूं मैं तो कर्मों के घेरमें चार गति केरे दुःखो को पड़े झीलना।२। भटक रहा हूं प्रभु अंधेरी रैनमें, ज्योति जगा दो रे टले ज्यों मेरा रूलना।३। चंद्रफते को ज्ञान के राज में, चरण मिला दो रे स्वामीजी नहीं भूलना॥४॥ इति॥

मल्हार दादरा

बरसत ज्ञान सुनीर हो, श्री जिन मुख घनसों। ब० टेक। शीतल होत सुबुद्धि मेदिनी, मिटत भवा तप पीर हो। ब०१। स्याद्वाद नय दामिनि दमकें, होत निनाद गम्भीर हो। ब २। करूणा नदी बहै चहुं दिशितैं, भरी सो दोई तीर हो। श्री० ३। भाग्य चन्द्र अनुभव मंदिर को तजत न संत सुधीर हो॥ श्री० ४॥ इति॥

देशी चाल पंजाबी ठेका

केसरियाजी जहाज को लोक तिरायो, मोहे ऐसो अचरज आयो। धुलेवा जी जहाज को लोक तिरायो। टेर। मध्य समुद्रमें जहाज डुबंता, तिहाँ कोई नहीं आयो। ऋषभ नाम

जपियो सहु साथे, जहाज ऊपर तिर आयो। धु० १। नाम लियो अंजना ने, सियल संजम व्रत पायो। दिक्षा ले प्रभु केवल उपन्यो, शिव रमणी पद पायो। धु २। रावण राजा भक्ति करन को, अष्टापद गिरि आयो। नव नव नृत्य कियो प्रभु आगे, गोत्र तिर्थंकर पायो। धु० ३। ऋषभ नाम की शक्ति अनंता, कोई पार न पायो। इन्द्र नरेन्द्र पूजे तुम चरणा रामचन्द्र गुण गायो॥ धु० ४॥ इति॥

गजल कहरवा

ऐसी दशा हो भगवन् जब प्राण तन से निकले। टेक। गिरि राज की हो छाया, मनमें न होवे माया, तप से हो शुद्ध काया। जब० १। मनमें न मान होवे ,दिल एक तान होवे, प्रभु चरणे ध्यान होवे। जब० २। संसार दुःखहरणा जिन धर्मका हो शरणा, भव कर्म भर्म हरणा। जब० ३। अनसनका निकट हो, प्रभु आदि देव घट हो, गुरुराज भी निकट हो,। जब० ४। यह विनती सुन लीजे इतनी दया तो कीजे अरजी सेवक की लीजे॥ जब० ५॥

सिन्धु काफी अथा तेताला

प्रभु मोरे औगुण चित ना धरो। टेर। समदरशी है नाम तिहारो, चाहो तो पार करो। प्र० १। इक नदीया एक नार कहावत, मैलो ही नीर भरो। जब मिल करके एक बरन भये, सुरसरि नाम परयो। प्र० २। इक लोहा पूजामें राखत, इक घर बधिक परयो, सो गुण औगुण पारस नहीं देखत, कंचन

करत खरो। यह माया भ्रम जाल कहावत, सूरदास सगरो। अवकी वेर मोहे पार उतारो, नहीं प्रण जात टरो॥ इति॥

चाल देशी ताल तेताला

अैसो सहर विच कौन दीवान है। अैसो०। पानी के कोट पवन के कांगुरे, दश दरवाजा मंडाण है। अैसो० १। पांच इन्द्री के तेवीस तस्कर नगरीकुं करत हैरान है। अैसो० २। ज्ञान को त्राण वचन रस भेद्यो हाथमें लाल कमान है। अैसो० ३। प्रजा पुकार सुनी तव जाग्यो चेतन राय सुजान है। अैसो० ४। रूपचंद कहे प्रभु के आगे दुश्मन मान गुमान है॥ अैसो० ५॥ इति॥

प्रभाती दादरा

नाचत सुर पठित छंद मङ्गल गुणकारी। ना०। सुर सुन्दरी कर संकेत, पीक धुनि मिल भ्रमरी देत। रमक ठमक मधुरी तान, घुंघरु धुनकारी। ना० १। जय जिनन्द शिशिर चंद, भवी चकोर मोद कंद। काम वाम भ्रम निकंद, सेवक तम वारी। ना० २। धूं धूं धप तार चंग, खु खुड धुटट जल तरंग। वेणु, विणा तार रंग, जय जय अघ टारी। ना० ३। श्री सिद्धारथ भूप नन्द, वर्धमान जिन दिनंद। मध्यमा नगरी सुरींद, करे उत्सव मनोहारी। ना० ४। गौतम मुख मुनि वरिंद, तारो भ्रम काटो फन्द। आतम आनन्द चंद, जय जय शिवचारी॥ ना० ५॥ इति॥

लावणी

श्री चिन्तामणि पास अर्ज अब धारिये। तुम हो दीन दयाल दयाकर तारिये। साहिब चतुर सुजान दान मोहि दीजिये। भवसागर से पार मुझे प्रभु कीजिये। श्री चिन्ता० १। लख चौरासी जीव चतुर गति अब तो। ज्ञान बिना शिव धाम कहो किम पाव तो। पुन्य उदय भयो आज मनुष्यमें अब तरयो। श्री जिन दरसन पाय काज मेरो सरयो। श्री चिन्ता० २। धन धन श्री जिनराज परम पदके धनी। चरण कमल की आस मुझे है तुम तणी। तुम हो तारण हार मुगाति तुम नाममे। चेतनता सुध होय चले शिव धाममें॥ श्री चिन्ता० ३॥ इति॥

बिहाग तेताला

देखो भाई आज भयो आनन्द। टेर। खत्रीकुन्ड में जन्म भयो है सिद्धारथ कुल चन्द। दे० १। त्रिशलाजी के उदरे आयो श्री जिन वीर जिनन्द। दे० २। श्रेणिक नृप को तार दियो है कट गयो भवको फन्द। दे० ३। केते नर को कष्ट मिटायो दरशाये शिव पंथ। दे० ४। जन्म भूमि की फरसना की थी मिट गयो दुःख को फंद। दे० ५। संवत उगनिसे नत्रासी दिन चैत्र कृष्ण पंचम। दे० ६। कर जोड़ी दोनु विनती करत है। वल्लभ चो मोति-चंद। दे० ७। भवसागर से तार दीजोजी अर्ज सुनो जिन-चन्द॥ दे० ८॥ इति॥

राग पिलु चाल गजल

सब मिलके आज जै कहो श्री वीर प्रभु की। मस्तक झुका कर जै कहो श्री वीर प्रभु की। विघ्नों का नाश होता है लेने से नाम के। माला सदा जपते रहो श्री वीर प्रभु की। ज्ञानी बनो दानी बनो बलवान भी बनो। अकलङ्क सम बन कर रहो श्री वीर प्रभु की। होकर स्वतन्त्र धर्म की रक्षा सदा करो। निर्भय बनो और जै कहो श्री वीर प्रभु की। तुम को भी अगर मोक्ष की इच्छा हुई है दास चन्द्रवार्नी पै श्रद्धा करो श्री वीर प्रभु की।

थियोट्रिकल कहरवा

समुद्र के लाला हो गुण वाला, नेम नगीना तुम ही तो हो। सौरीपुरमें जन्म लियो जब, सुख करैया तुमही तो हो। स० १। कृष्ण की आयुध शाला में जाकर, शंख पुरैया तुमही तो हो। स० २। कृष्णने व्याह कीबात करी जब, मौन धरैया तुमही तो हो। स० ३। उग्रसेन घर राजुल जाई, व्याह मंड़ैया तुमही तो हो। स० ४। पशुवन की पुकार सुनि जब, रथ फेरैया तुमही तो हो। स० ५। गिरनार जाई संयम लीनो, सिद्धि वरैया तुमहीं तो हो। स० ६। महाराज कहे प्रभु मुझ को उबारो, मोक्ष ले जैया तुमही तो हो॥ स०॥ इति॥

राग भांड देशी चाल

श्री नाकोड़ा स्वामी अन्तर्यामी तारो दीन दयाल। टेक। अश्वसेनजी का लाड़ला, वामा देवीजी का नन्द। श्यामवर्ण

सोहावना रे, मुखड़ो पुनम चंद । श्री० १ । आगे भक्त अनेक उतारे, अब प्रभुजी मोहे तार । तारक नाम धरायो स्वामी, अपना विरुद्ध सम्हार । श्री० २ । मैं अपराधी औगुण भरियो, माफ करो महाराज । दीनदयाल दया कर मोपे, सारो वंछित काज । श्री० ३ । अरजी लीजो दरशन दीजो, मुजरो लीजो मान । करुणा सागर करुणा कीजो अर्ज करे छे 'कान' ॥ श्री० ४ ॥ इति ॥

ठुमरी सोरठ

श्याम चरण सुन्दर छवि प्रभु की, मन हर लीना मोरारे । टेक । सांझ समय जिन मन्दिर आयो, जैसे चन्द चकोरारे । श्याम० १ । नील कमल दल अंग मनोहर, क्या वरणु छवि तोरारे । श्याम० २ । भवसागर से पार उतारो, बांह पकड़ प्रभु मोरारे । श्याम० ३ । सेवक को वंछित फल दीजे, शरण गही प्रभु तोरारे ॥ श्याम० ४ ॥

चलत लंगड़ी

ऐसो देखो कैसा जीव भुलाना । टेक । लख चौरासी भूल के भटमें, नहि जाना अपना ठिकाना । दे० १ । सुकृत करनी न करे पिछमें, भमत फिरे लोभाना । दे० २ । सुखमें काया नहि होवे तपस्या, स्वाद जीव गमाना । दे० ३ । प्रभु गुण गावन मन नहि चावे, उन दिन नहीं तूं जाना । दे० ४ । जिन दिन होगा काया में झगड़ा, झूठा होगा जमाना । दे०५ ।

दास कहे प्रभु ऐसी सुमत दे, वेर वेर नहिं आना ॥ दे० ६ ॥ इति ॥

मिश्र पीलु ताल लंगड़ी

तेरे दरस को चाह लग्यो सखी श्याम वरण बतलाजारे। वनमें जाय प्रभु दीक्षा लीनी, हमको लार लगाजारे। ते० १। जाय चढ़े प्रभु गिरनार ऊपर, अब केरे बिसराजारे। ते० २। चंन विजय कहे धन धन राजुल, प्रभु चरणे चित लायजारे ॥ ते० ३ ॥ इति ॥

चाल देशी, थियेटर

कंपिलपुरमें स्वामी भेय्या विमल जिनंदरी। कं० टेक। जिन कल्याणक धाम तीरथ यह जाने सुर नर इन्द्ररी। कं०१। इक्षु वंश कृतवर्ग नरेश्वर माता श्यामा देवी नंदरी। कं० २। चवन जन्म संजम जिहां लीनो केवल पायो जिनंदरी। कं० ३। पूर्व तीर्थ चिर प्रगट वनारस, प्रगट किया ओसवंशरी। कं० ४। वरडिया गोत्र दयाचंद सुतने, किसन छोटु दीपचंदरी। कं० ५। सब परिवार मिल चैत्य करायो, सफल कियो या वित्तरी। कं० ६। लक्षण पुर थी सकल संघ मिल, पहुंच करे आनन्दरी। कं० ७। पंचानुत्तर सम आकारे, पांच शिखर राजेन्द्ररो। कं० ८। वरस उनीसे चार माघ सुदि, बारस तिथी शशीनंदरी। कं० ९। इक्षु वंश थापना प्रतिष्टा किन्हीं, सागर श्री जिनचंदरी। कं० १०। चरण पुजा मधुकर सम पामें, नावे वर्धन सूरिन्दुरी ॥ कं० ११ ॥ इति ॥

चाल देशी

आज दिन भैय्या में सिखर गिरिरी, भविजन मिल हरख भरीरी। टेर १। वीसे वीस जिनंदजी, मुक्ति वधू सुख साज वरीरी। आ० २। मधुवन में जिन मंदिर निरखत, भवोदधी वाड़व ताप बुझीरी। आ० ३। श्याम सलुणी मूरति प्रभु की, वन्दे भवीजन हरख धरीरी। आ० ४। केशर चन्दन मृग मद घोरी. विधी विस्तारे पूजा करीरी। आ० ५। वीस जिनंद के चरण फरसत, प्रगटी पून्य दशा लहरीरी। आ० ६। नंदी गुण गावे भावना भावे, केइ पिचकारी जिन पर छिरकरीरी। आ० ७। कहे सुमति नित संग करीके, प्रभु चरनन से प्रीत धरीरी। आ० ८। संवत उगणीसे छवीसे वर्ष, प्रणमे अमृत चंद्र सूरिरी। आ० १०। सिंह प्रतापज संघज गावे, यात्रा भली निर्वाण चढ़ीरी॥ आ० ११॥ इति॥

देशी की चाल

गिरिवर दरसन विरला पावे, पूरव संचित कर्म खपावे। गि०। ऋषभ जिनेश्वर पूजा रचावे, नव नाम गिरि गुण गावे। गि० २। सहस्र कमल ने मुक्ति लहे गिरी, सिद्धा-चल सब टुंक कहावे। गि० ३। टुंक कदम्ब मुनि कोड़ी सिधारो, लोकिताल ध्वजा सुर गावे। गि० ४। टंकादिक पंच कोटी सर्जीवन, सुर नर मिल नाम थपावे। गि० ५। रयण खान जड़ी बुटी गुफाए, रस कुपिका गुरु दहां बतावे। गि० ६। पर पुन्यवंता प्राणी पावे, पुन्य कारण प्रभु

पूजा रचावे। गि० ७। दस कोटी श्रावक जिमाणे, जो इण तीरथ यात्रा करी आवे। गि० ८। तेहथी एक मुनि दान दियंता, लाभ घणा सिद्धाचल थावे। गि० ९। चन्द्र शेखर निज भगिनी भोगी, ते पिण इण गिरी मोक्षे जावे। गि० १० च्यार हत्यारा नर परदारा, देव गुरु द्रव्य चोरी खावे। गि० ११। चेत्री कार्तिक पूनम यात्रा, तप जप ध्यान थी पाप जलावे। गि० १२। ऋषभ जिनेश्वर आदि असंख्या, तिर्थंकर मुक्ति सुख पावे। गि० १३। शिव वधु वरना मंडप ए गिरी श्री शुभ वीर वचन रस गावे॥ गि० १४॥ इति॥

देशी ताल लंगड़ी

भविका श्री जिन विम्ब जुहारो, आतम परम आधारोरे। भ०। जिन प्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो संका कांई। आगम वाणी ने अनुसारे, राखो प्रीति सवाईरे। भ० १। जे जिन विम्ब स्वरूप न जाणे, ते कहिये किम जाणे। भूला तेह अज्ञाने भरिया, नहीं तिहां तत्व पीछाणेरे। भ० २। अंबड़ श्रावक श्रेणिक राजा, रावण प्रमुख अनेक। विविध परे जिन भक्ति करता, पाम्या धर्म विवेकरे। भ० ३। जिन प्रतिमा वहु भक्ते जोता, होये निश्चे उपकार। परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जोवो आद्रकुमाररे। भ० ४। जिन प्रतिमा आकारे जलचर, छे वहु जलधि मझार। ते देखी वहुला मच्छादिक, पाम्या विरत प्रकाररे। भ० ५। पांचमा अङ्ग जिन प्रतिमानो, प्रगट पणे अधिकार। सुरियाभसुर जिनवर पूज्यां, राय पसेणी मझाररे। भ० ६। दशमे अंगे अहिंसा दाखी, जिन पूज्यां जिनराज। एहवा

आगम अरथ मरोड़ी, करिने केम अकाज रे। भ० ७। समकित धारी. सतिरे द्रौपदी जिन पूजा मन रंगे। जो जो गहनो अरथ विचारी, छट्ठे ज्ञाता अंगेरे। भ० ८। विजय सुरे जिनवर पूजा, किधी चित्त थिर राखी। द्रव्य भाव बहु भेद किनी, जीवाभिगम ते साखीरी। भ० ९। इत्यादिक बहु आगम साखे, कोई शंका मति करजो। जिन प्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम घणो चित्त धरजोरे। भ० १०। चिंतामणि प्रभु पास पसाये, सरधा होजो सवाई। श्री जिन लाभ सुगुरु उपदेशे श्री जिनचन्द सवाईरे॥ भ० ११॥ इति॥

देशी चाल

शत्रुंजे ऋषभ समो सर्या, भला गुण भरियारे। सिद्धा साधु अनंत. तिरथ तेह नमुंरे। १। तीन कल्याण तिहां थया मुगते गयारे। नेमिश्वर गिरनार। ति० २। अष्टापद एक देहरो, गिरी सेहरोरे। भरते भराविया बिम्ब। ति० ३। आबु चोमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलोरे। विमल वसही वस्तुपाल। ति० ४। समेत सिखर सोहामणो, रलियामणोरे। सिद्धा तिर्थंकर वीस। ति० ५। नयरि चंपा निरखीये. हिये हरखीयेरे। सिद्धा श्री वासु पूज्य। ति० ६। पूर्व दिसे पावापुरी, ऋद्धे भरीरे। मुक्ति गया महावीर। ति० ७। जेसलमेर जुहारिये, दुःख वारियेरे। अरिहंत बिम्ब अनेक। ति० ८। विकानेर वंदिये, चिर नंदियेरे। अरिहंत देहरा आठ। ति० ९। सेरिसरो संखेसरो, पंचासरोरे फलोधी थंमण पास।

ति० १० । अंतरीख अंजावरो, अमिझरोरे । जिरावलो जगनाथ ति० ११ । त्रैलोक्य दीपक देहरो, यात्रा करोरे । राण पूरे रिषभेस । ति० १२ । श्री नाडुलाई यादवो, गोड़ी स्तवोरे । श्री वरकाणेरे पास । ति० १३ । नंदिश्वर ना देहरा, बावन भलारे । रुचक कुंडल चारू चार । ति० १४ । शाश्वती आशाश्वती प्रतिमा छतीरे । स्वर्ग मृत्यु पाताल । ति० १५ । तिरथ यात्रा फल तिहां, होजो मुझ इहांरे । समय सुन्दर कहे ऐम ॥ ति० १३ ॥ इति ॥

देशी दादरा

यात्रा नवाणु करिये विमलगिरी यात्रा नवाणु करिये टेर० । सहस कोड़ी भव पातिक छुटे, सेत्रुंजा सामो डग भरिये । वि० १ । पूरव नवाणु वार सेत्रुंजा गिरी, ऋषभ जिनंद समोसरिये । वि० २ । पुंडरीक पद जपीये मन हरषे, अध्यव-साय शुभ धरिये । वि० ३ । सात छट्ठ दोय अट्ठम तपस्या, करी चढ़ीये गिरी वरीये । वि० ४ । पडिकमणा दोय विधिसुं करिये, पापपडल परिहरिये । वि० ५ । भूमि संथारोने—नारि तणो संग दूर थकी परिहरिये । वि० ६ । ऐकल आहारि ने सचित्त परिहारि, गुरु साथे पद चरिये । वि० ७ । कलिकाले ए तीरथ मोहड्, प्रवहण जिम भरदरिये । वि० ८ । उत्तम ए गिरिवर सेवंता, पद्म कहे भव तरिये ॥ वि० ९ ॥ इति ॥

गजल ताल दादरा

महावीरजी सुनिये पुकार जरा, दशा बिगड़ी को करो

उपकार जरा। टेक। आप खुद थे तर गए भक्तों को तारा था कभी। चंदन वाला दीन की बेड़ी उतारा था तभी। नैया भंवर से कर दीजे पार जरा। महा० १। कील कानोंमें जड़े औ, खीर पांवों पर धरे। कर दिये अरमान पूरे उफ भी बिल्कुल न किये। तेरी शक्ति का नहीं पारावार जरा। महा० २। नगर क्षत्री कुण्ड में स्वामी जनम तुमने लिया। इन्द्र की शंका मिटाने मेरु को कम्पा दिया। तेरी शक्ति की जाऊं बलिहारी जरा। महा० ३। थे अहिंसा के प्रचारक जैन के अवतार थे। सद् गुणों से युक्त स्वामी विद्या के भंडार थे। ऐसी विद्या का हो परचार जरा। महा० ४। घट रही दिन बदिन जाती खबर उसकी लीजिये। पहले जिस पानी से सींचे फिर उसीसे सींचिये। उजड़ा गुलशन करो गुलजार जरा। महा० ५। चाह में दर्शन को तेरे फिर रहे नर नारी सब। पर नहीं मालूम होता दरश देंगे आप कब। दीजे सेवक को जल्दी दीदार जरा॥ महा० ६॥ इति॥

ठुमरी ताल कहरवा

आज पावापुर आयेंगे, रचि समवसरण जिनराज। टेर। दर्शन करत जन्म अघ नाशे, मानुष जन्म सफल हो जावे, सिंहासन पर सोहे प्यारे, श्री जिन गयंगी। रचि० १। षट ऋतु के जहां फूल अनोखे, बागनमें जना कर फूले, सांप नेवल मिल बैठे चोखे, बैर नशायंगी। रचि० २। तरु अशोक लखि शोक विनाशे, भार मंडलमें

भाव के वासे, सात सात भवि ज्ञान प्रकाशे, वचन सुनायोरी। सखि० ३। चौसठ चमर ढुले शिर वाके, तीन छत्र तिहुं जग प्रभुता के, गणधर रहे कीर्ति यश गाके, हर्ष वढ़ायोरी। सखि० ४। साढे वारह क्रोड़ दुन्दभी, वाज वाजे चहुं ओर दुन्दभी, अमर कहे कर जोड़ दुन्दभी, आनन्द छायोरी॥ सखि० ५॥

खम्माच लंगड़ी

ऐसे पीयारे की लटक, की मैं वारीया। मनमोहन त्रिभुवनमें तु हि प्रभु। तारी सुरत की वलहारियां। ऐ० १। अति ही उदार निरुपम मूरत, दर्शन आनन्द कारीयां। ऐ० २। चुनी निरख परम सुख पावत, पूरण काज सुधारीयां॥ ऐ० ३॥ इति॥

खम्माच दादरा

हमसे छलवल करके नेम गिरनारी गये गयेरे। ह०। लाए वराती व्याहन आए पशुवन सुनि पुकाररे, जीव दया के कारणे, रथ फेरी गए गएरे। ह० १। हाथ कङ्कना तोड़ करके, सिरके लोचे केसरे पञ्च महाव्रत जोग लिये पद। केवल लये लयेरे। ह० २। अरज करत हूं, पइयां पड़त हूं, विनती करत कर जोड़रे। दास फते की एही अरज है, चरणों चित्त लहे लहेरे॥ ह० ३॥ इति॥

खम्माच कहरवा

राजकेसरीयां तेंतो मेरो मन लीनोरे। रा०। तेरी सांवरी

मुरत मेरा मनमें भाव, अब चढ्यो प्रेम वस मेरो मन कीनोरे। रा० १। सुनी श्रवन मेरो मन भयो उच्छाह, मोसे रहो न जात चावगीमी करलीनोरे। रा० २। कर जोड़ी सेवक गुन गावे मूरत मोहन गारीरे। रा० ३। सेवक प्रभुजीका गुण गावे, तुं मन मोहन मेरोरे॥ रा० ४॥ इति॥

खम्माच

श्याम सलूना चले रथ फेरीरे। महाव्रत गई अति गढ़गावनमें, परणति मुगता केरीरे, सञ्जम लीनी, नेमनगीनो सिनगी आनन्द घन केरीरे॥ श्या० १॥ इति॥

खम्माच लंगड़ी

सहियो देखो वानी अमृतरस वरसे। सहि०। निरखत नैन फुलगहिये हरषे। स० १। अद्भुत छवी श्री वीर प्रभुकी, देखन कुं जियरा तरसे २। स० २। चालो सखी आज समव शरणमें, गौतम गणधर सरसे २। स० ३। राय श्रेणिक राणी चेलना प्रभुको, वन्दन जात नगरमें २। स० ४। सुरनर वीर भविजनके आगल, अरथ अगम गम दरसे २। स० ५। लाल कहे घन वानी गुनेनर। सुमरण करत जिगरसे जिगरसे॥ स० ६॥ इति॥

कव्वाली इन्द्र सभा के चाल

आया हूं जिनराज मे मैं अर्जी करने आज। पार करो भवजल्से मुझ, नाथ पकड़ महाराज। करता हूं मैं अपनी तुमसे मुनियो देकर कान। मुझकु दरशन दीजिये मेरे दिल

में हैं अरमान । आ० १ । दुश्मन मेरे आय के मुझको करते हैं हैरान उनसे पला छोड़ाइये तो मानेंगे आसान । तुम हो खाविन्द नाथजी और हम हैं खानेजाद । आशा है इक आपकी जरा दिलमें रखियो याद । आ० २ । देखा मैंने ढुंढ के इस दुनियाके दरम्यान । मिला नहीं कोई दिलका महरम तुम ऐसा भगवान । कदम तुमारा देखके हम मनमें भये खुशाल । सेवक अपना जानके अब जलदी करो निहाल । आ० ३ । अवर किसीसे काम नहीं मेरे तुमसे है दरकार । सफल करो यह विनती प्रभु पूरा करो करार । वाचक श्रीइन्द्रचंदका चंद अबीरा नाम । चिन्तामण प्रभु पाशजी थे पूरण करदो काम ॥ आ० ४ ॥ इति ॥

इन्द्रसभा के चाल

आये थे पीया व्याहनकुं तुम सज के खुब वरात । तोरण से रथ फेर चले सो यह कैसी है वात । सुनहो यादवरायजी तुम हो मेरे नाथ । जाते हो कहां छोड़ के जरा पकड़ो मेरी हाथ । आ० १ । तुम हो मेरे अंतरयामी नव भव के महाराज । तुम सिवाय कोई नहीं जगमें मेरा तो शिरताज । आवो मेरे घरमें स्वांमी मन धर हरष अपार । अरज हमारी सुनियो साहव मुझ पर दया विचार । आ० २ । दिलकी दिल में रही है मेरे किसकुं करूं पुकार । में भी तुमरे संग चलूंगी आखर गढ़ गिरनार । लिखा है लेख विधाता ने सो कवण मिटावण हार । होनी थी सो हो गई अव तुमरे हाथ करार

आ० ३ । मुगति पूरी जाने का रस्ता धरलीया है आप । ज्ञान ध्यान से दूर किया सब जगत जाल का पाप । राजमती की अरजी ऐसी सुनियां दीन दयाल । इन्द्रचन्दका कहे अवीरा करिये मंगल माल ।। आ० ३ ।। इति ।।

इन्द्रसभा के चाल

चिन्तामणी पार्श्व अरज करु में तुझकुं । अब मेरी अरज सुनी पार उतारो मुझकुं । १ । शत्रु मेरे अष्टकर्मोने फंदमें फसाया मुझकुं । तुम विन और नहीं फंद छोड़ावे मुझकुं । २ । ज्ञान ध्यान तप जप नहीं, उदये आवे मुझकुं एक तेरा नामका आधार प्रभु है मुझकुं । ३ । नरनारी सुर नर नित्य नमे हैं तुझकुं । मेरा मनमें तो प्रभु ध्यान धरुं में तुझकुं । ४ । कल्याण निधान प्रभु अरज करे हैं तुझकुं । चंद गोपाल कहे दरस दिखावो मुझकुं ।। ५ ।। इति ।।

गजल कहरवा

कृपाल जिनन्द कहुं में मनकी । प्रमाद पनमें जनम गमायो कृ० टेर । सूक्ष्मनिगोद की पीड़ सही है, बादरमें कुछ चैन न पायो । कृ० १ । अनन्त कालसे निकसत नांहि, जनम मरणरो फंद मचायो । कृ० २ । गिरि सरिताके उपल ज्यूं फिरे, कोमल सहज स्वभावमें आयो । कृ० ३ । अब्द संख्याते विकल त्रिकमें, जलथल खेचर दुःख लहायो । कृ० ४ । श्रीगौडि जिनेन्द्र कृपासे, मानव भव पदारथपायो ।। कृ० ५ ।। इति ।।

तेलाना तेताला

हेजि माई नाचत शक्र शक्री। छम छम छम छन नन नन नन। नाचत० टेर। श्रीऋधृति कीर्त्ति बुद्धि और लछमी छपन कुमारी करे माताजीकी सेवना, नाभ राय राजा कुल कमल भान, तुम ऋषभ देवजीके सरन न न न न न। नाचत १। तम्बुरा मजिरा वीण झांझ मौरचङ्ग चङ्ग, कुंकुम वजावे और गावे सब राग रङ्ग, एक २ शक्र जहां एक २ शक्री सङ्ग बाजत मृदङ्ग गत गन न न न न न न। नाचत०२। एक मुखपर मुख वसु २ दन्त छाय, दन्त २ उपर सुरङ्गना समूह नाच, वाजत समीर गत सन न न न न न न। नाचत०३। प्रभुको ले न गई शुचि जिन माता पास, जाय जिन जननीको राधे निंद सुखलाय, लायके जिनन्द दियो गोदमें प्रथम इन्द्र, वाजत घुङ्घरु पग झन न न न न न न। नाचत४०। लायके सुमेरु क्षीर नीरसे न्हवन कीन्हो, सव देव देवी मिल जनमको लाहो लिन्हो, धन भाग वाको जाने सभे देखो हीरालाल, बाजत तम्बुरा सन न न न न न न॥ नाचत०५॥ इति॥

खम्बाज तेताला

सोहे सुरण गाती, सुहाती। सो०। सङ्गीत गत थेई २ ता ता थेईया ; नाचे नाटक साथी। सु०१। वजावे मृदङ्ग भावे धां धां किट २, धां धां धां किट २ ध प मप धुनि जाती सु०२। ता धिलाङ्ग धुन किट २ धिन किट धिन्ना किट धिन्ना किट धा किट, धिन्ना किट धा धिन धा किट धाति। सु०३

जनम समय जिन जान आन सब, शिखर शैल जाति सु०४। स्वर्गे सुरिंद सब आल बाल मिल गाति गवाति आती॥ सु०५॥ इति॥

खम्याज कहरवा

तुभ्यं नमस्ते स्वामी। शान्ति जिनन्दजी दग देखे परम आनन्दा, मुख पूनम चन्दा। तू०। जनमें प्रभु शान्ति सुधारोजी जगमें मारि निवारिजी। तुम शांति नाम हित कारी, मैं सेवाधारी। तु० १। तुम दीनदयाल जगदयाला लालन पतिलालाजी, मैं सदाजपुं गुणमाला, घर प्रेमप्याला जी। तु०२। तुभबिन कौन है मेरा, तुं साहिब है मेराजी। हरोमिथ्यात घोर अंधेरा, काटो भवफेरा। तुं०३। तुमकल्प वृक्ष हितकारी। चिन्तामणि धारीजी। तुम पूरो आसा हमारी सुखी हो सो तुमारीजी॥ तु०४॥ इति॥

गजल दादरा

इस काया नगरमें आयके भूलि रहा है तुं। उस दिन ना तेरी ईयाद पड़े गाफल रहा है तु। इस०१। इह सुघड़ चिमन से एक साथ सौंडीगो, निरगन्ध झूठे रूपमें फूली रहाहै तुं। इस०२। सदा धारम धर्मका काहे नहीं करता, ज्ञानी गुरुके वचनको दिल साफ रखना तुं। इस० ३। उस प्रभुके नामको करदीन से भिनाक, अजर अमर पद देवेंगे क्यों सोचत है तुं॥ इस०४॥ इति॥

सिन्धु काफी कहरवा

कुन खेले तोसूं होरीरे सङ्ग लागोई आवे । कुन० । अपने अपने मन्दिरसे जो निकसी कोई सांवरी कोई गोरीरे । सं० १ । चोवा २ चंदन अवर अरगजा केशर गागर घोरीरे । सं० २ । भर पिचकारी मुखपर डारी भीजगई तनसारीरे । सं० ३ । आनन्द घन प्रभु रसभरि मुरति आनन्द रहि वा झोरीरे ॥ सं० ४ ॥ इति ॥

प्रभाती (डफ की चाल)

होरी आई सजन सुखदाईरे रंग सुरङ्ग झटपट सम्भार रुचसे धार अध्यातम सेली आतम गुण वरदाईरे । हो० १ । वीर विवेक परम संवेगी समता नार सुहाईरे । हो० २ । मृदु गुण अवीरलिये आनन्दसे ज्ञान गुलाल सजाईरे । हो० ३ । ध्यान साध भरे पिचकारी सन्मुख ताक लगाईरे । हो० ४ । रंगसे रंग मिले जब चुन्नी घर घर हरष बधाईरे ॥ हो० ५ ॥ इति ॥

चलत काफी

मधुवनमें जाय मची होरी । श्री संघ खेलै सदा होरी । म० १ । ज्ञान गुलाल अवीर उड़ावो, समता केशर रंग घोली । म० २ । अमृत रूप धरम जिनवरको शुद्ध क्षमा कहे करजोड़ी ॥ म० ४ ॥ इति ॥

काफी दादरा

मेरे पियाकुं कोई मनावोरे । जिरा होरी खेलूं मेरी सजनी

१ । शमता केसर दया पिचकारी ज्ञान गुलाल मंगावोरे । ज० २ । समकित गागर जलभर लावो सञ्जम रंग लगावोरे । ज०३ । श्याम सुन्दर मेरा प्राण पियारा चन्द वदन दिखलावोरे । ज० ४ । नेम कुमर धन राजुल रानी, कहत अवीर गुण गावोरे ॥ ज० ५ ॥ इति ॥

काफी, ताल खेमटा

सुमति सदा सुखदाई हो खेलन आई होरी । पूर्णानंद सुखद पीउ संगे सब सखी आन मिलाई हो । खे०१ । निज गुण बागमें सहज वसन्ते मौज मची मनभाई हो । खे०२ । ध्यान समाधि भवनमें बैठे रगभरी खेले गोसांई हो । खे०३ । प्रभु आन सिर छत्र विराजे । त्रिदु नय चमर डोलाई हो । खे०४ । आगम वचन संगीते बहुगम । वाजित्र विविध बजाई हो । खे० ५ । शांति सुधारस प्याले पीवत आनन्द लीन जमाई हो । खे०६ । या विध पीउ प्यारी मीली खेलत सब सुख सम्पति पाई हो । खे० ७ । भानुचन्द्र प्रभु पास पसाए शिव सुख हर्ष बधाई हो ॥ खे० ८ ॥ इति ॥

काफी कल्रवा।

मन सुकने मोहे भंग पिलाई, अंखियामें छा गई लाली मन० । भावकी भंग मन्मर्की मिर्ची शीतलकी साफी बनाई । मन० १ । ज्ञानका घोंटा क्रियाकी कुंडी, घोंटनवाले मेरा सांई । मन० २ । ऐसी भंग सुघड़ नर पीवे अजर अमर हो

जाई । सत०३ । आनन्द घनकी यही अरज है शिव रमणी वर जाई ॥ सत० ४ ॥ इति ॥

दादरा होरी

चिन्तामण चित धावोरे, वंछित फल पावो । टेर । सकल भविकजन मिलकर आवो । राग फागुन गुण गावोरे । वं०१ । अबीर गुलाल लाल संग लावो, भर २ मुठिया उड़ावोरे । वं०२ । कुंकुम केशरकुं छिरकावो भाव सुफल मन भावोरे । वं० ३ । अङ्गी चङ्गी पुहप बनावो । दीपक ज्योति दीपावोरे । वं० ४ । दरस परस करके सुख पावो । पुण्य भण्डार भरावो रे । वं० ५ । वाजित्र विविध बजावो । नृत्य संगीत नचावोरे । वं० ६ । अमर सिन्धु आनन्द वधावो । जिनजी से लय लावोरे ॥ वं० ७ ॥ इति ॥

काफी ताल यत्

सांवरो सुखदाई जाकी छवि वरणि न जाई । सा० । श्री अश्वसेन वामानन्दन की कीरति त्रिभुवन छाई, समेत सिखर गिर मण्डण प्रभु को देख दरस हरखाई, हृदय मेरो अति हुलसाई । सा० १ । आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो आज आनन्द वधाई, तीन भुवन को नायक निरख्यो प्रगटी पूर्व पुण्याई, सफल मेरो जनम कहाई । स० २ । प्रभुके सरस दरस विन पाये, भव भव भटक्यो मैं भाई, अब तेरो चरण शरण चित चाहत, बाल कहे गुण गाई, प्रभुजी से लगन लगाई ॥ सा० ३ ॥ इति ॥

होरी कहरवा

नेम निरंजन ध्यावोरे वनमे तप कीनो । ने० । सब यादव मिल ब्याह रचा आए, पहिर जराव जरी नारे । व० १ । कंकन मुकट हाथ सु तोड़ पशुवन परचित दिनारे । व० २ । सहसावन की कुञ्ज गलीन में पञ्च महाव्रत लीनोरे । व० ३ । जिनवर भूषण कहे भविजनने, सहु जगमें जस लीनोरे ॥ वन० ४ ॥ इति ॥

होरी ताल पंजाबी

जावो जावो नेम पिया थांरी गति जानीरे । इतनी अरजी मोरी नांहि पिया मानीरे । जा० टेर । जब काहू किन्हा संग, सह साजन लिये रंग, खेलिये राणी के बिच राधा रुखमनिरे । जा० १ । पिचकारी जलभरी विमल कमल करी, अबीर गुलाल बीच केसरी छांनी छानीरे । जा० २ । पशुवन दया करी भए व्रतधारी आमो हीं मिलूंगी तुमसे सुनो केवल ज्ञानीरे । जा० ३ । अधम-उधारी निशान उपगारी कपूर प्रभु के पाय जैसे दूध पानीरे ॥ जा० ४ ॥ इति ॥

होरी दादरा

जाव जाव तुम सखी मेरी पिया बिना ना खेलूं होरी । १ । आई बसन्त नहीं है कन्त फूल फूले देखो ढेरी ढेरी । पी० २ । गावत चले गुनी सखी पीउ चरणमें ध्यान धरी । जहंगी श्रीमत संग सखी रेतूंगी फाग ज्ञानभरी । पी० ३ ।

गिरी की डगरी पकड़ सकड़ी छोड़ न सङ्ग एक घड़ी ॥ जा० ४ ॥ इति ॥

काफी ताल थत्

फागुन खेलो भाई तन मन ध्यान लगाई । फा० टेर । सुमत की पिचकारी हाथ लै कुमति नीर छड़काई । ज्ञान गुलाल अवीर उड़ावो अष्ट कर्म भगजाई । चिदानंद निर्मल थाई । फा० १ । दानशील तप भाव अरगजो क्रोधकी पङ्क रचाई । धर्म शुक्ल लेश्या को मादल द्वादश भावना भाई । पद्मोदय हरष वधाई ॥ फा० २ ॥ इति ॥

ताल चलत (थियेटर)

होरी आई वरस दिनसे । हो० । अवीर गुलाल झोली भरके, लावो उडावो, मत जावो, हम तजके । हो० १ । राजुल विनती करे पीवसे, मैं हूं तव दासो, चरणेकी नहीं छोडु । हो० २ । मोह प्रीत सवको छिनमें जीत्या, जाती है पीवसङ्ग में गिरनारी । हो० ३ । सेवक वीनती करें प्रभुसे दीजै निर-मल शिवपद सुखकारी ॥ हो० ४ ॥ इति ॥

ताल दादरा

होरी खेलो नेमसे धाय धाय । दुरजन की लाज मेरी करेरे वलाय । हो० । ज्ञानगुलाल अवीर उड़ावो क्षमाकरी रङ्ग लाय लाय । हो० १ । शील सञ्जम व्रत पान मिठाई, ध्यान धरूङ्गी मैं गाय गाय । हो० २ । अष्टकर्मकी खेह उड़ादो ज्ञान

रंगमें लाय लाय । हो० ३ । जगतचन्दकी अरज वीनती शरण लहीं में तेरी आय आय ॥ हो० ४ ॥ इति ॥

होरी ताल पंजाबी

नेमनाथ वर पायोरी सजनी धन राजुल तेरो भागरी । ने० । पहली में पूजूं ऋषभजिनन्दा जिन मोहि दियो सुहागरी । ने० १ । सोनेको छत्रधरो सिर उपर गल मोतीयनकी मालरी ने० २ । चम्पा चमेली दोनो मरुवा फूल चढ़ावुं गुलावरी । धूप दीप नैवेद्य आरती मुख बोलो जयजयकाररी । ने० ३ । जयचन्दकी प्रभु अरज वीनती भवभव दिजो दिदाररी ॥ ने० ४ ॥ इति ॥

मिश्र काफी कहरवा

किन डारी पिचकारीरे, मैंतो सारी भींज गई । कि० । चोवा चन्दन अबीर अरगजा केशरकी छवि न्यारीरे । मैं० १ । रुक्मिण सत्य गोपी मिल खेलत, वासुदेवकी नारीरे । मैं० २ । नेम कुमारकूं मनावन चाली बोलत भोली वारीरे मैं० ३ । नवल कहे ऐसे नेम कुमरकूं, हँसी हँसी देत है नारीरे ॥ मैं० ४ ॥ इति ॥

प्रभाती कल्यान

आज भविक जन होरी खेले, ज्ञान गुलाल सुहाया है । दया पिचकारी करुना केरी, समता रंग भराया है । आ० १ । शील सुगंधी नीर सिंचे, तन मन ध्यान लगाया है । आ० २

धप मप धु धु किट मादल बोले, रिम झिम ताल बजाया है। आ० ३। तननन तुम तननन अलापे, सा रे ग म प ध नी गाया है। आ० ४। घन नन घुम घुङ्घरु बाजे, थगी थन थेई नृत्य मचाया है। आ० ५। जिन मन्दिरमें इन विध होरी, सुमति सखी संग लाया है। शुद्ध चेतना अनुभव चाहे ऐसा खेल मचाया है ॥ आ० ६ ॥ इति ॥

कहरवा कालंगड़ा

होरी आई तुं बैठी है क्या बेखटक। उठ सुमति सखी झट रंग ले चटक। हो० १। शील सिंगार पहेर सत वागा छोड़ असत मेटो मनकी भटक। हो० २। खेले फाग समकित शुध धरके, घरही के सब जञ्जाल पटक। हो० ३। ज्ञान गुलाल लगाय सुरतसुं, प्रभु पदपङ्कजमें जा अटक। हो० ४। शुभ मतकी पिचकारी हाथ ले अशुभ करम तक मार सटक। हो० ५। चुन्नी निज आतम रंगमें खेले, देख सुघरकी अनूठी लटक ॥ हो० ६ ॥ इति ॥

दादरा काफी

मेरो परम सनेही पास कुमर, मोकुं याद आवत है वार वार। मो० १। अश्वसेन वामाजीके नन्दन भवजलथी मोहे तार तार। मो० २। घड़ि घड़ि पल पल ध्यान धरत हूं, येही जगतमें सार सार। मो० ३। मैं तुम चरण शरण लपटो हूं, अबीर कहे गुण धार धार ॥ मो० ४ ॥ इति ॥

होरी दादरा

होरी आई तूं समताकुं भजले अटक, पर गुण की संग तें अलग पटक। हो०। परिहर मन नृप की चञ्चलता निज कुं पहिचान सटक। हो० १। निसि दिन जिनवरके गुणगावो विषय कषायको छोड़ चटक। हो० २। सरधा शीयल संतोष सञ्जम धर, आगम अमृत पीवो गटक। हो० ३। कहत अबीर सुमति सखी संगे, होरी खेल जिनराज निकट॥ हो०४ इति॥

दादरा

प्यारे सम्भव जिनकुं समरले। ऐसी होरि खेलन जिन जावो बावरे। म०। आगम उदधि सुधारस जलसे। घटकी गगरियाकुं भरले। ऐसी० १। हित उपदेशक सुगुरु बतायो, शिवकी डगरिया पकड़ले। परम ब्रह्म पद अन्तर भीतर आतम अनुभव करले। ऐसी० २। राम जिन नाव सुदृढ़ अवलम्बन, भवसागरकुं तरले। ऐसी० ३। बाल सुमति संग खेलत हिलमिल, परम परम पद वरले॥ ऐसी० ४॥ इति॥

ताल खेमटा

मैंने देखी अनोखी होरी रे। मैं०। सहसावनकी कुञ्ज गलिनमें, अनुपम जोर मच्योरी। अ० १। यादव पति श्री नेमि कुमरजी सुमना सखी मिल्योरी। अ० २। समता केसर रंग पिचकारी, डारत है घरजोरी। अ० ३। ज्ञान गुलाल उडे अति भारी। अबीर उडे भर झोरी। अ० ४।

कपूर कहे प्रभु मोहे खिलावो । अरजी सुनो एक मोरी ॥ अ० ५ ॥ इति ॥

काफी पद

या विध धूम मचाऊँ जपे मन जिन गुण गाऊँ । काम, क्रोध, मद, मोह, लोभकी, धूर अवीर उड़ाऊँ, ले समता जल भर पिचकारी, तृष्णाकुं छिरकाऊँ, अध्यातम पद एसोही ध्याऊँ । या० १ । फेर उमङ्ग सुरङ्ग भरूं हिय अङ्ग अनङ्ग न साऊँ, जिनचरनण हू धार सदा और मन सुर चंग वजाऊँ फेर दुर्गति नहीं जाऊँ । या० २ । धूधर धामा धम देधर ध्यांन अवीर धकाऊँ, मन, वच, काय लाय समकित हुं गहिरी रंग लगाऊँ, ज्ञान गुण तेसोहि पाऊँ ॥ या० ३ ॥ इति ॥

कालेंगड़ा कहरवा

सुमति सखी संग लेके आई, पहुंची श्रीजिनजीके द्वार । टेर । विनय सुरङ्ग पिचकारण भरके । खेले होली की वहार । सु० १ । मन मृदंग तन डफली वजावै गावै होली की वहार । सु० २ । रेजन मूरख कवहुं न तजिये, एसी होलीकी वहार । सु० ३ । अजय अमर पद चाहै सोई, देखै मुक्तिकी वहार ॥ सु० ४ ॥ इति ॥

कालेंगड़ा कहरवा

पन्थीड़ा पन्थ चलैगो, प्रभु भजलै दिन च्यार । पं० । झूठी काया, झूठी माया, झूंठी सव परवार । पं० १ । वाल पणें

में खेल गमायो, जौबन माया जाल। पं० २। वृद्धापण आयो धरम न पायो, पिछे करत पुकार। पं० ३। क्या ले आयो, क्या ले जासी, पाप पुण्य दोयलार। पं० ४। दया मया कर पार एकन्नी अब तेरो ही आधार॥ पं० ५॥ इति॥

खम्माज तेताला

हम जानत हैं तुम तारोगे। ह०। नाभिराय मरुदेवी को नंदन मेरी ओर निहारोगे। ह०१। आदि जिनेश्वर अंतर जामी स्वामी कछु न विचारोगे। ह०२। जगजीवन जग तारक तुमहो यही बिरुद संभारोगे। ह०३। श्रीजिन सौभाग्य सूरिंदकुं साहिब भवजल पार उतारोगे॥ ह०४॥ इति॥

होरी ताल धत्

निसदिन जोउं थारी वाटडी घर आवोनी ढोला। नि०। मुझ सरिखा तुम लाख हैं, मेरे तुंही अमोला। नि०१। जौहरी मोल करै लालनका, मेरा लाल अमोला। जिसके पटन्तरको नहीं उसका क्या मोला। नि०२। कौन सुने किसकुं कहूं, किम मांडुं बोला। तेरा मुख दीठे टले, मेरा मनका झोला। नि०३। मीत विवेक कहे हितु, सुमता सुन बोला, आनन्द घन प्रभु आवसे सेजडी रङ्ग रोला॥ नि०४॥ इति॥

होरी दीपचन्दी

साहिब आदि जिनन्द चन्द : मोहे अपने रङ्गमें रंगदे। टेर०। मगन भयो निर्खी नैनो में देखो : गो अब मुझकु

सजदे । सा० १ । रंग मिथ्यात लग्यो है आदिको, साहिब उनकुं खिणदे । सा० २ । तुम सम साहिब और न देख्यो आप समान तुं करदे ॥ सा० ३ ॥ इति ॥

होरी ताल खेमटा

ऐसी विध तेनें पाईरे, कछु करणी करजा । ऐ० । उत्तम नर भव जैन धरम रुचि, सुगुरु सेवा सुख दाईरे । जासु पातक झरजा । ऐ०१ । हिंसा जूआ झूठ परत्रिया परिग्रह मद फल चोरीरे, घट जायगा दरजा । ऐ०२ । तप जप सञ्जम शील दान कर, आनन्द सुमति सुहाईरे, भव जलनिधि तरजा ॥ ऐ०३ ॥ इति ॥

परोज जत

ऐसी होरी होई रहि चम्पा नगरमें, फागुणका दिन आवै । ऐसी०१ । केशर घोरी भरीरे कचोली, प्रभु पूजै भले भावे । ऐसी०२ । अनुपम प्रेम पिचकारी अदभुत, भावना अबीर सोहावे । ऐसी० ३ । परमानन्द परम सुखदाता कीर्त्ति जगमें कहावे ॥ ऐसी०४ ॥ इति ॥

काफी खेमटा

जोलूं अनुभव ज्ञानरे, घरमे प्रगट भयो नही । जो० । तोलूं मन थिर होत नही छिन, जिम पीपर को पांनरे, वेद भण्यो पण भेद विना सठ पोथी थोथी जानरे । जो०१ । रस भाजनमें रहत द्रव्य नित न होत रस पहिचानरे, तिम सुभ पाठी पण्डित कुं पण प्रवचन कहत अज्ञानरे । जो०२ । सार

इस विन शार कहो श्रुत परदृष्टान्त प्रमाणरे, चिदानन्द अध्या
तम सेली समझ परत एक तानरे ॥ जो० ३ ॥ इति ॥

होरी चलत्

रंग त्यारो बनाय मरी झट पट । होरी खेलूं मैं आज
अली चट पट । रंग० । पांच नार इक मन्दिर अन्दर एक
से एक बड़ी नट खट । रंग० १ । पांच नार पचरंगी बनी है
निश दिन मोसे करत खट पट । र० २ । एक होयतो पकड़
ले आंउ पांचुंकुं कैसे करूं गट पट । र० ४ । चुन्नी आतम
रम चटकले । पांचोंकुं आज करूं लथपथ ॥ र० ५ ॥ इति ॥

काफी कहरवा

अलख लख्या किम जावें हो, ऐसी युगति बतावें । अ० ।
ननमन रमनां तीन ध्यान धर अजपाजाप जपावें, होय अडोल
लोलता त्यागी, ज्ञान सरोवर न्हावेंहो । अ० १ । सुद्ध स्वरूपमें
शक्ति सम्भार ममता दूर वहावे, कनक उपल भिन्यता काजे
जोगानल उपजावेंहो । अ० २ । एक समें समश्रेणी रोपीं
चिदानन्द इम गावे, अलखरूप होय अलख समावे अलख
भेद इम पावेंहो ॥ अ० ३ ॥ इति ॥

केदारा तेताला

पारसनाथ दया कर मोपे, द्यो दरशन तुम आजरे । पा० ।
मैं हूं अनाथ अधीन तुमारे । तुम प्रभु त्रिभुवन ताजरे । पा०
१ । कीर्ति अवर सुणी प्रभु थारी, तारण तरण जिहाजरे
पा० २ । चिन्द्र विचार ग्गो प्रभु मेरो बांह ग्रहेकी लाजरे

पा० ३ । दे नवकार थे नाग उधारयो साहिव गरीव निवाजरे । पा० ४ । कहत अवीर चिन्तामन पारस । जय जय जय जिन-राजरे ॥ पा० ५ ॥ इति ॥

केदारा चलत कहरवा

देखत छवि सुखकारी अरि हांरै लाला । दे० टेर । विमल प्रभु के चरण कमल की । दे० १ । अद्भुत रूप अनुपम महिमा तीन भुवन शिनगारी । दे० २ । समेत शिखर पर जप तप करिके; प्रभु वरियां शिवनारी । दे० ३ । अवीर कहे मेरे ऐसे प्रभुकी वारी जाउं वार हजारी ॥ दे० ४ ॥ इति ॥

वारमां पीलु ताल लंगड़ा

फागुन के दिन चार रहे, आज काल परसुं तरसुं रे । टेर । मनमें उमङ्ग पिया से मिलन की ऊब्यो न जाय बिना परसुं रे । फा० १ । चोवा चोवा चन्दन और अरगजा, प्रीत लगी राजुल वरसुं रे । फा० २ । ज्ञान गुलाल अबीर उड़ाऊँ गढ़ गिरनार जाय फरसुरे । फा० ३ । मो पर कृपा करो मोरे स्वामी प्रभु चरणा पर चित्त धरसुं रे ॥ फा० ४ ॥ इति ॥

काफी यत्

मैं तो ममता को दूर भगाई आज जिनराज से प्रीत लगाई । टेर । समता की ढाल संवर का गोला शरधा की तोप चढ़ाई, विनय वारूद विवेक पलीता तप तरवार वनाई । आ० १ । शील सनेह सञ्जम की सेना सत्य संवेग सहाई, ज्ञान गजेन्द्र सुमति पटराणी मन्त्रो संतोष सवाई । आ० २ ।

ज्ञान चतुर मुख दूत भलेरी दया की धजा फहराई, भाव भवन में चेतन राजा नौबत नय बजवाई । आ० ३ । पाप रिपुदल जेर करणकुं ऐसी करके सझाई, कहत अबीर भविक जिनवर से होरी खेलो गुणगाई ॥ आ० ४ ॥ इति ॥

राग बहार तेताला

दरशन बिना तरस रही अंखियां, जिन दरशनकुं चली सखियां । द० टेर । तुम पदकजमें लपटन चाहुं जैसे गुण पर रहे मखियां । द० १ । भमत फिरयो भववनमें तुम बिन, जीव भयो अति ही दुखिया । द० २ । समकित रतन के जतन कियां नहीं मनमें कूड़ कपट रखियां । द० ३ । अबीर चन्द कहत है जिनसे, अरज हमारी ए लखियां ॥ दरशन० ४ ॥ इति ॥

रागिणी पीलु बारमां तेताला

आज मिल्यो त्रिसला सुत प्यारा, है कोई होरीको खेलन हारा । आज० । सिद्धारथ नृप नन्दन कहिये तीन भुवन को है उजियारा । आज० १ । क्षत्रीकुण्ड प्रभु जनम लियो है पुरनो पावापुर जाय पधारा । आज० २ । ज्ञान गुलाल अबीर संगारी केसर चन्दन भर पिचकारा । आज० ३ । सेवक की प्रभु एही अरज है भव सागरसे पार उतारा ॥ आज० ४ ॥ इति ॥

होरी खेमटा

होरी खेले त्रिसलाके नन्द, आनंद रंगसुं, ज्ञान गुलाल संयम भर होरी भाव रमन की अंग । हो० १ । अशुभ करम

मल सकल धुवावे ध्यान गङ्ग जल सङ्ग । हो० २ । दास चुनी जगनाथकी शोभा निरख हरख मन रङ्ग ॥ हो० ३ ॥ इति ॥

ठुमरी काफी

नईरे नार नव रंग बनायो । अपने नेमजीके घर मेरे । टेर । आंवो मोरयौ केसु फुल्यौ । फुल्लौ सगलो वनमेरे । न० १ । उपशम रसको रंग भयो है, अवीर अरगजा धरकेरे न० २ । पञ्च सुमति खेलें अब रहीउ शील सदा के घर मेरे । न० ३ । रास मच्यो है सुभ मति सखी को । कुमति सखीको डर हैरे । न० ४ । फगुआ दो भर झोली अविचल । महानन्दके घर मेरे ॥ न० ५ ॥ इति ॥

रसिया होरी

मत निरखो नारी पराई, भला हो मत निरखो । टेर । वेद पुराण किताब कहत है, जाणों लोग लुगाई, राजा डन्डे दुरगति जावे, लोक माहे लघुताई, होयगी कन्त तुमारी । मत० १ । काजल टोले छबीकी शोभा, विगड़त देखो विचारी तप जप दान पुन्य सब करनी, सुधरत कैसे तुमारी । रखेगो उल्टी प्यारी । मत० २ । पर नारी तज विषय छोड़ दे जीव दया दिलधारी, सतगुरु सङ्ग गुनि जन सेवा, विनय कहे सुखकारी, सुनिये अरजी हमारी ॥ मत० ३ ॥ इति ॥

होरी डफकी चाल

टुक सुनले नाथ अरज मेरी टुक सुनले । टेर । तुम हो तीन भुवन के नायक, अब मैं शरण गही तेरी । टु० १ ।

शिशु जन मिलि सुरे चहोत मन्तावे, काटो अष्ट करम मेरी। तु० २। अब मुझ दरशन अनुभव दीजैं मेटो भव भय दुख फेरी ॥ तु० ३ ॥ इति ॥

होरी डफकी चाल

जय बोलो ऋषभ जिनेश्वर की। जनम अयोध्या माता मरु देवा नाभि नन्दन जगतेश्वर की। ज० १। धनुष पांच से काया जिनकी लञ्छन वृषभ धरेश्वर की। ज० २। लख चौरासी पूरव आयू, कुल इच्छाकु करेश्वर की। ज० ३। दास नुरी प्रभु सेवा चाहे तरण तरण तरेश्वर की ॥ ज० ४ ॥ इति ॥

काफी ताल यत्

ऐसी दाव मिलोरी लाल क्योंन खेलत होरी, मानव जनम अमोलक जगमें सो बहु पुन्य लहोरी, अबतो धार अध्यातम शैली आयु घटत थोरी थोरी, वृथा नित विषय पगोरी। ऐ० १। सुमत सुरङ्ग सुरुचि पिचकारी, ज्ञान गुलाल सजोरी, अष्ट मद मान कुटिल कुमता सही दलि मलि सियल करोरी, सदा सत राग रचोरी। ऐ० २। धर्म धमार बजाय सुघर नर प्रभु गुण गाय नचोरी, सुजस गुलाब सुगन्ध पसारो निरगुण ध्यान धरोरी कहा अरपन्द पगोरी ॥ ऐ० ३ ॥ इति ॥

होरी धमार

खेलन दे मोहे होरीरे, मेरी इच्छा जिनन्दसुं। खे० १। केसर चन्दन भरि हम हमा अगर अबीर की झोरीरे। खे० २। जिन सङ्ग ओङ्गिया नर रङ्ग फूलों नव विध नव रङ्ग कोरीरे

मे० ३ । नृत्य करो घन मादल बाजी प्रभु मुख आगे दोरीरे । मे० ४ । भावना भावो नर भव लाहो लीजे भव जश भोरीरे । मे० ४ । इण विध पूजी लीजे लाहो आनन्द विजे कर जोड़ीरे ॥ मे० ५ ॥ इति ॥

होरी कहरवा

एसो नर भव पाय गमायो । टेक । धन को पाय धरम नहीं कीनो चारित्र चित नहीं लायो, श्री जिन देव को सेवा नहीं कीनो; मानुष जनम लजायो जगतमें आयो न आयो । ए० १ । विषे कषाय वड़ी उर अन्तर आतम वल सो घटायो तज सत सङ्ग भयो तूं कुसङ्गी, मोक्ष कपाट लगायो, नरक को राज कमायो । ए० २ । कन्दमूल मद मांस भक्षणकुं नित प्रति चित्त लुभायो, श्रीजिन वचन सुधारस तजके नयनानंद पछ- तायो, श्रीजिनको गुण नहीं गायो ॥ ए० ३ ॥ इति ॥

देशी की चाल

श्रीरेसुमति जिन वन्दिया हारे । जि० टेर । जयपूर के मांहि । ए आंकड़ी । मेंघ पिता माता है मङ्गला, जनम अयोध्या ठांम । मघा नक्षत्र रास सिंह सोहे; क्रोञ्च लच्छन अभिरामजी । ज० १ । चालीस लाख पूरवनो आयु धनुष तिनसै देह, पाणी ग्रहण करी सुख भोगवि व्रत वरियो प्रभु तेहजी । ज० २ । दोय हजार च्यार से साधु चवदे पूरवधार समेत शिखर पर मुगति सिधाए, सिव सुख दीजै सारजी । ज० । उगणीसै

वाईस असाढ़ सुदी एकम ने भाव विनय विमल मुणि वरके शिष्य हैं, सुखलाल गुणगायजी ॥ ज० ४ ॥ इति ॥

बहार तेताला

चन्दा प्रभु तेरी महिमा अब जानी। तोहे भजके तरे केते प्राणी। टेर०। चन्दपुरी महसेन नरेश्वर तसु देवी लछमा रानी तासु उदर प्रभु जनम लियो है आप भये केवल ज्ञानी। चन्दा०१। बालपणा खेलमे खोयो सोयो नींदमें भर ज्वांनी आवतो बूढापा आण रुज् भयो जीभ लगी पलटापांनी। चन्दा०२। सूत्र सिद्धान्त कछु नही सुनियो नाहि सुनी मैं जिनवाणी व्रत नही नही आखड़ी लीनी बोधि भाव नही मनमाणी। चन्दा०३। अधमाधम मैं शरण पुकारुं आयो जाण तो हैं महादानी पतित उधारण पावन कीजै राखो गुलाब अरज मानी ॥ चन्दा०४ ॥ इति ॥

होरी ताल दीपचंदी

सिद्धाचल भेटोरे भाई, एह अवसर पाई। टेर०। सिद्धाचल तीरथ हैं मोटो, महिमा वर्णि न जाई। पूर्व निनाणुवार ऋषभ जिन, समोसर्या गिर आई। सिद्धा०१। पापी अभव्यि नजर न देखे, इन गिरको निज लाई। भविक जीव सुध भावे जो गये, नरक तिरजञ मिटाई। सिद्धा०२। नरभव पाय भेट्यो नहीं सिद्धगिरि, गर्भावास कहाई। वार वार नर भव न मिलेगा, करले सुकृत पुण्याई। सिद्धा०३। इन गिर साधु अनन्ता सिद्धा, शिवरमणी पद पाई। शाश्वता तीरथ

कहिये मोटो, सब जीवन सुखदाई । सिद्धा०४ । सम्वत् उगनिश उपर तेविश फागुण शुकल सुहाई । एकादशी दिन अरज करत है, चरनन शीश नमाई ॥ सिद्धा०५ ॥ इति ॥

होरी दादरा

जय बोलोरे पास जिनेश्वरकी । ज० । मस्तक मुगट सोहे मन मोहन, अङ्गीया सोहे केशरकी । ज०१ । त्रिभुवन ज्योति अखण्डित तिनको श्याम घटा जैसी जलधरकी । ज०२ । कमठ उड़ाय वाय ज्युं वादल, जीत करी अपने घरकी । ज०३ । वालपने में अद्भूत ज्ञानी, करुणा किधी विषधरकी । ज०४ । अष्टकर्म दल सवल खपाये, श्रेणी चढ़ेवा शिवपुरकी । ज० ५ । माता वामा उदर जिन जायो राणी अखेसेन नरेश्वरकी । ज०६ । कहे जिनचन्द मेरे प्रभु पारस, जैसी छाया सुरतरुकी ॥ ज०७ ॥ इति ॥

होरी चलत

मधुवनमें जाय मची होरी । म० । श्री सङ्घ खेले सदा होरी । म०१ । ज्ञान गुलाल अवीर उड़ावो समता केशर रङ्ग घोली । म०२ । अमृत रूप धरम जिनवर को शुद्ध क्षमा कहे कर जोड़ी ॥ म०३ ॥ इति ॥

जिन्दुवाकी चाल

उछी जिन्दगानीरे कारणै भूलौ फिरेरे गमार । उ० । धरम रतन आयो हाथमें युंही दीयो तैने हार । उ०१ । पांचुंही इन्द्री तुं पोषतो लागो विषयन लार, जगत लागो

इन फन्दमें हुवा केई नरनार । उ० २ । तन धन जोवन थिर नहीं विजली चमकार, अंजलीको जल जैसें जीवना जातां लागे नहीं वार । उ० ३ । जगतको सुख सुपनां जिसों करो मनमें विचार, जिनदास कहें सुन जीवड़ा समताकुं धार ॥ उ० ४ ॥ इति ॥

रिखताकी चाल कहरवा

अरज हमारी सुन लिजीये, जिनमतके राजा । अ० । दुशमन क्रोधादिक लगारे, पञ्च प्रमाद ठगेरा, तेरै काठिया फंदन मुके विषयादिक रहे घेरारे । अ० १ । आठ करम मोहे नाच नचाये योनी लाख चौरासी निजगुण विन कछु कामन सरियो तुमने कहुं अविनाशीरे । अ० २ । धरम २ करतो जग डूले भरम मरम नहीं जाने, साचे धरम विना लहो कैसे तत्व ज्ञान पहचानेरे । अ० ३ । भववन माहे चेतन भमतां समकित नहीं पायो गिलगिचिया जिम शुद्धता २ अबके नर भव आयोरे । अ० ४ । समरथ नाहिव जान प्रभुजी तुम दरसन मन भायो, सुगनी नगरकी डिगरी दिजे अवीर चन्द गुण गायोरे ॥ अ० ५ ॥ इति ॥

घाटोकी चाल दादरा

डगर बताय दे पहाड़िया में वन्दूं पारशनाथ । ड० । देश देशके यात्री आए मधुवन कियो है मुकाम । ड० १ । है नहुं निरख पहाड़िया शिखर श्री जिनराज । ड० २ । मोती मुंगा मुक्ता हीरा लाल अनमोल । ड० ३ । तु मोहे दरश

करायदे देहुं रतन जड़ाय । ड० ४ । टुंक टुंक पर प्रभुजी कूं वन्दे नैनां भया है निहाल । ड० ५ । हरखचन्दके साहिब साचे शिवपुर कियो है मुकाम ॥ ड० ६ ॥ इति ॥

घाटोकी चाल दादरा

मेरो मन वस कर लीनु जिनवर प्रभु पास । मे० १ । अंखिया कमल पांखड़िया मुख सुन्दर जास । मे० २ । नील वरण तनु सोहे, त्रिभुवन परकाश । मे० ३ । काने कुण्डल दोय झलके, शशी सूरज मम भास । मे० ४ । प्रभु तुम चरण रही ने, समरूं सासो सांस । मे० ५ । लालचन्दकी अरज सुणीजे पूरो वञ्छित आस ॥ मे० ६ ॥ इति ॥

अलिया वेलावल तेताला

जियारे जांणे मोरी सफल घडीरे । जि० । सुत वनिता धन यौवन मातो गरभ तणी वेदनविसरीरे । जि० १ । अति अचेत चेतंत कछु नाहि पकरी टेक एहां लकरीरे । आय अचानक काल पौंछेगो ग्रहेगो ज्युं नाहर वकरीरे । जि० २ । सुपने का राज साच कर राचत माचत छाय गगन वदरीरे, आनन्द घन हीरो जन छांडि, नर मोह्यो माया कङ्करीरे ॥ जि० ३ ॥ इति ॥

ताल झुमरा देशीचाल

निरमल होय भजले प्रभु प्यारा, सब संसारसे है प्रभु न्यारा । नि० १ । पार्श्व प्रभुको दरशन करलें भवजलपार उतारण हारा । नि० २ । जाको अविचल जोत विराजे, अलख

अगोचररूप उदारा । नि० ३ । अकलंकी अविनाशी अद्भुत, तीन भुवन बिच हैं प्रभु न्यारा । नि० ४ । जाके गुणको पार न पावे, कहन सके कोइ जस विस्तारा । नि० ५ । जाके भजन से पावन प्राणी, सुद्द क्षमा कल्याण उदारा ॥ नि० ६ ॥ इति ॥

हिरनाकी चाल कहरवा

चिन्तामन स्वामी अरज हमारी सुन लीजिये । चि० अ० । तुम राजा हम प्रजा तुमारी निश दिन करते सेवा, सु निजर करके मुलक दीजे अविचल सुखका मेवाहो । चि० अ० १ । तुम शिववासी हम जगवासी यही बड़ा अन्धेरा, इसकुं आप विचारो मनमें कैसे होय निवेराहो । चि० अ० २ । दीनानाथ दयाल कहावो जग जीवन जिन राया, ऐसा विरुद तुमारा मालिक सबहीके मन भाया हो । चि० अ० ३ । चरण कमल की सेवा चाहूं यही विनती मोरी, कहत अबीर कृपा जिनवर की लागी सुगतिको डोरी हो ॥ चि० अ० ४ ॥ इति ॥

चैनायरकी चाल दादरा

जिनजी हमें कछु दीजे, प्रभु जासे वञ्छित सगला सीझे । मैं आयो सुजश सुन तेरो मेटो मिथ्यात अंधेरो शुभ ज्ञान प्रकाश करीजे । जिन० । मेरे प्रभुजी पर उपगारी सुध लीजो मेरा हमारो गत नरक निगोदका हरीजे ॥ जिन० ॥

चौतारन की चाल दादरा

प्रभुजी सदा सुख दीजे, इक अरज मेरी सुन लीजे । प्र० । मेरे प्रभुजी सुगतिके वासी अजर मर अज अविनाशी,

दरसण से दुरित हरिजे । प्र० १ । प्रभु कल्प वृक्ष अवतारी सब कुशल मङ्गल के कारी, भव जलसें पार करीजै । प्र० २ । चिन्तामन पारस पाया मुनि अबीरचंद गुणगाया मनवंछित आस पूरीजै ॥ प्र० ३ ॥ इति ॥

झींझट कहरवा

सांवरिया प्रभुजी अब मोहे तारो । सा० । बीसे टुके बीश जिनेशर ऊंचो टुंक तुम्हारो । सा० १ । वन उपवन वन मधुवन भयो है याही तें ध्यान हमारो । सा० २ । जङ्गी झांड़ी विषम पहाड़ी एकोहि नाम तिहारो । सा० ३ । भूधर की प्रभु यही अरज है आवागमन निवारो ॥ सा० ४ ॥

मिश्र कहरवा

तेरी सुरत से जिन मेरा जुहाररे । ते० । बखत उदे भया सकल विघन गया, निरख दीदारमें मगन भयारे । ते० । सकल सुरन्द केरा मन मधुकर मेरा । तेरा चरण कमल पर दिया घेरारे । ते० । अमृत सिन्धु दया जिन जननी जया, शिव चंद पर पीया करमयारे ॥ ते० ॥ इति ॥

पीलु तेताला

देखो परव पर्युसण आया सब दुनियां में आनन्द छायारे दे० टेक । केई करे पूजा केई सुणे पोथी, केई शुभ भावना भायारे । दे० १ । केई पाले शीयल केई करे तपस्या, केई कुछ दान दिलायारे । दे० २ । केई सामायक केई पड़िकमणा, केई पड़ह अमारी बजायारे । दे० ३ । धरमकी करणी भवजल

नगरी, श्री गुरु प्रभु फुरमायारे । दे० ४ । जिन शासन जिन-
चन्द जिनन्द के, अबीर चन्द गुण गायारे ॥ दे० ५ ॥ इति ॥

भरथरी की चाल

रे जीव ! जिन धर्म्म किजीये । धरमना चार प्रकार, दान शील तप भावना, जगमें एतली सार । रे० १ । वरस दिवस ने पारणे आदीसर सुखकार, इक्षुरस दान वहिरावियो श्री श्रेयांसकुमार । रे० २ । चम्पा बार उघाडियो चालनी काढ्यो नीर, सतीय सुभद्रा जशथयो शीले सुरगिरी धीर । रे० ३ । तपकर काया सोखवी अरस निरस आहार वीर जिनन्द वखानीयो धन धन्नो अनगार । रे० ४ । अनित्य भावना भावतां धरतां निरमल ध्यान । भरत आरीसा भवनमें पाम्यो केवल न्यान । रे० ५ एह जिन धर्म सुर तरु सरो जेहनि शीतल छांह । समय सुन्दर कहे सेवता मुगत तणा फल जांन ॥ रे० ६ ॥ इति ॥

मीश्र सोरठ कहरवा

पारस प्रभु चिन्तामणि मेरे, चरण कमल बलिहारी । अश्व-सेन वामाजी के नन्दा, अलख अगोचर धारी । पा० टेक । काशी देश बनारस नगरी, निरुपम सुख हितकारी । पा० १ । केसर चन्दन पुष्प चमेली, नृत्य करे नरनारी । पा० २ । सुरनर मुनि नित ध्यान हियाधर, जै जै जै जयकारी । पा० ३ । हे जिन प्रभु केवल पायो, तिन लोक सुखकारी । पा० ४ ।

जिन कल्याण सुरी कमलोंमें, अस्या पूरो हमारी ॥ पा० ५ ॥ इति ॥

ठुमरी लंगड़ी

चलो सजनी जिन वन्दनकु मधुवनमें मेरा सांवरिया। चलो० टेक। आस पासमें जङ्गी झाड़ी पग पग मांहे जल भरिया। च० १। षट ऋतुकौ सुन्दर तिहां महिमा जैसे सुर की फुलवरिया। च० २। खल हल गरजन गिरी नीझरना मांनू नभ नव वादरिया। च० ३। संग सकल मिल दरशन आवै देश देश के यातरिया। च० ४। कर जोड़ी प्रभु के गुण गावें थेई थेई नाचत अपछरिया। च० ५। कहत अवीर मेरे पास जिनन्द के चरण कमल पर चित धरिया ॥ च०६ ॥ इति ॥

ठुमरी कहरवा

आज अजब छवि जिनवर की भवि सब मिल निरखन जईयेरे। टेर०। परव पजूसण आया मेरी सजनी जिनवर का गुण गईयेरे। आ० १। चमकत अंगिया की ज्योति झिगामिग लख दिन कर छवि छइयेरे। आ० २। कल्प सूत्रकी बांचना सुनके भव दुःख दूर पुलइयेरे। आ० ३। व्रत पचखाण करो जिन पूजा समकित जतन करइयेरे। आ० ४। श्री हेम-चन्द सूरीसर भाषे मन वंछित फल पइयेरे ॥ आ० ५ ॥ इति ॥

सहाना तेवड़ा

चलो सखी सब देखन कु रथ चढ़ि जदुनन्दन आवत है। टेर०। मोर मुकट पीताम्बर सोहे गिरनारीकुं ध्यावत है।

च० १ । तीन छत्र और तीन सिंहासन चौंपठ चमर डोलावत है । च० २ । लालचन्द की यही अरज है, सब सखी मंगल गावत हैं ॥ च० ३ ॥ इति ॥

ठुमरी दादरा

जिनके हृदय भगवन्त नहीं जेनर अवतार लियो न लियो जान विना घरवास वस्यो करि लोभ मलिन पियो न पियो जि० १ । मदिरा पान पीयो घट अन्तरि जल छून शुद्ध पीयो न पीयो । आन मानकी घातज कीनौ करुणा भाव हीये न होवे । जि० २ । रूपवान गुणपांन सवे एक शील विना नत्रिया नत्रिया । कीर्त्तवन्त सदा जीवत हैं अपजशवन्त जीया न जीया । जि० ३ । धाम माहि कछु वनि नहीं आवत और व्यापार किया न किया । धानति एक विवेक विना नर दान अनेक दिया न दिया ॥ जि० ४ ॥ इति ॥

ठुमरी यत्

गुनीये मनकी कहिये न, कछु एसे रहिये इस वागड़में । टे० । करिये व्रत संजम नेम सदा नैसे वरीये भव सागरमें । गु० १ । दान शीयल तप भावना धरके जैसे सन्त उजागरमें । गु० २ । ज्ञानवान प्रभुजी को ध्यों भजले जैसा नागरका चित गागरमें ॥ गु० ३ ॥ इति ॥

हिराम नोता की चाल

मेरे मनको वैरागी कर गया । समुद्र विजय शिवादेवी के नन्दन नेम पूभर मांड तज गया । मे० १ । छप्पन कोट

यादव ले आये तोरन से प्रभु फिर गया । मे०२ । पशुवन जीवका करुणा कीणी मुजे अवगुण सिर धर गया । मे०३ । गढ़ गिरनार जाय पहुंचे पांचु इन्द्री मन दम गया । मे०४ । तज संसार दीक्षामें रुचि मन तीन लोक जश भर गया । मे०५ । प्रभु वैरागी मैं वैरागीन काम क्रोध सब जल गया । मे०६ । चाहत चरण कमल की सेवा मधुकर हो मन रह गया । मे०७ । तुम प्रभु तारण पतित उधारण अष्ट करम को दह गया । मे०८ । चन्द फकीर वाणीधर गुरुकी जैन धरम से तरगया ॥ मे०९ ॥ इति ॥

झींझट दादरा

बदन परिवारी जांऊ नाभी के नन्दा । व० टेक । नाभि के नन्दा वारि प्रथम जिनन्दा, वृषभ लच्छन सुख कन्दा । व० १ । भविजन कमल विकास दिनन्दा, नमतनरैंद्र सुर इन्दा । व० २ । भव दव ताप हरनकु चन्दा, धीरज गुण ज्यु गिरीन्दा । व० ३ । असरण सरण चरण सुख कन्दा, विनय नमत तुम वन्दा ॥ व० ४ ॥ इति ॥

रेखता कौवाली

मुझे है चाव दरशन का, निहारोगे तो क्या होगा, गही अबतो शरण तेरी । टेर० । उबारोगे तो क्या होगा । मु० १ । सुनो श्री नाभि के नन्दा, परम सुख देन जग वन्दा मेरी विनती अपावनकी, विचारोगे तो क्या होगा । मु०२ । फसामें कर्म्म के फन्दा मुझे तुम बिन छुड़ावे कौन, तुही दातार है

जगमें, चितारोगे तो क्या होगा । मु०३ । या भव सागर अथाहीमें अफ्रोंग्दुखके निश दिन; मेरी है नाव अति झजरि, उतारोगे तो क्या होगा । मु०४ । अधम उद्धारण पूरण के, सुमति की सेज छुक दीजे, कुमति के कूपसे अबके निकारोगे तो क्या होगा ॥ मु०६ ॥ इति ॥

गजल

जगत धनी पाया जिनराया, दरससे चित्त हुलसाया, कुमुद जिम देख के चन्दा, भयो परम आनन्दा । ज०१ । देवन के देव जिन देखे, जनम तबही भयो लेखे । भवो भव एह सुख देवा, औरन की में ना करु सेवा । ज०२ । चिन्तामणि रत्न कु पाई, काचकु कौन ल्ये ध्याई, लाल चन्द दास है तेरा हरो सुझ भव तणा फेरा ॥ ज०३ ॥ इति ॥

चलत दादरा

जिनराज आज मैं तेरे दरशनकु आया हुं । महाराज । श्रीसीमन्धर स्वामीसे मेरा नेह लगाया हूं । म० । चौरासी लाख योनिका मैं अन्त लाया हूं । म० । कोई पुन्य संयोग से मानुष कराया हूं । म० । भूला हूं मद मोह की छाये था न पाया हूं, इन आत्म रूपमें मेरा योंहि गमाया हूं ॥ म० ॥ इति ॥

स्तवन कहरवा

मेरा प्रभु मेरी दोसतीमें, मेरी गुमना सच्चा मेहरबान मदद । दो० टक । आर नहीं आवे योधा पठावे मेरा गस्त पर कुर-

वान भइरे । वी० १ । शासन नायक यही अरज है । दीजै दरश वड़ी वार भइरे । वी० २ । आसा दासकी पूरण कीजै, चरण शरण लपटाय रहीरे ॥ वी ३ ॥ इति ॥

भैरवी खेमटा

पावापुर महावीर विराजे, अष्टापद सीधे ऋषभ जिनन्दारे । पा० १ । समेत शिखर सीधे वीस जिनेश्वर, काटे करमके फन्दारे । पा० २ । वास पूज्य चम्पापूर सीधे, गिरनारे नेम मुनिन्दारे । पा० ३ । सिद्ध खेतर साध अनन्ता सीधे, केवल ज्ञान दिनन्दारे । पा० ४ । सेवक पद पङ्कज तीरथ रज, चाहत आनन्द कन्दारे ॥ प० ५ ॥ इति ॥

भैरवी ताल-दादरा

शांतिनाथ मुख देखनसे मोरी नैंना पलकमें लीन भईरे । शां० । विश्वसेन अचिरा नन्दनसे प्रीति हमारी जल मीन भईरे । शां०१ । पल छिन प्रभुसे विसरत नांहि चन्द चकोर नवीन भईरे । शां०२ । अनुभव सङ्ग सुमति जगी है करम कुमति जड़ हीन भईरे । शां०३ । कुशल सार की प्रीति फली है शिव कमला रति पीन भईरे ॥ शां०४ ॥ इति ॥

नेहालदेके चाल

शिव सुखदाई जगपतीजी स्वामी वामा नन्दन देव अश्वसेन कुल कज दिन करूजी स्वामी अहिलञ्छन पदसेव । शि०१ । अवमन रहजा शरणे पाशकेजी तेरा जनम सफल होय जाय, पाप कटै सव पाछलाजी कांई सुख सम्पति मिलै आय ।

शि०२। लख चौरासी योनिमे जी प्राणी भमत फिर्‍यो ए जीव, भेप धर्‍यां बहु भेद नाजी प्राणी दुःख सहिया अतीव। शि०३। ममता मदनके वश पड्योजी प्राणी शमता राखी दूर, माया गर्व गरूर मेंजी प्राणी परमादी भर पूर। शि०४। धर्म्म करो जिनराजनोजी प्राणी छोड़ी मिथ्या जीव, सफल करो अवतार तेजी प्राणी कहते राय शिताव॥ शि० ॥ इति॥

काजलो लंगड़ी

पुर भदिल बधाई भई नन्दा अङ्गणा। पुर०। माघ वदी बारश धन रासी, नन्दा माताके कुक्ष उपना। पुर०१। श्रीवछ लञ्छन तन छवि सुन्दर मेरो चित चाहत सेवा करना। पुर०२। कुन्दन रकेबीमें रतन कटोरा वामे धरु केशर चन्दना। पुर०३। कञ्चन वरन प्रभु मेरो मन मोह्यो पद पूजुं में शीतल जिनना। पुर०४। समेत शिखर प्रभु मुगति पधारे हरख चांदापति करे वन्दना॥ पुर०५॥ इति॥

परज कहरवा

शिवपुर जाना मोकुं। शिव०। प्रभुजी बतावो कैसे। शिव०१। चंचल मन मरकट नहीं माने जगतमें फिरत दिवाना। शि०२। लोभ लहरका कहर बहत है विषय कषायमें जगत रमाना। शिव०३। मृगतृष्णा ए दुनियादारी सुकरित बिन भवि भरम भुलाना। शिव०४। हेमराजी दिन कर प्रभु-चरणे सदा नित्य करने गुनगाना॥ शिव०५॥ इति॥

देशी लंगड़ी

राणी त्रिसलानें देखा भला चउदे सुपणां । रा० । आधि रात जगत जननीजी, कुछ सुती कुछ जागी सुमणां । रा० १ । गहगज गामिनी मधुर वचननें पृछत फल जिहां पीउ अपणा । रा० २ । खतरी कुण्डमें हर्ष बधाई राय सिद्धारथके अङ्गणां । रा० ३ । चैत सुदि तेरस प्रभुजीका जन्म कल्याणक दिन अपणां । रा० ४ । श्री महावीरके चरण कमलकुं करत अनीर मुनि वंदना ॥ रा० ५ ॥ इति ॥

सहाना ताल तेवड़ा

अब मोहे प्रभुजी तुंहि हमारो । भव जल दुखसे तारण हारो । टेर० । तुमकुं मैं छोड़ि उरनकुं नही ध्याउं । एकहि शरण तिहारो है प्यारो । अब० १ । तुम्हारे चरणमें प्रीत जो लगाउं, मन वंछित फल देवन हारो । अब० २ । जिन मङ्गल कहे सुख सम्पति लहे, तुही पार उतारण हारो ॥ अब० ३ ॥ इति ॥

कामोद तेताला

शान्ति मूरत श्रीसुपाश्व प्रभुकी, सुन्दर वदन सुहावे प्रभुजी । शा० । प्रभुकी मूरत सुन्दर सोहैं । मेरो मन ललचावे, प्रभुजी । शा० १ । चित मुझ प्रभु तुम चरणे वसियो, मैं प्रभु गुण रस गावे । शा० २ । अलख अगोंचर अकलङ्क हो तुम । आदि अनादि सोहावे । शा० ३ । ज्योति स्वरूप प्रभु त्रिहुं जगके, एसो नाम धरावे । शा० ४ ।

अनुभव लीला अक्षय पद में । द्यो प्रभु भक्तिके भावे । शा० ५ । गुण अनन्त अपार है महीमा । मुनि जन गावें सुभावे । शा० ६ । आस सुपास लगी प्रभु मोहन, रुचि रुचि प्रभु गुण गावे ॥ श० ७ ॥ इति ॥

रेखता कहरवा

अगर हम वे तमा होते तो चेतनको खड़ा करते । कदम गुन तोर काबिलके झपट गहे बिच दिल धरते । तीला कुरबान कर डालुं कदम के नूर पर सुख से । नखोंकी रोशनी ऐसी, तुली गुर शेद है रुससे । अ० १ । अजब है पाश जादुहके, करत जो बन्दगी हर रोज । तिनोंके जान परवारुं नकल जग जान अपना खोय । अ० २ । अरज मेरी कबुल ए दील: परम विसवास जग मिल जै, उरु कहां भव दधि जिनमें, गहे जो दास उस मध्य की ॥ अ० ३ ॥ इति ॥

पुरबि तेताला

अरी जिनवरजी नीके नयन तिहारे । अ० १ । यामें केवल दरसन झलकत । अति तीखे अन्हिहारे । अ० २ । सुमता मोहन दुमता मोहन, मनिकुं लागत प्यारे । अ० ३ । आनन्द ऐसे प्रभु निरखत । जिन निज जनम सुधारे ॥ अ० ४ ॥ इति ॥

पुरबि तेताला

प्रभु तेरी महीमा कैसे बरणी जाय । प्र० । गरभागम कल्याण अगाऊ । नगर मंगल सब भाय । प्र० १ । गरभजनम

तप मङ्गल शोभा । कहालौं कहौं वधाय । केवल ज्ञान उद्योत होत हरि । समव शरण की रचना रचाय । प्र० २ । साढ़े वारा कोटि जाति के वाजा देव वजाय । प्र० ३ । सुर सुराङ्गना नर नारीसब । भक्ति करत गुणगाय । प्र० ३ । तेरे पद पङ्कज नित सेवें निसंधें धार मन लाई । मुनि धुनि सुनि जग राम कहतु है । जय जय जय जिन राय ॥ प्र० ४ ॥ इति ॥

देशी चलत

तुमतो भले विराजोजी सांवरीयां महाराज शिखर पर भले विराजोजी । तेरे घाटे चोकि लागे जात्री जाण न पावे, हुकुम कीयो श्री पास जिणेश्वर वांह पकड़ ले जावे । तु० १ । ऊँचा नीचा परवत सोहे तलै भीलणका वासा, पेंड़ पेंड़ पर सिंह धडु के जिहां लिया तुम वासा । तु० २ । टूङ्क टूङ्क पर ध्वजा विराजै झालर का झङ्कारा झालर का झङ्कारासेती गुंजे परवत सारा । तु० ३ । दूर देश के यात्री आवे पूजा आन रचावे अष्ट द्रव्य पूजामे ल्यावे मन वंछित फल पावे । तु० ४ । सुर नर मुनि जन वन्दन आवे महा परम सुख पावे । चन्द खुश्याल चरण को सेवक हरष हरष गुण गावे ॥ तु० ५ ॥ इति ॥

खम्वाज दादरा

मानो मानो वेदरदी सामरिया । व्याहन आये जादव सङ्ग लाये, रथको तुम पीछा फिरवाई । वे० १ । पशुवन पर दयाचित कीनी, मुझको तुम खड़ी छिटकाई । वे० २ । नव भव सङ्ग कभू नहीं छोड़ो, जाय मिली पिया पियारी ।

वे० ३ । नाथ निरञ्जन बाल ब्रह्मचारी, अजय अमर पद पाई " वे० ४ ॥ इति ॥

ठूमरी लंगड़ी

ऊमग भई दरशनकी मनमें वंदन आयो तुमरे पास, हरकर सूरत नैना निरखी उदै भयो अब मेरो भाग, अबमें आयो प्रभुजी के शरणे पतित, उधारण राखो लाज । ऊ० टेर । भव भवमें बहुतेरो भटक्यो, सर्यो नहीं कछु मनको काज, कृपा करी मोहे तारो जिनजी, बिरुद सुन्यो तेरो महाराज । ऊ० १ । अञ्जनियां दृढ़के पुर टारे, सो पतितनको कितनीक वार, ऐसो बिरुद उधारन प्रभुजी, धन धन कीरत सुखे दयाल ॥ ऊ० ॥ इति ॥

ठूमरी चलत

नाथ अंगे जम्बु को मेरु कम्पायो । ना० टेर । सिद्धारथ सुत नाम धरायो त्रिसला राणीनें जायो । छप्पन दिश कुमरी मिल आई, सूची कर्म करायो । ना० १ । इन्द्र महोत्छव जब तिहां प्रगट्यो मेरु शिखर ले आयो । इन्द्र सिंहासन लेके बैठो मन सन्देह उपायो । ना० २ । अवधी ज्ञानसे तब तिहां देख्यो अंगूठे मेरु चम्पायो, संशय हरणचरण प्रभुजी के कलश ढलाय दरायो । ना० ३ । सिद्धारथ घर आयकेरे मङ्गल चार गायो । सुमन अचमरु निज पद दीजे मन वंछित फल पायो ॥ ना० ४ ॥ इति ॥

पुरीया धनाश्री तेताला

[illegible] प्रभुजी थे शरणे, सूरत ऊपर करूं निछ रावन, [illegible] वारी मैं या छबि पर । ऊ० टेर । रसना [illegible]

गुण वहु तेरे, गणधर पारण पावत, वारु या छवि पर। छ० १। वांह गहेकी लाज निवहिये, रतन चन्द तुमरो गुण समरे॥ छ० २॥ इति॥

देशी की चाल

अंखिया सफल भई में भेट्या नाभि कुमार। तीरथ जगसें छे घनारे तेहमें एहछे सार, सेत्रुजो समो तीरथ नहींरे तुरत करे भवपार। १। जुगला धरम निवारकेरे त्रिभुवन जन हितकार, सोवन वरणी देहछेरे वृषभ लञ्छन मनुहार। अं २। सोरठ मण्डण तूं प्रभुरे सकल करम कर दूर, केवल लखमी पायनेरे अविचल लीलापुर। अं० ३। मूरत निरखी आयनेरे आनन्द अधिक अपार, उज्वल गिरीराजे प्रभुरे आवा गमन निवार। अं० ४। गिरवर फरसे भावसूंरें सफल कियो अवतार, श्रीजिन हरप पसाय थीरे सङ्घ सदा सुखकार। अं० ५। माधव मास सुहामनोरें सुदि तेरस रविवार। अठारे छया सठ समेरे यात्रा करी हितकार। अं० ६। घना दिवसनी चाह होतीरे देखन प्रभु दीदार रतन सुन्दर पाठक कहेरे। वरत्यो जय जय कार॥ अं० ७॥ इति॥

देशी ताल दीपचन्दी

शिखरजी को आज में दरशन पाया, भव भावना पाप गमाया। शि० १। इन गिरि ऊपर बीस जिनेश्वर बहुत मुनी सङ्घ आया। अनशन करी शिव सेहर पधारे, जोतसुं जोत मिलाया। शि० २। वामा नन्दन पास जिनेश्वर मूल

नायक सुखदाया, सावली सूरत मोहनि मूरत देखत चित्त हरषाया। शि० ३। केसर चन्दन भरि कोटरा प्रभुजी की अङ्गिया रचाया, अष्टप्रकारी पूजा करके आनन्द रङ्ग सवाया। शि० ४। सुध मनसेती यात्रा कीनी संग सकल हुलसाया, गुन तीरथकी महिमा मोटी भविजन भाव वधाया। शि० ५। उगनीसे उनतीस वरसमें मिगसर वद मन भाया, दुनिया दीन प्रभु महिर करीने अबीरचन्द गुणगाया॥ शि०६॥ इति॥

देशी ताल दीपचन्दी

सांवलिया जैसे बने वैसे तारो, मेरी करनी कछु ना विचारो। सां०। नाग नागनी व्याकुल दोनु जरत अगनसे उबारो, उनको राज दीयो शिवपुर को अञ्जन आन उधारो। सां० १। अश्वसेनके नन्दन कहिये मात वामा देवी प्यारो, बालवस्थामें जोग लीयो है पञ्च महाव्रत धारो। सां० २। जोग निरोधी दमकुल श्रावक अष्ट करम से पछाड़ो। काया गाल्ह गयो शिवपुरको लोका लोक निहारो। सां० ३। धन्य घड़ी धन भाग हमारो शिखर समेत जुहारो, मन वच काया नमो सुध सारा, चरण कमल बलिहारो॥ सां० ४॥ इति॥

भीम पलाशी तेताला

घुंघरू बाजत झन झन न न न न न न। त्रिशला माता के गोदमें जी, वीर प्रभु आये मन न न न न न न। घु० १। झलकत मुकट कान दोय कुण्डल, हाथनमें का कन न न न न न न। घु० २। ज्ञान मन्दिरजी की अरज विनती, अशुभ करम भगे मन न न न न न न॥ घुं० ३॥ इति॥

पहार तेताला

अखिया मेरी प्रभुजी सुं आज लगी। पावापुर श्रीवीर जिनेश्वर, देखत दुरगति दूर टली। अ०। मस्तक मुकट शोभे मनमोहन, बिच बिच हीरा मोती लाल जड़ी। अ० १। रत्न जड़ित दोय कुण्डल शोभे, गले बिच मोतीयन माल पड़ी। अ० २। हरख चन्द के तुम प्रभु साहेब, चरण न छोड़ु पल एक घड़ी॥ अ० ३॥ इति॥

देशी दादरा

वन वन आई सुघर नरनार, हियड़े हरप घर घर के। व० १। क्षत्री कुण्डमें जनम महोच्छव घर घर मङ्गलाचार। बधाई सिद्धारथ घर घर के। व० २। जायो सुत त्रिसला देवीने, श्रीवर्द्धमान कुमार। देखो नयन भर भर के। व० ३। छप्पन दिश कुमरी हिल मिलके, बोले जय जय कार, चिरञ्जी रहो जिनवर के। व० ४। चौंसठ इन्द्र उच्छवनें कीजै, इन्द्राणी लिये लार, मेरु शिखर उपर के। व० ५। परमानन्द भयो गुनी याचक, मांगे दान अपार, धन धन ए अवसर के॥ व० ६॥ इति॥

गजल

राखुंरे हमारा घटमें जिनराज नाम तेरा। रा०। जाके प्रभाव मेरा, अज्ञानका अन्धेरा, भागा भया उजेरा। रा० १। सुरत तेरी रागे, देख्यां विभाव त्यागै, अध्यात्म रूप जागै। रा० २। मुद्रा प्रमोदकारी, ऋषभेस जु तिहारी

लागत मोहि प्यारी । रा० ३ । त्रैलोक्य नाथ तुम ही । हम हैं अनाथ गुणही, करिये सनाथ हम ही । रा० ४ । प्रभु जी तिहारी माखे, जिन हर्ष सूरि भाखे, दिलमांहि याहि राखे ॥ रा० ५ ॥ इति ॥

चलन कहरवा

जिन दरशन सुखकारी, जगतमें । टेर० । श्री श्रेयांसकुं ध्यावत मनवा । पाप पडल अघ दुर निवारी । जि० १ । जिन चरणाम्बुज ध्यान करनतें । तारक जिनवर ही यशधारी । जि० २ । जिन वचनामृत पानकरनतें अलख अगोचर रूप उदारी । जि० ३ । महिमा भक्ति मुनि सेवत निशदिन । परमोदयकुं करो अविकारी ॥ जि० ४ ॥ इति ॥

धनाश्री तेताला

सांवरो आंगे मेरे मन्दिर आव । टेर० । छप्पन कोट जादव मिल आये, पुष्पकी बरखा कराय । सा० १। तोरणसे रथ फेर चल्यो पशुवन पर चित लाय । सा० २ । सहसा वन जाय संजम लीनो, पञ्च महाव्रत धार । सा० ३ । उंची उंची मेंडी अजब झरोका, चढ़कर जोउं थारी वाट । सा० ४ । चन्द कुशल की एही अरज छे भव नदी पार उतार ॥ सा० ५ ॥ इति ॥

धनाश्री तेताला

छुटे धन कौंन कामको काहे कृपण कहावे । वे० ३ । ज्यो कछु देना सो कुछ लेना विन देनें नहीं पावे, आनन्द घन प्रभु चलता पन्थ पर, समर २ गुण गावे ॥ वे०४ ॥ इति ॥

काफी तेताला

माई तेरे आङ्गन बजत वधाई, चन्द्र कुमार सुत जाई । मा० । धन लछणादे भाग तिहारो तूं जगमात कहाई । मा० १ । छप्पन दिश कुमरी सब मिलके भूषण वसन सजाई, प्रभु गुण गावत नाचत आवत ध प म प ताल बजाई । मा० २ । इन्द्रादिक सब सुर परि कर लेई मेरु शिखर पर जाई, विधि पूर्वक मिलि न्हवण करावत मोहन गोद विठाई । मा०३ । चन्द पूरीमें जन्म महोच्छव घर घर मङ्गल गाई, जय जय कार करत नर नारी महसेन नृप घर आई । मा० ४ । चन्द्र सरस द्युति कुमर निरख छवि दिग पङ्कज विकसाई, अचल रहो जगनायक मेरे पल पल जोत सवाई । मा० ५ । पद गाई दृगतत्व रु ब्रह्म सुवच्छर, हेम प्रथम पद पाई, भूत विमल तिथि सेवक सुख हित नमत गुलाव सदाई ॥ मा० ६ ॥ इति ॥

भीमपलश्री तेताला

कोटिक कष्ट हरो प्रभु मेरे । को० । गुण गांउ ध्यांउ प्रभुजी मैं चरण कमल चित धरके तेरे । को० १ । यह संसार असार सागरमें मोह जनित सङ्किलेश घनेरे, तुम विन कौन दयाल उधारे विषयादिक दुरगतिमें गेरे । को० २ । दुख भञ्जन कर नाथ निरञ्जन छुटै चौरासी लख के फेरे, सुख-

दायक प्रभु दास चुनीकुं भवजल पार उतार सवेरे ॥ को० ३ ॥ इति ॥

जोगिया तेताला

नेम योगिया कुं किन बिलमायारे, कोई जाके ढुण्डी लावोरे । नें० १ । बालपने ही तें ब्रह्मचारी, आत्म ध्यान लगायारे । नें० २ । जाय चढ़े गिरनार पहाड़ा, किनिन निजारन पायारे । नें० ३ । ऋषभ विजयकुं दरशन दीजे, जिन प्यारा तिन पायारे ॥ नें० ४ ॥ इति ॥

झिंझोटी तेताला

प्रभु तेरी सूरत दिख रही छाह । जो सुख मोहे उर माहिं भई है । सो मुख कहियन जाय । प्र० १ । उपमा सहित निरंजन हो तुम, मगन करी चित लाय । प्र०२ । ऐसो सुन्दर है जाकी छवि, कोट मदनहु लजाय । प्र० ३ । इह विनती मन मेहुं नवल की, जनम मरण मिट जाय ॥ प्र०४ ॥ इति ॥

बैरागी पोस्तो

बैरागी आज भई, देखो नेमजी खबरीया न ले । इत से आई पदमणीया प्रभु, जामें रिम झिम बरसे लो मेह । बै० १ । छोड़ गो मोहि मेरो चतरीया, नहीं ओड़ तो टूटे सनेह । बै० २ । नव भव मेरा मिलाप साहब सङ्ग, कैसे टूटे सनेह । बै० ३ । हरख चन्द पिया जो मेरे आवें तो घर बरसे मेह ॥ बै० ४ ॥ इति ॥

देशकी चाल लंगड़ी

महन फना मोरा साहिबा तेरी सांवरी मूरत पर वारी जाऊंरे तेरी, सांवरी मूरत पर वारी जाऊंरे। स० १। सफलो आज घड़ी दिन मेरो, मैं तो देखि दरश हरषाऊंरे। स० २। मुझ मन लगन लगी प्रभु तुमसे। मैं तो देव अवर नहीं ध्याऊंरे। स० ३। वदनकमल छवि निरखत सुन्दर मैं तो रोम रोम हुलसाऊंरे। स० ४। तुम गुण को कछु पार न पाऊं उपमा क्या वतलाऊंरे। स० ५। कीरत सागर कहे भव भव तेरी। सेवा मेरी निन पाऊंरे॥ स० ६॥ इति॥

झींझट कहरवा

प्रभुजी को नाम सदा मन भायो। टेर। काशी देश बनारसी नगरी, नील वरण तनु छायो। प्र० १। अश्व-सेन के नन्दन प्रभुजी, मात वामांजी को जायो। प्र० २। अहि लच्छन तुम चरण विराजित, समेत शिखर छवि छायो। इन्द्र इन्द्राणी मिल मंगल गावे, प्रभुजीकुं हरष वधायो। प्र० ३। जिनके चरण निनाव समर ले, अजय अमर पद पायो॥ प्र० ४॥ इति॥

झींझट दादरा

श्री जिन चरण गहे। हरगण मोरे लागे। ए नैना मोरे लागे। श्री० टेर। उमग भयो वहत छत्र· निरखत निज गुण प्रेम पगे। काल अनाद गये विन दरशन। परशन सङ्क जगे।

श्री० १। अब मैं चरण कमल प्रभु भेटे। मोह मिथ्यात भगे। श्री० २। दास दया तुम शरणे आयो। सो प्रभु चित्त लगे॥ श्री० ३॥ इति॥

देशी चलत

सूरत जिनराई। भला नेमी प्यारे ने। सू० टेर। तोरण से रथ फेर दियो है पशुवन बंध छुड़ाई। भला० १। राज ऋद्ध सब तज कर प्रभुजी गिरनारी चित लाई। भल० २। आप तो जाई शिखर पर बैठे करमण बंध छुड़ाई। भला० ३। मन सुख सागर कहत राजमती, ब्रजभूषण सुखदाई॥ भला० ४॥ इति॥

झींझट दादरा

शीतल जिन साहिबा। मोरी अरज सुनोनि हजूर। शी० टेर। लख चौरासी योनिमें भटक्यो दुख पायो भर पूर। कुमता नारी सङ्ग ना छोड़े कीनो है चकना चूर। शी १। चार गतिमें मोहि डाल्यो कर्म महा वट चूर, आज घड़ि धन भाग्य है हमारो, तुम्हारा दरशनसे दुख दूर। शी० २। अबतो भव दुख दूर निवारो जिनचन्द्र कपूर॥ शी० ३॥ इति॥

झींझट दादरा

अरज सूं हृदयमें मोरी लगन लागी भर पूर। अ० १। श्री जिनजू विजया नन्दन तारण तरण पद्गुर। अ० २।

अजित जिनन्द की जाउं बलिहारी, सुर पति जाके मजूर। अ० ३। श्री अजयसूरि का आगम पूराणि। सकल गये दुख दूर॥ अ० ४॥ इति॥

झींझट मिश्र कहरवा

वारि जांउरे केशरिया सांवरा गुण गांउरे। टेर। मन सुध भाव पखाल करावूं, केशर अङ्गिया रचांउरे। वा० १। कृष्णागर की धूप महकावुं कपूर की जोत करावुंरे। वा० २। चम्पा की कलिया चुन चुन लावुं, सेहरा शीश गुथांउरे। वा० ३। मानरूपकी याहि अरज है, मन वंछित फल पांउरे॥ वा० ४॥ इति॥

पुरीया तेताला

समझ जिन काहु से न करो प्रीत। मिलन भली विछुरन बुरी, जल थल याहि रीत। स० टेर। उलझत सुलझत ध्वजा पवन मङ्ग, एहि कर्मन की रीत। स० १। एक घड़ि ज्यु अवध तुमारी, उमर जाय सब बीत। स० २। जो चेतन आतम सुख चाहे, छाड़ो सब विपरीत। स० ३। अमी चंद गंधर्व साहब भज, वशकर मनकुं जीत॥ स० ४॥ इति॥

झींझट तेवड़ा

गुण अनन्त अपार, प्रभु तेरे। गु०। सहस रसना करत सुर गुरु, तऊन पायो पार। प्र० १। कौन अम्बर गिने तारा, मेरु गिरको भार, चरम सागर लहर माला करत कौन विचार। प्र० २। भक्ति गुण लव लेश भाषे

सुविधि जिन सुखकार, समय सुन्दर कहत हमकुं, स्वामी तुम आधार ॥ प्र० ३ ॥ इति ॥

पील्लु बारमा ताल-दीपचन्दी

अबतो उधारो मोहे चहीये जिनन्दराय, राखुं भगेगामे प्रभुके चरणको। टेर। सुनो श्री श्रेयांसनाथ मानो शिवपुर साथ; विरुद तुमारो प्रभु तारण तरणकी। अ० १। सींहपूरी जनम ठाम पिता विष्णुसेन नाम, विष्णुराणी कुखे जायो कञ्चन वरणको। अ० २। वरस चौरासी लाख आयुष्य प्रमाण भाप, लच्छन चरण खग गुरुके करणको। अ० ३। हुंतो छुं अनाथ तुम नाथन के नाथ प्रभु। तुम विन और मेरे दूसरो शरणको। अ० ४। प्रभुके चरणार वृन्द पूजत हरख चन्द, काटिये करम दुःख मेटिये मरणको॥ अ० ५ ॥ इति ॥

पिल्लु तेताला

प्रभु पदकी सेवा कियो न करेंगे। प्र०। प्रभु पद सेवा अघ सब नासे, परम ध्यानकी धूंम पड़रे। प्र० १। प्रभु पद सेवा न करे जड़ मतीया, लाख चौरासीमें फेरा फिरेंगे। प्र० २। सूरी आभ देवताने कीनी, राय प्रदेशी में पाठ गिरे। प्र० ३। बालक की अब यही अरज है, अगम अगोचर सुख वरेंगे॥ प्र० ४ ॥ इति ॥

पील्लु तेताला

आयो शरण अब जाऊं कहां, शरणागत को शरणागत लीं। आ० १। तोह समान मिल्यो नहीं कोई। ढुंढ फिरयो

धरती सब हेरी । अ० २ । होय दयाल महाप्रभुजी अब । आन भई तुमसे भट मेरी । अ० ३ । दास कल्याण करे विनती सुन, पारशनाथ सुपारस मेरी ॥ आ० ५ ॥ इति ॥

देश की चाल कहरवा

ऋषभदेव धुलेवा विराजै, दरशन आनन्द कारी केश-रीया जी । आकणी । नाभिराया मारुदेवीके नन्दा, चौतिश अतिशय धारी । ऋ० १ । लखमीपूर और ग्राम नगरके, यात्री आये हितकारी । ऋ० २ । जङ्गी झाड़ी विषम पहाड़ी-पन्थ उलंघण भारी (पन्थ चले नर नारी हो) । ऋ० ३ । सब मिल केशर अङ्ग चढ़ावो, नृत्य करे नर नारी । ऋ०४ । शुद्ध भावसे यात्रा कीनी, पूजा अष्ट प्रकारी । ऋ० ५ । संघ सकल मिल यात्रा कीनी मुख बोले जयकारी । ऋ० ६ । सम्वत् उगनी से दश फागुण सुद, होली चौदश सुविचारी । ऋ० ७ । जिनचन्द समो नहीं तीन भुवनमें । अवर देव हितकारी । ऋ० ८ । नन्दी वरधन प्रभु गुण गावे वर्धन भव सायर निस्तारी ॥ ऋ० ९ ॥ इति ॥

पिलु दादरा

श्री सीमन्धर जिन श्याम, मुजरो मानो हमारो । टेर । दाता जान आयो तुम तीरें सुन साजन अभिराम अभिलाषा प्रभु दरश फरसकी ध्यांऊ मैं आठुं ही जाम साहिब नेक निहारो । श्री० १ । दरश सुधारस पान करनतें पावे जीया विश्राम

पुरुषोत्तम परमात्मा पूरण, पूरो वंछित मन काम अन्तर दूर निवारो। श्री० २। भव दुःख दाह रोगसे प्रभु विन कौन करे आराम भक्तवत्सल भगवन्त जगतमें तारक तूं सरनाम भव जल पार उतारो प्रभु। श्री० ३। भट्टारक जिन महेन्द्र सूरजीने किये सुयशके काम जेठ शुक्ल द्वितीया शुभ वासर थापे बिंब सुठाम देखूं मैं दरश तुमारो। श्री० ४। दास चुनी अपने आपे में जपे परमेष्टी नाम आरत तिमिर मिटे ततखिन ही मिले केवल गुणधाम आतम काज सुधारो॥ श्री० ५॥ इति॥

पीलु कहरवा

शरण गही महाराज, अब तो निवाहे बनेगी। मैं हूं दीन अनाथ जगतमें नाथ गरीब निवाज। अ० १। स्वकित भयो हूं भ्रमते भ्रमते, सुनो त्रिभुवन शिरताज। अ० २। बहु पतितनके काज सुधारे, चुन्नी पतित की लाज॥ अ० ३॥

केदारा तेताला

देखो एक अपूर्व खेला, आपहि बाजी आप बाजिगर आप गुरु आप चेला। दे०। लोक अलोक बिच आप बिराजत ज्ञान प्रकाशे अकेला, बाजी छांड़ तिहां चढ़ बैठे जिहां सिद्धि का मेला। दे० १। मट्टं मैं किसके किसके संगा किसके २ बोला, पाहनको मरकाहे उठावत एक तारे का चोला। दे० २। पदपद पढ़के ज्ञानी मरगी मही क्यों कर गजपद तोला, आनन्दघन प्रभु आय मिलो तुम मिट जाय मन का झोला॥ दे० ३॥ इति॥

केदारा ताल तेवड़ा

तुम हो दीनबन्धु दयाल, तरण तारण दुरित वारण पतित जन प्रतिपाल । तु १ । लख चौरासी योनि जग गुरु भम्यो हुं चिरकाल, सहे नरक निगोदके दुख, अशुभ करम कुचाल । तु० २ । विषम वैरी कर्म्म वाध्यो मोह माया जाल, रह्यो उरझि अनादिहीको, लह्यो नांहि निकाल । तु० ३ । दासकी अरदास ऐसी सुनहो स्वामी विशाल चरणकी अब शरण आयो, लिजिये संभाल । तु० ४ । विहरमान जिनन्दजी को वदन चन्द निहाल, हरखचन्द चित भयो आनन्द, मिट्यो दुरित जञ्जाल ॥ तु० ५ ॥ इति ॥

वृन्दावनी सारंग तेताला

चित चाहत सेवा चरणकी । चित० । विश्वसेन अचिरा जी के नन्दन, शान्ति नाथ सुख करणकी । चित० १ । जनम नगर हस्तिनापूर जाके, लञ्छन रेखा हरिणकी । तीस अधिक दश धनुष प्रमाणै, काया कञ्चन वरणकी । चित० २ । कुरुवंश कुल अरू लाख वरश स्थिति, शोभा सञ्जम धरणकी । केवल ज्ञान अनन्त गुणाकर, कीर्त्ति तारण तरणकी । चित० ३ । तुम बिन देव अवर नहीं ध्यांउ मैं अपने मन परणकी । हरख चन्दकु शिव सुख दीजै, भय मिटावो मेरे मरणकी ॥ चित० ४ ॥ इति ॥

झींझट कहरवा

ऋषभ देव सांवरा तेरे दरशनसे दुख दूर । ऋ० टेर । मस्तक मुकुट कानें युग कुण्डल, तेरे मुख पर वरसत नूर ।

म्हा० २ । दूर देशमें परचो तिहांरो, तेरे यात्री आवे भरपूर म्हा० ३ । बड़ी भीड़में दरशन पायो मे तो हाजर खड़ा छुं हजूर । म्हा० ४ । बाल चन्द प्रभु अधम उधारण, मैं तो शरणो लियो छे हजूर ॥ म्हा० ५ ॥ इति ॥

धनाश्री तेताला

सुनो मेरी इतनी अरज जिनस्वांम । तेरे चरणनकी शरण गहलीनी । भवसागर दुख हरण नाम । मे० टेर । विश्वसेन अचिराजी के नन्दन । शान्ति प्रभु सुख धाम । मे० १ । भव भवमे प्रभु तुम सुखदाई । पूरो वंछित मन काम । सु० २ । पद्मोदय प्रभु ध्यावत तनमन । अहनिस करत प्रणाम ॥ सु०४ ॥ इति ॥

देखो चाल दादरा

देखो देखोरे गिरिकी उगरीया नीकी बनी । दे० टेर । अति घन सघन विराज रहे वन शीतल छांह घनी, निर्मल नीर सम्पूरण सरिता देखत श्याम हनी । दे० १ । एक ओर मोर झकोर करत है गावत गीत गुनी, एक दिश रटन रहे पिक चातक बोलत मधुर धुनी । दे० २ । बीस टुंक बने ता ऊपर शोभित जगत धनी, ताते या गिरवर की महिमा ठौर ठौर वरणी दे० ३ । उज्ज्वल रूप बिम्ब जिनजी के थापे भगति भनी, कहा कहूं इस पाकि उनकी शोभा देव मयानि । दे० ४ । दरशन करन करें सब भार दुःख सुख की टान टनि, हरष चंद याकि मन सोभा हर्षि नाहि सुनि ॥ देखो० ५ ॥ इति ॥

देशी ख्याल

आवो प्रिते भावो रुडा जिन गुण गावो जिन गुण गावो भावे भावना सुभावो। आ० टेर। भक्तवच्छल भव भय हारक ने, करि प्रणाम निज दोष खमावो। आ० १। केईक पतित जन पावन कीधि सम मन फरवी आस्था धरावो। आ० २। नृत्य कला-पली ज्ञान प्रभावो, लक्षपति समरति गति रति पावो। आ० ३। अश्वसेन सुत नन्द वामाना, भजि ऋद्ध ए तुम सकल समावो। आ० ४। पावन भावो ने भवि शिव पूर जावो। वीर वचन सुध हृदये समावो।५।

सोरठ कव्वाली

सप्त सुरण सुर साधत गुणी जन। चतुरङ्ग जिन गुण गावें स० टेर। तक् तक् तक् तक् धिरकट् तक् धिलाङ्ग धा। घडनक् तिरकट तका तफा तक धुमकिट् तिरकट् गिदधिन धा, धिलाङ्ग धा धा धिलाङ्ग धा। स० १। उत्तम वाणी जो नर गावें, नाद भेद को करे विचार। तान लेत घन गरजित लरजित। सारिगम पधनिसो सानिधपमगरे। पद्मोदय मन भावे॥ स० २॥ इति॥

जाजवन्ती ताल झपताला

आजतो आनन्द भयो चित्तमें हमारे। आ० १। धरके आस आयो पास आपके दुवारे। आ० २। सोहनी सूरत मोहनी मूरत देखके दीदारे। आ० ३। वृषभ लञ्छन कनक वरण नाभिके दुलारे। आ० ४। दास जान हृदय बीच, आवो मेरे प्यारे, तुम बसो मेरे प्यारे॥ आ० ५॥ इति॥

पीलु वारवा ताल दीपचंदी

किस पर मान गुमान करिजें, एक प्रभुजी को ध्यान धरीजें। किस०। टेर। जोवन जोर माया के नसेमें भुल गये तुम गुरु एक पलमें। किस० १। क्रोध कूपमें पडके गमाया, एक उपाय न शोधुं तुमारा। किस० २। लोभ लुगाइसे मोह पाय के, बहोत दुखी हुउ नरक जायके। किस० ३। पांच मित्र के फन्दमें पड़ के, बारंबार तूं लक्ष भमीके। किस० ४। इनकुं छोड़ तुम ध्यान लगावो, अजर अमर सुख सहज में पावो। किस० ५। चन्द गोपाल की आश पूरीजें, जैन प्रकाशक गुण गाइजें॥ किस० ६॥ इति॥

कहरवा परभाती

वेरी २ अरज करी हम तुमसे। तुम न सुनी एकवारजी। वेरी १। क्या तकसीर कसूर हमारा सो फरमावो सिरदारजी। वेरी०२। दीनानाथ दयाल तुमारा बिरुद है गरीब निवाजजी, भगत वच्छल भगवंत कहावो तीन भुवन सिरताजजी। वेरी०३। दीरा कान सुनो प्रभु थारी आवे नाथ हजूरजी। कृपा करो अब दरसन दीजे पाप करो चक चूरजी। वेरी० ४। भव भवमें प्रभु थारी चाहुं जैन धरम अनुरागजी। बोध को बीज प्रगट घट भीतर दुविधा गई सब भागजी। वेरी० ५। मेघ नृपति के नन्दन स्वामी समकित के दातारजी। कहत अबीर सुमति जिनचन्द्र दिन दिन जय जयकार जी॥ वेरी० ६॥ इति॥

दादरा बरसाती

सुमति जिणन्द जुहारियै मन धरि हरष अपार नर भव पायो दोहिलो सफल करो अवतार । सु० १ । श्रावक कुल मांहे जनमीयो जानी नहीं खटकाय नव तत कुंची नां गहीं दीयो जनम गमाय । सु० २ । ए संसार असारमें सार जिणेश्वर नाम भजन तरै सोही करै पावे अविचल धाम । सु० ३ । करणी करता दोहिलो चाहत माल तमाम बोवेरे पेड़ बंबुलका चाखण चाहत आम । सु० ४ । मेघ महीपति सुत नमूं मात सुमङ्गला के जात, कहत अबीर ए प्रभुजीका गुण गावो दिन रात ॥ सु० ५ ॥ इति ॥

बरसाती ताल दीपचंदी

श्री पारश प्रभु साहब मेरे । तुम हो जग जयकारा, निज सेवक परि करुणा करिके, कीजै कछु उपगारा । श्री० १ । श्री समेत शिखर पर सोहे प्रभु उतङ्ग विहारा । अति सुन्दर प्रभु बिम्ब विराजै छाजै छवि मनुहारा । श्री० २ । भव भवमें बहुकाल गमायो, पाया नही भव पारा । श्री० ३ । अब कछु शुभ सञ्जोग उपाया चाहा नर अवतारा । प्रभु मुद्रा देखत ही जीत्या वित्या दुख अवसारा । श्री० ४ । राज ऋद्धि प्रभु मैं नही चाहुं, चाहुं नही धन दारा । श्री जिन भक्ति सहित नित चाहुं, अमृत धर्म उदारा ॥ श्री० ४ ॥ इति ॥

छंद ताल दीपचंदी

नेम प्रभु सुजान अविचल सुजश रङ्ग सुहामनो । तारण कुसल प्रभु नाम राजै जोग जन मन भावना । नें० १

ललित वंछित ज्ञान अभिनव देत जन मन पावना, ताप पाप विनाश कर वर राजमति पीऊ ध्यावना। नें० २। जङ्गम सुर पद आप विराजें राजे रेवत गिरवरु। दास गुलाब तार दिया अब जय जय जय नेमि सरू॥ नें० ३॥ इति॥

कल्याण दादरा।

मोहे कैसे तारोगे दीन दयाल, तारो तो प्रभु तुमहीं तारो चित न तरवे कों लीजो सम्भार। मो० १। कञ्चनको कहा कञ्चन करिवो मलिन कञ्चन परिजाल, मो पापिन को पावन करिवो बहुत कठिन है कृपाल। मो० २। काम क्रोध लपटि रहो नितहुं माया मोह जंजाल, मल्ली नाथ प्रभु नाम निरञ्जन रूप चन्द गुण माल॥ मो० ३॥ इति॥

ठुमरी चलत केरेवा

तुम बिना और न जानूं। जिनस्वा प्रभु। तु०। मैं मेरे मन निश्चय कीनो, एसा कुछ नहीं काचूं। जि० तु० १। तुम चरण कमल षटपद मन मेरो, अनुभव रस भरि चाखूं। अन्तरङ्ग अमृत रस चाख्यो यह वचन मन साचूं। जि० तु० २। जग प्रभु न्यारो, महारस पायो और २ से नहीं राचूं। अंतरङ्ग हरख्यो, दरशन तेरो, तुम गुण रस सङ्ग माचूं॥ जि० तु० ३॥ इति॥

ताल अर्पजी धीन्दका चाले, रेलता

तुही जिनन्द चन्द मेरो आपदा हरो। कर पाश आश पूर गुल मरजाद करो। तू०। मैं नाथ तोय जान के शरण

तो पड़यो। मैं हूं अजान दीन सिर हाथ तो धरो। तू० १। कर कहर दूर महर कर कर्म्म कु हटा। कर पार तार वेग तोय रात दिन रटा। तू० २। दर्श तेरो देख पाप पुंज तो घटा। अलाभका जो सौदा खुद आपसे पटा। तु० ३। जो जानो आप आपको निगाह तो करो॥ तू०४॥ इति॥

राग धन्याश्री ताल तेताला

जगतमें कौन किसीका मीत। ज०। मात तात और जात सजन से, काहे कु रहत निचीत। ज० १। सबही अपने स्वारथके हैं, परमारथ नहीं प्रीत। ज० २। स्वारथ बिन सगो नहीं होसी, मिथ्या मनमें चीत। ज० ३। उठ चलेगो आप अकेले, तूहीं सुं सुवीत। ज० ४। को नहीं तेरो तूं नहीं किसको, एह अनादि रीत। ज० ५। ताते एक भगवान भजन की, राखो मनमा नीत। ज० ६। ज्ञानसार कहे ए धन्याश्री, गावो अनादि गीत॥ ज० ७॥ इति॥

कजरी लक्कड़ी

अब मोहे तारो वीर जिनन्द। अब०। टेर। सिद्धारथ त्रिशलाजीके नन्दन वर्द्धमान जिन चन्द। अब० १। शासन नायक शिव सुख दायक श्री जिन आनन्द कंद। अब० २। सुन्दर सूरत मोहन मूरत देखत होत आनन्द। अब० ३। वे कर जोड़ी अरज करत है चाकर माणिकचन्द॥ अब० ४॥ इति॥

कजरी लङ्गड़ी

अब मोहे तारो पारशनाथ। अब०। टेर। अश्वसेन वामाजीके नन्दन, तीन भुवनके नाथ। अब० १। पोस बदी दशमी दिन जायो, दिशी कुमरी संग साथ। अब० २। सेवक की अर्ज़ी पर मरजी, लज्जा तुम्हारे हाथ॥ अब० ३॥ इति॥

ठुमरि ताल अद्धा

शान्ति करो महावीर जिनेश्वर, कोटिक कष्ट हरो परमेश्वर। शां०। पूरण ब्रह्म परम पद धारक, वीत राग जगदीश विश्वेश्वर। शां० १। अगम अगोचर देव निरञ्जन, अघमोचन जगनाथ तारेश्वर। शां० २। भव आताप निवारक ज्ञानी, शरण आयो तारो दानेश्वर। शां० ३। कुमुद चन्द्रके निज अन्तरयामी, शिव कर्त्ता महावीर ज्ञानेश्वर॥ शां० ४॥ इति॥

चाल देशी ताल खेमटा

सखिरी पावापुर महावीर हां जी चलो वन्दिये। हांजी० टेर। सुन्दर जल भर सरोवर मांहे, मानो गंगा नीर। हांजी० १। जल बिच कमल कमल बिच देहरा, बिच बिराजे महावीर। हांजी० २। सोने की झारी गंगा जल पानी, चरण पखारूं महावीर। हांजी० ३। समोसरणमें सब मिल आये, बोलो जय जय वीर॥ हांजी० ४॥ इति॥

चाल देशी ताल [illegible]

पावापुरमें स्वामी, मेरा वीर जिनन्दजी। पा० टेर। सिद्धासन शुभ कमल प्रकाशक, उदय ज्ञान दिनन्दजी। पा० १।

कोटिक भान समान अंग छवि, आनन्दराको कंदरी । पा० २ । पद पङ्कज निशिवासर प्रभुके, सेवे चौसठ इन्द्ररी । पा० ३ । दीन दयाल दयानिधि साहब, चौविशमां जिन चन्दरी । पा० ४ । चरण कमलकी में सेवा चाहूं, हर्ष धरि हर्षचन्दरी ॥ पा० ५ ॥ इति ॥

राग विहाग ताल तेताला

वीर प्रभु हमको पार उतारो, मैं तो आयो सुजस सुन थारो । वी० । सिद्धारथके कुल रवि उदयो, त्रिसला मात उदारो । कञ्ज चरण सुकोमल जाको, चन्द वदन मनोहारो । वी० १ । सुर नर इन्द्र नरेन्द्र सबै मिल, पूजत चरण हजारो । अधम उधारण नाम श्रवण सुनि, उमग्यो प्रेम हमारो । वी० २ । अष्ट कर्म रिपु हमने सतायो, करिहूं नाथ पुकारो । तीन लोकमें राज तुमारो, विनती आज सुधारो । वी० ३ । भव दधि राह चलत कुमतिगण पकड़यो हाथ हमारो । चार योधा मिल मोकु बिगाड़यो दखल न माने तिहारो । वी० ४ । मन दुःख दूर करो सुख पूरो, गाउंगो सुजस तुमारो । कपूरचन्द जिनवर मुख देख्यो, धन धन भाग्य हमारो ॥ वी० ५ ॥ इति ॥

प्रभाती ताल धत्

मेरु शिखर नहरावे हो सुरपति । मेरु० टेर । जन्मकाल जिनवरजीको जानी, पंच रूप करि आवे हो । सु० मे० १ । क्षीर समुद्र तीर्थोदक आणी, स्नात्र करी गुण गावे हो । सु०

मे० २। रत्न प्रमुख अड्जातीन कलशा, ओपधि चूरण मिलावे हो। सु० मे० ३। जिन प्रतिमा को न्हवन करीने, बोध बीज मन भावे हो। सु० मे० ४। अनुक्रम गुणरत्नाकर फरसी, जिन उत्तम पद पावे हो॥ सु० मे०॥ इति॥

ठुमरी चलत कहरवा

महावीर तोरी समवसरण की रे। मैं जाऊं बलिहारी, बलिहारी जाऊं वारी। महा० टेक। त्रण गढ़ ऊपर रे, तख्त विराजे रे, बैठी छे पर्षदा बारं, बलिहारी जाऊं वारी। महा० १। वाणी योजन रे, महूने सांभल रे, तारया छे नर ने नारी। बलिहारी जाऊं वारी। महा० २। आनन्द घन प्रभु रे, इन परि बोले रे, आवा छे गवन निवारी, बलिहारी जाऊं वारी॥ महा० ३॥ इति॥

रेखता ताल दादरा

अर्जी सुनो जिनराजजी, तुम दिल लगायके। दोनों मिला कर दस्त मैं करता गुजारके। अ०। टेर। जेवर जो मेरा सिरका इसलिये ला लिया। उसके सिवाय लबमें पटके हैं जायके। अ० १। मुश्किल करो आसान ए जिनराज तू मेरा। लेना है तेरा नाम मैं दुविधा हटाय के। अ० २। छूटेंगे कर्म-फंदों तुम्हारे दर्शन से। दर्शन करेंगे मन्दिरमें आयके। अ० ३। कै नागरान सुन्द और संदल घसेंगे हम। पूजें तुम्हारे चरणों मस्तक झुकाय के। अ० ४। नाना अनेक रंग के लाये फूल हम। सबको बनाके सेहरा गुंधायके। अ० ५।

शिवचन्द कहे इज़ाव से मानिन्द लोहेके हम। लोहे से कर कंचन कदम पारस वैठायके ॥ अ० ६ ॥ इति ॥

होरी डफ की चाल

वावा केसरिया विराजे धुलेवामें, डालूं अवीर झोली भरके। चोवा चोवा चंदन और अरगजा, केसर का गागर भरके। मस्तक मुकुट कान दोय कुण्डल, आंगी जड़ाऊ झला-झलके। वाजत ताल मृदंग वासुंरी, झांझन की झनकारनके। चैन विजय कर जोड़ी विनवे, प्रभु तार लियो अपना करके ॥ इति ॥

मांड कहरवा

सोमेश्वर स्वामी अंतरयामी, तारजो दीन दयाल। टेर। विश्वसेन घर विश्वपति रे, अचिरा मात उदार। शान्ति करी सब देशमें रे, मृगी मरी निवार हो। सो० १। लक्ष वर्ष की आयु पुरी मृग लच्छन साधीर। पच्चीस धनुष की देह दीपे, सोवन व्रर्ण शरीर हो। सो० २ क्षायक ज्ञान दर्शन धनी रे, चरण वीर्य के भूप। द्रव्य गुण पर्याय स्वभुक्ता, ज्ञायक सकल स्वरूप हो। सो० ३। काल अनंत पुद्गल अनन्ता, परिवर्तन संसार। स्थिरता शान्ति नही मिलिरे, शान्ति प्रभु अवतार हो सो०४। हूं गरजी अरजी करूं प्रभु, तू है दीन दयाल। सुन्दर ज्ञान दो 'ज्ञान' कोरे करुणा सिन्धु कृपाल हो॥ सो०५ ॥ इति ॥

भैरवी तेताला

नमो मंगलमय महावीर । नमो० टेक । सिद्धार्थ नन्दन, दुःख भंजन, सागर सम गम्भीर । नमो० १ । पतित उद्धारक शिव सुखकारक, मेरु सम मन धीर । नमो० २ । ज्ञान प्रदाता जग जन त्राता, नामी जगमें वीर । नमो० ३ । मोहरूप जलधर हरने को, तुम हो प्रबल समीर । नमो० ४ । गौतम गणपति देवे शुभमति, कटे कर्म जंजीर । नमो० ५ । भाव धरी प्रभु चरण पड़त हूं, हरो तिलक की पीर ॥ नमो०६ ॥ इति ॥

चलत खेमटा

उतार मेरे प्रभु जी भव जाल से पार उतार, उतार मेरे प्रभुजी । काल अनन्त भम्यो भवमांही पाया है दुख अपार, अपार मेरे प्रभुजी । भ० १ । करुणा जनक दशा है मेरी तेरी है दृष्टि उदार, उदार मेरे प्रभुजी । भ० २ । जगवन दुख दावानल दहके सेवक को लिजो उगार, उगार मेरे प्रभुजी । भ० ३ । शीतल जिन शीतल अघ करके आतम वल्लभ उद्धार, उद्धार मेरे प्रभुजी । भ० ४ । इस निसार जगतमें तिलक को आशा तुमारी है सार सार, है मेरे प्रभुजी ॥ उ०५ ॥ इति ॥

गजल दादरा

अब तारो भव पार दयानिधि, अब तारो भव पार । टेक । भव सागर के बीच पड़े हम सहते दुःख अपार । द० १ । मोह लहरों ने बह दिया है [illegible] [illegible] [illegible] । द० २ ।

भूल गये हम सबक पुराना सोहं सोहंकार। द० ३। स्वारथमें हो लीन सदा हम करते कारोबार। द० ४। पाप कमा के पुण्य गमाके हुआ तनु भूभार। द० ५। करतब त्याग कर रहे अब हम उलटा ही व्यापार। द० ६। अब इस दुख से शीघ्र छुडाओ तुम हो दीनोद्धार। द० ७। दशा देख कर नाथ हमारी करो दया विस्तार। द० ८। नाश करो अज्ञान तिमिर का करो ज्ञान संचार। द० ९। भरो सदा उर पर उपकृति से करता तिलक पुकार॥ द० १०॥ इति॥

गजल

हम पर दया करो महाराज, दीनानाथ कहानेवाले। टेक। तुमने किया बहुत उपकार, तारे भविजन भवजल पार। करके दीनों का उद्धार, सदा शिव लक्ष्मी पानेवाले। ह० १। अब मैं किया तुम्हारा साथ, तुम हो दीन बन्धु जगनाथ। तारो पकड़ के मेरा हाथ, भवो दधि पार लगानेवाले। ह० २। होकर मायामें मशगूल, मैं तो गया आपको भूल। पड़ गई मेरी अकल पर धूल, अब कुछ देकर ज्ञान बचाले। ह० ३। मैं हूं तुम चरणों का दास, पूरण करो विभो मम आश। माँगू आतम रूप विकाश, दया कर दान दिलाने वाले। ह० ४। अब तो करो जरा कुछ ख्याल, मेरा हुआ हाल बेहाल। सिर पर फिरे काल विकराल, तिलक को अपने पास बुलाले॥ ह० ५॥ इति॥

दरबारी कानड़ा तेताला

क्या सोच करें निज मनमें, क्या सोच करें निज मनमें। जिसको बाहर खोज रहा है, सो है तेरे मनमें। क्या०। टेक।

तू धन काज लाज निज खोवे, बोवे बीज बदी के। लाख करोड़ कमाये गये बहु, तो न मिला सुख धनमें। क्या० १। क्यों भटकत बिन चैन रैन दिन, ध्यान लगा कर श्रवण बैन जिन। कर धारन सम भाव चाव रख, प्रभुके चरण मिलन में। क्या० २। अंध समान ज्ञान बिन जगमें, पंथ कुपंथ भमी दुख पायो। चिन्ता रतन डार पछतायो, भरत नीर नैननमें। क्या० ३। तिलक कहे धीरज धर मनमें, क्या ढूंढत बसति और बन मे। जो कुछ है सो तेरे ही मनमें, तड़ित तेज जिम घनमें। क्या० ४॥ इति॥

ठुमरी कहरवा

भजन बिन मानव मूढ़ मरे, भजन बिन मानव मूढ़ मरे। टेर। क्रोध, लोभ, मत्सर वस होके, पाप से पिंड भरे, भजन बिन मानव मूढ़ मरे। १। धर्म नाव बिन भवसागर में, भूधर तुल्य मरे, भजन बिन मानव मूढ़ मरे। २। दान शील नर भाव न जाने, कैसे दुःख टरे, भजन बिन मानव मूढ़ मरे। ३। पर निन्दा हिंसा करने से, दुर्गति बीच परे, भजन बिन मानव मूढ़ मरे। ४। माया रहित भजे जो जिन को, सो भव सिन्धु तरे, भजन बिन मानव मूढ़ मरे। ५। [illegible] रूपी रतन [illegible], तो मन ठौर धरे, भजन बिन मानव मूढ़ मरे। ६। तिलक लखित गुरु सेव करो नित, सब ही काज सरे, भजन बिन मानव मूढ़ मरे॥ ७॥

[illegible]

आज आनन्द बधाई, पारस प्रभु भेंटो रे भाई। आ०।

बीस टूंक पै बीस चरन है, जहाँ प्रभु मुक्त सिधाई। और अनन्त मुनि तिहाँ सीधे, महिमा वरणी ना जाई, दरश ते पाप धुलाई। आ० १। मेघाडम्बर टूंक अनुपम पन्थ अति कठिनाई। शासनदेव कृपा करो सब, दूर करो कठिनाई, नीर अति निकट बताई। आ० २। श्रीमाल खरतर गच्छ सिंघड़ श्वेताम्बर सुखदाई। कालिकादास सुत बद्रीदास के आन हिये बैठाई, सिखरबन्द मन्दिर बंधाई। आ० ३। माघ सुदी तेरस गुनसाठे उगनीसे शुभ आई। देश देश के यात्री आये, जय जयकार मचाई, हर्ष को पार न पाई। आ० ४। भट्टारक जिन रत्नसूरि गुरु। खरतर गच्छ सहाई। करी प्रतिष्ठा जिन मन्दिर की, क्षेत्र पारु पधराई, करे सानिध सुखदाई। आ० ५। कई द्वेषी जन विघ्न उठाये पिन चलने नहीं पाई। प्रतिष्ठा आनन्द पूर्वक भई, हिलमिल संद सवाई, श्वेताम्बर कीर्त्ति वधाई। आ० ६। अद्भुत महिमा है प्रभु तेरी, सुर गुरु पार न पाई। पारस प्रभु चरणन चित्त लाकर, राज कुंवर गुन गाई, भवोभव दुख मिटाई॥ आ० ७॥ इति॥

इमन कल्याण तेताला

पद्म प्रभु पद्मासन के ध्यानी। पद्म०। पद्म कँवलवत पंक करम तज निर्मल स्थित उर आनी। पद्म० १। राज पाट सुख सम्पत त्यागी, परमानन्द चित्त आनी। पद्म० २। दोष अठारे त्याग नर मुनिजन, कर्म रहित दृढ़ आनी। पद्म० ३। रससमवन भवियन को तारे, राज सरन प्रभु वानी॥ पद्म० ४॥ इति॥

दादरा नाटक की चाल

दर्शन दीजिये शीतलनाथ मुक्ति पद के देने वाले । द० । मैं लख चौरासीमें भटका, मेरा मिटा नहीं अभी खटका । नित कर्म दिखावे लटका, जो नर्क ले जानेवाले । द० १ । स्वामी तुम हो पर उपकारी, एक मानो अर्ज हमारी । दो थिर चित सेवा थाँरी, अनुभव ज्ञान जगानेवाले । द० २ । शुध समकित दरसन पाया, मिथ्या मद अंध मिटाया । गुण रत हुई प्रगटा, यही राज मग्न दुख टाले ॥ द० ३ ॥ इति ॥

ठुमरी कहरवा

विमल नाथ विमल भये निर्मल, आत्मकला गुण प्रगट कियो है । वि० १ । कर्म अनादि तप बल काटे, राग द्वेष को दमन कियो है । वि० २ । तीन प्रकार के बंध छुड़ाये, चौथे निकाचित भोग लियो है । वि० ३ । संजम सतर भेद दुस्तर तप, कर्म कष्ट को साल दियो है । वि० ४ । आत्मकला निर्मल कर दृढ़ बल, केवल ज्ञान प्रकाश कियो है । वि० ५ । भेद भेद दिखाये जगतको, जिन शासन विस्तार कियो है । वि० ६ । तीर्थंकर पद परम मुक्ति गये, राज मग्न आधार कियो है ॥ वि० ७ ॥ इति ॥

राग पीलू

पूजो श्री भवि वासपूज्य जिनराया । पू० । श्रावक [illegible] पूजन सों मैं [illegible], अपना पुन गुण ध्याया । कर्म निर्जरा [illegible] शुभ ध्यान, ज्ञान अनन्त फल पाया । पू० १ । शुद्धमन

देह ध्यान अविचल दृढ़, केवल कमला पाया । पू० २ । तीर्थं कर गुण रटत ध्यान धर, परमानन्द भवि पाया । पू० ३ । तारन तरन अनाथ शरणागत, सुर नर मुनि यश गाया । राज दास पर करुणा कीजे, भव भ्रम फंद हटाया ॥ पू० ४ । इति ॥

देशी चलत कहरवा

चरम प्रभु अरज हमारी धारो । मेरो आवागमन निवारो । च० । सिद्धारथ कुल जनम लियो है, त्रिशला उदर अवतारो । सुरगण कोड़ मिली सुरगिर पर, स्नात्र महोच्छव सारो । च० १ । वहु विध पूजा रचत जिनवर की सफल करत अवतारो । जय जय शब्द करत सुर नर वर, जय जय जगदाधारो । च० २ । वाल अवस्था अतुल वली प्रभु, सहजा अतिशय चारो । दीक्षा ले प्रभु केवल पायो श्री संघ आनन्दकारो । च० ३ । सुन्दर सूरत मोहनी मूरत, नाथ निरञ्जन प्यारो । सीस मुकुट सोहे अति सुन्दर, गल मोतियन को हारो । च० ४ । समवसरण की अद्‌भुत महिमा, देखत नयना ठारो । भविजन चातक अति हरषावें स्वामी नाथ निहारो । च० ५ । चरम चौमासी पावापुरीमें, कीनी जगजन हितकारो । सोले पहर लग अड़ग देसना, पद निर-वान पधारो । च० ६ । काल अनन्त भम्यो भव वनमें, कहत न आवे पारो । अवतो प्रभु को सरण गही मैं, कवहुं न छोड़ूं लारो । च० ७ । दुगड़ गोत्रे इन्द्र चन्द्र सुत, चन्द्र गोविन्द धुमकारो । जात्रा करी प्रभु की उछंगे, जनम कृतार्थ हमारो ॥

च० ८ । सग उगणीस नेतिस मनोहर अगहन दशमी उजारो गिरचन्द प्रभु शिवसुखदायक पूरव पुण्य जुहारो ॥ च० ६ ॥ इति ॥

मिश्र खम्माज ताल कहरवा

मिल जारे चेतन ध्यानमें, लग जा रे चेतन ध्यानमें । टर विवेक माल तेरे सिर पर चौरा सुगुरु वचन मोती कानमें । मि० १ । ज्यो कर रावण तांत वजाई मगन भयो शुभ ध्यानमें । मि० २ । तिन वेला तिर्थङ्कर पदवी उपजाई एकतानमें । मि० ३ । सेवक तुमारो करत वीनती है शरण लीनो मैं ज्ञानमें । मि० ४ । इति ।

कृपाली रामभारीका चाल

चालो सखी वन्दन जइये नाभजुके नन्द । चा० १ । सखगा कुटिलता शुंकी मन धरिये आनन्द । च० २ । देश देशके यात्री आवे पूजे ऋषभ जिनन्द । चा० ३ । देव दुन्दुभि सिरां वाजी गाजे गहिर गमन्द । च० ४ । चेत २ सबल सुख देने वन्दो आदि जिनन्द ॥ चा० ५ ॥ इति ॥

कृपाली नैनाला

नैना दरशन आधीन । पूरण प्रभु मुख देखन कारण रहत सदा लय लीन । नै० १ । रसिया होय सो रस पहिचाने । [illegible] मनिहीन । नै० २ । परमानन्द लहै सोइ जाने । [illegible] ॥ नै० ३ ॥ इति ॥

श्याम कल्याण तेताला

मोतिनकी माला जिन गले सोहे । मोति० । मस्तक मुगट सोहे मन मोहन । कुण्डल लागत वाला । जि० १ । भजोरी भजो तुम लोक शहरके । नहींय भजे सो काला । माणक पर प्रभु मेहर करो तो । अपना विरुद सम्भाला ॥ जि० २ ॥ इति ॥

कल्याण तेताला

क्योंकर भक्ति करूं प्रभु तेरी । क्यों० । काम क्रोध मद मान विषय रस, छोड़त गेल न मेरी । क्यों० । करम नचावत तिमही नाचत, माया वश नट चेरी । क्यों० १ । दृष्टि राग दृढ़ बन्धन बांध्यो, निकशत न लहैं सेरी । क्यों० २ । करत प्रशंसा सब मिल अपनी, परनिन्दा अधिकेरी । क्यों० ३ । कहत मान जिन भाव भगत विन शिवगत होवे न नेरी ॥ क्यों० ४ ॥ इति ॥

श्याम कल्याण तेताला

चतरङ्ग जिनगुन मिल गाइए । गाइए बजाइए रिंझाइए जिनवरके आगे, लयकुं सम्पूरण कर दिखाइए । च० टेर । ममग ममग पपधा सारेसा सगारिगा पमगारेसा रेरेनिनि धप मप धपमगरि । च० १ । नादीर दा दानि तुमदिर तुमदिर दानी तननन उदानी तदानी तन धीम तननू धाकट तक् धुमकिट् तिक् धित्ता कडांन धा धा कित कित्ती कित्ती पद्मोदय मन भाइए ॥ च० २ ॥ इति ॥

भुपाली कल्याण तेताला

मो मेरा मन लगा जिनेश्वर से, जिनेश्वर से परमेश्वर से मो० टेर। केतकी मधुकर चकोरको चन्दा, हां रे जैसे कमल को भमरा। मो० १। देव जगतमें है बहुतेरा, सब देवन बीच टेरा। मो० २। कहत खुशाल राय वेकर जोड़ी, भव भव पातक भगा॥ मो० ३॥ इति॥

चलन लंगड़ी टेठी

समझि समझि जीया ज्ञान विचार। एक जीता तो पांच जीता, पांचु लाख हजार। एक पलकमें सब जग जीता, उतर गया पैले पार। स० १। ज्ञानके बान भर भर मारा, मन मतवाला नाहार। स० २। रूपचन्दके नाथ निरञ्जन, आप होवे निरदार.॥ स० ३॥ इति॥

खम्माच नाल तेताला

जिया जिनजीसे ध्यान लगानारे। होजि०। टेर। पद समरणसे अघ सब नाशे, मन वञ्छित फल पानारे। हो जि० १। पद प्रभुजीसे प्रीत करे नर, शिवरमणी सुख मानारे॥ होजि० २॥ पद्मोदयकी यही अरज है, जन्म मरण मिट जानारे॥ होजि० ३॥ इति॥

गौरी नाल तेताला

अरज सेवक मेरे जिनजी, तुम देवो मांई। कोट सूरज मिल परकाश कीनें, तोहू न होय मेरे प्रभुजी। दे० १। शिव मिल तेरा निजातम दरसें, कारा नौन स्वनजी, और कहें प्रभु पार लंगार आशा पूरो मेरे मनकी॥ दे० २॥ इति

इमन कल्याणका दूहा

सुख उपना दुख गल गए, निकलंङ्क भये निरवाण। घर घरमें आनन्द भये, जब प्रगटी राग कल्याण। सु० १। रागको नाम कल्याण है, मेरो प्रभुजीको नाम कल्याण। सकल सभाकुं कल्याण है, तब होत कल्याण कल्याण। सु० २। जीवड़ा जिनवर पूजिये, तासे सम्पत्ति होय। राजा नमें प्रजा नमें, वाल न वांको होय॥ सु० ३॥ इति॥

इमन ताल दादरा

सुमति जिनन्दा स्वामी, जपो मन प्यारे। सुन्दर छवि अति रूप उदारे। सु०। जगवच्छल जगनायक प्रभुजी, तीन भुवन के है सिरदारे। सु०। हस्तिनापुर प्रभु जन्म लियो है, मात सुमङ्गला के नन्दन प्यारे। सु०। देख दरश सबको मन हरख्यो, सेवक के प्रभु काज सुधारे॥ सु०॥ इति॥

इमन ताल तेलाना

मनुवा भजले श्री भगवान। वहुत गई अब थोड़ी जान। म० टेर। काल अनादि भमतो फिरीयो, पुन्य सञ्जोगे मानव भव वरीयो, एसो जन्म कठिनही जान। म० १। ए अवसर वेर वेर नही आवे, मानव भव और जिन धर्म पावे, इतनो तो सोच हिये धर ज्ञान। म० २। मात पिता वनिता सुत भाई, ए सब तेरे सङ्ग न जाई, सब मतलव को साथी जान। म० ३। सुध भाव से प्रभु गुण गावो, इह भव पर भवमें सुख पावो, वाबुलालकी विनती मान॥ म० ४॥ इति॥

इमन ताल दादरा

मैं तेरी बलि जांउ वारी जिन प्यारे। मैं० टेर। जिन तुम चरणन शरणा पकड्यो, तिन निज काज सुधारे। मैं० १। ॥ संसार विकट भव निधिते आप तिरे पर तारे। मैं २। उदय कमल प्रभु सेवक विनवे कर्मनते कर न्यारे॥ मैं०३॥ इति॥

इमन बेहाग ताल तेताला

आज जिन चरण पूजन मेरे मन भायो। आ० टेर। पूजन करत रोम रोम हुलसायो। आ० १। तुम दरशन विन कलन पड़त छिन दूजो नहीं तुम विन मोहे तारण हारो। आ० २। तुम विन औरन मेरो संकट हरण हारो, तारो नाथ अबकी नाते सेवक शरण आयो॥ आ० ३॥ इति॥

खम्माच फोरस तेताला

घड़ी घड़ी पल पल छिन छिन निश दिन प्रभुको समरण करलेरे। घ० टेर। प्रभु समरण सब पाप कटत है अशुभ करम सब हरलेरे। घ० १। मन बच काय लगी चरणन निज. ज्ञान हियेमें धरलेरे। घ० २। दौलत राम प्रभु गुन गावे। मनवांछित फल बरलेरे॥ घ० ३॥ इति॥

ठुमरी काफी ताल कहरवा

शिवपदको सरदार, बतादे मोहे। शि०। काल अनन्त निगोद समायो अकामे पायो तिरहार। बता० १। अशिव दशा कौन मिला मोहे। ताते भम्यो हुं संसार। बता० २। कहे जिनदास अनन्त जिन आगे। मांगु सहज पसाद। बता० ३॥ इति॥

जाके, फेर जगतमें न आवनां । आ० २ । चउदे राज भासत है दरपन एक समय दिखलांवना । आ० ३ । भाव भगति मन हरपित होय नित परम अंसको रिझावनां ॥ आ० ४ ॥ इति ॥

कल्याण दादरा

ऐसो ब्रह्म मोपै कैसे कहायरे । निरगुणी प्रभु सुगुण समस्या । ताकर कर कैसे वतायो जायरे । ए० १ । जाकी वरण भेप नांही, कछु नाहीं रूप मुद्रा आकाररे । थानक अगम अलख अकलङ्कित । निरलेपी निराकाररे । ए० २ । गोतन जाती भांति नही जाकी, नही माया काया छाया धामरे । कहिवाको वल चलत नही केसे के, लीजै ताको नामरे । ए० ३ । शब्द रहित प्रभु ऐसी ध्रूव मुखके, नांहि होत उचाररे । गूङ्गाको सुपनो माहि फुनि, समझित आपहि आप विचाररे । ए० ४ । है आकार ज्युं वचन अक्षर आपुरे । ऐसो राज सुपाश हीं जान्यो जगत राज सोउ अजपा जापरे ॥ ए० ५ ॥ इति ॥

कल्याण दादरा

मैंतो गिरनार गढ़ भेटण जाउंगी । मैं० टेर । जो अवसर प्रभु जोग विचार्यों, ए अवसर कव पाउँगी । मैं० १ । सव सखियन मिल सव रस पाउँगी, मैं जिन तेरा गुण गाउँगी । कहत हठु प्रभु मुक्ति सिधाए, प्रभु चरण चित लाउंगी ॥ मैं० २ ॥ इति ॥

भरथंरी की चाल

क्या तारीफ करूं प्यारे नेम जी, तुम बाला ब्रह्मचारी। समुद्रविजे वर जन्म लीयो हैं, सब जीवन सुखकारी। क्या०। सहसावन जाय सञ्जम लीनो, पञ्च महाव्रत धारी। क्या० १। गढ़ गीरनार जाय के वसीया, वरीया शिवपुर नारी। क्या० २। रूपचन्द कहे नाथ निरंजन, चरण कमल बलिहारी॥ क्या० ३॥ इति॥

मिश्र कहरवा

पाश जिनन्दा प्रभु मेरे मन वसीया। पा०। चरण कमल गुण मधुरस पीयकर, सुरनर मधुकर निकर हरपीया। पा० १। समवसरण सुनि जिनगीर जलधर, गरजत धुनि भवि मोर जलसीया। पा० २। जलित नाग भयो तुरति धरणीधर. जब प्रभु दरशन चरण फरसिया। पा० ३। दरश सरस लही मेरे मन आनन्द, अमृत जलधर यह वरसीया। पा० ४। प्रभु के वदन शिवचन्द्र दरशतें- भविजन नयन चकोर विकसीया॥ पा० ४॥ इति॥

रेखता दादरा

राजुल पुकारे नेम पिया, ऐसी क्या करी। तुम छोड़के चले हो, चूक हमसे, क्या परी। रा० १। कर आस की निरास उदासी दसाधरी, तरसाय के हमारी जीव ले चले उस धरी। रा० २। अपना वदन दिखाय, मेरा मन लिया हरि, जीव वस नहीं हमारे, प्रीतमके पैरो परी। रा० ३।

हमरे रह्या न आश, प्रभु तुम विना धरी, अजी सङ्ग लीजिये दयाल कृपा करी उघरी । पा० ४ । निस दिन तुमारे नाम लगी ध्यान की झरी, कहे चन्द्र विजे प्रभु, आगे चरण पेधरी ॥ रा० ५ ॥ इति ॥

देशी दादरा

सिद्धाचल गिर भेट्यारे, धनभाग हमारा । विमला-चल० । एह गिरिवरनी महिमा मोटी, कहता न आवे पारा, रायण रूख समोसरया स्वामी, पूर्व नवानु वारारे । ध० १ । दुर देशथी हू ईहां आयो, श्रवणे सुनि गुण तोरा, पतित उधारण विरुद तुमारो, एह तीरथ जग सारारे । ध० २ । भाव भक्ति से प्रभु गुण गावे अपना जन्म सुधारे । यात्रा करि भवि जन शुभ भावे, नर्क तिर्यंच गति वारारे । ध० । ३ । सम्वत अठारे आसी मास आसाढ़ वद आठम सोमवारा, प्रभु के चरण प्रताप संघमें, क्षमारतन प्रभु प्यारारे ॥ ध० ४ ॥ इति ॥

नवपदजी का देशी चाल

सुरमणी सम सहु मन्त्रमा, नवपद अभिरामीरे लो (अहोनवपद०) करुणासागर गुण निधि, जग अन्तरजामीरे लो (अहोजग०) । १ । त्रिभूवन जन पूजित सदा, लोका-लोक प्रकासीरे लो (अहोलोका०) एहवा श्री अरिहन्तजी, नमु चित्त उल्हासीरे लो (अहो नमु०) । २ । अष्ट करम दल क्षयकरी थया सिद्ध सरूपीरे लो (अहो० थया०) सिद्ध नमो

भवि भावथि, जे अगम अरुपीरे लो। अहो जे०। ३। गुण छत्तीसे शोभता, सुन्दर सुखकारीरे लो (अहो सु०) आचारज तीजे पदे, वन्दो अविकारीरे लो (अहो व०)। ४। आगम धारी उपसमी, तप दुविध आराधीरे लो। अहो त०। चौथे पद पाठक नमो, संवेग समाधीरे लो। अहो स०। ५। पंचाचार पालण, परा पंचाश्रव त्यागीरे लो। अहो प०। गुणरागी मुनि पांचमें, प्रणमु वड़ भागीरे लो। अहो प्र०। निज परगुणनै ओलपै। श्रुत श्रद्धा आवेरे लो। अहो श्रु०। छठै गुण दरशण नमो, आतम शुभ भावेरे लो। अहो आ०। ७। ज्ञान नमो पद सातमे, जे पांच प्रकारैरे लो। अहो जे०। स्वपर प्रकाशक दिनमणी, अज्ञान निवारैरे लो। अहो अ०। ८। आठमे चारित्र पद नमो, परभाव नीवारीरे लो। अहो प०। खंत्यादिक दश धर्मनी, जेह छै अधिकारीरे लो। अहो जे०। ६। नवमे वलि तप पद नमो, वाह्याभ्यन्तर भेदेरे लो। अहो वा०। वांध्या काल अनन्तनी, जे कर्म उच्छेदैरे लो। अहो जे०। १० ए नव पद वहु मानथी, ध्यावै सुभभावैरे लो। अहो ध्या०। नृप श्रीपाल तनी परै, मन वञ्छित पावैरे लो। अहो म०। ११ आसू चैत्रक मासमा, नव आविल करियैरे लो। अहो न०। नव ओलो विध युत करी, शिव कमला वरियैरे लो। अहो शि० १२। सिद्धचक्रनी वहु परै, वर महिमा किजेरे लो। अहो व०। श्रीजिनलाभ कहै सदा, अनुपम जस लीजैरे लो॥ अहो अ०॥ १३॥ इति॥

गौड़ सारंग तेताला

सो नही दुर, जाको तु दुढ़ें । १ । घट घट में और रोम रोम में, छाय रहे भर पूर । सो० २ । बैठ एकान्त ध्यान धरू कछु दिन, तब झलके गो नूर । सो० ३ । देव मिलेवनि लागे अब तु, साधु चरण को धूर ॥ सो० ४ ॥ इति ॥

चलत खेमटा

उत्सव की आई बहार । बहार मेरे प्यारे, उत्सव की आई बहार । टेर । मंगलमय धन बंगाल देशे अजिमगंज उदार, उदार मेरे प्यारे । उत्सव० १ । नेमि प्रभु जिन मंदिर सुन्दर । देव विमान आकार, आकार मेरे प्यारे । उत्सव० २ । भाविक भक्त जन पूजा रचावें । आठ अनेक प्रकार, प्रकार मेरे प्यारे । उत्सव० ३ । भाव नंदीश्वर तीरथ राजे । पावापुरी है श्रीकार, श्रीकार मेरे प्यारे । उत्सव०४ । चम्पापुरी वर तीरथ अष्टापद । भवजल से तारणहार, हार मेरे प्यारे । उत्सव० ५ । सम्मेत शिखर समव शरण की । रचना है आनन्दकार, कार मेरे प्यारे । उत्सव० ६ । पूज्य हरिसागर सूरि पदोत्सव । संघ रचावें जयकार, जयकार मेरे प्यारे । उत्सव० ७ । साधार्मी आवें देशदेश के । दर्शन वंदनकार, कार मेरे प्यारे । उत्सव० ८ । स्वर्ग निवासी देव-देवीगण । आने को उत्सुक अपार, अपार मेरे प्यारे । उत्सव० ९ । गंगा नदी जलधारा ले आवे । पाप प्रखालन हार, हार मेरे प्यारे । उत्सव० १० । जगन्नाथ प्रभु पुण्य कृपाते । घर घर में मंगलाचार, चार मेरे प्यारे ॥ उत्सव० ११ ॥ इति ॥

ठुमरी कहरवा

श्री अभिनन्दन दुःख निकन्दन, भावे वंदन नित्य करूं रे। टेक। आत्म-समर्पण अद्भुत दर्शन, प्रेम सुधारस पान करूं रे। श्री० १। तुझ मुझ बीचमें जो परदा है, उसको जल्दी दूर हरूं रे। श्री० २। द्वैधी भाव सदा दुविधामय, कैसे मैं अब चित्त धरूं रे। श्री० ३। हो एकांगी तुझ पद संगी, काहू से अब नाहि डरूं रे। श्री० ४। हरिपूज्येश्वर अगम अगोचर, दिव्य 'कवीन्द्र' पथि विचरूं रे॥ श्री० ५॥

प्रभाती तेताला

तुम विन दीनानाथ दयानिधि, कौन खबर ले मेरी रे। टेर। भ्रमत फिरयो संसार जगतमें, मेटो भवनी फेरी रे तुम० १। भव २ के प्रभु तुम जगनायक, राखो शरणे तेरी रे। तुम० २। "उदय" आशरो पकड्यो तेरो, शरण ग्रही मैं तेरी रे॥ तुम० ३॥ इति॥

होरी डफकी चाल

दरशन कियो आज शिखर गिरि को, दरशन कियो। टेर। देख्यो मधुवन सीता नालो, ताको नीर बहे नीको०। दर० १ वीस कोस थी दरशन पायो, भागो भरम सकल जीको। दर० २। वीसे टुंके वीस गोमटडी, तामें चरण जिनेश्वर को। दर० ३। अब जिनवरके शरणे आयो, रसतो पायो "मुगति" पुरको॥ दर० ४॥ इति॥

वसन्त डफकी चाल

इक सुनले नाथ अरज मेरी, इक सुनले० । टेर । इह संसार गहरतर सिन्धु, भमर पड़त जिहां भव फेरी । इक० १ । क्रोधादिक बहु मगर मच्छ हैं, ग्रहत जंतु न करत देरी । इक० २ । ऐसे जलधि से पार करो तो, तारण तरण विरुद्ध तेरी । इक० ३ । धरम जिनेश्वर जग परमेश्वर, दूर करो दुख की बेरी । इक० ४ । परम 'क्षमा' गुण दायक लायक, अनुपम कीरति जग तेरी ॥ इक० ५ ॥ इति ॥

देशोकी चाल

पर्यूषण में मैं वीतराग, भजूं भाव से । टेर । श्री जिन राज जगत गुरु स्वामी, आतमरामी नामी । अन्तरजामी बहु-गुण धामी, आरामी अभिरामी रे । पर्यू० १ । श्रीजिन आतम अरु निज आतम, रूप अनूप विचारे । जिन दर्शन निज दर्शन करके, भेद खेद सब टारे रे । पर्यू० २ । पर्यूषणमें समकित मिथ्या, मिश्र मोहनी टारी । प्रथम अनन्तानुबन्धी की चौकड़ी दूर निवारी रे । पर्यू० ३ । काल अनादि पुद्गल संगी, बहिरातम बेढंगी । अन्तर गुण चंगी होकर के हुआ परमपद रंगी रे । पर्यू० ४ । पर्यूषणमें सुर "गणनायक—हरि" नन्दीश्वर जावें । तैसे ही जिन मन्दिर में जिन वन्दूं मैं बहु भावे रे ॥ पर्यू० ५ ॥ इति ॥

गजल ताल कव्वाली

शिखर सम्मेत तीरथ में, अजब आनन्द आता है । विनय से वन्दना करते, भविक मन मोद पाता है । टेर । यहां पर

वीस कल्याणक, हुए हैं वीस जिनवर के। फरसते वीस टूंको को, अजब आनन्द आता है। शि० १। यहां पर पास जिनवर की, मनोहर सांवरी सूरत। प्रभावक दिव्य दर्शन से, अजब आनन्द आता है। शि० २। यहां पर भोमिया राजा, विराजें जागती ज्योति। उन्हीं की छत्र छाया में, अजब आनंद आता है। शि० ३। विकट गिरिराज पर चढ़ते, निरखते मोहनी लीला। विशदवर शांत जीवन में, अजब आनन्द आता है। शि० ४। परम "हरि" पूज्य तीरथ में, निजातम भावशुद्धि से। रमण करते हुए निशदिन, अजब आनन्द आता है॥ शि० ५॥ इति॥

पुरीया धनाश्री तेताला

पर्व पर्यूपण पाया आज। मैंने पर्व पजूसण पाया। टेर। श्री जिन शासन सार जगत में, पर्व पजूसण पाया। मैं० १। नन्दीश्वर सब सुर वर जावें, उत्सव ठाठ रचाया। मैं० २। आठ करम वन काठ जलाने, पावक पर्व उपाया। मैं० ३। आठ सिद्धि नव निधि निपाया, आठ मदों को हटाया। मैं०४। प्रवचन माता आठ अनूठा, साधन बल निपजाया। मैं०५। उत्तम आठ दिनोंमें आतम, आठ परम गुण ध्याया। मै० ६। आठ आठ गुण "हरि" आराधित, तीर्थंकर गुण गाया॥ मैं० ७॥ इति॥

गजल कव्वाली

नित नवपद गुण भण्डार नमूं, सुखकारक परमाधार नमूं। टेर। अर्हपद आतमरूप नमूं, प्रभु सिद्ध महागुण भूप

नमूं । सूरीश्वर शासन थम्भ नमूं, पाठक पद पाठारम्भ नमूं । नित नवपद० । १ । साधु निज साधन हेतु नमूं, दर्शन पद सब गुण केतु नमूं । वर ज्ञान चरण तप योग नमूं, ये नवपद निजपद भोग नमूं । नित नवपद० २ । सुखसागर पद भगवान नमूं, सब मंत्र तंत्र परधान नमूं । "हरि" पूज्य सभी हितकार नमूं, परमोदय कारक सार नमूं ॥ नित नवपद० ४ ॥ इति ॥

गजल दादरा

तुम्हें नाथ नैया तिरानी पड़ेगी । तिरानी पड़ेगी, तिरानी पड़ेगी । तुम्हें० टेर । तारन तरन है विरुद तुम्हरो प्रभु ? डूबत नैया तिरानी पड़ेगी । तुम्हें० १ । भव सागर में डूबी जो नैया मेरी, तो तेरे विरुद्ध में खामी पड़ेगी । तुम्हें० २ । "हरि कवीन्द्र" की यही विनती है । मुक्ति नगरियाँ दिखानी पड़ेगी ॥ तुम्हें० ३ ॥ इति ॥

भैरवी तेताला

हे जग-त्राता, विश्व-विधाता, हे सुख-शान्ति निकेतन हे ! हे० । प्रेमके सिंधो, दीनके बंधो दुःख दरिद्र-विनाशन हे ! हे० १ । नित्य, अखंड, अनन्त, अनादि । पूरण ब्रह्म, सनातन हे ! हे० २ । जग आश्रय, जगपति, जगवंदन । अनुपम, अलख निरंजन हे ! हे० ३ । प्राणसखा, त्रिभुवन-प्रतिपालक । जीवन के अवलम्बन हे ! हे० ४ ॥ इति ॥

अडाणा-ताल झपताला (बंगला भाषामें)

तुमि बन्धु, तुमि नाथ, निशदिन तुमि आमार । १ । तुमि सुख, तुमि शान्ति, तुमि हे अमृत पाथार । तु० २ । तुमि तो

आनन्दलोक जुडाओ प्राण; ३। नाशो शोक तापहरन तोमार चरन, असीम शरन दीन जनार ॥ ४ ॥ इति ॥

गजल कहरवा

पार्श्वप्रभुजीरे विनती मोरी मानना । टेर । अति दुख पाया मैंने, मोह के राज में । लाख चोरासी रे, योनि में जहां घूमना पार्श्व० १ । फंस रहा हूं मैं तो, कर्मों के घेरमें । चार गति के रे, दुःखों को वडे झेलना । पार्श्व० २ । भटक रहा हूं प्रभु, अंधेरी रेन में । ज्योति जगादो रे, टले ज्युं मेरा रुलना । पार्श्व० ३ । सम्यगदर्शन, ज्ञान के राज में । चरण मीलादो रे, स्वामीजी नहीं भूलना । पार्श्व० ४ । आत्मकमल में जिन रहो दिल में । लब्धिसूरिका रे, हटादो जग झूलना ॥ पार्श्व० ५ ॥ इति ॥

गजल कहरवा

भज ले महावीर भगवान, भवसे पार लगानेवाले ॥ सिद्धारथ कुल नभ--चन्द, राणी त्रिशला के हैं नन्द; काटे जन्म मरण के फन्द, मोक्षके द्वार पहुंचानेवाले । भज० १ । शक इंद्र के दिल में आया, तब मेरु प्रभुने हीलाया; ताकत है जिनकी अपार, जन्म से मेरु चलानेवाले । भज० २ । क्षत्रियकुंड नगर मंझार, लिया जन्म प्रभुने धार; तारे हैं लोक अपार, मोक्ष पावामें पानेवाले । भज० ३ । जो स्मर लेवे जिनराज, वो रक्खे हैं उनकी लाज; सब पूरण करदे काज, कर्म-जड़को है हटानेवाले । भज० ४ । जंबुपुर नगर विशाल, सोहे जिनमन्दिर नाल; मूलनायक है प्रतिपाल, ज्ञान 'लब्धि' के पानेवाले ॥ भज० ५ ॥ इति ॥

खम्माज ताल तेताला

शीतल जिनवर तार हो, तोरी शरण गही है। टेर। वदन कमल शुभ नग मन मोहे, भाजत सकल विकार हो। तोरी० १। कल्पतरु तूं वञ्छित पूरे, चूरे कर्म करार हो। तोरी० २। तुमरे चरणकी शरणा लई है, कर भवदधिसे पार हो। तोरी० ३। आतम आनन्द चिद घन मूरति वाञ्छित फल दातार हो॥ तोरी० ४॥ इति॥

खम्माच ठुमरी ताल लंगड़ी

विषय वासना छुटत न मनसे, नाहक नर वैराग धरे हो। विष०। जलमें मीन वसो वंशीमें, जिम्हा के कारण प्राण हरे हो, सो रसना वश कियो नही जोगी, नाहक जोगकुं साध मरे हो। विष० १। वनमें रहे मृगा निशि वासर, काहू को नही दोष करे हो, सो मुरली धुन सुणे इन कांने, व्याधा वाणसे प्राण हरे हो। विष० २। नयनन कारण मरत पतंगवा फरस फांस गजराज परे हो, नासा भ्रमरवा नाश भए हैं पांचुही रससे पांच मरे हो। विष० ३। कर जप दान तीरथ व्रत पूजा, मौनी होकर ध्यान धरे हो, लखमीपति तब लग सब झूठा, जब लग मन नही हाथ करे हो॥ विष० ४॥ इति॥

चतरङ्ग खम्माज तेताला

चतरङ्गको गाइए जिनरङ्गतसुं। अरतीवरको स्वर देख भाल करत रतीवर अति कोमल सुरको, न्यारो न्यारो सुर संगतसुं। च० टेर। निग दिग तानाना दिग दिग ताना तानदेर

तुमदिर दिर दिर दिर दानी । च० १ । उनचाश कोट तान तिनके कठिन रंगीले हे विवरे । सारिगम पप पप मम मम मगरिसा सानि सानि सानि धप मगरिस साधिस्ति रकट तक तित्तिर किट् धित्ता धित्ता किरनातक् तक् धुम किट् तक् तकडां तक्धा पद्मोदय मनचङ्गतसु ॥ च० २ ॥ इति ॥

ठुमरी ताल लंगड़ी

औरनसे रङ्ग न्यारा न्यारा तुमसे रङ्ग करारा है । तुम मन मोहन नाथ हमारा, अबतो प्रीत तुमारा है । औ० १ । जोगी हुआ तो कान फडाया, मोटी मुद्रा सारी है । गोरख कहे तृसना नहीं मारी. घर घर तुमची न्यारी है । औ० २ । जंगम आय वाजा वजडावे, आछे तान मिलावे है । सबका राम सरीखा वुझे काहे कु वेश लजावे है । औ० ३ । जङ्गम जावे भस्म चढ़ावे जटा वढ़ायके कैसा है । पर भवकी आशा नहीं मारि, फिर जैसे का तैसा है । औ० ४ । यती हुवा इन्द्री नही जीती पञ्च भूत नहीं मारा है । जीवाजीवकु वुझा नाही, वेसकु लेकर हारा है । औ० ५ । वेद पढ़े से ब्राह्मण कहावे, ब्रह्म दशा नहीं पाया है । आतम तत्वका अर्थ न वुझा, पुकार से जन्म गमाया है । औ० ६ । काजी किताब खोलके बैठा, क्या किताबमें देखा है । वकरीके गले छुरी चलावत क्या देवेगा लेखा है । औ० ७ । जिन कञ्चनका महल वनाया, उनसे पीतल कैसा है । डाला गलेमें हार हीरेका, सब जुग काला कैसा है । औ० ८ । रूपचन्द रङ्गमें मगन भया है नाथ निरञ्जन प्यारा

है। जनम मरणका डर नही आना चरण शरणमें तिहारा है ॥ ओ० ९ ॥ इति ॥

ठुमरी लंगड़ी

अभिनन्दन जिनराजसों मेरो चित्त अटक्यो अति जोररी अ० टेर। देव अनेक हैं जगतमें, मेरो दिल नही आवत औररी। अ०१। रोम रोम सुख उपजैरी जब देखूं मुख मोररी, ज्यौ घन सजल विलोकिकै सखी नाचत वन के मोररी। अ० २। मेरो मन प्रभु वसि परयोरी ज्यौं गुड्डी वशि डोररी, अति ताण्यौ तूटै नहीं भयौं निपट ही कठिन कठोररी। अ०३। स्थकित भई छवि देखि कैरी रींझों मुखकी मोररी, प्रभु मुखचंद आनन्द हैं मेरे लोचन भये चकौररी। अ० ४। अन्तरयामी ऊपरेरी वारुं लाख कड़ोररी हरखचन्द के स्वामीजी प्रभु प्रीति निवाहो उररी ॥ अ० ५ ॥ इति ॥

गजल

चाहे तारो या न तारो सरना तो ले चुका हुं। जिंदगी से अब मैं हारा, जब तुमको जा पुकारा, अरजी तो दे चुका हुं। चाहे० १। पांचो इन्द्रिया सतावे, मन मैलको बढ़ावें, भवजलमें यों डुवा हुं। चाहे० २। क्या हाल कहुं मैं सारा, दिलमें जो है हमारा, सेवक तो हो चुका हुं ॥ चाहे०३॥ इति ॥

पिलुकी ताल दीपचंदी

लाल तेरे नैनों की गति न्यारी, एतो उपसम रसकी क्यारी। लाल० टेर। काम क्रोधादि दोष रहित हैं, नैनभये अविकारी, निद्रासुपन दशा नहीं यामें दरशनावरण निवारी।

लाल० १। और नैनसे काम क्रोध है, बहोत भरी है खुमारी। परधन देख हरण की इच्छा, या माहे हुसियारी। लाल० २। ऐसा लंछन है नयनोंमें क्युं पासे भवपारी। योही विचार करो दिल अपने, होत कर्म से भारी। लाल० ३। धरम विना कोई शरणा नही है, ऐसो निश्चय धारी। विनय कहे प्रभु भजन करो नित, वो है तारण हारी॥ लाल० ४॥ इति॥

गारा ताल खेवड़ा

तारो मोहे अवतो शीतल। शीतल जिनराज। ता० टेर। यह संसार अथार जलद से, तारण तरण जहाज। शी० १। भ्रमत फिरत हूं अनन्त काल से, अव तो सारो मारो काज। शी० २। सेवक की अरजी पर मरजी, वेग करो महाराज॥ शी० ३॥ इति॥

चलत कहरवा

मेरे रङ्गीला चङ्गीला प्रभु पाशजी। जैसा सङ्गीला साथीला होय तासजी। मे० टेक। पल मेरी छिनमें अह निश समरुं। जिम हुय सुमता नारी हो सुन्दरवाणी। सहज से पाया चेतन गुण ज्ञानी। तन मन मोहन जाण सज्जन॥ मे० १॥ इति॥

बहार कहरवा

जिनराज चरणकी मैं शरण गही, महाराज चरणकी शरण गही। अरजी सुनिये नाथ हमारी, भव नाटक मेटो बांह गही। म० १। नव नव भांति बनाय के नाच्यो, लख चौरासी फिरत रही। म० २। जग पालक महिमा गुण सुनके, मैं तो तोरे रङ्ग राच रही। म०३। समकित सार पदारथ पायो, प्रसन्न

मई जिनराज सही । म० ४ । अहनिशि ध्यान धरे नित चुन्नी मनकी वान्छा सफल लही ॥ म० ५ ॥ इति ॥

चलत दादरा

चन्दा प्रभुजी से ध्यान रे, मोरी लागी लगन वा । लागी लगन वा छोड़ी न छुटै जब लग घटमें प्राणरे । मो० १ । क्रोध मान माया लोभ छोड़के, भजले श्री भगवानरे । मो० २ । दानशील तप भावना भावो, जैन धरम प्रतिपालरे । मो० ३ । हाथ जोड़ कर विनती करत है, चन्दत सेठ खुसालरे ॥ मो० ४ ॥ इति ॥

देशी चाल ताल लंगड़ी

तार तार भव सिन्धु पार, सङ्कट मझार तुमही आधार, टुक देहि सहार, वेग तारो मोरी नैया । प्रभु० १ । तज मन विकार, अनुभवकुं धार, परमाद चोर, कियो हम पर जोर पग पोत तोड़ दियो मझमें चोर, तुम सम नहि तारण तरवैया । प्र० २ । दियो दण्ड दण्ड, मोहे दुख प्रचण्ड, कियो खण्ड खण्ड चहु गतमें भण्ड, तुम हा तरण्ड तारण तरवैया । प्र० ३ । हे दग दास, तेरोहे हेदास मेरो काट फांस भव वनको वास, मैं आऊँ शरण तुम जग उधरैया ॥ प्र० ४ ॥ इति ॥

थियेटर का चाल

तारो तारो जिनन्दा मोहे तारोरे । प्रभु थांरो, पतियारो प्यारो साज म्हारा, राज, होरे जिनन्दा । मोहे० १ । सारी नदियारो नाथ चढ़ि जोररे, लहरारो मतवालो खारो गाज

म्हारा राज, होरे । जि० २ । म्हारी पुरानी जहाज भरि डोलेरे नही सारो नही यारो वारो आज म्हारा राज होरे । जि० ३ । थांरी शरणमें कपुर मुनि विनवेरे, अब धारो सब सारो म्हारा काज म्हारा राज होरे ॥ जि० ४ ॥ इति ॥

मांड कहरवा

म्हानुं प्यारा लागोछोजी सुमति जिनन्द । टेर। अद्भुत रूप अनुपम छाजै लाजै कोटि दिनन्द । जग बांधवो जगनाथ छो जी तुम मेघ नरेश्वर नन्द । म्हा० १ । चौविश दण्डक माहे भमता बहुत सह्या दुख दन्द । भटकत भटकत तुम मिलैजी जगजीवन जिनचन्द । म्हा० २ । जनम सफल मुझ छै सही जी आज छै परमानन्द । इन अवसर मुझ वीनती जी जगत उजागर चन्द । म्हा० ३ । सेवक जाणी आपनोजी दीजै सिव सुख कन्द ॥ म्हा० ४ ॥ इति ॥

मांड कहरवा

म्हारी राजुल राणी विनवे हां जी थानें कांई नेमजी मिले । म्हारी० टेक । व्याहन कारण आविया कांई ले जादुदल लार । तोरण से रथ फेरीयो, कांई जाय चढ्या गिरनार । म्हारी० १ । दम्पति दोनुं वीनवे कांई आवा गवन निवार चन्द कपुरा वीनवे कांई चरण शरण आधार ॥ म्हारी० २ ॥ इति ॥

मांड दादरा

जिनराज जगत का नाथ साथ अब साचो तो यही । भव अटवी के मायने हूं भम्यो तो सही, एता दिवस यों में अबुज

जिनन्द मैंने जान्यो तो नही। जि० १। वांमानन्दन देखके मैं हरप्यो तो सही। मैं तो अब लीनो प्रभुकुं पहंचान शरण अब छोडुं तो नही। जि० २। प्रभुको शरणों मैं लियो भय काहूं को नही। दीप कहे करजोड़ मरण दुख मेंटो तो सही॥ जि०३

चाल नाटक का

प्यारे मेरे प्रभुजीपे वारी वारी जाउं; छन न न नांचु दे छुन छुम छुम। प्या० टेक। एक तो अलबेली सोहे अङ्गीपे अङ्गी दुजे मुकुट मोतियन का विशाल। तीजे फूलन की बैठक वणी है, खुस खुस थांउ तोरा मुखडा निहाल। प्य० १। वेग वधावें प्रभु देखनकुं जावे जैरी जुगतको छोडी जञ्जाल, मङ्गल रङ्ग एही अङ्गमां छाजै शान्ति सङ्घ मां स्थापे विशाल॥ प्या०२

मिश्र ताल दादरा

शरणमें आयो शरणमें आयो। वीर तेरे शरणमें आयो। वीर० टेर। प्रभुजी मैं तो कुमती सङ्ग रमियो। वहुत भव भमियो। वी० १। प्रभुजी मोकुं सुमति अब दीजैं। जगत जश लीजै। वी० २। प्रभुजी शिवसुख श्रीवर चाहुं। मोहन गुण पाऊँ॥ वी० ३॥ इति॥

मिश्र ठुमरी

जिनतत्व सार, सहु जग आधार, करि मोह जार, सुख शांति सार, प्रभु गुण अपार, दिल समरण कीनो। जि० १। जिन सुमति पाय दिल सुमति थाय। सहु कुमति जाय, मोह मद नसाय। गुण आतम पाय वञ्छित सुख लीनो। जि० २।

भवजल प्रधान प्रवहण समान सहु सुख निधान कारे आत्म ध्यान शिव श्री प्रधान गुन मोहन लीनो ॥ जि० ३ ॥ इति ॥

ठुमरी ताल दादरा

आवो आवो सज्जन मिल साराटे। गुण गावो जिनन्द सुखकारारे। आ० टेर। कोई हाथे वंशीधारो। कोइ हाथे वीणारे। मृदङ्ग बजावो गावो करी स्वरक्षीना। आ० १। ठम ठम पाय नाचो घुंघर बंधावोरे। नर नारी सहु जोड़े सुजश बढ़ावो। आ० २। दान दया शील धारो तप जप सारोरे। भाव शुद्ध धार करो आतम निस्तारो। आ० ३। पर पीड़ा दूर करी करो उपगारोरे। पर निंदा दूर छोड़ो लेवो गुण सारो। अ० ४। जीवकों बचाया चावो जिन धर्म धारोरे। समकित शुद्ध धारी करो भव पारो। आ० ५। ज्ञान गुणीसें सोवत रखतां होवेगी बड़ाई रे। लक्ष्मीमोहन शिव सुख पावे जय आनन्द बधाई ॥ आ० ६ ॥ इति ॥

पीलु कहरवा तेताला

जात्रानुं फल मोहे दीजे केशरीया, जात्रानुं फल मोहे दीजेरे केशरीया। जा० टेर। जे गुण थी तुम शिवपद पाये ते गुण मुज प्रगटीजे केशरीया। जा० १। जे करतां क्षायक गुण प्रगटे, ते करणी बगसीजे केशरिया। जा० २। बालमित्र ने अक्षय ज्ञानी, तुम सरीखो प्रभु कीजे केशरीया ॥ जा० ३ ॥ इति ॥

थीयेटर की चाल दादरा

अँ० पाणी पड़े असराल, प्यारा श्रीजिनवरने सीसे सम्भाल । अँ० । जयाने विजया नाचनारी, सत्त सुरनी जान नारी, रंगे नाटकनी ताल प्यारा । अँ० १ । कींचुक कसीया तेज वसीया हरखे हैजेने विकसीया, देह घनी सुकुमार, प्यारा भाव भक्ति अति सुयुक्ति, हाव भावे शोभे शक्ती उदय भणे एक ताल प्यारा ॥ अँ० २ ॥ इति ॥

सिंधु ताल-धमाल

चलो भवी वन्दन जिनवर, वीर धीर सिद्धारथजी के नन्द । च० टेक । क्षत्रिकुण्डमे जन्म महोत्सव जन्म्या श्रीजिन चन्द । च० १ । इन्द्राणी मिल मंगल गावे नाचत है सुरचन्द । च० २ । वे कर जोड़ी विनवे साहेब चाकर माणकचंद ॥ च० ३ ॥ इति ॥

चेतावर की चाल दादरा

मनुवा जिनन्द गुण गायरे । म० टेक । या जिनजीके दरश सरसते, दुख दोहग मिट जायरे । म० १ । सुगुरु वचन परतीत मानले, आतम सू लव लायरे । म० २ । भवभवमें याही सुखदाई, आनन्द वञ्छित दायरे ॥ म० ३ ॥ इति ॥

गजल कहरवा

धन्य धन्य धर्म्मनाथ भगवान । धर्म्म की नैया चलाने वाले । टेर । प्रभु केवल पदको पावे, सुर समोवसरण रचावे । वाणी अमृत रस वरसावे, धर्म्मका पन्थ वतानेवाले । धन्य० १ ।

सुद्ध देव गुरु और धर्म्म, बताये खूब खोलके मर्म। प्रति दिन करते रहे षटकर्म्म, सम्यग दर्शन पानेवाले। धन्य २। आत्म-लोक कर्म अरु करिया, शुद्ध वाद चार मन धरिया। निर्मल समकित स्वयं वरिया, आखिर शिव पद पानेवाले। धन्य० ३। लिया मैं धर्म्मनाथ का सरणा, मिटा दो जन्म जरा अरु मरणा। प्रभु अब देर नहि कुछ करणा, पतित को पावन बनानेवाले धन्य ४। नगर खुडाले मझार, बना है मन्दिर खूब गुलजार। स्टेशन पर आदिश्वर सुखकार, ज्ञानको पार लगानेवाले॥ धन्य ५॥ इति॥

वृन्दावनी सारंग कहरवा

क्या छवि लागत प्यारी, मरुदेवा नन्दनकी। रतन जड़ित को मुकुट मनोहर, कुण्डल झलकत भारी। क्या० टेर। मोतियन हार बांहे बाजुबन्द, छिटक केश काली काली। क्या० १। समवसरणमे चौमुख मूरत, सुरत प्रभुजी की सारी। क्या० २। देख दरश सबको मन हरख्यो, थिय जात सुरनारी। क्या० ३। बालचंद प्रभु अधम उधारण, चरण शरण बलिहारी॥ क्या० ४॥ इति॥

बेहाग ताल जत् १४ मात्रा

झूलत सब जिनराय हिण्डोला। ज्ञान दरशन दोय खम्भा लगे हैं, डण्ड ध्यान सुख दाय। झू० १। दानशील तप भावना डोरी, पाटी समझ सुभाय। हि० २। शील सुन्दरी सङ्ग हिल मिल बैठे, आगम धुन गुण गाय। हि० ३। समता सुमति

पेङ्क देत है, पञ्चम गत्त पहुचाय। हि० ४। चेतनता सुख होय जगतमें, आवा गमन मिटाय॥ हि० ५॥ इति॥

बेहाग कहरवा

सो प्रभु मेरे वीर जिनन्द जयो। सो० १। क्षत्री कुंड नगर अति सुन्दर, जिहां प्रभु जनम लियो। सो० २। जनम समय त्रिभुवन में ततखिन, परम उद्योत भयो। सो० ३। खिन एक नरक निवासी जीवने, परमानन्द चायो। सो० ४। मेरु शिखर पर स्नात्र महोच्छव, देवेन्द्रे रचयो। सो० ५। श्री सिद्धारथ मन्दिर प्रगट्यो, उछेव नयो नयो। सो० ६। मिथ्या तम भ्रम दूर करन कुं, अभिनव रवि उदयो। सो०७। अनुक्रम सञ्जम केवल आदर, लही प्रभु मुगत गयो। सो० ८। शासन पतिके चरण कमलमै, मन मेरे अटक रह्यो। सो० ९। अमृत सग प्रभु धरम प्रसादे, प्रगट कल्याण भयो॥ सो०१०॥ इति॥

बेहाग दादरा

काहे दुखसो जीव डरेरे। टेर। पहली पाप करत नवि सोच्यो, अब क्यों सांस भरे रे। का०१। करम भोग भोगतांही छुटे शिथल हुवा नसरे रे। का०२। करत दीनता जग जन आगे, कोई न सहाय करेरे। का० ३। धरम पाल प्रभु वदन विलोकत जुं सब काज सरे रे॥ का० ४॥ इति॥

बेहाग तेताला

सखि मोहे नीको लागे जिनंद। टेर। माता शिवा देवी उदरै जायो, समुद्र विजयजी के नन्द। सखी० १। प्रभुजी की तनु

छवी कंहा लग वरणु, ऐसे नही जिनन्द । सखी० २ । समो-सरण जाको इन्द्र रचो है, सेवत इन्द्र नरेन्द्र । सखी० ३ । बाल चन्द प्रभु नेम नवल से, राजुल हृदे समन्द ॥ स० ४ ॥ इति ॥

वेहाग तेताला

कवन गत होगी आतम राम । क्यूं भूले निज धाम । क० टेर । काल अनादि तैं लख चौरासी, भटके ठाम कुठाम । स्वगुण परगुण पहिचान किए विन, मिले नही विसराम । चेतन चित्त विचार के देखो, निज गुण अपना धाम । क० १ । दास चुन्नी आतम विचारमें, पावे पद अभिराम, श्री वीर जिनेन्द्र प्रभु की सेवा से सुधरे सब ही काम ॥ क० २ ॥ इति ॥

सिन्ध काफी यत

अब लाग्यो तोसुं रङ्ग, वामा नन्दन पाप निकन्दन कुल इक्षाक दिनन्द । अ० १ । जनम कल्याणक नयरी बनारसी, सेवे नित धरणीन्द । अ० २ । नील वरण नव हाथ प्रमाणे, लञ्छन सोहे फणिन्द । अ० ३ । आयु स्थिति सो वरस प्रमाणे, अश्वसेन कुलचन्द । अ० ४ । दास चुनीके पारश दाता, मन वञ्छित सुखकन्द ॥ अ० ५ ॥ इति ॥

वेहाग तेताला १६ मात्रा

नेमि जिनन्द जयो सो प्रभु मेरे । ने० टेर । समुद्रविजय शिवादेवीके नन्दन । देखत हरषो हियो । सो० १ । जादव कुल वर कुमुद विकाशक । अभिनव चंद जयो । सो० २ । वञ्छित दायक अंतरयामी । सुर तरु सम लखो । सो० ३ । पाप तिमिर भये

दूर निवारण । अशुभ उदय भयो । सो० ४ । पुन्य उदय प्रभु दरशन दीठो । दोहग दूर भयो । सो० ५ । उगनीसै विडोत्तर माघै, वद सातम दरश लह्यो । सो० ६ । विनय लाभ सदा सुखदायी । प्रगट प्रताप भयो ॥ सो० ७ ॥ इति ॥

बेहाग तेताला

सो जोगी चित लांडरे वाला । सो० टेर । सञम झोरी शील कछोटी, घुल घुल गांठि दिलाउं । ज्ञान गूदरी गल बिच डारूं, सिद्धासन बैठाउं । सो० १ । अलख गुरूका चेला होके, मोह के कान फड़ाउँ । धरम सुकल दोउँ मुद्रा सोहे, कहत न उपमा पांउरे । सो० २ । व्यापक सिङ्गी गल बिच डारूं, करुणा नाद सुनाउं । ज्ञान गुफामें दीपक जोउं, चेतन रतन जगाउँ । । सो०३ । अष्टकरम कण्डो की धुनी, ध्यान की अग्नि जलाउं । उपसम छन्ना भसम छानिके, मलि २ अङ्ग लगाउं । सो० ४ । इह विधि जोग सिद्धासन बैठि मुकति पुरीकुं जाउँ । विरुद्ध भुषण ऐसे गुरु सेवी, बहुरि न कालमें आउं ॥ रे० ५ ॥ इति ॥

बेहाग दादरा

दरशन प्राण जीवन मोहे दीजे । विन दरशन मोहि कल न पड़त है, तड़प तड़प तनु छीजे । द० १ । कहा कहुं कहत न आवत, विन सइयां किम जीजें, समझाओ सखी जाय मनायो आप ही आप पतीजै । द० २ । देवर देवराणी सास जेठानी यूं सब ही मिल खीजै, आनन्दघन विन प्राण न रहे छिन, कोट जतन कर लीजै ॥ द० ३ ॥ इति ॥

बेहाग तेताला

धर्म विना नही कोई, उमर सारी विषयोमें खोई । सुख दुख होते जीवके लारे, पाप पुन्य ए दोई । ध० १ । मात पिता सब सुख के साथी, विपत पड़े नही कोई । ध० २ । याते श्री जिन भक्ति करो तुम, जाते शिव सुख होई ॥ ध०३ ॥ इति ॥

सोरठाका दोहा

धनवेसांइ पङ्खिया, जे वसे गिरनार ।
चूञ्च भरे फल फूल से, चाढ़े नेम कुमार । १ ।
राजमति गिरवर चढ़ी, जोवा नेम कुमार ।
स्वामी अजहुन वाहुड्यों, मोमन प्राण अधार । २ ।
जगमें तीरथ दो बड़ा, शत्रुंजो गिरनार ।
ज्यांगीर ऋषभ समोसरे, त्यांगिर नेम कुमार । ३ ।
जे हुंती चम्पो विरख, वा गिरनार पहाड़ ।
फुलहार गुंथावती, चढ़ती नेम कुमार । ४ ।
सोरठ सोवा न सञ्चरेया, चढ्यान गढ़ गिरनार ।
गंगा नहाया गोमती, गयो जमारो हार । ५ ।
सोरठ राग सुहामणी, मुखे न मेली जाय ।
ज्युं ज्युं रात गलन्तड़ी, त्युं त्युं मिठी थाय । ६ ।
सोरठ थारे देशमें, वड़ोज गढ़ गिरनार ।
नित उठीनें वन्दिये, यादु नेम कुमार ॥ ७ ॥

सोरठ ताल लंगड़ी

जांउ जांउरे सामलिया थांरे वारणारे । पोष वदि दशमी दिन जायो, दिश कुमरी मिल मङ्गल गायो, इन्द्रादिक सब

हरष वधायो, गावै गीत सुहामनारे। जा० १। अश्वसेन राजा कुलनन्दन, नगर वानारसी शोभा सुन्दर। वामाराणी के घर झूले पालनारे। जा० २। दिक्षा ले प्रभु केवल पाये, अष्ट करमकुं दूर गमाये। समेत शिखर पर मुगति सीधाए आवा गमन निवारणारे। जा० ३। श्रीजिनचन्द सूरि सुप साए, श्रीजिनहरष हीये हुलसाए। सेवक प्रभुजीके शरणे आए भव सागर निस्तारणारे॥ ४॥ इति॥

सोरठ कहरवा

जय जय राणपुरा महराजा। टेर। मुल नायक श्रीआदि जिनेश्वर, चौमुख तीन उदारारे। जय० १। समेत शिखर नंदीश्वर अष्टापद, सहस्त्र कोट मनुहारारे। अय० २। उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, ए चिहुं चैत्य जुहारारे। जय० ३। पाछ-लना तीन चौमुख वंदो, दो दो वली गम्भारारे। जय० ४। चार दिशि देरी चौरासी, सन्मुख करिवर प्यारारे। जय० ५। तीन चौमुख एक चौमुख उपर, थम्भ तणो नहीं पारारे। जय० ६। चौराशी भूमिघर सुन्दर, पड़िमानो नहीं पारारे। जय० ७। सर्व मली चौविशे मण्डप, थम्भ उत्तम अपारारे। जय० ८। दीन दयाल दयानिधि गुणनिधि, दीठा दुरित हरनारारे। जय० ९। शरणागत वच्छल मन मोहन, जिनवर जगदाधारारे। जय० १०। उल्लसित भाव चरण तुम भेट्या मेट्या पाप हमारारे। जय० ११। बालमित्र यात्राफल मांगे अक्षय ज्ञान दातारारे॥ जय० १२॥ इति॥

सोरठ ताल कहरवा

दरशन विन जीया तरसत री । मोहे कलना पडत मोरी आलि पल छिन मन, धृति ना धरत दृग जल वरसत । द० १। श्यामसुन्दर छवि अति विशाल अनुपम दयाल सब कोरी । पशुवनको सोर सुन चितको चोर भयी, अति निठोर चरहत करसत । द० २ । उन विसार दई मैं ना विसरुं, उन कीना सो में करहुं । कपूर प्रभुजीके चरण शरणमें धन धन जो जिन फरसत । द० ३ । इति ।

सोरठ-ताल पञ्जाबी

हों मन कर जिनवर गुण गाना । टेक । चन्दचकोर ज्युं प्रीति लगी है, कैकी घन बरसानारे । मन० १ । दीप पतङ्ग भ्रमर शुभ गंधे, करीणी करी लपटानारे । मन० २ । पनीहारी हस बोलत मचकत, तदपि मटुकी प्रधानारे । मन० ३ । वंश उपर नट खेलत तदपि, डोर उपर चित्त तानारे । मन० ४ । दीन मीन घन जल पर माचत, राचत गुण ज्युं सयानारे । मन० ५ । ते सैं ध्यान ठराय जिनन्द पर, कर सुमरण सुप्रधानारे । मन० ६ । बालमित्र युं सब पावेगो, अक्षय ज्ञान निधानारे ॥ मन० ७ ॥ इति ॥

सोरठ ताल कहरवा

करम भरम जग तिमिर हरण खग, उरग लखण पग शिव मग दरसि । क० । निरखत नयन भविक जल वरषित, हरखत अमित भविक जन सरसि । क० १ । मदन कदन जित परम

धरम हित, सुमिरत भगत भगत सब डरसि । क० २ । सजल जलद तर मुकट खपत फर, कमठ दलन जिन नमत वणरसि ॥ कर० ३ ॥ इति ॥

सोरठ ताल कहरवा

प्रभुजी मोरा बहुगुण भरियाजी । तुम तीन भुवन शिरताज । टेर । सुमत जिनन्द जग अन्तरजामी, समता के दातार । प्र० १ । माता सुमङ्गलाके नन्दन प्रभुजी, मेघ नृपति हैं तात । प्र० २ । क्रोञ्च लञ्छन पग प्रभुके विराजै, करुणाके भण्डार । प्र० ३ । अजय अमर पद दायक स्वामी, मङ्गल सुख अवतार ॥ प्र० ४ ॥ इति ॥

मल्हार का दोहा

सरस्वती मात अधर सहित, आनन चन्द हराय ।
वानी वीर सुधा मई, भविजन भवि तरजाय । १ ।
नीकी मूरत पासकी, मो मन रही समाय ।
जैसे मेहदी पातकी, लाली लखीयन जाय । २ ।

मल्हार तेताला

कोयल टहुक रही मधुवनमें, पार्श्व प्रभुजी वसे मेरे दिलमें । को० । वालपने प्रभु अदभुत ज्ञानी, सुरपति नाग कियो एक छिनमें । को० १ । दिक्षा ले प्रभु विचरण लागे, भिज गये सङ्गम एक रङ्गमें । को० २ । समेत शिखर प्रभु मुक्ति पधारे, प्रभुजीकी महिमा तीन भुवनमें । को० ३ । सेवककी प्रभु एही अरज है, दिल अटक्यो तेरे चरण कमलमें ॥ को० ४ ॥ इति ॥

मल्हार तेताला

मोरवा पपैया बोले पिउ पिउ वनमें। नेम श्याम रहे सहसा वनमें। मो०। निस अन्धीयारी कारी विजली डरावे दूजो विरह आकुल भई तनमें। मो० १। झिर मिर वरषित गरजित दादुर, सोर करत है नदीया रणमें। मो० २। आनन्द ए समें देखन चाहे, राजुल भइ है वैरागिन छिनमें॥ मो० ३॥ इति॥

मल्हार ताल तेताला

चहुं दिश वरसन लागी वदरीया, नेम श्याम नहीं आयारे। टेर। कौन सखी वैरण भई मेरी, नेम नवल भर मायारे। च० १। दादुर मोर पपइया बोले, कोयल शब्द सुनायारे। च० २। रैंण अन्धेरी दामणी दमके, ऊँमड़ घुमड़ जल आयारे। च० ३। विरह निवारण चली सहसा वन, सुगुरु वचन मन भायारे॥ च० ४॥ इति॥

भीम मल्हार कहरवा

आज तुम सुरतरु सरसे दरसे। महाराजराज श्री अश्वसेन नृप नंदन वंदन जग तारण जिनराज। आ० १। कृपासिन्धु भगवान सुमति निधान, ऐसे शरणागत रखवारे। आ० २। एहि वेर अव शरण गहेकी। अमृत शीखर की लाज॥ आ० ३॥ इति॥

मिश्र मल्हार ताल चलत

वीर सुजश मन भायो, सो अब मेरे। काम धेन सुर तरु चिन्तामणि परश परम सुख पायो। सो० वी० १। सकल कलागुन अतिशय धारी, अलख ज्ञान चित लायो।

सो० वी० २ । वानी घन अव अमृत वरषत; आतम सक्ती जगायो । सो० वी० ३ । धन धन मही साहस जिन नायक, तुम विन कोऊ नही आयो । सो० वी० ४ । चेत गुलाव सकल सिध पूरण; लाल अमृत फल लायो ॥ सो० वी० ५ ॥ इति ॥

मल्हार ताल कहरवा।

देख्या में दरश सरश सुखकारा, अधम उधारण तारण हारा । दे० १ । निरखत नयन सुधारस वरषत, मुख छवि जैसा चंद उजियारा । दे० २ । मिथ्या मति भ्रम दूर करनकु दीपक तेज उदे दिनकारा । दे० ३ । सुरपति नरपति आवै पूजित, कुमति कदा ग्रह मोह निवारा । दे० ४ । श्रीजिन सोभाग्य सूर सुविध जिन; सङ्कट कोट मिटावन हारा ॥ दे० ५ ॥ इति ॥

मेघ मल्हार तेताला

देखो माइ उमड़ी घुमड़ी दोऊ आये । उत जलधर इत नेम कुवर वर, दोऊँ तन श्याम सुहाए । दे० १ । छप्पन कोटि जादव इनके सङ्ग, चढ़े वरात वनाए । दे० २ । छप्पन कोटि मेघकी माला, उत उनके सङ्ग धाए । दे० ३ । उतघन सजल गहिर ध्वनि गरजत, इत निशान वजाए । दे० ४ । उत चम-कत चपला इत भूषण, दुति दामनि दमकाए । दे० ५ । उत सुर चाप सुरङ्ग वन्यो इत, ध्वज पताका फहराए । दे० ६ । उतवग पन्ति वनो कुञ्जल इत, मोतियन माल सुहाए । दे० ७ । चहु दिशि चातक रटत हैं उत, इत याचक गुण गाए । उत वुन्दन

वरसत इत मणी गण, कनक रजत झरी लाए। दे० ८। कहत सखी सुनि राजुल तेरे, भए सकल मन भाए। हरख चन्द प्रभु वरषिद यारस, भव आतप बुझाए॥ दे०६ ॥ इति ॥

मेघ मल्हार ताल लंगड़ी

अनुभव मीत मिला दे मुझकुं। शील सञ्जम दोनु सावन भादो; ध्यान घटा घन छादे मोकुं। अ० १। शासा पवन चलत अति मधुरी, अनहद गरज सुना दे मोकुं। अ०२। भावनविजुरी चमकत छिन छिन, ज्ञान झरी वरसा दे मोकुं। अ० ३। चेतन राय कहत निज चितसुं आतम वोध जगा दे। मोकुं। अ०४। दास चुनीके अन्तर भींजै, वञ्छित वेल बढा दे मोकुं। अ० ५ ॥ इति ॥

(कानड़ा रागेन गीयते) तेताला

शांति जिनेश चरण कज शरणं, तव सुख करण मुदारं। टेर। विश्वसेन कुल कमल दिवाकर। मृग लक्षण हितकारं। करण कांति जित गैरिक गिरिवर। सकल मङ्गला धारं। शां० १। गतपारा सुख जलनिधि निपपित, तरणि समानाकारं। अनुभव रसवर पद्माभरणं। भय हरणं गुणधारं। शां० २। अपुनर्भव सुर सद्म मन्दा, नन्दथु ललनागारं। भ्रमरी भूत सुरासुर नरपति, यति तति गीताचारम्। शां० ३। धवलित जगति मण्डल कीर्त्ति, विताना हरणम् पारं। विगलित सकल जन्तु वांछित हित, सम गलमाला दारं। शां० ४। अचिरां वातमज कृत भूमण्डल, शांति विधेनंतधीरं। अद्भुत निरुपम शांति सुधारस, नदवर सुगतिद्वारं। शां० ५। (कलस) कल सकल लोका लोक लोकन विमल

केलि लोचन । आनन्द घन पद कंद जल दोय महित वन विरोचन । श्री शांति रित्थं मुदा वाचक पुण्यशील गणिस्तुत । संभवतु भरि विभूतये भवता मनंत यहोयुतः ॥ शां० ६. ॥ इति ॥

कनेड़ा ताल तेताला

मोरी दगनवामें तोरी छवि छाइरे । आई अति सीरताई प्रभुताई दरशाइरे । मो० टेर । अघ अघीक समाइ सुखदाई मन भाइरे । मो० १ । सुझ परी अनेकान्त डगया सगरीया सरल तर ताई दृढ़ताई भइरे । अपर सकल दुख दाइ विसराइरे । मो० २ । दुरगइ दीश भुली भुलइयां पुलईया कुमतीयां विमल सुध पाइरे ॥ मो० ३ ॥ इति ॥

कनाड़ा ताल तेताला

आज हमारे आनन्दा । माई० टेर । पार्श्व कुमार जिनन्द जीके आगे, भक्ति करता धरनेन्दा । माई० १ । ताता थेई ताता थेई पदम उठावत, नाचत नव नव वंदा । सास्त्र सङ्गीत वेद परमारथ, नृत्य करत सुरइन्दा । माई० २ । सफल करत अपनी सुर पदवी, प्रणमति पाय जिनन्दा । समय सुन्दर कहे प्रभु उपगारी जय २ श्री जिनचन्दा ॥ माई० ३ ॥ इति ॥

छायानट ताल तेताला

कोन विध नाथ निकट तेरे आऊं । काम क्रोध मद लोभ मोहरथ, निश दिन प्रीत लगाऊं । धन दारा परिवार सघन वन, मन कुरङ्ग जिम ध्यांऊं । कर्म कुटिल कीने बहुतेरे । सन्मुख होत लजाऊं । को० टेर १ । धरम जिनेश्वर साहेब साचो

और देव नहीं ध्याऊं। तुम सम दीनबन्धु नहीं दूजो चरण छोड़ कहा जांऊं। दया धरम प्रतिपदम् जयो परी, मन वञ्छित फल पांऊं ॥ को० २ ॥ इति ॥

कानड़ा तेताला

आज ऋषभ घर आवे, देखो माई। आ० टेर। रूप मनोहर जगदानन्दन, सब ही के मन भावे। दे० १। केई मुकुता फल थाल विशाला, केई मणि माणक ल्यावै। हय गय रथ पायक वर कन्या प्रभुजीकुं वेग वधावे। देखो० २। श्री श्रेयांस कुमर दानेश्वर, इक्षुरस वहिरावै। उत्तम दान अधिक अमृत फल साधु कीरत गुण गावै ॥ देखो० ३ ॥ इति ॥

कानड़ा तेताला

सुनिजर कीजै प्रभु दीन दयाला। नाभिराय नन्दन जग वन्दन मरुदेवीजी के लाला। सु० १। जनम पूरी अयोध्या नगरी वंश इक्षाकु उजाला, कुलमें परम प्रधान उद्योती गुण मकरन्द विशाला। सु०२। वृषभ लञ्छन धनुष पांच सै मोहन रूप निराला, लख चौरसी पूरव आयु, तारक विरुद सम्भाला। सु० ३। तुम सम कवन उदार जगतमें, जगनायक जगवाला, पूरण ब्रह्म परम परमेष्टी, खोलो मुगतका ताला। सु० ४। दीनबन्धु मैं याचक तेरो, साहिब कर प्रतिपाला, दास चुनीकुं सुख सम्पत्ति दीजै, जिनसे होय निहाला ॥ सु० ५ ॥ इति ॥

कालीङ्गड़ा कहरवा

भजन विन नाही गरज सरे। कोड़ उपाय करी कर हारो सुर नर मुनिसगरे। भ० १। सेठ सुदरशन अभया राणी छल

छिद्र वहोत करे, शील अभुषण तनमें पहरो सवहि विपद टलै। भ० २ ॥ लङ्काधिप रावण अतुलीवल वीना हाथ धरै, तूटि तांत तुरत निज नससु, सान्धी नृत्य करै। भ० ३। श्रेणिक वीर जिनेश्वरजीको हितसे भक्ति करे, तीर्थंकर पदवी तिन लीनी, शिव रमणीकु वरे। भ० ४। ऐसे जीव केतेही तारे कहिता नाही सरे, दास गुलाव कहे कर जोड़ी, प्रभुको भजे सो तरे ॥ भ० ५ ॥ इति ॥

पीलु लंगड़ी

तु मेरे मनमें तु मेरे दिलमें, ध्यान धरु पल पलमें। पास जिनेश्वर अन्तरजामी, सेवा करु दिन दिनमें। काहूको मन तरुणी सु रातो, काहूको चित धनमें; मेरो मन प्रभु तुमही सु राच्यो, ज्यु चातक चित घनमें। जोगीश्वर तेरी गति जाने, अलख निरञ्जन छिनमें। कनक कीर्त्ति सुखसागर तुही, साहिव तीन भुवनमें ॥ तु० ॥ इति ॥

कालीङ्गड़ा कहरवा

अरचुङ्गो आज ऋषभ चरणं। नवन प्रमार्जन पूजा करके, विमल सीस धर आभरणं। अ० १। फल दल फूल भरी वहु भेदे, कर भरी थाल कनक वरणं। अ० २। द्रव्य और भाव भजन जिनवरकी, करण कहे शिव सुख करणं ॥ अ० ३ ॥ इति ॥

कालीङ्गड़ा कहरवा

मिल जाज्योरे साहिव ध्याननमें। अजव अनुभव रंगे मीठो, रींझ रह्यो तेरे नैननमें। मि० १। एकही ध्यान प्यारो न्यारो, करत भरमके फैननमें। तत्व रूप सुधारसके है, मगन

भयो तेरे वैननमें । मि० २ । तुं आलम्बन सूरज उग्यो, मो मनडाके चेननमें, एक रूपे एक तानें हो ज्यों, पार घी जान्यो एननमें । मि० ३ । ज्ञान विमल जिन ध्यानें होवे, यही अक्षय सुख चैननमें ॥ मि० ४ ॥ इति ॥

कालीङ्गड़ा ताल चलत

रङ्ग रेवत देख सुमती फुली । भूल गई कुमति डोल देखके, चेतना समकित सरजूली । रंग० १ । जदु कुल कानन परम पञ्चानन, मदन विदारण अतुल बली । र० २ । चवन जनम दोय सोरोपूर में; चरण सहसावन कुञ्ज गली । छांड़ चले नव भवकी लाड़ली, राजुल रूप जिसी बिजली । र० ३ । अनन्त चतुष्टय प्रगट भई जब, कट गई कठिन करम पटली । र० ४ । पञ्चम टूङ्क पंचम गत पाया, साधु सिधाया अनन्त बली । र० ५ । श्याम सुन्दरके शरणे आयो कान सुनी कीरत उजली । र० ६ । ऊगनीश बीस माहसुद पूनम, मानु फुलेलकी शीशी ढूली । र० ७ । माया बगली दूर टले जब, शान्ति रतन शोभा सगली ॥ र० ८ ॥ इति ॥

कालींगड़ा ताल खेमटा

हांरे चित्तमें धरो प्यारे चित्तमें धरो, एती शीख हमारी प्यारे चित्तमें धरो । ए आंकणी० । थोड़ासा जीवन के काज अरे नर, काहेकुं छल प्रपञ्च करो । एती० १ । हांरे कूट कपट परद्रोह करत तुम, अरे नर परभव थी नाहि डरो । एती० २ । चिदानन्द जो ए नही मानो तो, जनम मरण भव दुखमें परो ॥ एती० ३ ॥ इति ॥

जोगीया तेताला

जिनजीसुं मोरी अरज लगी अब, मोहे दरशनकी चावजी। केशर कटोरी खूब भरी है जिनजीकी अङ्गिया रचाव। जी० १। फूल चंगेरी ऐसी भरी है, जिनजीका बङ्गला छवाव। जी० २। हरखचंदकी एही अरज है, लुल लुल सीस नमाव। जी० ३ ॥ इति ॥

अनया गत्या विभास रागेण गीयते

ऋषभ योगीश्वरं। भजत जगदीश्वरं जन्तुगण शंकरं गत विकारं। सकल भव भय हरं वृषभ लांछनधरं, प्रथम तीर्थंकरं विजयकारम्। ऋ० १। विमलगिरि पूर्व गिरि राज बासर करं। सुमरु देवोदराकरज हीरं। जगति गति वितत तर कुमति मत घन घना, घन घटा विघटनोत्कट समीरम्। ऋ० २। मदन मद कंद निःकंदना मंदतर धार तरवारि ममर गिरिधीरं। कुशल हरि चन्दन प्रकर नन्दन वनं, कुणय घन रेणु संहरण नीरम्। ऋ० ३। प्रणत विबुधेंद्र दनुजेंद्र मनुजेंद्र गण विहित वन्दन मिनं जैन चन्द्रं। त्रिजगदा नन्दनं नाभि नृप नन्दनं। पाप संताप चंदन मनिंद्रम्। ऋ० ४। विगत सकला पदं सम्पदा कारणं, कठिन ममता मही भेदसीरं। अखिल मकराकर, प्रकर वर रुचिर तर गरिम धर चरम सागर गभीरम्। ऋ० ५। भक्त गोवदन चंक्रेश्वरी विहित पद, कज युगी पासनं समिति शांतिम्। सु विमलेक्षाकु वर वंश भूषण मणिं तप्त तपनीय कमनीय कांतिम्। ऋ० ६। निहत कुमतोघका कारि मद

वदन रवि। मोदित क्रम विनत भव्य कोकम्। विशद भगणेन्द्र शिवचन्द्र पर चन्द्रिका मल यश सन्धवलित त्रिलोकम्॥ क्र० ७। कलसकाव्यं॥ लोकालोक विलोकनैक सुविधौ विज्ञान सल्लोचनो। मन्दा नन्द घन द्रु सौघं जलदो यं श्री युगादीश्वर। इत्थं वाचक पुण्यशील गणिनां भक्त्या मुदा-भिष्टुतो। भूयाद् भूरि विभूत एच भवतां भव्यात्मनां प्राणिनाम् ॥ क्र० ८॥ इति॥

रामकली ताल पंजाबी ठेका

जागो २ सिद्धारथके नन्दन, तुम मुख देखत हर्ष अपार। जा०। प्रात समय तेरो मुख देखन, आये सुर नर ठारे द्वार। जा० १। दिनकर किरण प्रगट भये भूधर, संकुचित कमलिनी मिटियो अंधार। तमचर सोर सुनावत चिहुं दिश, धेनु सहित वछवन ही बेहाल। जा० २। सुर वनिता संजयो आरती, ऊभी गावे मङ्गलाचार। संग सखी आंगनमें ठाढ़ी, उठो मेरे जीवन प्राण आधार। जा० ३। माता वचन सुनत ही जाग्यो, सुखदायक वर्द्धमान कुमार। हरषचंद प्रभु वदन विलोकत, तीन लोक भयो जय २ कार॥ जागो० ४॥ ॥ इति॥

गजल कहरवा

प्रभु अर्हन्त हमको बोलावो सही, शिव रमणी से शैल करावो सही। प्रभु० १। पंचेन्द्रियके वसमें होकर मान तो हुं मैं भूला, तेवीस तसकर लारे लागे कर दिया मुझे ढिला,

अब तो दुष्टों के फंद से बचावो सही। प्रभु० २। अष्ट मद अजगर सरिखे देत दुःख दिन रात को, कल मुझे पड़ती नहीं आधार है एक नाथको, मोहे गारूड़ी मंत्र पढ़ावो सही। प्रभु० ३। क्या कहूं मेरी हकोकत आप तो सर्वज्ञ हो, घट घट की बातें जानते त्रिय ज्ञान धारी विज्ञ हो, मेरी करणी को वरणी सकूं मैं नहीं। प्रभु० ४। सेवक की याही अर्ज है, प्रभु दर्ज तो कर लीजिये, मुझ दीन पर करके दया सद ज्ञान अब दे दीजिये, इन अरजी पर मरजी करो तो सही॥ प्रभु० ५॥ इति॥

कीर्तन ताल लङ्गड़ी

जय जय वीर हरे। टेर। श्री सिद्धारथ तनु भव, विभनो भव ए। त्रिशला नन्द निधान। जय० १। क्षत्रिय कुण्ड दिवाकर, सुप्रभाकर ए। आनन्द त्रिशला प्राण। जय० २। यमनियमादिक दर्शक, प्रदमारर्थक ए। सुकृत धारणा ध्यान। जय० ३। पुण्य प्रताप विराजित, अपराजित ए। दीप्त कृशानू समान। जय० ४। विदित कर्मगति, शाशक भय नाशक ए। गोचर शास्त्र विधान। जय० ५। दयासिन्धु भव खण्डन, महि मण्डन ए। पावापुर निर्वाण। जय० ६। कौशिक कल्प वहारक, उद्धारक ए। दत्त विमल विज्ञान। जय० ७। प्रवल मार मद भञ्जन, मति रञ्जन ए। अप्रमेय परिणाम॥ जय० ८॥ इति॥

सारंग कहरवा

देखो महिमा अनुभव ज्ञानकी। दे०। सहज ही प्रगट भई घट जाके रही न ममता आणकी। दे० १। पूरव कोड़ रहे घर भीतर निरतन व्रत पचखानकी, भरत नरेशर एक पलक में पाई गति निरवाणकी। दे० २। हत्या च्यार करी अति भारी न करी करुणा प्राणकी, दृढ़ प्रहार छिन भीतर पाई पदवी पुरुष प्रधानकी। दे० ३। जप तप दया दान व्रत पूजा अवर धारणा ध्यानकी, इणके जोग विना जो निरफल जल विन किरिया कृशान की। दे० ४। तेई साधु तरे भव सागर जो इन से पहिचानकी, हरषचन्द कहे मैं कहां लग वरणुं सीमा सुक्ख निधानकी॥ दे० ५॥ इति॥

गजल कव्वाली

शुद्ध दर्शन देकर शिवपुर का दिखलाया द्वार जिनेश्वर ने एक पलमें पाप विनाश किया, भवी जनका पार्श्व जिनेश्वर ने। (अंचली) जब काष्टमें जलता नागदिखा, समजाया कमठ योगीश्वर को। जलते को काष्ट से बाहर किया, सुनवाया मंत्र जिनेश्वर ने। शु० १। सुन मंत्र को वो धरणेंद्र हुआ, नवकार की महिमा खुब किया; दे दर्शन भवसे पार किया, भविजनको पार्श्व जिनेश्वर ने। शु० २। दुनिया दोरंगी छोड़ दीनी, प्रभु पाये शुभ संजम धनको; तप करके घाती जलाय दिया, लिया केवल ज्ञानजिनेश्वरने। शु० ३। प्रभु केवल पा उद्योत किया, जग जीवोंका उद्धार किया; अंधेर हरा तिरि सुरनर का, उपकारी पार्श्व जिनेश्वर ने। शु० ४। शुभ आत्म-

कमल में ध्यान धरी, शैलेशीकरण विषे विचरी; जा मुक्ति निज संपदको लिया, धरिलब्धि पार्श्व जिनेश्वर ने ॥ श्रु० ५ ॥ इति ॥

गजल कव्वाली

तुं चेत मुसाफिर चेत जरा, क्यों मानत मेरा मेरा है; (अंचली) इस जगमें नहीं कोई तेरा है, जो है सो सभी अनेरा है, स्वारथ की दुनिया भुल गया, क्यों मानत मेरा मेरा है । तु० १ । कुछ दिन का जहां बसेरा है, नहीं शाश्वत तेरा डेरा है; कर्मोका खूब यहां घेरा है, क्यों मानत मेरा मेरा है । तु० २ । ए काया नश्वर तेरी है, एक दिन वो राख की ढेरी है, जहां मोहका खूब अंधेरा है, क्यों मानत मेरा मेरा है, । तु० ३ । बूरी ए दुनियादारी है, दुःख जन्म मरण की क्यारी है, दुःखदायक भव का फेरा है, क्यों मानत मेरा मेरा है । तु० ४ । गति चार की नदीयां जारी है, भवसागर बड़ा ही भारी है; ममतावश यहां बसेरा है, क्यों मानत मेरा मेरा है, । तु० ५ । मन आत्म कमल में जोड़ लियो, लब्धि माया को छोड़ दियो; गुण मस्तक संजम शेरा है, क्यों मानत मेरा मेरा है, ॥ तु० ६ ॥ इति ॥

जगल कहरवा

मेरी अरजी उपर प्रभु ध्यान धरो, मेरे दिलके ये दर्द तमाम हरो । शेर—कभी आधी कभी व्याधी, कभी उपाधी आती है, सेवा जिनराज की साची, तीनों की जड़ उड़ाती

है; मेरी लाख चोरासीकी पीर हरो । मे० टेक । शेर—ज्ञान चाहुं ध्यान चाहुं, मस्त आतम भावमें; जैसे बने ऐसे करो, हो दिल निज स्वाभावमें; मेरा नूर मुझे बक्षीस करो । मे० २ । तुंही त्राता तुंही भ्राता, तुंही रक्षणकार है; तुंही ब्रह्मा तुंही विष्णु, तुंही तारण हार है । मेरी डुबत नैया को पार करो । मे० ३ । पूरब फिरा पश्चिम फिरा, दक्षिण फिरा उत्तर फिरा; देखा नहीं दरबार ऐसा, चमकता आतम हीरा । मेरी ज्योति से ज्योत मिलान करो । मे० ४ । तुं जुदा नहीं मैं जुदा नहीं और कोई जुदा नहीं; पर्दा उठे जो कर्म का, तो भरम सब भागे सही; प्रभु वही करमपट दूर करो । मे० ५ । आतम—कमल में है भरी, खूब खूबीयो जिनराजजी; लब्धी—विकासी नाथ मेरे, सारो सघरे काजजी । मेरे ज्ञान खजानें को खूब भरो ॥ मे० ६ ॥ इति ॥

आशावरी ताल कहरवा

अवधू सो योगी गुरु मेरा, इन पदका करोरे निवेड़ा । अ० ए आंकणी । तरुवर एक मूल विन छाया, विन फूलें फल लागा । शाखा पत्र नहीं कछु उनकुं, अमृत गगनें लागा । अ० १ । तरुवर एक पंक्षी दोउ बैठे, एक गुरु एक चेला । चेलेने जुग चुन चुन खाया, गुरु निरन्तर खेला । अ० २ । गगन मण्डल के अधबिच कूवा, वहां है अमीका वासा । सुगुरा होवे सो भर भर पीवे, नगुरा जावे प्यासा । अ० ३ । गगन मण्डलमें गउआं वियानी, धरती दूध जमाया । माखन था

सो विरला पाया, छाछे जगत भरमाया । अ० ४ । थड़ विनु पत्र पत्र विनु तुम्बा, विन जिह्वा गुण गाया । गावन वालेका रूप न रेखा, सुगुरु सोही बताया । अ० ५ । आतम अनुभव विन नहीं जानें, अन्तर ज्योति जगावें । घट अन्तर परखे सोही मुरति, आनन्दघन पद पावे ॥ अ० ६ ॥ इति ॥

देश धम्मार

आज झांकी बांकी बनी श्री वीर प्रभुजी को त्रिभुवन-पति सरताज राज । आज० १ । नये नये भूषण बसन पहिरी अरू, सजी सजी नये नये साज़ राज । आज० २ । रतन जड़ित सिंहासन सोहे, मोतीन की झरलायो राज । आज० ३ । नाचत गावत भाव बतावत भवी गावत धम्मार राज ॥ आज० ४ ॥ इति ॥

मिश्र कहरवा

हमारे वीर का गुण मैं गाउ । क्षत्रीकुण्ड स्वामी जन्म लियो है, पावापुरमें मोक्ष, नैनो के तारे प्रभुजी हमारे, तुम्हरी अगीया रचाउ । ह० १ । आदि अनादी पुरुष हो तुमही, तुमही विष्णु गोपाल, शिव ब्रह्मा तुम ही हम शर्दे, भाज गयो भ्रम जाल । ह० २ । जग वत्सल जगनायक प्रभुजी, तुम्हरे चरण आधार, चन्द्र, विमल, की याही अरज है प्रभुजी के शरणन जाउ ॥ ह० ३ ॥ इति ॥

देशी ताल लंगड़ी

श्रीचिन्तामण पास अरज अब धारिये । तुमहो दीन दयाल दयाकर तारिये, साहिब चतुर सुजान दान मोहिं दीजिए, भव

सागर थी पार आज प्रभु कीजिए। १। लख चौरासी जीव चतुर गत आवता, ज्ञान विना शिवधाम कहो किम पावता। पुण्य उदे भई आज मनुषमे अवतरे। श्रीजिन दरशन पाय काज मेरे सरे। २। धन धन तुम जिनराज परम पदके धनी। चरण कमलकी आश मुझे है तुम तनी। तुम हो तारण हार मुगत तुम नाममे। चेतनता सुध होय चले शिवधाम मैं ॥ ३ ॥ इति ॥

देशी की चाल

चिन्तामण पाशजी थांरो दरशन प्यारो जी। चि०। घाती अघाती खपायके प्रभु कीधा भवदुख दूर, आप सरूपी आप हो प्रभु सुख सागर भरपूर। चि० १। तुम आगे करुं विनति प्रभु बोलुं वीतक वात, कान देइने सांभलो प्रभु सेवकना अवदात। चि० २। सुरनर तिरीयो नारकी प्रभु भमियो ए गति चार, पाप कमाया आपका प्रभु किसकुं करूं पुकार। चि० ३। दुनिया धन्धे वावली प्रभु न करे धर्म लिगार, लाभ लहरकी लालची प्रभु क्रोधी कपट भण्डार। चि० ४। आया तुम दरवारमें प्रभु मन धर आस अपार, कहत अवीर जिनन्दजी अब दीजै समकित सार॥ चि० ५ ॥ इति ॥

चाल देशी ताल कहरवा

दरशन दुरगत टाली, जिनन्द पद। द०। मकसुदावादमें पनरै प्रासादे, वन्धा सूरत सभाली। जि०। नमीनाथ तारे काशिमवजारे, आकृत अनुपम माली। जि० १। जिनमन्दिर

जिन जिन पद देवे, जीवन जाने झकाली। जि०। सुमत अजित जिन महिमापुरमें, पारश सुवधि निहाली। जि० २। वालुचरमें सम्भव प्रतिमा, दोय वन्दी लटकाली। जि०। आदिश्वररी अनुमति धारी, दुरगती कुमति निकाली। जि० ३। महावीर वसुपुज्य कीरति कानन, प्रीत पारश प्रभु पाली। जि०। अजिमगञ्जमें सम्भव नमतां, नित नित होत देवाली। जि० ४। पार्श्व चिन्तामण पदम प्रभु जिन, सिद्ध गये देई ताली। जि०। अमिरस सुमति गोड़ी मीठा, दीठा कोटिक गाली। जि० ५। नेमनाथ विरमचारी साहेब, चरण वन्दन रुचि चाली। जि०। जिन पूजा विन समकित नाही, जप तप संजम ठाली। जि० ६। तीरथ प्रकाशी पर-ताप सङ्घमें, लछमीपति मति भाली। जि०। समता साली चेतन वाली, माल गूंथी टक शाली। जि० ७। उगनीसे सतरे सुदि मधु चौथे, पाप सन्तती पर जाली। जि०। शान्ति सुधारस अङ्ग पखाली; रतन त्रई उजवाली॥ जि०८॥

देशीको चाल

मनड़ो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निश दिश जी। चत्वारि अठशद दोय वन्दियाजी चहुं दिश जिन चौवीश जी। म० १। योजन योजन अन्तरेजी पावड़ साला आठ जी। आठ योजन ऊँचो देहरोजी दुख दोहग जावे नाठ जी। म० २। भरत भराया भला देहराजी सौ भायांरा थुम्भ जी। आप मूरत सेवा करै जी, जाने जोई जै ऊभजी।

म० ३ । गौतम स्वामी तिहां चढ्याजी वली भागीरथ गङ्ग जी । गोत्र तीर्थङ्कर वांधियाजी रावण नाटक रङ्गजी । म० ४ । देव न दीधी मुझने पांखड़ीजी आवुं केम हजूर जी । समय सुन्दर कहे वन्दनाजी ग्रह उगमते सूरजी ॥ म० ५ ॥ इति ॥

देशी की चाल ताल दादरा ।

सिद्धाचल गिर भेट्यारे, धन भाग हमारा । विमलाचल० । एह गिरवरणी महिमा मोटी कहेता न आवे पारा, रायण रूख समोसरया स्वामी, पूरव नवानुं वारारे । ध० १ । दूर देशथीं हूं यहाँ आयो, श्रवने सुनि गुण तोरा, पतित उधारण विरुद तुमारो, एह तीरथ जग सारारे । ध० २ । भाव भक्तिसे प्रभु गुण गावे अपना जनम सुधारा । यात्रा करि भविजन शुभ भावे, नरक तिर्यञ्च गति वारारे । ध० ३ । सम्वत् अठारे अशी मास आसाढ़े वद आठम सोमवारा, प्रभुके चरण प्रतापसिंह में, क्षमारतन प्रभु प्यारारे ॥ ध० ४ ॥ इति ॥

देशी की चाल लंगड़ी

श्री सङ्खेश्वर पास जिनेश्वर भेटिये, भवना सञ्चित पाप परा सहु मेटिये । १ । मन धर भाव अनन्त चरण युग सेवता अणहुंते इक कोड़ चतुर विध देवता । २ । ध्यान धरु प्रभु दूर थकी हूं ताहरो, जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो । ३ । भव भव तुहीज देव चरण नित सिर धरु, भव सागर थी तार

अरजआहिज करूं ।४। भूख तृपा तप शीत आतम ए नासहे। तप जप सञ्जम भार तनो नवि निरवहे । ५ । पिण जिनवरजी ना नाम तणी आसत घनी, एहीज छै आधार जगत गुरु इम भणी । ६ । तुम दरशन विन स्वामी भवोदधि हुं फिरो, सहिया दुख अनेक न कारज को सरयो । ७ । मिलिया हिव प्रभु पास सदा सुख दीजिये, चौगत संकट चूर जगत जश लीजिये । ८ । जादव पति श्रीकृष्ण तणी आरत हरी, सैन्या कीधी सचेत जरा दूरे करी । ९ । परचा पूरण पाश रयन जिम दीपतो, जय वन्तो जिनचन्द सयल रिपु जिपतो ॥ १० ॥ इति ॥

देशी की चाल

श्री सीमन्धर साहिबा वीनतड़ी अवधार लालरे, परम पुरुष परमेसरु आतम परम आधार लालरे । श्री० टेक । केवल ज्ञान दिवा करू भाङ्ग सादि अनन्त लालरे, भासक लोका लोकके ज्ञायक ज्ञेय अनन्त लालरे । श्री० १ । इन्द्र चन्द्र चक्री सरू, सुरनर रहे करजोड़ लालरे । श्री० २ । चरण कमल पिञ्जर वसे मुझ मन हंस नित मेव लालरे । चरण कमल मोहि आसरो भव भव देवाधि देव लालरे । श्री० ३ । अधम उधारण छो तुम्हे दूर हरो भव दुख लालरे । श्री० ४ । कहे जिन हरष मया करी देज्यो अविचल सुख लालरे ॥ श्री० ५ ॥ इति ॥

देशी की चाल खेमटा

भवी धरो जिन ध्यान, कीर्त्ति वाग वीच जायरे । ए आंकणी । कीर्त्ति वागना देवल मांही, मुर्त्ति दोय दील लायरे ।

भ० १ । वासु पूज्यने पार्श्व प्रभु तिहां, कसवटी मय छायरे । भ० २ । श्यामली मुर्त्ति अमी वहु झरती, देखत मन हुलसायरे । भ०३ । धर्म धुरन्धर धर्म तुमारो, धर्मी दिलडे धरायरे । भ० ४ । कर्म अनल शीतल तुमें कीनो, सम रस जल छटकायरे । भ० ५ । त्रिभुवन पूज्य वासु पूज्य मेरा, ज्ञानावर्ण मिटायरे । भ० ६ । पार्श्व श्यामला श्यामता फेड़ी, उज्जवल हंस वनायरे ॥ भ० ७ ॥ इति ॥

देशी कहरवा

पञ्चम जिन जस आपो दयालु धनी । प० टेक । देश शिरोमणि वङ्ग विराजै अजिमगंज अति उत्तम छाजै तिहां भविजननें आप निवाजै, दयालु धनी । प० १ । पञ्च गतिना दायक तुमही, सेवा सारे सुरपति सवही, तेथी पामे सुन्दर सिवही दयालु धनी । प० २ । शान्तिक पूजा संघ सुखकारी भक्ति वछल भगवन्त तिहांरि । सुर नर मुनिनें लागै प्यारी कारी पारी प्यारी दयालु धनी । प० ३ । ओस वंश नख नाहार सुधारी, राय वाहादुर पद विस्तारी शितावच्चंद सुख लहे अपारी, धारी तारी अपारी दयालु धनी । प० ४ । खरतर वीरुद भटारक भावे, श्री जिन कीर्त्ति नाम धरावै पाठक उदै गणी तुमें ध्यावे, भाव धरावे ध्यावे दयालु धनी ॥ प० ५ ॥

देशी की चाल लावनी

वनारसीमें वन्दन कीया सोले कल्याणक श्री जिनका मेलुपुरमें पाश भेटके मैल मिटाया निज मनका, भदियानेमें

नाथ सुपारश आप निधी आतम धनका, दुरगत कुमती डर गई सुनके वजे वीर घंटा रणका। व० टेक। श्रेयांस जिन सिघपुरीमें वाग वना वन नन्दन का, चन्दपुरीमें चन्द नरेश्वर जैसे शीतल चंदन का। व० १। राम घाटमें घाट वना है कुशल चन्द मुनी सन्तन का। अचिरज आया देवल देखी ताप बुझाया सहू तन का। व० २। उगनीस वीस माघ सुद पूणम मेहर निजर धरके उनका। व० ३। पूरण पाना कीया सव संघने, सन्त रतन माना गुणका॥ व० ४॥ इति॥

देशी की चाल

सुमति जिनेश्वर तारो भवाब्धि थी सुमति जिनेश्वर तारो। नयरी कोशल्या धन तुज धरणी, जन्म्यो सुमति जिन प्यारो। भवा० १। कुल दीपक मेघरथ राजानां, ऋण जगतने तारो। भवा० २। मङ्गला माता मङ्गल उदरी, प्रसवे सुमति जिन सारो। भावा० ३। शशी सम सोहे वदन प्रभुनुं, क्रौंच लञ्छन हितकारो। भवा० ४। सुमति दाता समकित आपो, कुमती दूर निवारो। भवा० ५। आप हजूरे लेजो अमने, छुटे आ जन मारो। भवा० ६। चाल मित्रना प्यारा प्रभुजी, मनसुख दास तुमारो॥ भवा० ७॥ इति॥

देशीकी चाल, ताल लंगड़ो

निठुर नेम पिया गए गिरनारीरे। वर सिवरमणि मोय विसारीरे। नि० टेर। अष्ट भवनकी प्रीत पुराणी, नवमें भव तुम मोंकुं निवारीरे। नि० १। मैं अवलाकुं दूर करींने,

पशुवन पर तुम करुणा विचारीरे। नि० २। सहसावन जाय सञ्जम लीनो, पञ्च महाव्रत भये तप धारीरे। नि० ३। राजुल पीउसे सञ्जम लीनो, पहली नेम निज प्रियाकुं तारीरे। नि० ४। नेम जिनेश्वर मुक्ति महिलमें, पद्मोदयकुं हर्ष हजारीरे ॥ नि० ५ ॥ इति ॥

देशी की चाल

गिरु आरे गुण तुम तणा श्रीवर्द्धमान जिन रायारे। सुणतां श्रवणे अमीझरे, म्हारी निरमल थाये कायारे। गि०१। तुम गुण गण गङ्गाजले हुं झीलीनें निरमल थांउरे अवर न धन्धो आदरुं निश दिन तोरा गुण गांउरे। गि०२। झील्या जे गङ्गाजले ते झीलर जल नवि पैसेरे मालती फूले मोहियो ते वाउल जइ नवि बैसेरे। गि०३। एम अमे तुम गुण गोठिसुं रङ्ग राच्याने वलि माच्यारे ते परसुर किम आदरुं जे पर नारी वसि राच्यारे। गि०४। तुं मति तुं गति आसरुं आलम्बन मुझ प्यारोरे वाचक जश कहे मांहरे तुं जीव जीवन आधारोरे ॥ गि०५ ॥ इति ॥

देशी की चाल (निर्वान का स्तवन)

वीर जिन सिद्ध थया सङ्घ सकल आधारोरे, हिव इन भरत मां कुण करस्ये उपगारोरे। वी० १। मारग देशक मोक्षनोरे केवल ज्ञान निधान। भाव दया सागर प्रभुरे पर उपगारी प्रधानोरे। वी० २। नाथ विहूणा सैन्य ज्युं रे वीर विहूणोरे सङ्घ। साधे कुण आधारथीरे परमानन्द अभङ्गोरे।

वी० ३। निर्यामक भवसमुद्र नीरे भवअटवी सत्थवाह ते परमेश्वर विन मिल्यारे किम वाधे उच्छाहोरे। वी० ४। मात विहुणा बाल ज्युं रे उरह परह अथड़ाय। वीर विहूणा भविजनारे आकुल व्याकुल थायरे। वी० ५। संशय छेदक वीरनोरे विरह ते केम खमाय। जे देखि चित्त उल्लसेरे ते विन किम रहवायरे। वी० ६। वीर थका पिण श्रुततनोरे हूंतो परम आधार। हमणा श्रुत आधार छेरे अथवा जिन मुद्रा सारोरे। वी० ७। इन काले सर्व जीवनेरे आगम थी आनन्द। ध्यावो सेवो भविजनारे जिन पड़िमा सुख कन्दोरे। वी० ८। गण धर आचार्य्य मुनीरे सहूने इन विधि सिद्धि। भव भव आगम संगथीरे देवचन्द्र पद लीधोरे॥ वी० ६॥ इति॥

देशी ताल डफ

सजन तेरे दिलकुं समझाना। सातवारकी करनी सुन कर तन मन हुलसाना। स० १। आदीत वारकुं अति आदर से सुगुरु पास जाना। जिन आगम अमृत रस पीके समता घर आना। स० २। सोमवार कह सुध किरिया कर समकित धन लाना। विकथा च्यार अलग परिहरके जिन पद गुण गाना। स० ३। मङ्गलवारकुं ममत तजो तुम धरो धरम ध्याना। जगत्जालमें मत कोई उलझो सुनो बात स्याना। स० ४। कह बुधवार विमल बुध करके छाड़ो अभिमाना। सुकरित दान दया दरशनसें करिले पहिचाना। स० ५।

गुरुवार कहे सुनरे प्राणी दूरलभ नरभव पाना। करना होय सो करो पियारे काल फिरे छाना। स० ६। शुकरवार कहे सीयल धरो तुम आतम हरपाना। पर नारी जननी सम जानी पामों शिवथाना। स० ७। थावरवारमे थिर चित्त करके पढ़ो अचल ज्ञाना। अवसर बीते फिर क्या होगा पीछैं पछताना। स० ८। सातवारकी करनी ऐसी करिया सब सजना। कहत अवीर धरम चित चोखे मिथ्या मति तजना॥ स० ६॥ इति॥

लावणी

जिन आपकुं जोया नही तन मनकुं खोजा नहीं मन मैलकुं धोया नही, अंघोल कियेसे क्या भया। १। लालच करे दिल दामका वासद करे वदनाम का हिरदे नहीं सुध रामका हरी हर कहा तो क्या भया। २। कुन्ती हुवा धन मालका धंधा करे जञ्जालका हिरदा हुवा चण्डालका काशी गया तो क्या भया। ३। गोगा करे संसारका जानै कुञ्जडा बाजारका आया तीर्थ करि द्वारिका, छापा लिया तो क्या भया। ४। जीवते पित्रकुं सुख नही उनको जक आशक नही चण्डालमें कुछ सक नही तर्पण किया तो क्या भया। ५। इस सांसमें कुछ वास है जिरा रामका प्रकाश है सोही भला जिनखास है ब्राह्मण भया तो क्या भया॥ ६॥ इति॥

तीह्लाना थियेटर ताल लंगड़ी

ज्ञान जोवे मन होवे सुरपती क्रोधे सन न न न न। रे रे कमष्ठनी दुर अन्याई अधम आ ज्ञानी सुर, मछराला

हुवा काला, वीकराला असराला, नहीं धर्मने पाया कीध अन्याया, आहीं अन न न न न। ज्ञान० १। शब्द सुणी सुरपतीना साचा राख्या धर्म प्रमाण। थरराया तीहां आया सिटी माया मन भाया करजोड़ क्षमाया शीश नमाया चेते चन न न न न। ज्ञान० २। स्तवना कीधी श्रीजिनवरनी पाम्यो समकितपूर। जयदेवा करुं सेवा पावु मेवा सुख लेवा तो पर वारी जगसुखकारी जिते जन जन जन॥ ज्ञान० ॥ इति ॥

लावणीकी चाल कहरवा

नित ध्यावो फल पावो सदा तुम शाश्वत गिरिवर हां। टेक। तीरथ है ओ सहु जग मण्डण, सिद्धगिरि शिवपाज। जिसके ध्यान भविजन पामें, अरिहन्त पद शिवराज। केइ ध्याया केइ पाया केइ पावे केइ पामसी शिवसुख ज्ञानसे भविजन अनन्त काल गतियां। नित० १। पूरव निनाणों आया इन गिरि, ऋषभजिनन्द जिनराय। नव वशि चैत्य सुहामणाजी सहु जिनविंव सुहाय। सङ्घ आवे प्रभु ध्यावे सुख पावे। गुण ज्ञानसे श्रीवर जैन प्रकाशक मोहन जय वतियां ॥ नित० २ ॥ इति ॥

लावणी लंगड़ी

श्रीवासुपूज्य महाराज, सकल सुख काज, सुधारो आज, सुधारो आज। जयवन्ता छो जगमांहि, तुमें महाराज। ए आंकुणी। देवोमां जेहवो इन्द्र, तारामां चंद न्यायीमां राम,

न्यायिमां राम। तेम सुरूपवन्तमां रूडो दीसे काम। रूप वन्ती मांहे नार, खरेखर, सार विराजै, रम्भा, विराजे रम्भा। तिम वादित्रोमां वागे रूडी भम्भा। साहासिमां रावण आप खपावी पाप, करयो निज काज, करयो निज काज। ज० १। ऐरावत हस्तिमांहि, वडो छे, तांहि बीजो कोई नाहि, बीजो कोई नाहि। तिम अभय विराजे बुद्धिवन्तनी मांहि। तीर्थो मां मोटूं तेह, शत्रुञ्जय, जेह, नथी कोई बीजुं, नथी कोई बीजुं। जिम पुण्य पापथी वली नही कोई त्रिजुं। नवकार समो नहि मन्त्र, नहि कोई तन्त्र, नहि कोई साज, नहि कोई साज। ज० २। सहकार तरुमां सार, बराबर यार, कहूं छुं साचुं, कहूं छुं साचुं। तिम वासुपूज्य जिनदेव जोई हूं राचुं। नहीं देव जगतमां थाय, विद्रुम सम, काय, बीजो कोई तेवो, बीजो कोई तेवो। श्रीवासुपूज्य महाराज जिनेश्वर जेवो। तसगुण गणसरनी पाल, रमे छें मराल, सुखके काज सुखके काज॥ जय० ३॥ इति॥

लावणी ताल कहरवा

सुण सुण सखियां हमारी, मुझे नेम पियाने विसारी। टेर। प्रभु तोरणकुं जब आए, तब शोर पशुने सुनाये, जब जाय चढ़े गिरनारी। मु० १। सखी राजुल जाय सुनावे तोंहे नेम प्रभु छटकावे, वेपरणी मुक्ति नारी। मु० २। एतो शोक कहांसे आई, मेरे प्यारे कुं भरमाई, मैं भई हुं निरा धारी। मु० ३। तुम्ह मात पिता सुनो भाई, मैं सञ्जम

लुंगी जाई, प्रभु पहली गई शिव प्यारी। मु० ४। जैन प्रकास अमृत फल पावे, गुण जिन दास ज्युं गावे, चरण कमल चितधारी॥ मु० ५॥ इति॥

लावणी

जपो मंत्र नवकार और मन्त्रको सुमरना ना चहिए। जो विद्या धन मिले और धन सञ्चय करना ना चहिए। मित्र मिले दिलदार औरसे दिलको फसाना ना चहिए। १। जो गङ्गाजल मिले कुयेका पानी पिना ना चहिए। मिले एक सन्तोप रतन औरोंको रखना ना चहिए। २। करे सत्यका सङ्ग असतकी संगत करना ना चहिए। निज मालिकको छोड़ औरको सेवन करना ना चहिए। ३। कहे भलेका वात किसीकी खोटी कहना ना चहिए। फिरे सब जगे एक पन घट पर फिरना ना चहिए। ४। एक टुकड़ेके लिये स्वान जो घर घर फिरना ना चहिए। कुल जतियों कहे वख्त ए मुफत गमाना ना चहिए॥ ५॥ इति॥

नवकार देशी की चाल

श्रीनवकार जपो मन रंगे श्रीजिन शासन साररी माई सर्व मंगल माहे पहलो मंगल जपतां जयजय काररी माई। श्री० १। पहिलो पद त्रिभुवन जन पूजित, प्रणमुं श्रीअरि-हन्तरी माई। अष्ट करम वरजित बीजै पद ध्यांउ मैं सिद्ध अनन्तरी माई। श्री० २। आचारिज तीजै पद समरूं गुण छत्तीस निधानरी माई। चौथे पद उवज्झाय जपीजे सूत्र

सिद्धान्त सुजानरी माई । श्री० ३ । सर्व साधु पञ्चम पद प्रणमुं पञ्च महाव्रत धाररी माई, नवपद अष्ट यहां छे सम्पद अड़सठ वरण सम्भाररी माई । श्री० ४ । सात इहा गुरू अक्षर एहमें एक अक्षर उचाररी माई, सात सागरना पातिक जावे पद पञ्चास वीचाररी माई । श्री० ५ । सम्पूर्ण पणसै ये सागरना पाप पलावे दूररी माई । इह भव क्षेम कुशल सुख-सम्प्रदा पर भव ऋद्धि भर पूररी माई । श्री० ६ । ईरति सो वन पुरसो सिद्धो शिव कुमर इन ध्यानरी माई, सरप फीटी हुइ फुलनी माला श्रीमतिने परधांनरी माई । श्री० ७ । यक्ष उपद्रव करतो निवारयो परच्यौ एह परसिद्धरी माई, चोर चण्ड पिंगलने हुंडक पामी सुरनर ऋद्धरी माई । श्री० ८ । पञ्च परमेष्टि मंत्र जग उत्तम चौवदे पुरव साररी माई । गुण बोले श्रीपदमराज गुरु महिमा जास अपाररी माई ॥ श्री० ९ ॥ इति ॥

चिंतामणि पार्श्व स्तवन देशी चाल

श्री सुगुरु चिंतामणि देव सदा । मुझ सकल मनोरथ पूर मुदा । कुल कमला दूर न होय कदा । जपतां प्रभु पारस नाम जदा । श्री० १ । जल अनल मतङ्गज भय जावे । अरि चोर निकट पिण नहीं आवे । सिंह सर्पन रोग न सन्तावे, धन २ प्रभु पारस जिन जे ध्यावे । श्री० २ । मच्छ कच्छ मगर जल मांहे भमें । वड़वानल नीर अथाह भमें । प्रवहण बैठा नर पार पमें । नित जे प्रभु पास जिनन्द नमें । श्री० ३ । विकराल दावानल

विश्व दहे। वृशति घूस घास आकास गहे। तुम नाम लियां उपशांत लहे। वर नीर सरोवर जेम वहें। श्री०४। झरतो मद लोल कपोल झरे। भ्रमता गुञ्जा रम रोस भरे। करि कष्ट भयंकर दूट टरे। श्री पारसनाथजी के समरे। श्री० ५। छाना छल छिद्र वनाय छले। जस वास सुणी मन मांहि जले। ते पिसुन पड़े नित पाय तले। जपतां प्रभु वैरी जाय विले। श्री० ६। धन देख निशाचर कोटि धखै। मुझ मन्दिर पेस कथे न मुखे। अति उच्छव तास आवास अखै। परमेश्वर पारस जास पखै। श्री० ७। असुराल विदारण हाथ हठे। गज लोल जिहां गज कुंभ वटे। मृगराज महाभय भीत मिटे। रसना जिन नायक जोह रटे। श्री० ८। फिरतो चिहुं फेर पुकार फणी। घट घेर घसे धर रोस घणी। भय तास न व्यापें तेह फणी। धरतां चित पारसनाथ धणी। श्री०६। कफ कुष्ट जलोदर रोग कसे। गड़ गुंवड़ देह अनेक ग्रसे। विन भेषज व्याधि सवे विनशे। वामा सुत पारस जेथ वसे। श्री० १०। धरणेंद्र धराधिप सुर ध्यायो। प्रभु पारस पारस कर पायो। छवि रुप अनोपम जग छायो। जननी धन वामा सुत जायो। श्री० ११। करतां जिन जाप सन्ताप कटे। घन दलिद्र दोहग शोक घटे। हठ छोड़ तिहां रिपु जोर हठे। पदमावती पारस जिहां प्रगटे। श्री०१२। मन्त्राक्षर गाथा गुढ़ मळ्यो। चिंतामणि जाणो हाथ चळ्यो। वलि मान महातम जेत वळ्यो। पारस जिण संस्तव जे न पळ्यो। श्री० १३। तीरथ पति पारसनाथ तिलो। भणतां गुणतां जस वास निवास भलो। मन मन्त्र सुकोमल होय

मिल्यो । अमची प्रभु पारस आश फल्यो । श्री० १४ । गुज-
राती लुंका गछ नायक लाज लीये । हित खेम करण गुरूनाम
दीये । दिन दिन गच्छ नायक सुख दिये । कीरति प्रभु पार-
सनाथ कीये । श्री० १५ । कलस । पारस भजले प्राणीया, पर
हर आलस प्रेम । पारस नामैं पत्थरी, भयो लोह को हेम ।
पारस पारस सारिखो, सुख सम्पति दातार । क्षुद्रो पद्रव टालणो
नाम सदा जयकार । ऊँकार विंदु संयुक्तं, नित्ये ध्यायन्ति
योगिनः । कामदं मोक्षदं चैव, ऊँकाराय नमोनमः ॥ श्री० १६ ॥

झाङ दादरा

नवपद का ध्यान धरकेरे । करमनको तुं खपा । अरिहंत
सिद्धजीसेरे हरदम तूं लव लगा । न० १ । गणधर उपाध्यायजी
साधु को कर सहाय । दरशन ज्ञान चारीत्र हैं तप जप तुं कर
सदा । न० २ । तेरे दिलमें कुछ और है, करता है कुछ
और । इसमें तेरे निश्चे नहीं जाहिर किया तो क्या । सच
दिल सदा हरदम, एहि है तेरे सङ्ग । इसीसे पार पावैगा,
इसमें नहीं दगा । न० ३ । सेवक की एहि विनती सुनिए प्रभु
मुदा । चरण की शरण दीजिए एहि तुझसैं मगा ॥ न० ४ इति ॥

चेतावर की चाल

जिया चतुर सुजान, नवपद के गुण गायरे । जो अपने
आतम सुख चहिये, एक चित ध्यान लगायरे । जि० १ ।
करम निकाचित दूर करणकुं, सुन्दर एह उपायरे । जि० २ ।
इनको पुष्ट आलम्बन करतां, अजय अमर पद पायरे । जि० ३ ।
ए जिन भये अगामी हो गये । नवपद सङ्ग पसायरे ॥ जि० ४ ॥

कहरवा मिश्र प्रभाती

नवपद ध्यान धरोरे भविका। न० टेक। मन वच काया करि एकान्ते, विकथा दूर हरोरे। न० १। मन्त्र जड़ी अरू तंत्र घनेरा, इन सबकुं विसरोरे, अरिहन्तादिक नवपद जपता; पुण्यभण्डार भरोरे। न० १। अष्ट सिद्ध नव निद्ध मङ्गल माला सम्पत्ति सहज वरोरे, लालचन्द याकी बलिहारी; शिव तरु बीज खरोरे॥ न० ३॥ इति॥

बेहाग ताल लंगड़ी

नवपद सुमरण सार और सब झूठीरे माया। अरिहन्त सिद्ध सूरी पाठक मुनि, दंशन आदिक चार। इनका ध्यान धरे जो भविजन ते पायो भवपार। न० १। एक एक पद जे नर ध्यायौ। ते नर लहियो सुख श्रीकार। न० २। मात पिता सुत मित्र सहोदर। कोई यन आवे तेरे काज। न० ३। साधू सकल मांहि जिनवर भापे। दे उपदेश उदार॥ न०४॥ इति॥

डफकी चाल

नेमकी जान बनी भारी, देखनकुं आए नरनारी, अनन्ता घोड़ा अरु हाथी, मिनपकी गिनती नही आती। उँट पर ध्वजा जो फहराती, धमक सुण धरती थरराती। (दोहा)— समुद्र विजैजी-को लाड़लो नेम कुमर जो नाम, राजुलने परणी जन आया, उग्रसेनके धांम, हरष भई नगरी सब सारी। नेम० १। कसूबल वागा अति भारी, कोर गोटनकी छिब न्यारी, माल मोतियनकी गलधारी, किलङ्गी सोहे सुखकारी

(दोहा) कानां कुण्डल झिगमिगे सीस सेहरो जान। कहां लग कहुं उपमा वांकी शोभा इन्द्र समान, बाज रहे वांजा एक तारी। नेम० २। छुट रहें हुक्का छरराई बांणमे ताव ढोलकाई झरोखे राजुल दे आई जान देखत अति सुख पाई। (दोहा) उग्रसेन अब देखके मनमें कियो विचार, पशु जीवाने करया एकठा वाड़ा भरया अपार, करी इन भोजनकी त्यारी। नेम० ३। निकट जब तोरणेके आए, पशु जीव देखत बिल लाए, नेमजी वचन जो फुरमाए, पशु तुम काहेकुं ल्याए। (दोहा) इनको भोजन होयसी जान वासते जोय, इतना वचन जो सुना नेमजी थरहरे कंपे सोय, फिरकर चले गये गिरनारी। नेम० ४। पीछेसे राजुल दे धाई हाथ जब पकड्यो हैं माई, कहां जावत हे मेरी जाई और वर हेरुं मुकताई। (दोहा) मेरे तो वर एक है होय गया नेम कुमार दूजो वरमें कदे नही परणुं कोटिक करो विचार, दीक्षा जब राजुल दे धारी। नेम० ५। सखियां सबही समझावे हिये राजुलके नही आवे मेरे मन नेम कुमर भावे जगत सब झूठो दरशावे। (दोहा) कंकण चुंड लो फोडके तोड्या नव सर हार, काजल टीकी पान सुपारी छोड्या सब शिनगार, सहेल्यां बिलखत है सारी। नेम० ६। तज्या है सोले शिनगारा आभूपण रतन जड़ित भारा, सरव सुख लागा है पारा, छोड़ वन चाली निरधारा। (दोहा) मात पिता परिवारकुं तज तन लागी ग्नार, वेगी दोड़ मिली जाय पीवसुं जाय चढे गिरनार, झूरती मेली महतारी। नेम० ७। नेम राजुल है जग

माई दीक्षा जिन ऐसी विधि पाई दया दिल पशुवनका आई त्याग कियो है छिन माई। (दोहा) नेम राजुल गिरनार पै धरियो निरमल ध्यान जैन दास या लावणी गाई, उपज्यो केवल ज्ञान मुगतिका हुवा जब अधिकारी ॥ नेम०८ ॥ इति ॥

भैरवी तेताला

नवपद की सेवा क्यों न करेरे। न० टेक। नवपद पुजा शिव सुख पावे, ध्यान धरयो दुख सब टलेरे। न०१। आंबिल कि किरीया तुम करके, विधि गुरु मुखसे चित्त लहेरे। न०२। नवपद महिमा उत्तम दाखी, श्रीपाल चरित्र में महिमा बड़ोरे। न०३। साढे च्यार वरस तप किरीया, उद्यापन मन रङ्ग रलीरे। न० ४। श्री अक्षयराज सूरी के कृपा से, अजय अमर पद वरेरे ॥ न० ५ ॥ इति ॥

पीलु तेताला

सदा करो चित ध्यान, नवपद महिमा को जान। कमठ मान भञ्जन प्रभु ततक्षणरे, सुनायो धरेन्द्र कान। न० १। सर्प्प माल ठव्यो श्रीमति कण्ठेरे, हुवो फुलनकी माल। न०२। परम मन्त्र कहे गुरु ज्ञानीरे, कौन करे परमाण। न० ३। तीन लोक सुमरे इन मंत्र कोरे,अजय अमर पद पान ॥ न०४ इति ॥

देशी यत्

सिध चक्र पद वन्दोरे भवियण हितकारा। सि० टेक। पहिला श्री अरिहन्त विराजत, सिद्ध गुणे सुविचार। आचारिज पद अतिशय धारी, ऊवझाया अणगारारे। भवियण। हि०।

सिध चक्र । १ । उज्वल दरशन है अति सुन्दर, ज्ञान भले विस्तारा, चारित्र तप किधा सुख पामें, ए नवपद निस्तारारे । भ० सि० २ । इन नवपद ला ध्यांन थी पाम्यो, श्री श्रीपालकुमारा । रोग शोक-संकट भय नाशे, समकित वीज उदारारे । भ० सि० ३ । कर्म निकाचित पूरव किधा, तूटे सब ततकाल । अध्यातमगुण प्रगटे चेतन, मुगतपुरी सुखकारारे । भ० सि० ४ । उगनीशैं नव अधिके सम्वत्, आसु पूनम बुधवारा । कहे जिन महेन्द्र सदा मेरे होज्यो; दिन दिन हर्ष अपारारे ॥ भ० सि० ५ ॥

देशीकी चाल

भवि भगति धरी नवपद नव निध दायक नित आराधिये । तन शुद्ध करी इन नर जनमें आतम कारज साधिये । १ । ए नवपद सम अवरन जगमें, आराधक चहुं गति नाही भमें । जो उपजे तोही नर सुरमें । २ । नवपद आराध्या श्रीपाले तनु रोग गयो तसु तत काले । फिर ऋद्धि रमणी लही सरवाले । ३ । अनुक्रमे नर सुर भव आठ करी आगल तिनरी भव भ्रमण टरी, भव नवमें तिन सिद्ध संपद वरी । ४ । नवमो इक जन पदही साजै, समरो कोई प्रेम धर सुख ताजे सेठ कातिक हुवो सुर राजै । ५ । सिद्ध पदनें श्रीगणधर ध्याया; पुण्डरिक प्रमुख वहु सुख पाया; सुर पद थी पाम्यो प्रदेशी राया । ६ । इन इम सुमरण सहु करम काट्या आनन्द विमल होय कष्ट मेट्या, वलि तेज प्रताप सङ्घमें प्रगट्या । ७ । सम्वत् अठारैसे नवासी, आसोज सुकल पुरणमासी, भयो नवपद ऊछव सुविलासी ॥ ८ ॥ इति ॥

कालेंगड़ा कहरवा

म्हेंतो नव पदका गुण गास्याजी, अवसर पाय चलो मेरे मनुवा । नव० । अरिहन्त सिद्ध आचारिज पाठक, साधु चरण चित लास्यांजी । म्हें० १ । दरशन ज्ञान चरण तप उत्तम याहिसे ध्यान लगास्यांजी । म्हे० २ । देव वन्दन पड़ि कमणो करस्यां, जिनजीके मन्दिर जास्यांजी । म्हे० ३ । क्रोध मान सब दूर करिनें; वारे भावना भास्यांजी । म्हे० ४ । बाल कहे शिव मारग साधो, मन वञ्छित फल पास्यांजी ॥ म्हे० ५ ॥ इति ॥

देशी की चाल

जय जय श्री जिनराज जग जन अन्तरजामी, तारण तरण जिहाज परमातम परिणामी । ज० १ । परम पुरुप परमेश परमानन्द प्रधान, परम प्रकाश विशेप निरमल ज्ञाननिधान । ज० २ । जगपति पाश जिनन्द प्रभु तुम हो उपगारी, सुनिये सेवक जान ऐसी अरज हमारी । ज० ३ । मोह महामद भूलो मैं वहुकाल गमायो, निज परभाव विवेक शुद्ध स्वभाव न पायो । ज० ४ । निरमल चेतन भाव करम कलङ्कित कीनो, ता कारण गुण छोड़ि पर औगुण चित दिनो । ज० ५ । निज अवगुण सुनि कान दिलमें रोस भराऊँ, अछता निज गुण ज्ञान सुनिवेकु ऊमाउ । ज० ६ । आश्रव पांच अशुद्ध दिलसे दूर न जावे कुमति कदाग्रह जोग समता शुद्ध न आवे । ज० ७ । अब कुछ पुण्य सञ्जोग प्रभु तुझ मुद्रा पेपी, शुद्ध अध्यातम लीन भाव अशुद्ध उवेषी ।

ज० ८। निरखि निरखि प्रभु बिम्ब मनमें आनन्द पाउँ, गाउँ तुझ गुणग्राम देव अवर नवि ध्यांउं। ज० ९। करुणा करि प्रभु मुझ आतम निरमल कीजै, ज्युं शुद्ध दशा प्रगटाय मोह विकलता छीजै। ज० १०। भव भव निज पद सेव प्रभु सेवक कु दीजै, श्री जिन भक्ति पसाय सुमति विलास वरिजै॥ ज० ११॥ इति॥

देशी की चाल

होरे लाला श्री गौड़ी प्रभु पाशजी में भेट्या धन दिन आजरे लाला मरु धर देश देशां सिरे जोधांणों जसवन्तरे लाला। श्री० १। होरे लाला गाम विठोडो दीपतो जिहा पाली सहरने पासरे लाला चण्दनमल लोढो वसे तिन सुपन लह्यो पुण्य जोगरे लाला। श्री० २। होरे लाला सुपन फल्यो कारज सरचो तिहा वरत्या जय जय काररे लाला होरे लाला भूमिथी परगट भया श्री वामा नन्दन पासरे लाला। श्री० ३। श्याम पनग मस्तक रह्यो वोतो गयो निज पायालरे लाला होरे लाला देश देशनां बहु मिल्या, जिहां सङ्घ चतुर विध थाटरे लाला। श्री० ४। होरे लाला अष्ट द्रव्य पूजा करि जिहां पहरी नव नव वेसरे लाला। आभूपण अंगे धरी तिहां लेई प्रभु निज हाथरे लाला। श्री० ५। मकसुदावाद पूरव दिशे जिहां अजीमगञ्ज पुरवासिर लाला। गुलाल चन्द्र नाहर तिहां शितावचन्द्र बुध वानरे लाला। श्री० ६। होरे लाला गज पर प्रभु थापन तिहां भेट करी बहु द्रव्यरे लाला। पुण्य कारज मोटी करी तिहां

पायो सुजश सवायरे लाला । श्री० ७ । होरे लाला संघ सकल आनन्द लह्यो पायो दरश श्रीकाररे लाल । भादो वदी तृतीया दिने अधरात सहु गुण गातरे लाला । श्री० ८ । होरे लाला यक्षराज अवधी परे तिहाँ आवी चिंवले जायरे लाला । देख सहु विस्मै रह्या यात्री गया निज थानरे लाला । श्री० ९ । होरे लाला निधिमही सम्वच्छरु तिहाँ वरस नन्दवन्नी जाणरे लाला । कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी तिहाँ वन्दे प्रभु पद साररे लाला । श्री० १० । होरे लाला लुंपक गच्छमें दीपता श्री अजय-राज सूरी महाराजरे लाला । तास चरण कजमें रही चन्द फते गुण गायरे लाला ॥ श्री० ११ ॥ इति ॥

वेलावल तेताला

क्या सोवे उठ जाग बाउरे । क्या० । ए आंकणी । अंजाले जल ज्युं आयु घटत है, देत पहोरीयां घरीय घाउरे । क्या० १ । इन्द्र चन्द्र नागिंद्र मुनिंद्र चले, कोण राजापति साह राउरे । भमत भमत भवजलधि पायकें, भगवंत भजन विन भाउ नाउरें । क्या० २ । कहां विलम्ब करे अब बाउरे, तरी भव जल निधि पार पाउरे । आनन्द घन चेतनमय मूरति, शुद्ध निरञ्जन देव घ्याउरे ॥ क्या० ३ ॥ इति ॥

आसावरी तेताला

अवधू क्या सोवे तन मठमें, जाग विलोकन घटमें । अवधू० । ए आंकणी । तन मठकी परतीत न कीजें, ढहि परे एक पलमें । हलचल मेटि खबर ले घटकी, चिह्न रमता

जलमें । अवधू० १ । मठमें पंच भूत का वासा, सासा धूर्त खवीसा । छिन छिन तोहि छलनकु चाहे, समझे न बौरा सीसा । अवधू० २ । शिर पर पंच वसे परमेश्वर, घटमें सूछम बारी । आप अभ्यास लखे कोई विरला, निरखे ध्रू की तारी । अवधू० ३ । आशा मारी आसन धर घटमें, अजपा जाप जपावे । आनन्द घन चेतनमय मूरति, नाथ निरञ्जन पावे ॥ अवधू० ४ ॥ इति ॥

सारङ्ग तेताला

अनुभव हम तो रावरी दासी । अनु० । आई कहांतें माया ममता जानु न कहां की वासी । अनु० १ रीझ परें वाके संग चेतन तुम क्यु रहत उदासी । वरज्यो न जाय एकांत कंतको, लोकमें होवत हांसी । अनु० २ । समजत नाही निठुर पति एती, पल एक जात छमासी । आनंदघन प्रभु घर की समता, अटकली और लबासी ॥ अनु० ३ ॥ इति ॥

आसावरी तेताला

आशा औरनकी क्या कीजे, ज्ञान सुधारस पीजे । आशा० ए आंकणी । भटके द्वार द्वार लोकनके, कूकूर आशा धारी । आतम अनुभव रसके रसीया, उतरे न कबहु खुमारी । आशा० १ । आशा दासीके जे जाये, ते जन जगके दासा । आशा दासी करे जे नायक, लायक अनुभव प्यासा । आशा० २ । मनसा प्याला प्रेम रसाला, ब्रह्म अग्नि परजाली । तन भाठी अवटाइ पीये कस, जागे अनुभव लाली । आशा० ३ । अगम

पीयाला पीओ मतवाला, चिह्नी अध्यात्म वासा। आनंदघन चेतन व्है खेले, देखे लोग तमासा ॥ आशा० ४ ॥ इति ॥

सारङ्ग तेताला

अब हम अमर भये न मरेंगे। अब०। या कारन मिथ्यात दी तज, क्युं कर देह धरेंगे। अ० १। राग दोष जग बंध करत है, इनको नाश करेंगे। मर्‍यो अनंत कालतें प्राणी, सो हम काल हरेंगे। अ० २। देह विनाशी हुं अविनाशी, अपनी गति पकरेंगे। नासी जासी हम थिर वासी, चोखे व्है निखरेंगे। अ० ३। मर्‍यो अनन्त वार विन समज्यो, अब सुख दुःख विसरेंगे। आनन्दघन निपट निकट अक्षर दो, नहीं समरे सो मरेंगे ॥ अ० ४ ॥ इति ॥

कान्हरा तेताला

करे जारे जारे जारे जा। करे०। सजि सणगार बनाये भूपन, गई तब सूनी सेजा। करे० १। विरह व्यथा कछु ऐसी व्यापती, मानु कोई मारती नेजा। अंतक अंत कहांलुं लेगा प्यारे, चाहे जीव तुं ले जा। करे० २। कोकिल काम चन्द्र चूतादिक चेतन मत है जेजा। नवल नागर आनन्द-घर प्यारे, आइ अमित सुख दे जा ॥ करे० ३ ॥ इति ॥

अलइआ बेलावल लंगड़ी

ऐसे जिनचरने चित्त लगाउं रे मना। ऐसे अरिहंत के गुन गाउं रे मना। ऐसे जिन०। ए आंकणी। उदर भरनके कारणे रे, गौआ वनमें जाय। चारा चरे चिहुं दिस फिरे, वांकी

सुरती वछरूआ मांहे रे। ऐसे जिन० १। मात पांच सहेलियां रे, हिल मिल पाणी जाय। ताली दिये खडखड हँसे रे, वाकी सुरति गगरूआ मांहे रे। ऐसे जिन० २। नटुआ नाचे चोकमें रे, लोक करे लख सोर। वांस ग्रही वरते चढे, वाको चित्त न चले कहुं ठोर रे। ऐसे जिन०। जूआड़ी मनमें जूआर, कामी के मन काम। आनन्दघन प्रभु युं कहे, तुमे ल्यो भगवंत को नाम रे॥ ऐसे जिन० ४॥ इति॥

कल्याण लंगड़ी

या पुद्गलका क्या विसवासा, है सुपने का वासा रे। या०। ए आंकणी। चमतकार विजली दे जैसा, पानी विच पतासा। या देही का गर्व न करना, जंगल होयगा वासा। या० १। झूठे तन धन झूठे जोवन, झूठे है घर वासा। आनन्दघन कहे सवही झूठे, साचा शिवपुर वासा॥

वेलावल झुमर।

आज सखी मेरे वालमा, निज मंदिर आये। अति आनन्द हिये धरी, हली कंठ लगाये। आ० १। सहज स्वभाव जलें करी, रुची धर नवराये। थाल भरी गुण सुखडी निज हाथ जिमाये। आ० २। सुरभि अनुभव रस भरी, वीडा खवराये। चिदानन्द मिल दम्पती, मनोवंछित पाये॥ आ०॥ इति॥

चलन लंगड़ी

प्रभु भेंट्या महावीर, आज आनन्द वधाईयां । टेक । श्री त्रिसला रानी के नन्दन, वर्द्धमान सुख दाईयां । प्र० १ । अवसर पाय संजम व्रत लीनो, गिरि सम धीरज धराईयां । प्र० २ । घाती अघाती अष्ट कर्म्म को, क्षय कर केवल पाईयां । प्र० ३ । पावापुर निर्वाण पायके, आवागमन मिटाईयां । प्र० ४ । कातिक कृष्ण अमावस के दिन, फरस चरण सुख पाईयां । प्र० ५ । श्री जयरंग चरण प्रभु भेंट्या, मन वांच्छित फल पाईयां ॥ प्र० ६ ॥ इति ॥

सोरठ कहरवा

प्रभुजी वीर तणो उपदेशक दिलमें धारणा रे । भविजन जन्म मरण टल जाय फेर नहीं आवना रे । टेक । कका कल्प सुत्र सुन सारो, खखा खेवा पार लगाओ, गगा ज्ञान सलील विचारो, घघा घट बिच प्रभुजी का ध्यान फेर नहीं आवना रे। भवि०१ । चचा चौदह सुपना देखी, छछा छिन छिन कालको लेखी, जजा जन्म प्रभुजीका देखी, झझा झूठ कभी मत बोल फेर नहीं आवनारे । भवि० २ । टटा टेक प्रभुजी से भारी, ठठा ठौर मिले सुखकारी, डडा-डर राखूं अति भारी, ढढा ढील कभी नहीं होय फेर नहीं आवनारे । भवि० ३ । तता तन मन धन थिर नाहीं, थथा थिर जगमें कोई नाहीं, ददा दान देऊ जग माही, धधा धर्म्म से करुं प्रतिबन्ध फेर नहीं आवनारे । भवि० ४ । पपा पुस्तकजी घर लावो, फफा फिर फिर रात्रि

जगावो, ववा बाधों पुण्य मिलावो, भभा भव सागर तिरजाव फेर नहीं आवनारे । भवि० ५ । यया यश से शोभा भारी, ररा राखो धर्म्म विचारी, लला लाभ लेव सुखकारी, ववा विघ्नसहु टल जाय फेर नहीं आवनारे । भवि० ६ । ससा सम्वत् तेरसे जानो, दुतिया सावन मास वखानो, तेरस वार बृहस्पत जानो, दास छगनमल गुणगाय फेर नहीं आवनारे ॥ भवि० ७ इति ॥

गजल कहरवा

वीर भगवन् हैं हुये पैदा जमाने के लिये । भव्य जीवों को चौरासी से छुड़ाने के लिये । वीर० १ । मेरु के ऊपर चौसठ इन्द्र मिल कर आगये । वीर भगवन् का जन्म उत्सव मनाने के लिये । वीर० २ । अष्ट जाति के कलश गंगा जलसे हैं भरे । माता त्रिसला के दुलारे को नहलाने के लिये । वीर० ३ । इन्द्रनें शंका करी थी छोटा बालक जानकर । मेरु को कम्पा दिया शंका मिटाने के लिये । वीर० ४ । एक वर्षी दान देकर तज दिया घरवार सब । आत्मा को कर्म बंधन से छुड़ाने के लिये । वीर० ५ । एक ग्वाले ने प्रभु के खीर पावों पर धरी । जो वहां आया था गौयें चराने के लिये । वीर० ६ । हैं अनन्ता भव्य जीवोंको पहुंचाया मोक्षमें । तेरा सुन्दर है तड़पता मुक्ति पाने के लिये ॥ वीर० ७ इति ॥

देशी की चाल

सब परब मांहि परब अलबेला, भादोमें भवि मिल करे पजुसन मेला । १ । कोई पोसा पड़िकमणांदिक करता रागी,

कोई धरता निरमल ध्यान परम रस पागी, कोई पूजा कर कर रचता नव नव आगी, कोई सुनता सूत्र सिद्धान्त आलकस त्यागी, कोई नेम व्रत ले करतां बेला तेला। भा० २। कोई पूरण अठाई करके भवजल तिरतां, कोई जिनवाणी धारण कर पार उतरता, कोई परभावन कर स्वामी वच्छल करता, कोई तपसी तप कर ध्यान विमल गुण धरता; अबतो मेरे एक जिणगुण गावनसुं हेला। भा० ३। नहीं तप सञ्जम की भार सहन की काया, नहीं पलता व्रत पच्चखान सुनो जिनराया, एक जगमें जिनका नाम अमोलक पाया; प्रभु पार लङ्घन का दाव हाथ अब आया, अब सेवक करले निज घट ज्ञान उजेला॥ भ० ४॥ इति॥

जोनपुरी तेताला

मारग साचा कोउ न बतावे। जासुं जाय पूछीयें ते तो, अपनी अपनी गावे। मारग०। ए आंकणी। मतवारा मतवाद वाद धर, थापत निज मत नीका। स्याद्वाद अनु-भव विन ताका, कथन लगत मोहे फीका। मा० १। मत वेदांत ब्रह्म पद ध्यावत, निश्चय पख उर धारी। मीमांसक तो कर्म बदे ते, उदय भाव अनुसारी। मा० २। कहत बौद्ध ते बुद्धदेव मम, क्षणिक रूप दरसावे। नैयायिक नय वाद ग्रही ते, करता कोउ ठेरावे। मा० ३। चारवाक निज मनःकल्पना, शून्य वाद कोउ ठाणे। तिनमें भये अनेक भेद ते, अपनी अपनी ताणे। मा० ४। नय सरवंग साधना

जामें, ते सरवंग कहावे। चिदानन्द ऐसा जिन मारग, खोजी होय सो पावे ॥ मा० ५ ॥ इति ॥

मालकोष लंगड़ी

पूरव पुण्य उदय करी चेतन, नीका नरभव पाया रे। पू० । ए आंकणी। दीनानाथ दयाल दयानिधि, दुर्लभ अधिक बताया रे। दश दृष्टांते दोहिला नरभव, उत्तराध्ययने गाया रे। पू० १। अवसर पाय विषय रस राचत, ते तो मूढ़ कहाया रे। काग उडावण काज विप्र जिम, डार मणि पछताया रे। पू० २। नदी घोल पाखान न्याय कर, अर्द्ध-वाट तो आया रे। अर्द्ध सुगम आगल रही तिनकूं, जिन कछु मोह घटायारे। पू० ३। चेतन चार गतिमें निश्चे, मोक्ष द्वार ए काया रे। करत कामना सुर पण याकी, जिन कूं अनर्गल माया रे। पू० ४। रोहणगिरि जिन रतन खाण तिम, गुण सहु यामें समाया रे। महिमा मुखथी वर-णत जाकी, सुरपति मन शंकाया रे। पू० ५। कल्पवृक्ष सम संयम केरी, अति शीतल जिहां छाया रे। चरण करण गुण धरण महा मुनि; मधुकर मन लोभाया रे। पू० ६। या तन विण तिहुं काल कहो किन साचा सुख निपजाया रे। अवसर पाय न चूक चिदानन्द सद्गुरु यूं दरसाया रे ॥ पू० ७ ॥ इति ॥

देशी की चाल

श्रीइकमन वंदु स्वामी वीर जिनन्द, जिन समरया होय परमानन्द। भोर भये उठ लीजे नाम, ते नर पामें उत्तम ठांम।

१ । कुण्डलपुर सब सीजै काज, राजा सिद्धारथ पालै राज। तसु घर राणी त्रिसला भली, पुण्य प्रभावे जोड़ी मिली। २। सुख शिय्याए पोढ़ी सही, चउदे सुपना उत्तम लही। उठ राणी गई पिया पास, सुण राजा मोरी अरदास। ३। चउदे सुपना उत्तम लह्या, जिण देख्या तिन सुन्दर कह्या। राजा चेरी लिया बुलाय, बहु पंडितने लावो जाय। ४। ज्योतिष कथा पंडित इम कहे, दशमा देव लोक सु चवै। तिर्थङ्कर त्रिभुवन जिनराज, जीव दया प्रतिपालन काज। ५। जननी दुक्ख न देवे काय, दयावन्त रह्या देह सङ्काय। राणी चित्त अंदेसा भया, गर्भ हमारा किन हर लिया। ६। अवधि धरी देखे जिनदेव, इन पाछै हम सञ्जम लेय। अङ्ग सङ्कोचित बहु दुख भया, पग फुरकावत आनन्द थया। ७। चैत सुदी तेरस तिथि जांण, जनम्या स्वामी श्रीवर्द्धमान। फिरे ढंढोरो सुरपति तणो, करे महोच्छव आनन्द घणो। ८। चन्द्र सुरेन्द्र विद्याधर मिल्या, चौपठ सुरपति मिल चल्या। छपन कुमरी गावे गीत, करै महोच्छव आनन्द चीत। ९। इक गावै इक वीझै पौन, इक गढ़ चाले उभी पोल। एक दोखावै आरसी दरस, इक भर लाई सोवन कलस। १०। मेरु शिखर पर नहावे इन्द्र, ढोले चवर ढुलावे वृन्द। ऊँचा वेल विकुर्वे च्यार, यो बालक किम सहसी धार। ११। अवधि धरी देखे जिनराय, मेरु अंगुठे चांप्यो जाय। मेरु चूलिका अति थरहरी, सब सुरपति मिली वीनती करी। १२। क्षमो अपराध हमारो वीर, अनन्त वली तुम साहस धीर। देव

दुन्दभी चिहुं दिशमें भई, इन्द्र इन्द्राणी देव लोके गई। १३। भर जोवन प्रभु लीला करी, राज कुमर इक सुन्दर वरी। मात पिता थित पूरी थई, अब हम लेस्यां सञ्जम सही। १४। पञ्च महाव्रत दुःधर घणा, करे महोच्छव चारित्र तणा। जै जै इन्द्र पुकारे धाय, खिण वंदे खिण लागै पाय। १५। देव दुष्य वस्त्र इन्द्र देकर चल्या, फिर कर पीछा प्रोहित मिल्या। आधा वस्त्र दिया उतार, आधा उड़के लागा झाड़। १६। तीस वरस घर भीतर रहे, तीस वरस दृढ़ केवल रहे। बारे वरस छद्मस्त फिरंत, वरस बहुतर आउखावन्त। १७। चवद सहस मुनीश्वर साथ, इग्यारे गणधर गोतम आद। बतीस सहस्र आर्यका मिली, चन्दनबाला प्रमुख भली। १८। उग्र विहार करे तिन वार, छट्ठ महीने ले अहार। कांन परीसा अधिक सह्या, मद त्यजके घर भीतर रह्या। १९। जन्म मरणका अण्या अन्त, केवल पाम्या श्रीअरिहन्त। करे महोच्छव केवल तणां, आप तरया और तरया घणा। २०। भव जल तारण साहस धीर, सिंह सियाल सुनिये एक तीर। दानां माहै वखांण्यो अभे, फिर कर खोड़ न लागै कदे। २१। सिंह लञ्छन अतिशय गुण जांण, योजन वाणी करे वखान। कनक सरीखी दीपै काय मुक्ति पहुता श्रीजिनराय। २२। कार्त्तिक वदि अमावस जांण, पावापुर पोहता निर्वाण। प्रह उठीने ध्यावो सदा, रोग सोग नहीं आवे कदा। २३। चारित्र पालो निर्मल करी, जिन गुण गावो हियड़े धरी। पंचपञ्चा ध्यावे मन माहि, लोह

जड़ित वेड़ी झड़जाही । २४ । जो नरनारी ध्यावे इक चित ऋद्ध सिद्ध पावे नव निध । नित्य तवन कह्या मन भया अनंद मुगती द्यो मुझ वीर जिनन्द । २५ । पूरो इच्छा मनकी आश, सेवक पामें शिवपुर वास (कलस) देवादि देव दयाल स्वामी मुक्तिगामी दुष्टकर्म निवारणो, सिद्धारथ नन्दन जगत वन्दन करो कृपा प्रभु हम तणो, कर जोड़ी श्रीगुणसूर विनवै पूरो मन वञ्छित घणी ॥ २७ ॥ इति ॥

देशो की च्याल

ऋषभ जिनेश्वर त्रिभुवन दिनकर वीनतड़ी अपधारोरे । जगना तारु, मुझ तारोरे कृपानिध स्वांमी । जग जशवास प्रगट छै ताहरो अविचल सुख दातारोरे । ज० १ । निजगुण भोक्ता पर गुण लोप्ता आतम सकति जमायोरे । ज० २ । इत्यादिक गुण श्रवणे निसुनी हुं तुम शरणे आयोरे । ज० । तुझ रिझावन हेते ततखिन नाटिक खेल मचायोरे । ज० ३ । काल अनन्त रह्यो ऐकेंद्री तरु साधारण पांमीरे । ज० । वरस संख्याता वलि-विगलेंद्री भेष धरया दुखधामीरे । ज० ४ । सुरनर तिरिवली नरक तणी गति पञ्चेद्रि पण्यो धारयोरे । चौविसे डण्डकमें हुं भमतो अव तो हुं पिण हारयोरे । ज० ५ । भव नाटिक नित प्रतिकर नव नव हुं तुम आगल नाच्योरे । ज० । समरथ साहिव सुर तरु सरिखो निरखि तुझने जाच्योरे । ज० ६ । जो मुझ नाटिक देखी रीझ्या तोमन वञ्छित दीजेरे । ज० । जो नवि रीझ्या तो मुझ भाखो वलि नाटिक नवि कीजैरे ।

ज० ७। लालच धरडुं सेवा सारुं तूं दूखड़ा नवि कांपेरे। ज०। दाता सेती सूम भलोरे पहिलो उत्तर आपेरे। ज० ८। तुम सरिखा साहिव पिण माहरे जो नवि कारज सारोरे। ज०। तो मुझ करम तणी गति अवली दोष न कोई तुमारोरे। ज० ६। दीन दयाल दया कर दीजै सुध समकित सहि नाणीरे। ज०। निगुण सेवक ना वञ्छित पूरो तेहिज गुण मणि खाणीरे। ज० १०। वरस अठार गुणतालीसे जेठ शुक्ल सोमवारोरे। ज०। लालचन्द प्रतिपदं जिन भेट्या विकानेर मझारोरे ॥ ज० ११ ॥ इति ॥

भैरवी ताल यत्

तुंती मेरी आदि जिनेश्वर बोल। दाना भी खाती तुंति पानी भी पीती। पिञ्जरेमें करति किलोल। तु० १। भव वनसे एक तुंति जो आई। कौन करे वाको मोल। तु० २। अलख डाल पर तुंति जो वैठी; लागी पञ्चरंगी डोर। तु० ३। हरखचन्द प्रभु एहि कहतु हैं, हिरदेके पटखोल ॥ तु० ४ ॥ इति ॥

जाजवंती झपताला

सांवरी सूरति मेरे मनमें वसी है। माई। अति ही छवि लो प्यारी। सुख की कारण हारी ताहि देखे भ्रम भारी; जात नसी हे। मा० १। प्रेमकी लगन न्यारी; विसरें नहीं विसारी; जानें सोई रीत जारी; न जानें कैसी है। मा० २। जग उजल अवतारी। पूजत खलक सारी। नवल छवी पै वारी। मोहिये फंसी है ॥ मा० ३ ॥ इति ॥

विहाग तेताला

क्यो नही होत उदास; मनरे। क्यो०। जैसेई रयण होतरे सपना, तैसे ही भोग विलास। मन० १। किंचित इन्द्री सुखके कारण, सेवत गरभावास, भटकत फिरत सदा दुख सागर, तौ नही होत उदास। मन० २। बहुत पसार कवउ कीया हेरे, पूजु तेरी सवास। काल सदा तेरे संग डोलत; छिनमें करत गिरास। मन० ३। काम क्रोध वसतें दुख पायो, भूल गयो सुख रास। प्रेमचंद अपने सुख चाहे तो छाड़ जगत की आस॥ मन० ४॥ इति॥

देशी चाल

पहले सुमरू सरस्वती माय रिसभ देव ध्याउं चित लाय जिनवरजी भाई जिनवर जी। टेर। अजित नाथ अरिहन्त भगवान, जिन सेवामे होवे कल्याण। जि० भा० १। संभव नाथ तीजा अरिहन्त, वञ्छित पूरे श्रीभगवन्त। अभिनन्दन चौथे अवतारी, निस दिन दीजो सेवा तुमारी। जि० भा० २। सुमत नाथ सुमती दातार, क्रौंच लञ्छन धारण हार। पदम प्रभुजी छठादेव, चरण कमल प्रभु सारे सेव। जि० भा० ३। सुपारस नाथ है सप्तम स्वामी साथिया लंछन अन्तर जामी। चन्द्र प्रभु अष्टम जिन राया, लंछन चन्द्र वरण प्रभु काया। जि० भा० ४। सुविधी नाथ सुध वेगी लीजो, अशुभ करम सब दूर हरीजो। दसमा तीर्थंकर सीतल नाथ, श्रीवच्छ लंछन चरणा साथ। जि० भा० ५। श्रेयांस नाथ हैं कंचन वरणा,

गेड़ा लञ्छन प्रभुजी चरणा। वासपूजकुं निस दिन ध्याउं, मन वंछित फल निश्चे पाउं। जि० भा० ६। विमलनाथ हैं श्यामा नन्दा, प्रभु जैसे हैं पूनम चंदा। अनन्तनाथ जिन राज कहावे, सिचानु पंखी चरण सुहावे। जि० भा० ७। धरमनाथ पूजुं हरप धरि वज्र लंछन हैं रत्नपुरी। शांतीनाथ सदा सुखदाई, हरपचन्द के रहियो सहाई। जि० भा० ८। कुंथु नाथका रखिये ध्यान, जिनसे ऊपजे उत्तम ज्ञान। अर नाथ हैं बहु सुभ ज्ञानी, नन्दावरत की है जो निसानी। जि०भा० ९। मल्लीनाथ काटो सब पाप, लंछन कलसा धारे आप। मुनि-सुव्रतजी बहु सुखकारी, लंछन कछुआ है जलचारी। जि० भा० १०। नमीनाथ ध्याउ चित लाई, दुख सङ्कट सब दूर पलाई। नेमनाथकुं नित उठ पूजो, एसो देव नहि कोई दुजो। जि० भा० ११। पारस प्रभु मेरे मन भावे, ध्यावे ते निश्चे फल पावे। वीर प्रभु जी बहु ऊपगारी पूरो वंछित आस हमारी। जि० भा० १२। गौतम स्वामी लवधि निधान, शिवरमनीका दीजे दान॥ जि० भा० १३॥ इति॥

ठुमरी

समझ जिन करो काहुसे ना प्रीत। मिलन भली विछु-रन बुरी, जलो बलोये रीत। स० टेर। उलझत सुलझत धजा पवन संग, यहि कर्मनुकी रीत। स० १। रेठघड़ी ज्यु अवध तुमारी, उमर जाय सब वीत। स० २। जो चेतन आतम सुख चाहे, छाड़ो सब विपरीत। स० ३। अमी चन्द गन्धर्व साहब भज्ञ, बसकर मनकुं जीत॥ स०४॥ इति

प्रभाति दादरा

ऐसे प्रभु नेमनाथ मेरे मन बसीया। त्रिगड़ेमें विराजमान, दुन्दुभी सुनत कान, अपसरा मिल करत गान; तान मान रसीया। ऐं० १। सिंघासन विराज श्याम, जीत लिए रूप काम, दे्ष्यादिल हर्ष धाम, श्याम नाम जसीया। ऐं०२। तीन छत्र चमर सार, पञ्च वर्ण पुष्प धार, लह लहे असोक अरु, भाव मङ्गल हसीया। ऐं०३। दिव्य धुनि मिली चंग द्वादशा वखाने अङ्ग, अष्ट प्रातिहार्य संघ, कुशल चित बसीया॥ ऐं० ४ ॥ इति ॥

गजल कहरवा

हैं मुनासिब अपने घर वेलाग होकर आईये। लाग तो रखना नही लाजीम है मन समझाइये। हैं० १। लागमें देखा तो क्या क्या सूरतें आई नजर, तारमें लिपटी हुई दबसे इन्हें सुलझाइये, लाग किसके हाथ है और डोर किससे है लगी, घर व घरका नाच इसको देख गैरत लाइये। हैं०२। दास चुन्नीने जो देखा ज्ञानके चस्मे के वीच, आप तो वेलाग रख लगा अलग सुख पाइये॥ हैं० ३॥ इति॥

केदारा तेवड़ा

तुमहो तरण तारण हार, श्रीबर्धमान जिनन्द स्वामी शिव सुखके दातार। तु० १। अगम अनन्त संसार सागर त्रिविधि रङ्ग अपार, अतुली बल भगवंत तुम बिन, कौंन उतारे पार। तु० २। अर्जुन मालीसम अपराधी, दीये हैं तुम तार

श्रैणिक नृपको आप जैसे, कीये करि उपगार। तु० ३। मेघ कुमार रोहिणीयासे तारे, उधारे विषधार। तु० ४। ऐसे श्री जिनराजजी को, मूढ देत विसार, हरषचंद कहें प्रभु मेरो आवागमण निवार॥ तु० ५॥ इति॥

भैरवो का दोहा

प्रभुको नाम अमोल है, जामे लगत न मोल। नफा वहोत टोटा नहि, भर भरके मन तोल। १। ए जीव भूला फीरत हैं, ममताके किल्लोल। अश्वसेन के लाड़ले, श्रीपारस मुख बोल॥

कल्याण का दोहा

सुख उपना दुख गल गए, निःकलंक भए निरवाण। घर घरमें आनन्द भए, तव प्रगटी राग कल्याण। १। राग को नाम कल्याण है, मेरे प्रभुजी को नाम कल्याण। सकल सभाकुं कल्याण है, तब होत कल्याण कल्याण। २। जीवड़ा जिनवर पूजिये, तासें संपति होय। राजा नमे प्रजा नमें, बाल न वांको होय॥ ३॥ इति॥

ईमन का दोहा

जग वछल जग सुभ करण, मुनी मन मोहन तार। अट पट पूरव सार पद, नमो मंत्र नवकार। १। इन भव एही सार है, पर भव एही सार। सार पदारथ जगतमें, महामंत्र नव कार॥ २॥ इति॥

विहाग का दोहा

महावीर मेरी खवर, लीजे दीन दयाल। तुझ विन दूजे कवनहे, सरणो ताको हाल। १। महा मनोहर सुभ भरे,

पल पल तन छबि देत। ऐसे देवा सुत जायो, सेवक अघ हर लेत। २। श्रीमहाप्रभु वीरजी; राम नारायण ईस। ब्रह्मादिक पद कज सदा, दास नमें कर सीस। ३। साजन मन माने सही, जे भजसे सदीव। तो तेरे शिव रामको, वीर उधांरे जीव। ४। महावीर साजन बड़े, सन्त सरूप सुजान। पल पल सांसी सांसमें, सेवक दूती तुम भान। ५। ओं नमी श्री वीरके, चरण कमल निस दीस। सुख सींधु मज्जनकरो, अटल बोध अब नीस॥ ६॥ इति॥

छन्द

उपमा कनकदेव, उपमा न काहू तेव, चूल हेम तेम जेम, ज्योति मोती नीरकी। लंछन हजार आठ, करम दल दीना काट। योजन गमन रूप, वाणी एक वीर की। १। पत्थर फटिक मांहि, ताउ पै विराजमान, बचन प्रकाशे प्रभु, घुंट जैसे क्षीर की। तरण तारण देव, सुरपति सारे सेव, ऐसी महिमा लोकमें, विराजे महावीर की। २। चौवीसमां महावीर सूरवीर महाधीर, वाणी मीठी दूध क्षीर, सिद्धारथ नन्द है। नाग जैसी नार जाने, घटमें वैराग आने, योग लियो जग-मांहि, छोड़ा मोह फंद है। ३। चौदह हजार संत, तार दिया भगवंत, कम्मौंका किया अंत, पाम्या सुख कंद है। भणै मुनिचंद्र भाण, सुनो भविक गण, महावीर किया ध्यान, उपजे आनन्द है॥ ४॥ इति॥

गजल कव्वाली

जिन धर्म का डंका आलममे, बजवा दिया वीर जिनेश्वरने, जिनवाणी का अमृत आलममे बरसा दिया वीर जिनेश्वरने। जि० १। प्रभु श्रीमुख से जो फरमाया, गणधरने उसको गुंथ लिया। कहा सार मंत्र नवकार जपो, फरमा दिया वीर जिनेश्वरने। जि० २। अज्ञान तिमिर को दुर किया और ज्ञान का तेज प्रसार किया। मिथ्यात अंधेरा मेट दिया, सूर्य समान वीर जिनेश्वरने। जि० ३। सद्गुरुने यह उपदेश दिया, प्रभु को समर ले मुढ़ जिया, भव सिंधु से तरजावेगा, फरमा दिया वीर जिनेश्वरने। जि० ४। आनन्द वन्दत प्रभु के चरणा प्रभु नाम हैं संकट हरना, शरणा से हो जावे तरणा फरमा दिया वीर जिनेश्वरने॥ जि० ५॥ इति॥

मांड कहरवा

मैं आदी जिनवर स्वामी की जय बोलु रे। प्रभु जब कलकत्ते में आए, नाहर वंश के कीर्ती बढ़ाये, जो नित्य ध्यावे फल पावे, अन्तरकी पट खोलुं जै जै। मैं० १। फटिककी शांति मुर्ति विख्याता, संगमें वीर, सुविधीनाथा, झांकी निरखत मन हर्षाता, चन्द्रिका चरणां शिश नवाता जै जै॥ मैं० २ इति॥

देशी की चाल

सीमंधरजी से वंदना, नित हो जो हमारीरे। परम पुरुष जी से वन्दना, नित हो जो हमारी रे। मन वच्च काय त्रिके करी, सेवा चाहुं तुम्हारी रे। सी० १। तुम तो महाविदेह मां

वसो हमे भरत मां वैठारे, मनड़ो चाहे ऊड़ी मिलूं जायके पद भेटूं रे । सी० २ । यहां तो आरो पांचमों, तिहां चौथो आरोरे, तुमे तिहां सुख भोगवो, हमको न सँभारोरे । सी० ३ । विद्या जंघाचारिणी, कोई लब्धि न दीसेरे जेहथी प्रभु पद भेटिये, मनड़ो घणो हींसेरे । सी० ४ । बीज तणो जे चाँदलो, तेनी साथे हमारीरे । जाई पोंचेगी वंदना सुन लिजो संभारीरे । सी० ५ । नंदन श्री श्रेयांसनो, अंगज सतकीनोरे, रूकमणी राणीनो बालमो दूजो ऋषभ नगीनोरे । सी० ६ । स्वपनान्तर प्रभुजी मिल्या भयो परम आनन्दोरे वुध जसवंत सागर तणो जाई नीक सू नींकोरे ॥ सी० ७ ॥ इति ॥

भैरवी कहरवा

केशरिया थासु प्रीत करीरे साचा भाव सुं । टेर । मधुकर मोह्यो मालती रे, मैं मोह्यो प्रभु नाम । अन्य देव को नहीं नमुं मैं, भजु अलख भगवान । के० १ । काला गोरा भैरव विराजे बटुक भैरव भारी रे । कई कई खंडीत करवा आया, लड़ी २ लोग हारीरे । के० २ । नाभिराय मरू देवीके नंदा, मुख पुनम को चंदा । धनुप पांच सौ सोवन काया, नगर अयोध्या का रायारे । के० ३ । सेवक गावे भाव सुंरे वड़ा नगरमें वास । कालीदास कर जोड़ कहै छै जै जै त्रिलोकी नाथरे ॥ के० ४ ॥ इति ॥

देशी यत्

धूलेवा नगरमें भेट्या ऋषभ जिनन्दरी । नाभि राय मरु देवी माता जनम्या श्रीजिनचंदरी । धू० १ । सांवलि सूरति

अतिही मनोहर केशरिया आनंद कंदरी । धू० २ । तीनलोक में अद्भूत महिमा सेवें सुर नर इन्द्ररी । धू० ३ । बहुत दिवसकी थी अभिलाषा दरस देख आनन्दरी । धू० ४ । देश देशके यात्री आवे पूजा रचे बहु नंदरी । धू० ५ । संवत उगनिश उपर सत्तर मिगसर पूनम चन्दरी । धू० ६ । यात्रा करके तन मन हुलस्ये कीरत पुरण चंदरी । धू० ७ । विनय चन्द सहु मिल गुण गावे भव भव मेटो फंदरी ॥ धू० ८ ॥ इति ॥

हम्वीर वहार तेताला

ऐसो दरशन दीजे बार बार । नाभिराय मरुदेवीके नंदा अबतो मोहे तार तार । १ । मस्तक मुकुट काने युग कुण्डल गले मोतियन के हार हार । २ । अष्ट द्रव्य ले पूजो सब मिल प्रभुको चितमें धार धार । ३ । काम क्रोध मद लोभ बेरके छोड़त नाही लार लार । ४ । दास तिहांरे शरणमें आयो कर दो अबतो पार पार ॥ ५ ॥ इति ॥

थीयेटर की चाल कहरवा

महावीर जिनन्दा सुखनो कंदा वन्दु बारम्बार । प्रभु पूनमचंद त्रिशला नन्दा वन्दु बारम्बार । म० । जगत विभूषण वर्जित दूषण सत्य थया महावीर । भव भय भंजन नाथ निरंजन विश्व थया बड़ वीररे । म० २ । गोशाला नो उपसर्ग सह्या बहु रोष न कीधो लगार । चंडकोशिया नो डंसन रोधन उर समभाव विचाररे । म० ३ । चन्दनबाला सती कुशमाला

पुण्यवति जगमाह। बाकुल तो बहु भाव वहराविने हर्ष धरि चित माहिरे। म० ४। लोहेकी बेड़ीना फंद छुड़ाया थया भक्त भूषण उजमाल। मोक्षनी माला गुण रसाला वालि सति तत्कालरे। म० ५। त्रिभुवन त्राता जग विख्याता मुक्ति तना दातार। महावीर स्वामी महर कीरीने तार चन्द्रोदय ताररे॥ म० ६॥ इति॥

थियेटर की चाल कहरवा

आज रच्यो है समोसरणजी इन्द्र नरेंद्र सवें मिली। धन २ आज दिन, प्रभुजी को दरशन करतां भव २ पाप हरा, क्या शोभा मन लोभी देशना अति प्यारी अमृत सम वाणी सुन श्रवणें इन्द्र नरेंद्र सवें मिली॥

कल्याण तेताला

वदन परि वारी जाऊँ वीर जिनन्दा, वीर जिनन्दा वारी चरम जिनन्दा सिंह लछन सुख कन्दा। वदन० टेर। सिद्धारथ त्रिसलाजीके नन्दा वर्द्धमान जिन चन्दा। वदन० १। समोशरण बीच आप विराजे सेवत सुर नर वृन्दा। वदन० २। देशना अमृत भविजन तारण भव भव पाप पुलीन्दा। वदन० ३। पावापुरीमें मोक्ष सिधाया शासन दीपक चंदा। वदन० ४। ऐसे प्रभुको वंदत पूजत नित २ होत आनन्दा। वदन० ५। सेवककी प्रभु यही विनती सुनीये वीर जिनंदा॥ वदन० ६॥ इति॥

थीयेटर की चाल दादरा

सुनिये प्रथम जिनन्द काटो कर्मोंके फंद मैं तो ध्याउँ जिनन्द आनन्द करना। सु० टेर। मरुदेवीके नन्द नाभिराय कुल चंद वंश इक्षाकु जिनन्द मैंने लिया सरना। सु० १। वर्ण कञ्चन सुहाय धनुस पांच सो काय लक्ष चौरासी अर्द्ध पूर्व जिनका वरना। सु० २। सेवा करते हैं इन्द्र सुर संग और चंद्र कई खगेंद्र है वृन्द भजन हरणा। सु० ३। राम चन्द्र सुरि गावे सेवा चरणोंकी चावे पहले जिनवर सुहावे मेरा मेटो मरणा॥ सु० ४॥ इति॥

कानड़ा तेताला

दरिसन प्राण जीवन मोहें दीजें, विन दरिसन मोहि कल न परतु है, तलफ तलफ तन छीजे। दरि० १। कहा कहुं कछु कहत न आवत, विन सेजा क्युं जीजे। सोहुं खाइ सखी काहु मनावो, आपही आप पतीजें। दर० २। देउर देरानी सासु जेठानी, युंहि सब मिली खीजें। आनन्दघन विन प्रान न रहे छिन, कोडी जतन जो किजें॥ दर०३॥

हमीर तेताला

क्या तकसीर विचारी प्रभु मेरे। क्या० टेर। श्री महावीर हमारे। प्रभु० १। तारण हारे अब मोहे तारो मैं गई शरण तिहारे। प्रभु०२। करूं दरशन प्रभु येही मैं चाहुं छेदिये कर्म कुठारे। प्रभु० ३। होय दया जिनजी की मोपर जिनचंद ओर निहारे॥ प्रभु० ४॥ इति॥

मिश्र कहरवा

गाव २ खुशीसे गावो सभी मिल वीर प्रभु दरवार के। (अरे हांरे) दिल भरके गावो सबे खुशीये मनावो आये है

दिन निरवानके । गा० १ । त्रिसला के नन्दन त्रिजग वंदन कंचन वरण दीदारके । गा० २ । शासन नायक शिव सुख दायक महिमा है जाकि अपारके । गा० ३ । संवत उगनीश उपर वहोत्तर कातिक कृष्ण उदारके रूप छत्र और इन्द्र केशरी आवागमन निवारके ॥ गा० ४ ॥ इति ॥

मिश्र पीलु कहरवा

मेरे प्रभु चरम वीर जिनराया । हारे सिद्धारथ कुल मंदिर ध्वजसम त्रिसला जननी जाया । निरुपम सुंदर प्रभु दरसनतें, सकल लोक सुख पाया । मेरे० १ । वाम चरण अंगुष्ट फरसते सुर गिरिवर कंपाया । इन्द्रभूति गणधर मुख्य मुनिजन, सुरपति वंदित पाया । मेरे० २ । वर्द्धमान शाशन सुखदाया, चिदानंद घनकाया । चंद्र किरण गुण विमल रुचिरधर, शिव-चन्द गणी गुण गाया ॥ मेरे० ३ ॥ इति ॥

मिश्र पीलु कहरवा

भव्य नित पीजो धीधारी । जिन वानी सुधासम जानके नित पीजो धीधारी । वीर मुखारविन्दसे प्रगटी जन्म जरा गति टारी, गौतमादिक उर घट व्यापी यह परम सुरुचि कर-तारी । सलिल समान कलिल मल भंजन बुध मन रंजन हारी भंजन विभ्रम धुल प्रभंजन मिथ्या जलद निवारी । भव्य० । कल्याण तरु उपवन धरणी यह तारण भव जल नारी, वन्ध विदारण पैनी छेनी मुक्ति निशेनी सम्हारी । भव्य० १ । स्वपर स्वरुप प्रकाशनकुं यह भानु कला अविकारी, मुनिमन कुमुदिनि मोहन शशिसम सुख सुमन सवारी । भव्य० २ । याकुं

सेवत वेवत निजपद नसत अविद्या सारी। तीन लोक पद पुजत जाके जानत जग हितकारी। भव्य० ३। कोटि जीव सम महिमा जाके कह न सके पटधारी। आनंदघन प्रभु केम कहे यह अधम उधारण हारी॥ भव्य० ४॥ इति॥

दुर्गा झपताला

कृपा करो मोपै, दीन दयाल, डोलत नैया मोरी मझधार,
पलटा—सारेमप धस धप मप धसा धपम धपम रेस,
" धपमप धसा धपमप धस धपम धपम रेसा
" सारेमप धस रेसा धपम धपम धपमरेस,

देशी की चाल

ऋषभ जिणंद सुं प्रीतड़ी, कीम कीजे हो कहो चतुर विचार। प्रभुजी जई अलगा वसिया, तिहां किने नवि हो को वचन उच्चार। ऋ० १। कागल पन पहुंचे नहीं, नवि पहुंचे हो तिहां को परधान। जे पहुंचे ते तुम समो, नवि भाखे हो कोनुं व्यवधान। ऋ० २। प्रीत करे ते रागीआ, जिनवरजी हो तुमे तो वीतराग। प्रीतड़ी जेह अरागीथी, भेलववी ते हो लोकोत्तर मार्ग। ऋ०३। प्रीति अनादिनी विप भरी, ते रीते हो करवा मुझ भाव। करवी निर्विप प्रीतड़ी, किण भांते हो कहो वने वनाव। ऋ० ४। प्रीति अनंती पर थकी, जे तोड़े हो ते जोड़े एह। परम पुरुप थी रागता, एकत्वता हो दाखी गुण गेह। ऋ० ५। प्रभुजीने अवलंवता निज प्रभुता हो प्रगटे गुण राश। देवचंद्रनी सेवना आपे मुझ हो अविचल सुख वास॥ ऋ० ६॥ इति॥

श्री आनन्दघनजी, देवचन्द्रजी, यशोविजयजी, तथा मोहनविजयजी की रचनाओंमें से संगृहीत चौबिसी

श्री ऋषभ जिनस्तवन

ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरोरे और न चाहुंरे कन्त, रीझ्यो साहेब संग न परिहरे रे, भांगे सादि अनन्त। ऋ० १। प्रीत सगाई रे, जगमां सहु करे रे प्रीत सगाई न कोय; प्रीत सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय। ऋ० २। कोई कंत कारण काष्ठ भक्षण करे रे मिलसुं कंतने धाय; ऐ मेलो नवि कहिये संभवेरे मेलो ठाम न ठाय। ऋ० ३। कोई पतिरञ्जन अति घणु तप करे रे, पतिरंजन तन ताप; ऐ पतिरञ्जन में नवि चित्त धर्युं रे, रञ्जन धातु मिलाप। ऋ० ४। कोई कहे लीला रे अलख अलख तणीरे, लख पूरे मन आश, दोष रहितने लीला नवि घटेरे लीला दोष विलास। ऋ० ५। चित्त प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यु रे; पूजा अखंडित एह; कपट रहित थई आतम अरपणारे आनंद-घन पद रेह॥ ऋ० ६॥ इति॥

श्री अजित जिनस्तवन

वारी हुं जितशत्रु सुत तना मुखड़ाने मटके। टेर १। ओलग अजित जिनंदनी माहरे मन मानी। मालति मधु करनी परे बनी प्रीति अछानी। अवर कोई जाँचु नहीं बिन स्वामी सुरंगा। चातक जिम जलधर बिना नवि सेवे गंगा। वा० २।

ए गुण प्रभु के न विसरे सुनि अन्य प्रशंसा छिल्लर किन विध रति धरे मानसरना हंसा । वा० ३ । शिव एक चंद कला थकि लहि ईश्वरताई । अनन्त कलाधर मैं धरयो, मुझ अधिक पुण्याई । वा० ४ । तू धन, तू मन, तन तू ही, ससनेहा स्वामी । मोहन कहे कवि रूप नो जिन अन्तर्यामी ॥ वा० ५ ॥ इति ॥

श्री सम्भव जिनस्तवन

सम्भव जिनवर विनती अवधारो गुण ज्ञातारे । खामी नही मुझ खिदमते, कदीय होशो फलदातारे । सं०१ । कर जोड़ी उभो रहुं रात दिवस तुम ध्यानोर । जो मनमां आनो नहीं तो शुं कहिये छानोरे । सं० २ । खोट खजाने को नही दीजिये वंछित दानोरे । करुणा नजर प्रभुजी तणी वाधे सेवक वानोरे । सं० ३ । काल लब्धि मुझ मति गणो भाव लब्धि तुम हाथेरे लडथडतुं पण गज वच्चुं गाजे गय वर साथेरे । सं० ४ । देशो तो तुमही भला, वीजा तो नवि जाचुंरे । वाचक यश कहे सांइशुं फलशे ऐ मुझ सांचुंरे ॥ सं० ५ ॥ इति ॥

श्री अभिनन्दन जिनस्तवन

अभिनन्दन जिन दरिसन तरासिअे दरिसन दुर्लभ देव, मत मत भेदेरे जो जइ पूछिये सहु थापे अहमेव । अ० १ । सामान्ये करी दरिशन दोहलुं निर्णय सकल विशेष, मदमें घेरयोरे अंधो केम करे; रवि शशि रूप विलेख । अ० २ ।

हेतु विवादे हो चित्त धरी जोइए। अति दुर्गम नयवाद आगम वादे हो गुरु गम को नही ऐ सबलो विपबाद। अ० ३। घाति डुँगर आड़ा अति घणा तुझ दरिसन जगनाथ। धीठाई करी मारग सचरुं, सेंगु कोइ न साथ। अ० ४। दरिशन दरिशन रटतो जो फिरुं तो रण रोझ समान। जेहने पिपासा हो अमृतपाननी किम भांजे विषपान। अ० ५। तरस न आवे हो मरण जीवन तणो सीधे जो दरिसन काज दरिसण दुर्लभ सुलभ कृपा थकी आनन्दघन महाराज ॥ अ० ६ इति ॥

श्री सुमति जिनस्तवन

सोभागी जिनसुं लाग्यो अविहड़ रंग। टेर। सुमति नाथ गुण सुं मिलिजी वाधे मुझ मन प्रीति। तेल बिन्दु जेम विस्तरेजी जल मांहे भली रीति। सो० १। सज्जन सुं जे प्रीतड़ीजी छानि ते न रखाय। परिमल कस्तूरी तनो जी महि मांहे महकाय। सो० २। आंगलिये नवि मेरू ढकाये, छावड़िये रवि तेज। अंजलिमां जिम गंग न माये, मुझ मन तिम प्रभु हेज। सो० ३। हुवो छिपे नहिं अधर अरून जिम खाता पान सुरंग। पीवत भर भर प्रभु गुण प्याला, तिम तुझ मुझ प्रेम अभंग। सो० ४। ढांकि इक्षु परालसुं जी, न रहे लहि बिस्तार। वाचक यश कहे प्रभु तनो जी, तिम मुझ प्रेम प्रकार ॥ सो० ५ ॥ इति ॥

श्री पद्मप्रभ जिनस्तवन

पद्मप्रभ जिन सांभलो करे सेवक अे अरदास हो; पांति बेसाड़िओ जो तुम्हे तो सफल करो आश हो। प० १।

जिन शासन पांति ते ठवि मुझ आप्युं समकित थाल हो, हवे भाणा खड़ खड़ कुण खमे, शिवमोदक पिरसे रसाल हो। प० २। गजग्रासन गलित सिंची करी, जीवे कीडीना वंश हो; वाचक यश कहे अम चित्तधरी दीजे निज सुख एक अंश हो॥ प० ३॥ इति॥

श्री सुपार्श्व जिनस्तवन

श्री सुपास जिन वन्दिये सुख सम्पत्ति नो हेतु ललना; शांत सुधारस जलनिधि, भवसागर मां सेतु ललना। श्री०१। सात महा भय टालतो सप्तम जिनवरदेव ललना। सावधान मनसा करी, धारो जिनपद सेव ललना। श्री० २। शिव शंकर जगदीश्वरुं चिदानन्द भगवान ललना; जिन अरिहा तीर्थंकरु ज्योति स्वरूप असमान ललना। श्री० ३। अलख निरञ्जन वच्छलु सकल जन्तु विश्राम ललना; अभय दान दाता सदा पूरण आतम राम ललना। श्री० ४। वीतराग मद कल्पना रति अरति भय शोक ललना; निद्रा तंद्रा दुर्दशा रहित अबा-धित योग ललना। श्री० ५। परम पुरुष परमातमा परमेश्वर परधान ललना, परम पदारथ परमेष्ठि परमदेव परमान ललना। श्री० ६। विधि विरंचि विश्वभर हृषिकेश जगनाथ ललना; अघहर अघमोचन धनी मुक्ति परम पद साथ ललना। श्री०७। ऐम अनेक अभिधा धरे अनुभव गम्य विचार ललना, जेह जाणे तेहने करे आनन्दघन अवतार॥ श्री० ८॥ इति॥

श्री चन्द्रप्रभ जिनस्तवन

देखन दे रे सखि मोहे देखन दे चन्द्रप्रभ मुखचन्द। मोहे० टेर। उपशम रसनो कंद सखि, सेवे सुर नर इन्द

सखि गत कलिमल दुख द्वन्द । सखि मोहे० १ । सुहम नि-गोदे न देखियो सखि बादर अति ही विशेष, पुढवी आउ न लेखियो सखी तेउ वाउ न लेश । सखि मोहे० २ । वनस्पति अति घणा दिहा सखि दीठो नहीय दीदार, बिति चौरिन्द्री जल लिहा सखि, गति सन्नि पण धार । सखि मोहे० ३ । सुर तिरि निरय निवासमां सखि मनुज अनारज साथ, अपजजतां प्रतिभा समां सखि चतुर न चढियो हाथ । सखि मोहे० ४ । ऐम अनेक थल जाणिये सखि दरिसन विन जिन देव, आगमथी मति आणिये सखि कीजे निर्मल सेव । सखि मोहे० ५ । निर्मल साधु भगति लही सखी योग अवंचक होय । किरिया अवंचक तिम सही सखि फल अवंचक जोय । सखि मोहे० ६ । प्रेरक अवसर जिनवरु सखि मोहनीय क्षय जाय, कामित पूरण सुरतरु सखि आनन्दघन प्रभु पाय ॥ सखि मोहे० ७ ॥ इति ॥

श्री सुविधि जिनस्तवन

सुविधि जिनेसर पाय नमीने शुभ करणी एम कीजेरे । अति घणो उलट अंग धरीने प्रह उठी पूजीजेरे । सुविधि० १ । द्रव्य भाव शुचि भाव धरीने हरखे देहरे जइएरे । दह तिग पण अहिगम सांचवता, एकमना धुरि थइएरे । सुविधि० २ । कुसुम अक्षत वर वास सुगंधो धुप दीप मन साखीरे । अंग पूजा पण भेद सुनि ऐम गुरु मुख आगम भाखीरे । सुविधि० ३। एहनुं फल दोये भेद सुणीजे, अनन्तर ने परंपररे; आणा

पालण चित्त प्रसन्नी मुगति सुगति सुर मन्दिररे। सुविधि० ४। फूल अक्षत वर धुप पइवो गंध नैवेद्य फल जल भरीरे, अंग अग्र पूजा मली अड़विध भावे भविक शुभगति वरीरे। सुविधि०५। सत्तर भेद एकवीश प्रकारे अष्ठोत्तर शत भेदेरे भाव पूजा वहु विध निरधारी दोहग दुर्गति छेदेरे। सुविधि० ६। तुरिय भेद पडिवत्ति पूजा, उपशम खीणा सयोगीरे, चउहा पूजा इम उत्तरझयणे, भाखी केवल भोगी रे। सुविधि० ७। एम पूजा वहु भेद सुणीने सुखदायक शुभ करणीरे; भविक जीव करशे ते लेशे, आनन्दघन पद धरणीरे॥ सुविधि० ८॥ इति॥

श्री शीतल जिनस्तवन

श्री शीतल जिनि भेटिये करी भक्ते चोखु चित्त हो; तेहथी कहो छानु किस्यु, जेहने सोंप्यां तन मन वित्त हो श्री० १। दायक नामे छे घणा पण तु सायर ते कूप हो, ते वहु खजवार तगतगे तु दिनकर तेज स्वरूप हो। श्री०२। मोटा जाणी आदर्यो, दारिद्र भांजो जगतात हो; तु करुणा वंत शिरोमणि हुं करुणापात्र विख्यात हो। श्री०३। अंतर जामी सवि लहे अम मननी जे छे वात हो; मा आगल मासालना शा वरणववा अवदात हो। श्री०४। जानो तो तानो किस्युं, सेवा फल दीजे देव हो। वाचक यश कहे ढीलनी अे न गमे मुझ मन टेव हो॥ श्री०५॥ इति॥

श्री श्रेयांस जिनस्तवन

श्री श्रेयांस जिन अन्तरजामी, आतमरागी नामी रे; अध्यातम मत पूरण पामी सहज मुगति गतिगामी रे। श्री०१। सयल संसारी इन्द्रियरामी, मुनि गुण आतमरामी रे; मुख्य पणे जे आतमरामी, ते केवल निःकामी रे। श्री० २। निज स्वरूप जे किरिया साधे, तेह अध्यातम लहियेरे; जे किरिया करी चउगति साधे, ते न अध्यातम कहियेरे। श्री० नाम अध्यातम ठवण अध्यातम, द्रव्य अध्यातम छंडोरे; भाव अध्यातम निज गुण साधे, तो तेहशुं रढ़ मंडोरे। श्री० ४। शब्द अध्यातम अर्थ सुणीने, निर्विकल्प आदर-जोरे, शब्द अध्यातम भजना जाणी, हान ग्रहण मति धर-जोरे। श्री० ५। अध्यातम जे वस्तु विचारी, बीजा जाण लबासीरे, वस्तु गते जे वस्तु प्रकाशे, आनन्दघन मत वासीरे॥ श्री० ६॥ इति॥

श्री वासुपूज्य जिनस्तवन

वासुपूज्य जिन त्रिभुवन स्वामी, घननामी परनामीरे निराकार साकार सचेतन, करम करम फल कामीरे। वा० १। निराकार अभेद संग्राहक, भेद ग्राहक साकारोरे, दर्शन ज्ञान दुभेद चेतना, वस्तु ग्रहण व्यापारोरे। वा०२। कर्त्ता परिणामी परिणामो, कर्म जे जीवे करियेरे, एक अनेक रूप नय वादे, नियते नर अनुसरियेरे। वा० ३। दुःख सुख रूप करम फल जानो, निश्चय एक आनंदोरे, चेतनता परिणाम न चूके, चेतन

कहे जिनचंदोरे । वा० ४ । परिणामी चेतन परिणामो, ज्ञान करम फल भावीरे, ज्ञान करम फल चेतन कहिए, लेजो तेह मनावीरे । वा० ५ । आतमज्ञाणी श्रमण कहावे, बीजा तो द्रव्य लिंगीरे, वस्तुगते जे वस्तु प्रकाशे आनंदघन मत संगीरे ॥ वासु० ६ ॥ इति ॥

श्री विमल जिनस्तवन

विमल जिन विमलता ताहरी जी अवर बीजे न कहाय; लघु नदी जिम तिम लंवियेजी स्वयंभुरमण न तराय । वि०१ । सयल पुढवी गिरि जल तरुजी कोई तोले एक हत्थ, तेह पण तुझ गुणगण भणीजी भाखवा नही समत्थ । वि० २ । सर्व पुद्गल नभ धर्मनाजी तेम अधर्म प्रदेश तास गुण धर्म पज्जव सहुजी तुझ गुण एक तणो लेश । वि० ३ । एम निज भाव अनंतनीजी अस्तिता केटली थाय; नास्तिता स्वपरपद अस्तिताजी तुझ समकाल समाय । वि० ४ । ताहरा शुद्ध स्वभावनेजी आदरे धरी बहु मान तेहने तेहीज नीपजेजी ए कोई अद्भुत तान । वि० ५ । तुम प्रभु तुम तारक विभुजी, तुस समो अवर न कोय; तुम दरिसण थकी हूं तर्योजी शुद्ध आलंबन होय । वि०६ । प्रभु तणी विमलता ओलखोजी जेकरे थिर मन सेव; देवचन्द्र पद ते लहेजी विमल आनन्द स्वयमेव ॥ विमल० ७ ॥ इति ॥

श्री अनन्तनाथ जिनस्तवन

धार तलवारनी सोहली, दोहली चौदमा जिनतणी चरण सेवा, धार पर नाचता देख बाजीगरा, सेवना धार

पर रहे न देवा । धार० १ । एक कहे सेविये विविध किरिया करी, फल अनेकांत लोचन न देखे; फल अनेकांत किरिया करी बापडा, रडवडे चार गति मांहे लेखे । धार० २ । गच्छना भेद बहु नयण निहालतां, तत्त्वनी वात करता न लाजे; उदर भरणादि निज काज करता थका, मोह नडिया कलिकाल राजे, । धार० ३ । वचन निरपेक्ष व्यवहार झूठो कह्यो, वचन सापेक्ष व्यवहार साचो, वचन निरपेक्ष व्यवहार संसार फल, सांभली आदरी कांइ राचो । धार० ४ । देव गुरु धर्मनी शुद्धि कहो केम रहे केम रहे शुद्ध श्रद्धा न आणो शुद्ध श्रद्धान विन सर्व किरिया करी; छारपर लिंपणुं तेह जाणो । धार० ५ । पाप नहीं कोई उत्सुत्र भाषण जीस्यो, धर्म नहिं कोई जग सूत्र सरिखो; सूत्र अनुसार जे भविक किरिया करे, तेहनुं शुद्ध चारित्र परिखो । धार० ६ । एह उपदेशनो सार संक्षेपथी जे नरा चित्त मां नित्य ध्यावे; ते नरा दिव्य बहु काल सुख अनुभवी नियत आनन्दघन राज पावे ॥ धार० ७ ॥ इति ॥

श्री धर्मनाथ जिनस्तवन

धरम जिनेश्वर गाउं रङ्गशुं, भंग म पडशो हो प्रीत जिनेसर । बीजो मन मन्दिर आणुं नहीं, ए अम कुलवट रीत जिनेसर । धर्म० १ । धरम धरम करतो जग सहु फिरे, धरम न जाणे हो मर्म जिनेसर । धरम जिनेसर चरण ग्रह्या पछी, कोइ न बांधे हो कर्म जिनेसर । धर्म० २ । प्रवचन अंजन जो सद्गुरु करे, देखे परम निधान जिनेसर । हृदय

नयन निहाले जगधणी महिमा मेरू समान जिनेसर। धर्म० ३। दोड़त दोड़त दोड़त दोड़ियो, जेती मननीरे दोड़ प्रेम प्रतीत विचारो दुंकड़ी—गुरुगम लेजोरे जोड़ जिनेसर। धर्म०४। एकपखी किम प्रीति वरे पड़े उभय मल्या होय संधि जिनेसर। हुं रागी हुं मोहे फंदिओ तुं निरागी निरबंध जिनेसर। धर्म० ५। परम निधान प्रगट मुख आगले, जगत उल्लंघी हो जाय जिनेसर। ज्योति विना जुओ जग-दीशनी, अंधो अंध पलाय जिनेसर। धर्म० ६। निरमल गुण मणि रोहण भूधरा, मुनिजन मानस हंस जिनेसर। धन्य ते नगरी धन्य वेला घड़ी माता पिता कुल वंश जिनेसर। धर्म० ७। मन मधुकर वर करजोड़ी कहे, पदकज निकट निवास जिनेसर। घननामी आनन्दघन सांभलो, ए सेवक अरदास जिनेसर॥ धर्म० ८॥ इति॥

श्री शान्ति जिनस्तवन

शान्ति जिन एक मुज विनती, सुनो त्रिभुवन रायरे, शान्ति स्वरूप केम जानिए, कहो मन किम परखायरे। शान्ति० १। धन्य तुं आतम जेहने एहवो प्रश्न अवकाशरे। धीरज मन धरी सांभलो कहुं शांति प्रतिभासरे। शांति० २। भाव अविशुद्ध सुविशुद्ध जे, कह्या जिनवर देवरे। ते तमे अवितत्थ सद्दहे प्रथम ए शांतिपद सेवरे। शांति० ३। आगमधर गुरू समकिति किरिया संवर साररे, संप्रदायी अवंचक सदा शुची अनुभवाधाररे। शांति० ४। शुद्ध

आलम्बन आदरे, तजी अवर जंजालरे। तामसी वृत्ति सवि परिहरे, भजे सात्विक सालरे। शांति० ५। फल विसंवाद जेहमां नहि शब्द ते अर्थ सम्बन्धीरे। सकल नयवाद व्यापी रह्यो, ते शिव साधन सन्धिरे। शान्ति० ६। विधि प्रतिषेध करी आतमा पदारथ अविरोधरे। ग्रहण विधि महाजने परिग्रह्यो, इस्यो आगमे बोधरे। शान्ति० ७। दुष्ट जन संगति परिहरि भजे सुगुरु संतानरे, जोग सामर्थ्य चित भाव जे धरे मुगति निदानरे। शान्ति० ८। मान अपमान चित्त सम गणे सम गणे कनक पाषाणरे। वंदक निंदक सम गणे इसो होये तुं जाणरे। शान्ति० ९। सर्व जग जन्तुने सम गणे; सम गणे तृण मणि भावरे। मुक्ति संसार बेहु सम गणे, मुणे भवजल निधि नावरे। शान्ति० १०। आपणो आतम भाव जे, एक चेतन आधाररे। अवर सवि साथ संयोगथी, एह निज परिकर साररे। शान्ति० ११। प्रभु मुखथी एम सांभली कहे आतमरामरे। ताहरे दरिसण निस्तर्यो, मुझ सीधां सवि कामरे। शांति० १२ अहो अहो हुं मुझने कहुं, नमो मुझ नमो मुझरे। अमित फल दान दातारनी, जेहनी भेंट थइ तुझरे। शान्ति० १३। शान्ति सरूप संक्षेपथी, कह्यो निज पर रूपरे। आगममांहे विस्तार घणो कह्यो शान्तिजिन भूपरे। शान्ति० १४। शान्ति सरूप एम भावशे धरी शुद्ध प्रणिधानरे। आनन्दघन पद पामशे, ते लेहेशे बहु मानरे॥ शान्ति० १५॥ इति॥

श्री कुंथुनाथ जिनस्तवन

कुंथु जिन मनडुं किमही न बाजे, हो कुंथु जिन। जिम जिम जतन करीने राखुं, तिम तिम अलगुं भाजे हो। कुं० २। रजनी वासर वसती उजड़ गयण पायाले जाय। साप खाय ने मुखडुं थोथुं, एह ओखाणो न्याय हो। कुं २। मुगति तणा अभिलापी तपिया, ज्ञानने ध्यान अभ्यासे। वयरीडु काई एहवुं चिंते, नाखे अवले पासे हो। कुं० ३। आगम आगमधरने हाथे; नावें किण विध आंकुं; किहां कणे जो हठ करी हटकुं तो, व्याल तणी परे वाकुं हो। कुं० ४। जो ठग कहुं तो ठगतो न देखुं, साहुकार पण नांही, सर्व मांहेने सहु थी अलगुं, ए अचरिज मन माही हो। कुं० ५। जे जे कहुं ते कान न धारे, आप मते रहे कालो। सुरनर पंडित जन समझावे, समझे न मारो सालो हो। कुं० ६। मे जण्युं ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले। बीजी वाते समरथ छे नर, एहने कोई न झेले हो। कुं० ७। मन साध्युं तेणे सघलुं साध्युं एह वात नहिं खोटी। एम कहे साध्युं ते नवि मानुं, एकही वात छे मोटी हो। कुं० ८। मनडुं दुराराध्य ते वस आण्युं, आगम थी मति आणुं। आनन्दघन प्रभु माहरूं आणो तो साचुं करी जानु हो॥ कुं० ९॥ इति॥

श्री अरनाथ जिनस्तवन

धरम परम अरनाथ नो, किम जाणुं भगवन्तरे। स्वपर समय समजावीए महिमावत महंतरे। धरम० १। शुद्धातम

अनुभव सदा, स्वसमय एह विलासरे। परवड़ी छांहड़ी जे पड़े, ते परसमय निवासरे। ध० २। तारा नक्षत्र ग्रह चंदनी, ज्योति दिनेश मझाररे। दरशन ज्ञान चरण थकी, शक्ति निजातम धाररे। ध० ३। भारी पीलो चीकनो, कनक अनेक तरंगरे। पर्याय दृष्टि न दीजिये, एकज कनक अभंगरे। ध० ४। दरशन ज्ञान चरण थकी, अलख स्वरूप अनेकरे। निरविकल्प रस पीजिए, शुद्ध निरंजन एकरे। ध० ५। परमारथ पंथ जे कहे, ते रंजे एक तंतरे। व्यवहारे लख जे रहे तेहना भेद अनंतरे। ध० ६। व्यवहारे लखे दोहिलो, कांई न आवे हाथरे, शुद्ध नय थापना सेवतां, नवी रहे दुविधा माथरे। ध० ७। एक पखी लख प्रीतनी तुम साथ जगनाथरे। कृपा करीने राखजो, चरन तले ग्रही हाथरे। ध० ८। चक्री धरम तीरथतणो, तीरथ फल ततसाररे। तीरथ सेवे ते लहे, आनंदघन निरधाररे॥ ध० ९॥

श्री मल्लिनाथ जिनस्तवन

सेवक किम अवगणिये हो, मल्लि जिन एह अब शोभा-सारी। अवर जेहने आदर अति दिये, तेहने मूल निवारी हो। म० १। ज्ञान स्वरूप अनादि तुमारूँ, ते लीधुं तमे ताणी, जुवो अज्ञान दशा रीसावी, जातां काण न आणी हो। म० २। निद्रा सुपन जागर उजागरता तुरियावस्था आवी, निद्रा सुपन दशा रिसाणी जानी न नाथ मनावी हो। म० ३। समकित साथे सगाई कीधी, सपरिवारसुं गाढी। मिथ्यामति अपराधण जानी, घरथी बाहिर काढी हो। म० ४। हास्य अरति रति शोक

दुगंछा भय पामर करसाली। नोकषाय श्रेणी गज चढ़ता, श्वान तणी गति झालीहो। म० ५। राग द्वेष अविरतिनी परिणति ए चरण मोहना योधा; वीतराग परिणति परिणमता, उठी नाठा बोधा। म० ६। वेदोदय कामा परिणामा काम्य करम सहु त्यागी। निःकामी करूणारस सागर अनंत चतुष्क पद पागी हो। म० ७। दान विघन वारी सहुजनने, अभयदान पद दाता। लाभ विघन जग विघन निवारक, परम लाभ रस माता। म० ८। वीर्य विघन पंडित वीर्ये हणी, पूरन पदवी योगी। भोगोपभोग दोय विघन निवारी पूरण भोग सुभोगी हो। म० ९। ए अढार दूषण वरजित तनु मुनिजन वृंदे गाया। अविरति रूपक दोष निरूपण; निरदूषण मन भाया हो। म० १०। इण विध परखी मन विसरामी, जिनवर गुण जे गावे। दीनवंधुनी महिर नजर थी आनन्दघन पद पावे हो॥ म० ११॥ इति॥

श्री मुनिसुव्रत जिनस्तवन

मुनिसुव्रत जिनराय, एक मुझ विनती निसुणो। मु०। आतम तत्त्व क्युं जान्युं जगत गुरू, एह विचार मुझ कहियो, आतम तत्त्व जाण्या विण निरमल चित्त समाधि नवि लहियो। मु० १। कोई अबंध आतम तत्त माने, किरिया करतो दीसे। क्रिया तणु फल कहो कुन भोगवे, इम पूछ्युं चित्त रीसे। मु० २। जड़ चेतन ए आतम एकज, स्थावर जंगम सरिखो। दुःख सुख शंकर दूषण आवे चित्त विचारी जो परिखो। मु०३।

एक कहे नित्यज आतम तत्व आतम दरसन लीनो। कृत विनाश अकृतागम दूषण नवि देखे मतिहीनो। मु० ४। सौगत मत रागी कहे वादी क्षणिक ए आतम जानो। बंध मोक्ष सुख दुःख नवि घटे, ये विचार मन आणो। मु०५। भूत चतुष्क वर्जित आतम तत्त सत्ता अलगी न घटे। अंध शकट जो नजर न देखे, तो शुं कीजे शकटे। मु० ६। एम अनेक वादी मत विभ्रम, संकट पडियो न लहे। चित्त समाधि ते माटे पूछुं, तुम विण तत्त कोई न कहे। मु० ७। वलतुं जगगुरू इणिपरे भाखे पक्षपात सब छंडी। राग द्वेष मोह पख वर्जित आतमसुं रढ मंडी। मु० ८। आतम ध्यान करे जो कोउ सो फिर इनमे नावे। वाग् जाल बीजुं सहु जाने एह तत्त्व चित लावे। मु० ९। जेणे विवेक धरीए पख ग्रहिये ते तत्त ज्ञानी कहिए। श्री मुनिसुव्रत कृपा करो तो आनन्दघन पद लहिए॥ मु० १०॥ इति॥

श्री नमि जिनस्तवन

षड् दरसन जिन अंग भणी जे न्यास्षडंग जो साधेरे; नमि जिनवरणा चरण उपासक षड् दरसन आराधेरे। ष० १। जिन सुर पादप पाय बखाणुं सांख्य जोग दोय भेदेरे; आतम सत्ता विवरण करता लहो दुःख अंग अखेदेरे। ष० २। भेद अभेद सौगत मिमांसक जिनवर दोय कर भारीरे। लोकालोक अबलम्बन भजिए गुरुगमथी अवधारीरे। ष० ३। लोकायतिक कूख जिनवरनी अंश विचारी जो कीजेरे; तत्व विचार सुधारस

धारा गुरुगम विन किम पीजेरे । प० ४ । जैन जिनेश्वर वर उत्तम अंग अंतरग बहिरंगेरे; अक्षर न्यास धरा आराधक आराधे धरी संगेरे । प० ५ । जिन वरनां सघला दरशन छे दर्शने जिनवर भजनारे; सागरमां सघली तटिनी सही तटिनीमां सागर भजनारे । प० ६ । जिन स्वरूप थइ जिन आराधे ते सही जिनवर होवेरे ; भृंगी इलीकाने चटकावे ते भृंगी जग जोवेरे । प० ७ । चुर्णि भाष्या सूत्र निर्युक्ति वृत्ति परंपर अनुभवरे समय पुरुष ना अंग कह्या ए जे छेदे ते दुर्भवरे । प० ८ । मुद्रा बीज धारणा अक्षर-न्यास अरथ विनियोगेरे; जे ध्यावे ते नवि वंचीजे क्रिया अवंचक भोगेरे । प० ९ ।श्रुत अनुसार विचारी बोलुं सुगुरु तथा विधि न मिलेरे; किरिया करि नवि साधी शकीऐ ए विषवाद चित्त सघलेरे । प० १० । ते माटे उभो कर जोड़ी जिनवर आगल कहींयेरे, समय चरण सेवा शुद्ध देजो जिम आनन्दघन लहींयेरे ।। प० ११ ।। इति ।।

श्री नेमिनाथ जिनस्तवन

अष्ट भवांतर वालहीरे, तु मुझ आतम राम । मनरा वाला० । मुगति स्त्रीशुं आपनेरे, सगपण कोई न काम । म० १ । घर आवो हो वालम घर आवो, मारी आशा ना विसराम । म० । रथ फेरो हो साजन रथ फेरो, साजन मारा मनरा मनोरथ साथ । म० २ । नारी पखोशो नेह लोरे, सांच कहे जगनाथ । म० । ईश्वर अर्धांगे धरीरे, तुं मुझ

थाले न हाथ । म० ३ । पशुजननी करुणा करीरे; आणी हृदय विचार । म० । माणसनी करुणा नहिरे; ए कुन घर आचार । म० ४ । प्रेम कल्पतरु छेदीयोरे धरियो योग धतूर । म० । चतुराईंरो कुण कहोरे गुरु मिलियो जग सूर । म० ५ । मारु तो एमां कयुं नहिरे आप विचारो राज । म० । राजसभामां बेसतांरे किसडी बधसी लाज । म० ६ । प्रेम करे जग जन सहुरे निरवाहे ते ओर । म० । प्रीत करीने छोडी देरे तेहसुं न चाले जोर । म० ७ । जो मनमां एहवुं हतुंरे, निसपति करत न जान । म० । निसपति करिने छांडतांरे; माणस हुवे नुकसान । म० ८ । देता दान संवत्सरीरे, सहु लहे वंछित पोष । म० । सेवक वंछित नवि लहेरे ते सेवक नो दोष । म० ९ । सखी कहे ए शामलोरे हुं कहुं लक्षण सेत । म० । इन लक्षण साची लखोरे आप विचारो हेत । म० १० । रागी शुं रागी सहुरे वैरागी स्यो राग । म० । राग विना किम दाखोरे मुगति सुन्दरी माग । म० ११ । एक गुह्य घटतुं नथीरे, सघलोइ जाने लोग । म० । अनेकांतिक भोगवोरे, ब्रह्मचारी गत रोग । म० १२ । जिन जोनी तुमने जोउंरे, तिन जोनी जुवो राज । म० । एक वार मुझने जुओरे तो सीजे मुझ काज । म० १३ । मोह दशा धरी भावनारे, चित्त लहे तत्त्व विचार । म० । वीतरागता आदरीरे, प्राणनाथ निरधार । म० १४ । सेवक पन ते आदरेरे तो रहे सेवक माम । आशय साथे चालियेरे, एहीज रुडुं काम । म० १५ । त्रिविध योग धरी आदर्योरे नेमनाथ भरतार । म० । धारण

पोषण तारणोरे, नवरस मुगता हार । म० १६ । कारण रूपी प्रभु भज्योरे, गण्यो न काज अकाज । म० । कृपा करी मुझ दीजियेरे, आनन्दघन पद राज ॥ म० १७ ॥ इति ॥

श्री पार्श्वनाथ जिनस्तवन

ध्रुव पद रामी हो स्वामी माहरा, निःकामी गुणराय सुज्ञानी निजगुणकामी हो पामी तुं धनी, ध्रुव आरामी हो थाय सुज्ञानी । ध्रु० १ । सर्व व्यापी कहो सर्व जाणग पणे, पर परिणमन स्वरूप सुज्ञानी; पर रूपे करी तत्व पणुं नहि, स्वसत्ता चिद्रूप सुज्ञानी, ध्रु० २ । ज्ञेय अनेके हो ज्ञान अनेकता, जल भाजन रवि जेम सुज्ञानी । द्रव्य एकत्व पने गुण एकता निज पद रमता हो खेम सुज्ञानी । ध्रु० ३ । पर क्षेत्रे गत ज्ञेयन जानवे पर क्षेत्रे थयु ज्ञान सुज्ञानी, अस्ति पणुं निज क्षेत्रे तुमे-कह्यु निर्मलता गुण मान सुज्ञानी । ध्रु० ४ । ज्ञेय विनाशे हो ज्ञान विनश्वरू काल प्रमाणेरे-थाय सुज्ञानी, स्वकाले करी स्वसत्ता सदा ते पर रीते न जाय सुज्ञानी । ध्रु० ५ । परभावे करी परता पामतां, स्वसत्ता थिर ठान सुज्ञानी, आत्म चतुष्क मयी परमां नहि, तो किम सहुनोरे जान सुज्ञानी । ध्रु० ६ । अगुरु लघु निज गुणने देखतां, द्रव्य सकल देखंत सुज्ञानी, साधारण गुणनी साधर्म्यता, दर्पण जलने दृष्टांत सुज्ञानी । ध्रु० ७ । श्री पारस जिन पारस रस समो पण इहां पारस नांहि सुज्ञानी, पूरण रसियो हो निज गुण परसनो आनंदघन मुझ मांहि सुज्ञानी ॥ ध्रु० ८ ॥ इति ॥

श्री वीर जिनस्तवन

तार हो तार प्रभु मुझ सेवक भणी, जगतमां एटलुं सुयश लीजे; दास अवगुण भर्यो जानि पोता तणो, दयानिधि दीन पर दया कीजे । ता० १ । राग द्वेषे भर्यो, मोह वैरी नड्यो लोकनी रीति मां घणुंये रातो; क्रोधवश धमधम्यो, शुद्ध गुण नवि रम्यो, भम्यो भवमांहि हुं विषयमातो । ता० २ । आदर्यु आचरण, लोक उपचारथी, शास्त्र अभ्यास पण कांई कीधो । शुद्ध श्रद्धान वली, आत्म अवलंब विनु, तेहवो कार्य तिणे को न सीधो । ता० ३ । स्वामी दरशन समो, निमित्त लही निर्मलो, जो उपादान ए शुचि न थाशे । दोष को वस्तुनो, अहवा उद्यम तणो, स्वामी सेवा सही निकट लाशे । त० ४ । स्वामी गुण ओलखी, स्वामीने जे भजे, दरशन शुद्धता तेह पामे । ज्ञान, चारित्र, तप वीर्य उल्लास थी, कर्म झीपी वसे मुक्तिधामे । ता० ५ । जगत वत्सल महावीर जिनवर सुणी, चित्त प्रभु चरण ने शरण वास्यो । तारजो बापजी विरुद्ध निज राखवा, दासनी सेवना रखे जोशो । विनती मानजो, शक्ति ए आपजो, भाव स्याद्वादता शुद्ध भासे । साधि साधक दशा, सिद्धता अनुभवी, देवचंद्र विमल प्रभुता प्रकाशे ॥ ता० ७ ॥ इति ॥

कलश

चौवीशे जिन गुण गाइये, ध्याइये तत्त्व स्वरूपोजी । परमानन्द पद पाइये, अक्षय ज्ञान अनूपोजी । चौ० १ । चौदह सें बावन

भला, गणधर गुण भंडारोजी समतामयो साहु साहुणी, सावय सावई सारोजी। चौ० २। वर्द्धमान जिनवर तणो शासन अति सुखकारीजी। चौवीह संघ विराजतां दुषम काल आधारोजी। चौ०३। जिन सेवन थी ज्ञानता लहे हिताहित बोधोजी। अहित त्याग हित आदरे संजम तपनी सोधोजी चौ० ४। अभिनव कर्म अग्रहणता, जीर्ण कर्म अभावोजी। निःकरणी ने अबाधता, अवेदन अनाकुल भावोजी। चौ० ५। भाव रोगना विगम थी अचल अक्षय निराबाधोजी। पूर्णानंद दशा लही विलसे सिद्ध समाधोजी। चौ० ६। श्रीजिन चंद्रनी सेवना, प्रगटे पुण्य प्रधानोजी। सुमति सागर अति उल्लसे, साधु रंग प्रभु ध्यानोजी। चौ० ७। सुविहित खरतर गच्छ वरु, राज सागर उवझायोजी। ज्ञानधर्म पाठक तणो, शिष्य सुजश सुखदायोजी। चौ० ८। दीपचंद्र पाठक तणो, शिष्य स्तवे जिनराजोजी, देवचन्द्र पद सेवतां, पूर्णानंद समाजोजी ॥ चौ० ९ ॥ इति ॥

* चौवीसी समाप्तः *



दादाजी की स्तवनावली

सोरठा तिताला

श्री जिनचन्द्र सूरि दयाल । टेर । जस सुनि दरत सहजहिं दुख हरत ततकाल । १ । कृपा सोमदत्त पर किए, वरद परम कृपाल । दिल्लीपति होंदे कर्यो अन्याय, तुम मंत्रहिं काल । २ । पद्म धनपालादि किननेंहिं, सेव निज निहाल । हमहुं पर जब परत संकट, देत आवो टाल ॥ ३ ॥ इति ॥

मल्हार तेताला

श्री जिनदत्त सूरीन्दा परम गुरु श्री जिनदत्त सूरीन्दा । परम दयाल दया कर दीजे, दरसन परम अनन्दा । प० १ । जङ्गम सुरतरु वंछित दायक, सेवक जन सुखकन्दा । प० २ । सद्गुरु ध्यान नाम नित समरण, दूर हरण दुखदन्दा । प० ३ । जिनपद सेवक मानिध कारी, राखिये गुरु राजेन्दा । प० ४ । वेकर जोड़ी विनययुत विनवे, श्रीजिन हरख सूरीन्दा ॥ प० ५ ॥ इति ॥

सारंग तेताला

मन वंछित काज करो मेरे, मन वंछित । सुरनर पूजे पद तेरे, मन वंछित । मणि धारक वरदायक गुरुके, गाजे जगजस वहुतेरे । म० १ । पूरण ज्योति उदय जिन शासन, पाटवी वीर जिनन्दकेरे । म० २ । सुर मुनि जन गुरु चरण कमलमें, यही नित ध्यान हृदय मेरे । म० ३ । श्रीजिनचन्द अक्षय सुख दीजे, अविचल आनन्द वहुतेरे ॥ म० ४ ॥ इति ॥

[illegible]

कुशल गुरु अब मोहि दरशन दीजै । ऐसी भाँति करो मेरे साहिब, ज्युं मन मूट पतीजै । कु० १ । अलख [illegible] निरुद्ध अमृतरस, श्रवण अञ्जली भर पीजै । [illegible] मन दरशन बिन देखे, कहां लगन [illegible] । कु० २ । परम दयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुनीजै । [illegible] सुगुणराज तुमारो, अपनो [illegible] जानिजै ॥ कु० ३ ॥ इति ॥

भैरवी [illegible]

कुशलगुरु कुशल करो भरपूर । सेवक जन मन वंछित पूरण, [illegible] हाँय हजूर । परम दयालु मंगल पूरण, अशुभ हरण भय दूर । [illegible] सदगुरु [illegible], विनवे जिनचन्द सूर ॥ इति ॥

[illegible]

सद्गुरु करुणा निधान, राखो लाज मेरी । टेर । जय जय जिन कुशल सूर, [illegible] हाजिर हजूर, [illegible] यश जिम कपूर, महिमा जग तेरी । [illegible] । आप गुरु हो दयाल, छिनमें कर दो निहाल, [illegible] हेरी । स० २ । तुम हो सुरतरु समान, वंछित [illegible] दान, सेवक को दीन जान मेटो भव फेरी । स० ३ । शरण आयेकी राखो लाज, वंछित सब पूरो काज, [illegible] शरण गही, कीरति सुन तेरी ॥ स० ४ ॥ इति ॥

[illegible]

कैसे २ अमहरी गुरु राखी लाज हमारी । मोंको सबल भरोसा तेरा, चंद्रसूरी पटधारी । कै० १ । तुम बिन और न कोई मेरे, यह जगमें हितकारी । मेरा जीवन हाथ तुमारे, देखो आप विचारी । कै० २ । आगे तो कईबार हमारी, चिन्ता दूर निवारी । अबकी बेर [illegible] मत जावो, सदगुरु पर उपकारी । कै० ३ । अबकी आप लाज मुजरकी, रखिये गुरु यशधारी । मेरे कुशलसूरीन्द गुरु तेरा बड़ा भरोसा भारी ॥ कै० ४ ॥ इति ॥

[illegible]

कुशल गुरु [illegible] दीन हैं परसन । जगतमें या समो कोई, न देखा नयन भर जोई । कु० १ । विरुद भूमंडल [illegible] करतां पाप सहु भांजे । पूजतां सम्पदा पावे, ऋद्धिसिद्धि [illegible] घर आवे । कु० २ । इके शुभ गुण कहुं केता, हिये शुभ ज्ञान नहीं एता । लालचन्दकी अर्ज सुन लिजै, चरण की शरण मोहि दीजे । चिन्तामणि रतनको पायो, लालचन्द ध्यान मन लायो ॥ कु० ३ ॥ इति ॥

श्री जिनकुशल [illegible]रिजी का [illegible] स्तोत्र

विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली, शुभयोगे पुण्य दशा सफली । जिन कुशल सूरिगुरु अतुल बली, [illegible] वंछित आपे रंगरली । १ । मंगल लील सबे विपुला, नव नव महोत्सव राज्यकला । सुपसाये गुरु चढती कला, सुकुलिणी पुत्रवती अहिला । २ । सबही दिन थाये सबला, सदवास कपूर तणा कुरला । हयगय रथ पायक बहुला, कल्लोल करे मंदिर कमला । ३ ।

विंझे चमर निशान घुरे, नरवे दरबार खड़ा पहुरे। जय २ कर जोड़ी उच्चरे, सानिध्य गुरु सब काज सरे। ४। सरसा भोजन पान सदा, दुख रोग दुकाल न होय कदा। अविचल उलट अंग मुदा, गुरु पूरण दृष्टि प्रसन्न सदा। ५। घम २ मादल नाद घूमे, बत्तीसे नाटक रंग रमे। प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमें, सबला अरियण ते आय नमे। ६। तन सुख मन सुख चीर तने पहिरे वेलाउल होय रणे। ध्यावो कुशल गुरु एक मने, जृंभक सुर मन्दिर भरे धने। ७। तत खिण घन खंच्यौ आवे, करि श्याम घटा मेह वरसावे। तिसियां तोय तुरत पावे, जलदाता त्रिजग सुजस गावे। ८। लहरयां जल कल्लोल करे, प्रवहण भय सायर मध्य डरे। वुडतां वाहण जे समरे, ते आपद निश्चयसे उतरे। ९। खड २ खडग प्रहार वहे सौदामिनी जिम समशेर सहे। कुशल २ गुरु नाम कहे, ते क्षेमकुशल रणमध्य लहे। १० थुंभ सकल परचा पूरे, श्री नागपुरें संकट चूरे। मङ्गलोरे अधिके नूरे देराउर भय टाले दूरे। ११। वीरमपुर थाने सुधरे खंभाइतपुर विक्रम नयरें, जिनचन्द सूरि पाटे पवरे, जसु कीरति मही मण्डल पसरे। १२। पूर्व पश्चिम दक्षिण आगे उत्तर गुरु दीपे सौभागे। दहदिशि जन सेवा माँगे श्रीखरतर गच्छ महिमा जागे। १३। पुर पट्टन जन पद ठामे गाईजे कुशल नयरगामे। पूजे जे नर हित कामे, ते चक्रवर्ति पदवी पामे। १४। श्रीजिन कुशल सूरि साखें, सेवक जनने सुखिया राखे। समरथां गुरु दरशन दाखे, श्रीसाधु कीर्ति पाठक भाखे॥ १५॥ इति॥

आरती

प्रभातकी आरती

भैरवी तेताला कूलोल्थ

जय जय आरती शान्ति तुम्हारी तोरा चरण कमलकी मैं जांउ बलिहारी। जय० १। विश्वसेन अचिराजीके नन्दा शान्तिनाथ मुख पुनमचन्दा। जय० २। चालीश धनुप सोवनमय काया मृगलञ्छन प्रभु चरण सुहाया। जय० ३। चक्रवर्त प्रभु पञ्चम सोहे सोलम जिनवर सुर नर मोहे। जय० ४। मङ्गल आरति मोरही कीजे जनम जनम को लाहो लीजै। जय० ५। कर जोड़ी सेवक गुण गावे सो नर नारी अमर पद पावे ॥ जय० ६ ॥ इति ॥

सन्ध्या समयकी आरती

इमन ताल त्रैवट

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपाश की, जय महराजकी आरती कीजे। इह विध मङ्गल आरती कीजै, पञ्चम परम पद भज सुख लीजै। जय० १। चन्द सुविधि शीतल श्रेयांस, वासुपूज्य सुखदायक। जय० २। विमल अनन्त धर्म अधिकाई; शान्तिनाथ प्रभु लायक। जय० ३। कुन्थुनाथ अर मल्लि मुनिसुव्रत, नमि जिन है शिव दायक। जय० ४। नेमिनाथ प्रभु पाश जिनेश्वर वर्द्धमान सुख दायक। जय० ५। कञ्चन दीपक बहुविधि सझकर

श्री नेमिनाथजी की आरती

भैरवी सेमाल्हा दूबीलक

जय जय आरती नेम तुम्हारी तोरा चरण कमलकी मैं जाऊँ बलिहारी। समुद्रविजय शिवा देवीके नन्दा। श्याम वरण यादव कुल चन्दा। १। दश धनु ऊँची प्रभुनी काया, शंख लच्छन जिन चरण सुहाया। २। नासा कर प्रभु शंख बजाया, कनिष्ट जिन कृष्ण झुलाया। ३। पशुअनका प्रभु बंध छुड़ायो राजमती तज संजम धार्यो। ४। च्यवन जनम शौरीपुर कहिये, गिरनार गिरी प्रभु मुक्ति जो लहिये। ५। कर जोड़ी चाकर गुण गावे, देव गति भावि निश्चय पावे। ६। आरति करतां कर्म खपावै नेम जिनेश्वर के गुण गावे॥ जय० ७॥ इति॥

निर्वाणजीकी आरती

जय जगदीश्वर अति अलवेसर वीर प्रभुराया। पतित उधारण भव भय भञ्जन बोधबीज दाया। (जय २ जिन राया। आरति करु मन भाया। होय कंचन काया)। ज० १। क्षत्रीकुण्ड नगर अति सुन्दर सिद्धारथ राया। सुदी आषाढ़ छठके दिवसे त्रिशला कुक्ष आया। ज० २। चवद सुपन देखी अति उत्तम निज प्रीतम भाखे। अरथ भेद सहु निश्चय करनें जिनगुण रस चाखे। ज० ३। चैत सुदि तेरस दिन उत्तम सहु ग्रह उच्च पावे। जन्म लेई दिश कुमरी सहुना आसन कंपावे। ज० ४। उच्छव कर जावे निज थानक

इन्द्र सहु आवै। मेरु शिखर पर स्नात्र महोच्छव करि आनंद पावैं। ज० ५। वसुधारा वृष्टि कर सहु सुर, निज थानक जावे। सिद्धारथ करे जन्म महोच्छव अचरज सहु पावे। ज० ६। कंचन वरण तेज अति दीपत हरि लञ्चन छाजै। कुल इक्ष्वाकु अङ्ग सहु लक्षण शशी ज्युं मुख राजै। ज० ७। दान सम्वच्छर दे प्रभु लेवे चारित्र सुखदाई। मार्गसीर्ष दशमी वद पक्षे उत्तम तरु पाई। ज० ८। बार वरश छद्मस्त पणामें दुक्कर तप पालै। माधव सुद दशमीके दिनकुं दोप सहु टाले। ज० ९। केवल पाय सबी सुर संगे। पावा-पुर आवैं। गुणगणालंकृत देशनां देके। सङ्घ सहु पावै। ज० १०। भूमंडल विच वहुत जीवकुं अविचल सुख देवै। नर सुर इन्द्र सभी मिल पूजैं जगमें यश लेवैं। ज० ११। चरम चौमाशि पावापुरि करके अन्त समय जाणी। हस्ति पालकी शुक्क शालमें सोलै पहर वाणी। ज० १२। पर्य-कासन छठ तपस्या एक चित्त गुणधामी। कार्त्तिक कृष्ण अमावसके दिन शिव कमला पामी। ज० १३। इन्द्रादिक निर्वाण महोच्छव करि प्रभु गुण गावैं। देव मुखैं गणधर गुरु गौतम सुणनें पछतावैं ज० १४। वीतराग गुण मनमें धारी अनित्य भाव भावै। केवल ज्ञान प्रगट हुए तत्खिण सुर नर गुण गावैं। ज० १५। पञ्च कल्याणक शासन पति की आरति ज्यों गावैं। शिव सुख लक्ष्मी प्रधान मिलै जब। मोहन गुण पावैं॥ जय० १६॥ इति॥

श्री गोतम स्वामी की आरती

जय २ गणधारा, गोतमं गोत्र इन्द्रभूप नामे, भवियण हितकारा। जय० टेर। अष्टापद गिरि भानु आलम्बन, चौविश जिन ध्याया। पन्द्रह सौ तिरोत्तर तापस, ते सहु समझाया। ज० १। दी दीक्षा जिनको निज करसे वे शिवपद पाया। अंत वीर संग नेह त्याग कर, केवल उपजाया। ज० २। पद्मोदय कहे बारह वर्ष पर, पंचम गति पाई। दिलीप चरण सेवे कर जोड़ी। जय शिवपद दाई॥ ज० ३॥ इति॥

श्री सुधर्म्म स्वामी की आरती

जय २ पटधारी, भव्य जीव निस्तारी, शिवसुख दातारी। ज०। पंचम गणधर सुधर्म्म स्वामी, पटधर पद पाया। वीर प्रभु निर्माण गये पर, शासन दीपाया। ज० १। जिन भाषित त्रिपदी अनुसारे, पूरव विस्तारे। द्वादश अङ्ग उपदेश करीने, भवियणकुं तारे। ज०२। निज गुरु सेती बीस वर्ष पर, पाम्यो शिव थाने। पद्मोदय गुरु चरण पसाये, दिलीप लहे ज्ञाने॥ ज० ३॥ इति॥

श्री भैरवजी की आरती

जैन के उद्योत भैरूं समकित धारी। शांति मूरत भवियण सुखकारी। उग्रवाला केश सिंदुर तिलक छविके। केशर के तिलक सोहे उगो मानो रवि के। जै० १। सिर पर मुकुट कुंडल काने शोभतो। गल सोहे धुकधुकी हिये हार मोहतो। जै०२। छड़ी लिये हाथमें देहराके वारणा। पूजा करे नरनारी

रखवारी के कारणा। जै० ३। रोग शोक दूर करो वैरी को भगाय दो। बालकों की रक्षा करो अन्न धन पुत्र दो। जै० ४। पूरण कल्पतरु चाहे फल दाता है। पूजा लेवे नित प्रति रागे रंग माता है॥ जै० ५॥ इति॥

अथ यक्षराज की आरती

जय जय ऋषभ पदांबुज सेवक, जय जय यक्षराया, भविजन सुखदाया। ज० टेर। कामगवी जिम वंछितदायक, कंचन वरण सुहाया। ज० १। संकट विकट निवारण कारण, वर कुंजर चढ़ि आया। ज० २। उदधि भुजें करि शोभत तनु छवि, गुणनिधि गोमुख सुरराया। ज० ३। आरत हरवा करत आरती श्रीसङ्घ चित्त हुलसाया॥ ज० ४॥ इति॥

अथ चक्रेश्वरीजीकी आरती

जय जय जिनपद सेवक कारक, जय जय जगदंबे। ए आंकणी। अहनिशि तुझ पद समरन कारन, दिल विच ध्यान धरे। जय० १। भविजन वंछित पूरन सुरतरु, चक्रेश्वरी अंबे। जय० २। वसु भुज शोभित कनक छवी तनु, सेवित सुर वृंदे। जय० ३। पंचानन तिम खगपति वाहन, आयुध हस्त धरे। जन० ४। ऋद्धि वृद्धि नित प्रति सेवक आपे, आनन्द सङ्ग धरे॥ जय० ५॥ इति॥

दादाजी की आरती

[१]

जय २ मणिधारी, आरति करूं हितकारी, सुख सम्पति कारी। जय० १। गुण मणि आगर, महिमा सागर, भवि-

जन हितकारी। दीन दयाल दयाकर मोपर जिन शासन वारी। जय० २। ग्यारेसें सत्तानवे वर्षे उपनी हरख वधाई। बारेसें तेतीसे वर्षे सुर पदवी पाई। जय० ३। कर जोड़ी सेवक गुण गावे, मन वंछित पावे। श्रीजिनचन्द्र कृपा कर मोपर, मङ्गल माला घर आवे॥ जय० ४॥

[२]

जय जय आरति सत गुरु तेरी। कर पूरण आशा मन मेरी। लीला धर जगेन्द्र विख्याता। जयतिश्री वर सतगुरु माता। १। संवत तेरसें तीसे जाया। निव्यासी सुर पदवी पाया। २। वीर जिनेश्वर चौपन ठामे। श्रीजिन कुशल सूरीसर नामें। ३। छाजेहड गोत्री एक हंदा। पटधारी जिनचंद मुनिन्दा। ४। कर जोड़ी सेवक गुण गावे। पूजत मन वञ्छित फल पावे। ५।

[३]

पहली आरती दादाजी की कीजै। दुख दोहग सब दूर हरीजै। जै जै सद्गुरु आरती कीजै। श्रीजिन कुशलसूरि समरीजे। जै० १। बीजी बीज पडंती वारा। भयवारण तूंही सुखकारा। जै० २। तीजी परचा पूरक तेरी। दूर हरो सब दुर्मति मेरी। जै० ३। चौथी मुगलपूत जिय दायक। सुरवर हुकम धरै ज्युं पायक। जै० ४। पांचमो पांच नदी जिण तारी। संघ सकलनी संकट वारी। जै० ५। छट्टी थम्भो वज्र विदारी। विद्या पोथी परगट कारी। जै० ६। सातमी चौसठ योगीनी साधी। सूरमंत्र सुरनैं आराधी। जै० ७। इणविध

सात आरती किजै । मन वंछित संपति फल लिजै । जै० ८ । जैन लाभ खरतर गणधारी । सद्गुरु चरण कमल वलिहारी ॥ जै० ९ ॥ इति ॥

मंगल दीवो

दीवोरे दीवो मंगलिक दीवो आरती उतारी ने वहु चिरंजीवो । दी० १ । सोहामणुं घरे पर्व दिवाली अमर खेले अमरा वाली । दी० २ । दीपाल भणे एणे कुल अजुवाली भावे भगते विघन निवारी । दी० ३ । दीपाल भणे एणे कलि काले आरती उतारी राजा कुंवरपाले । दी० ४ । अम घर मंगलिक तुम्ह घर मंगलिक मंगलिक चतुर विध संघने होजो ॥ दीवो० ५ ॥ इति ॥

---

* इति स्तवनावली समाप्तः *

